# भीखा साहब की बानी

और

## जीवन-चरित्र

जिस में

उन महात्मा के अति मनोहर भजन, ककहरा, अलिफ़-नामा, पहाड़ा, कुंडलिया और साखी शोध कर मुख्य मुख्य अंगौं में यथाक्रम रक्खी गई हैं

और गूढ़ शब्दौं के अर्थ व संकेत भी नोट में लिख दिये गये हैं



इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुआ

सन् १९०९

११४ सफ़हा] [दाम ।≡)

## सब्सक्रैबरों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी

### (इस निवेदन के पृष्ठ २ का आख़िरी जुमला पढ़िये)

---

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से बिशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्त-लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक पिछले पाँच बरस के उद्योग से हो सका असल या नकल कराके मँगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। भर सक तो पूरे ग्रंथ मँगा कर छापे जाते हैं और फुटकर शब्दों की हालत में सर्व साधारन के उपकारक पद चुन लिये जाते हैं। कोई पुस्तक बिना कई लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी जाती, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दी जाय। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-बेधक हों जिन से आँख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरन शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है। परंतु इस सब जतन पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी पुस्तकें निर्दोष हैं अर्थात उन में अशुद्धता और क्षेपक नाम-मात्र नहीं हैं।

# ॥ सूची पत्र ॥

अ

## क



## ख



## ग

## च



## ज



## झ

## त



## थ



## द



## ध



## न

## य

शब्द | पृष्ठ



## र



## स

# भीखा साहब का जीवन-चरित्र

भीखा साहब जिनका घरऊ नाम भीखानंद था जाति के ब्राह्मन चौबे थे। ज़िला आज़मगढ़ के खानपुर बोहना नाम के गाँव में उन्हों ने जन्म लिया जिसे दो सौ बरस के क़रीब हुए।

बाल अवस्था ही से उन को परमार्थ और साध संग का इतना उत्साह था कि बारह बरस की उमर में घर बार त्याग कर पूरे गुरू और सच्चे मत की खोज में काशी को गये पर वहाँ कुछ न पाकर लौटे। रास्ते में पता लगा कि ग़ाज़ीपुर ज़िले के भुरकुड़ा गाँव में एक शब्द अभ्यासी महात्मा गुलाल साहब दर्शन के योग्य हैं। फिर तो यह वहाँ को दौड़े और उन से उपदेश लिया। इस हाल को भीखा साहब ने अपने एक शब्द में लिखा है— (देखो पहिला शब्द पृष्ठ १६-१७ में)

भीखा साहब अनुमान बारह बरस तक तन मन धन से अपने गुरु गुलाल साहब की रात दिन सेवा और सतसंग करते रहे। इस के पीछे जब गुलाल साहब गुप्त हुए तब इन को उन की गद्दी मिली और चौबीस पच्चीस बरस तक अपने सतसंग और उपदेश से जीवों को चेताते और परमारथ का धन लुटाते रहे। भुरकुड़ा में जब से बारह बरस की अवस्था में यह आये कहीं बाहर नहीं गये और वहीं अनुमान पचास बरस की उमर में शरीर त्याग किया। भुरकुड़ा में इन की समाधि और इन के गुरू गुलाल साहब और दादा-गुरू बुल्ला साहब की समाधैं मौजूद हैं जहाँ बिजय-दसमी पर बड़ा भारी मेला होता है।

भीखा साहब के पंथ में बहुत से लोग हैं और अकेले भुरकुड़ा गाँव और बलिया ज़िले के बड़ागाँव में और उन के आस पास उस मति के कई हज़ार अनुयायी रहते हैं।

हम ने इन दोनों स्थानों और दूसरी जगहों और ग्रंथों से भीखा साहब के जन्मने और गुप्त होने का समय जानना चाहा पर कहीं ठीक ठीक पता न लगा। परंतु एक हस्त-लिखित पुस्तक भुरकुड़ा में मौजूद है जिसे लोग कहते हैं कि गुलाल साहब ने भीखा साहब की मौजूदगी में लिखा और दोनों का छाप बहुतेरे पदों में मिलने से इस कथन का प्रमान होता है। इस ग्रंथ में लिखा है कि उसका बनाना बिक्रमी सम्बत १७८८ में आरंभ हुआ और फागुन सुदी ५ बृहस्पतिवार सम्बत १७९२ को समाप्त हुआ। इस हिसाब से भीखा साहब के जन्म का साल अनुमान सम्बत १७७० और गुप्त होने का १८२० ठहरता है।

भीखा साहब की पूरी साध गति थी जैसा कि उस भेद से जो उन्हों ने अपनी बानी में दिया है प्रगट होता है। इन के कई एक ग्रंथ हैं जिन में से एक का नाम राम-जहाज है। यह एक भारी पुस्तक है।

भीखा साहब के सम्बन्ध में बहुत सी लीला और चमत्कार मशहूर हैं जिन सब के लिखने की यहाँ आवश्यकता नहीं है क्योंकि कितनी कथायें लोग महात्माओं के गुप्त होने पर गढ़ लेते हैं जिनसे पूरे महात्मा और भक्तजन की महिमा समझदारों की दृष्टि में रत्ती भर नहीं बढ़ती अलबत्ते मामूली आदमी वाह वाह करते हैं। तौ भी दो चार कथा दृष्टांत की तरह यहाँ लिखी जाती हैं।

(१) एक बार कीनाराम औघड़ जिनको सिद्धि शक्ति प्राप्त थी इनसे मिलने गये और पीने को मदिरा माँगी। भीखा साहब ने जवाब दिया कि हमारे यहाँ मदिरा का कहाँ गुज़र है इसपर कीना-राम ने ऐसा खेल दिखलाया कि भीखा साहब के स्थान पर जहाँ जहाँ पानी था सब मदिरा हो गया। थोड़ी देर पीछे भीखा साहब ने पानी पीने को अपने एक सेवक से माँगा उसने डर कर उत्तर

दिया कि सब पानी मदिरा हो गया है। भीखा साहब ने कहा लावो वह सब जल है, जब लाया गया तब पानी हो गया।

(२) एक नंगे साधू पहुंचे और खाने को मथुरा का पेड़ा और पीने को तिरबेनी का जल माँगा। भीखा साहब ने कहा कि यह तो नहीं है तब साधू ने अपनी सिद्धि शक्ति से बहुत सा पैदा कर दिया और सब को बाँटा पर भीखा साहब के लिये न बचा। भीखा साहब ने कहा कि हम को भी दो पर सिद्ध ने लाख सिर मारा पेड़ा और जल उनके लिये न आ सका और उसका अंडकोष बेहद बढ़ गया। तब भीखा साहब के चरनों पर गिरा और वह अंग ठीक हो गया जिस पर भीखा साहब की आज्ञानुसार सिद्ध ने वस्त्र धारन किया।

(३) एक भेष आये। रात को उनके खाने को लाया गया तो कहा कि हम दिन ही को खाना खाते हैं इस पर भीखा साहब ने ऐसी मौज की कि थोड़ी देर को दिन का प्रकाश हो गया।

(४) एक मौनी बाबा सिंह पर सवार हो कर उनसे मिलने आये। उस समय भीखा साहब एक भीत पर बैठे दातन कर रहे थे, जब बाबाजी के इस ठाठ से आने का हाल कहा गया तो बोले कि हमारे पास तो कोई सवारी नहीं है और साधू की अगवानी ज़रूर है, चल भीत तूही ले चल। इस पर वह दीवार चली। मौनीजी यह देख कर चरनों पर गिरे।

ऐसी कितनी कथायें कही जाती हैं पर वह सब भीखा साहब सरीखे साधगुरु के लिये महा तुच्छ हैं।

एक बंशावली वृक्ष भीखा साहब के गुरु घराने का छापा जाता है जिसे बड़ागाँव ज़िले बलिया के महंत ने हमें कृपा कर के दिया था। उस से जान पड़ता है कि जगजीवन साहब जिनकी अति कोमल और दीनतामय बानी हम छाप चुके हैं भीखा साहब के गुरू के गुरुभाई थे और पलटू साहब (जिनकी बानी भी छप चुकी है)

के भीखा साहब दादा-गुरू थे। यह बंशावली प्रमानिक है जिसकी तसदीक़ भुरकुड़ा से भी कर ली गई है—
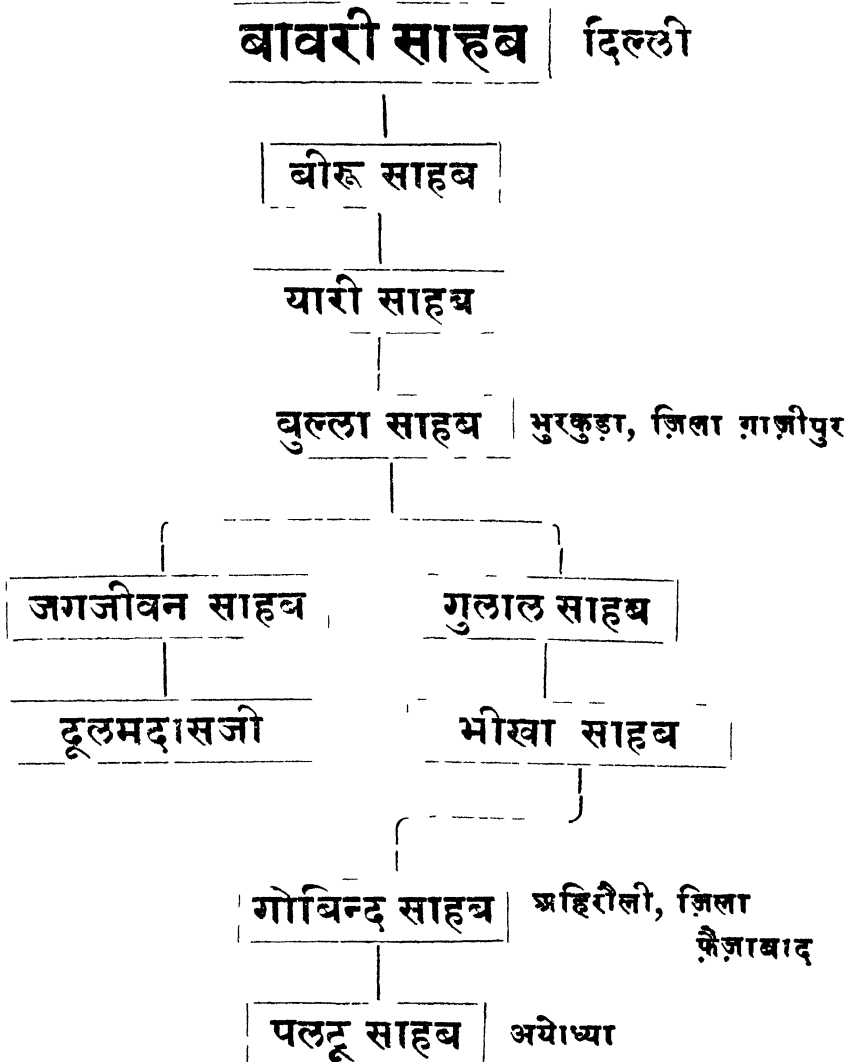
# भीखा साहब की शब्दावली

## ॥ उपदेश ॥

॥ शब्द १ ॥

मन तू राम से लै लाव ।
त्यागि के परपंच माया सकल जगहिं नचाव ॥ १ ॥
साँच की तू चाल गहि ले झूठ कपट बहाव ।
रहनि सों लौ लीन ह्वै गुरु-ज्ञान ध्यान जगाव ॥ २॥
जोग की यह सहज जुक्ति बिचारि कै ठहराव ।
प्रेम प्रीति सों लागि के घट सहजहीं सुख पाव ॥ ३
दृष्टि तें आदृष्टि देखो सुरति निरति बसाव ।
आत्मा निर्धार निर्भौ बानि अनुभव गाव ॥ ४ ॥
अचल अस्थिर* ब्रह्म सेवो भाव चित अरुझाव ।
भीखा फिर नहिं कबहुं पैहौ बहुरि ऐसो दाव ॥ ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

भजि लेहु आतम रामै,
मन तुम भजि लेहु आतम रामै ॥ टेक ॥
यह माया बिस्तार खड़ा है, जग परपंच हरामै ॥ १ ॥

*स्थिर ।

सुत कलित्र* धन बिषै सुक्ख दुख। अंत माया
कोहि कामै ॥२॥
दिन दिन घरि पल समय जातु है। तन काँचो
सुठि[†] खामै[‡] ॥३॥
हाड़ मास नस रुधिर को बेठन। रूप रँगीलो चामै ॥४॥
जा को बेद बेदांत प्रसंसत। घट घट केवल नामै ॥५॥
सतगुरु कृपा गयो कोउ तहवाँ। जहवाँ छाँह न घामै ॥६॥
जहँ जैसा तहँ तैसो साहब। लाल गोर कहुं स्यामै ॥७॥
अवलोकहु[§] हरि रूप बैठि के। सुन्न निरंतर धामै ॥८॥
ब्यापक ब्रह्म चहूं जुग पूरन। है सब में सब तामैं[‖] ॥९॥
आगे पाछे अर्ध उर्ध जोइ। सोइ दहिने सोइ बामै ॥१०॥
भीखा भजन को दाँव बनो है। ईहै दम इह दामै ॥११॥

॥ शब्द ३ ॥

मन तुम राम नाम चित धारो।
जो निज कर अपनो भल चाहो, ममता मोह बिसारो ॥१॥
अंदर में परपंच बसायो, बाहर भेख सँवारो।
बहु बिपरीति कपट चतुराई, बिन हरि भजन बिकारो ॥२
जप तप मख[¶] करि बिधि बिधान, जत तत
उदबेग निवारो।
बिन गुरु लच्छ सुदृष्टि न आवे, जन्म मरन दुख भारो ॥३॥

*स्त्री। †सुन्दर। ‡बेकाम। §देखो। ‖तिस में। ¶यज्ञ

ज्ञान ध्यान उर करहु धरहु दृढ़, सब्द सरूप बिचारो ।
कह भीखा लौलीन रहो उत, इत मत[*] सुगति उतारो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

जग के करम बहुत कठिनाई ।
तातें भरमि भरमि जहँड़ाई[†] ॥ टेक ॥

ज्ञानवंत अज्ञान होत है, बूढ़ करत लरिकाई ।
परमारथ तजि स्वारथ सेवहि, यह धौं कौनि बड़ाई ॥१॥
बेद बेदान्त को अर्थ बिचारहिं, बहु बिधि रुचि उपजाई ।
माया मोह ग्रसित निस बासर, कौन बड़ो सुखदाई ॥२॥
लेहि बिसाहि[‡] काँच को सौदा, सोना नाम गँवाई ।
अमृत तजि बिष अँचवन लागे, यह धौं कौनि मिठाई ॥३॥
गुरु परताप साध की संगति, करहु न काहे भाई ।
अंत समय जब काल गरसि है, कौन करै चतुराई ॥४॥
मानुष जनम बहुरि नहिं पैहो, बादि[§] चल[illegible] दिन जाई ।
भीखा कौ मन कपट कुचाली, धरन[||] धरे मुरखाई ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

देखो निज सरूप हरि केरा, तातें कार कौतुकी तेरा ॥टेक॥
प्रभु में संत संत में प्रभु हैं, या में फार न फेरा ।
केवल आतम राम बिराजत, निकटहिं जिय हिय हेरा ॥१॥
मानुष जन्म याहि करि पायो, भजि ले नाम सबेरा ।
बाल कुमार जुबा बिरधापन, होइ होइ जात अबेरा ॥२॥

---

*नहीं। †ठगाते हैं। ‡मोल। §मुफ़्त। ||टेक।

चेतन प्रान अपान सो जड़, उदान ब्यान महँ डेरा ।
कहत है और करत है औरै, बलकत* फिरत अनेरा† ॥३॥
यह मन कठिन कठोर अपर्बल, कियो सकल जग जेरा‡ ।
माया मोह में फँसि गयो, भयो सुत कलित्र§ धन चेरा ॥४॥
आयू|| घटत बढ़त तन देखत, लाभ लोभ तन घेरा ।
आवत जात चरख¶ चौरासी, करम न करत निबेरा ॥५॥
सिर पर काल बसत निसु बासर, मारत तुरत चबेरा** ।
काहे न बाँधहु भव उतरन कहँ, सत्त सब्द को बेरा†† ॥६॥
कहत हैं बेद बेदांत संत पुनि, गुरू कान महँ टेरा ।
भीखा भाग बिना नहिं देखत, निकटहिं दीप‡‡ अँधेरा ॥७॥

॥ शब्द ६ ॥

मन मानि ले रे तू कहल हमार ।
फिरि फिरि मानुष जनम न पैहौ, चौरासी अवतार ॥टेक॥
पागा माया बिषै मिठाई, काम क्रोध रत सोई ।
सुर नर मुनि गन गंधर्ब कछु कछु, चाखत है सब कोई ॥१॥
त्रिबिधि ताप को फंद परो है, सूझत वार न पारा ।
काल कराल बसै निकटहिं, धरि मारि नर्क महँ डारा ।
संत साध मिलि हाट लगायो, सौदा नाम भराई ।
जो जा को अधिकार होत तिन, तैसी बस्तु मोलाई३

* उबलता । † बेफ़ायदा । ‡ ज़ेर, परास्त । § स्त्री । || उमर । ¶ चक्र ।
** थप्पड़ । †† बेड़ा । ‡‡ चिराग़ ।

सब सक्ती धन धाम सकल लै, सरनागति में डारा ।
समझो बूझि बिचारि उतारो, अपने सिर को भारा॥४॥
जोग जुक्ति के परचो पैहौ सुरति निर्रति ठहराई ।
अर्ध उर्ध के मध्य निरंतर, अनहद धुनि घहराई॥५॥
सुरति मगन परमारथ जागै, करम होहि जरि छारा*।
ज्ञान ध्यान कै खानि खुलै जब, तब छूटै संसारा॥६॥
भक्ति भाव कल्पद्रुम छाया, ताप रहै नहिं देई ।
चारि पदारथ अज्ञाकारी, पर† सों कबहिं न लेई ॥७॥
राम नाम फल मिलो जाहि को, प्रेम सुधा रस धारा ।
पुलकि पुलकि मन पान करो तुम, निस दिन बारम्बारा॥८॥
गुरु परताप कहाँ लगि बरनों, उक्ती एक न आई ।
रसना जो कहिं होयँ सहसदस, उपमा गाय न जाई ॥९॥
आतम राम अखंडित आपै, निज साहब बिस्तारा ।
भीखा सहज समाधी लावो, अवसर इहै तुम्हारा ॥१०॥

॥ शब्द ७ ॥

समयजून आवन सोइ आई। मन कहहू तें नहिं पतियाई१
जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन । देहि
अवध नियराई ॥२॥
मूरख तदपि नाहिं चित चिंता । मानो करतल‡
मै अमराई§ ॥३॥
सुर नर मुनि गन गंधर्ब दानव। काल करम दुख पाई ४

* राख + पराया या दूसरा । † मुट्ठी । § समझता है कि न मरना अपने हाथ में है ।

ब्रह्मा बिस्नु सीव सनकादि दे* । प्रभु डर को न डेराई ५
अमर चिरंजिव लोमस समता† । तिन पर त्रास जनाई ६
भीखा निर्भय राम सरन इक । का किये
बहुत सिधाई‡ ॥७॥

॥ शब्द ८ ॥

जग में लोभ मोह नर भूलो ।
तातें नेकु दृष्टि नहिं खूलो ॥टेक॥

नीचे ऊँचे महल उठावहिं, जित पसार धन दर्बा ।
सो तैसो गुजरान दिना दस, अंत काल बसि सर्बा§ ॥१॥
ब्रह्म बोलता छाँड़ि करतु है, लोक बेद के आस ।
ज्यों मृग सँग कस्तूरी महकै, सुंघत फिरै बहु घास ॥२॥
काम क्रोध अरु मोर तोर में, मनुआँ भटका खात ।
ज्यों केहरि बपु छाँहि कूप लखि, करत आपनो घात‖ ॥३
केवल ब्रह्म सकल घट ब्यापक, घाटि कहूं नहिं पूरा ।
आतम राम भर्म के वसि परि, यह आचरज जहूरा ॥४॥
जोग जग्य तप दान नेम करि, चाहत राम को भेंटा ।
जल पत्थल करि हरि आराधहिं, बाँझ खेलावहिं बेटा ५
देवता पितर भूत गन पूजहिं, धरे सो तन बिकरारी ।
जोति सरूप न आपा चीन्हत, महा सो अधम अनारी ६
भीखा स्वारथ खेत बोवायो, बीज पुन्न अरु पाप ।
जो अघाय सो भोग करत है, करता करम को बाप ॥७॥

---

* आदिक । † लोमस ऋषि सरीखे जो अमर थे । ‡ सिद्धाई । § आख़िर में सब काल के बस में पड़ेंगे । ‖ जैसे शेर अपने रूप की परछाईं कुए में देख कर कूद पड़ा और जान गँवाई ।

॥ शब्द ९ ॥

या जग में रहना दिन चारी। तातें हरिचरनन चितवारी १
सिरपर काल सदा सर*साधे। अवसर परे तुरतहीं मारी २
भीखा केवल नाम भजे बिनु। प्रापति कष्ट नरक भारी ॥३

॥ शब्द १० ॥

मन तुम राम न भजहु सबेरो।
पहर दुपहर तीसरे पहरे, होइ होइ जात अबेरो ॥ १ ॥
जागहु खड़े होहु जीवत माँ, सो केवल हित तेरो।
भ्रम घूंघट पट खोल्हि बिचारो, सहजहिं मेटि अँधेरो ॥२॥
सतगुरु नैन सैन कै परिचै, होत न लागत देरो।
अचरज महा अलौकिक रचना, देखत निकटहिं नेरो ॥३॥
सहज समाधि कै चाह करहु तब, आपा परे निबेरो।
खोज खोज कोउ अंत न पायो, सुर नर मुनि बहुतेरो ॥४॥
तुरिया सब्द उठत अभि† अंतर, सोहं सोहं टेरो।
पूरब लिखो अछर अनमूरति, आपुहिं चित्र चितेरो ॥५॥
सर्ब जहाँ लगि रूप तुम्हारो, जल थल बन गिरि हेरो।
कह भीखा इक धन्य तुही है, पटतर‡ दीं केहि केरो ॥६॥

॥ शब्द ११ ॥

जो कोउ राम नाम चित धरै।
तन मन धन न्योछावर वारै, सहज सुफल फल फरै ॥१॥
गुरु परताप साध की संगति, जोग जुक्ति उर भरै।
इँगला पिँगला सुखमन सोधै, ज्ञान अगिन उदगरै§ ॥२॥

* बान। † घट। ‡ उपमा। § जगावै।

चाँद सुरज एकागर[*] करि कै, उलटि उरध अनुसरै ।
नाद बिंद को जोहु[†] गगन में, मन माया तब मरै ॥३॥
आठ पहर नौबत धुनि बाजै, नेक पलक नहिं टरै ।
भीखा सब्द सुनतहिं अबुध बुध, अमरख[‡] हरख करै॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

मन तोहिं कहत कहत सठ हारे ।
ऊपर और अंतर कछु औरै, नहिं बिस्वास तिहारे ॥१॥
आदिहिं एक अंत पुनि एकै, मद्धहुं एक बिचारे ।
लबज लबज एहवर ओहवर करि[§], करम दुइत करि डारे
बिषया रत परपंच अपरबल, पाप पुन्न परचारे ।
काम क्रोध मद लोभ मोह कब, चोर चहत उँजियारे ॥३॥
कपटी कुटिल कुमिति बिभचारी, हो वा को अधिकारे।
महा निलज कछु लाज न तो को, दिन दिन प्रति मोहिं जारे ॥४॥
पाँच पचीस तीन मिलि चाह्यो, बनलिउ[||] बात बिगारे ।
सदा करेहु बैपार कपट को, भरम बजार पसारे ॥५॥
हम मन ब्रह्म जीव तुम आतम, चेतन मिलि तन खारे ।
सकल दोस हमको काहे दइ, होन चहत हौ न्यारे ॥६॥
खोलि कहों[¶] तरंग नहिं फेर्यो, यह आपुहि महिमा रे ।
बिन फेरे कछु भयो न ह्वै है, हम का करहिं बिचारे ॥७॥

---

[*] इकट्ठा । [†] ढूंढ़ । [‡] गुस्सा, रंज । [§] लफ़ज़ों को इधर उधर करके ।
[||] बनी हुई । [¶] कभी ।

हमरी रुचि जग खेल खेलौना, बालक साज सँवारे।
पिता अनादि अनख* नाहिं मानहि, राखत रहहि दुलारे८
जप तप भजन सकल हैं बिरथा, ब्यापक जबहिं बिसारे।
भीखा लखहु आपु आतम कहँ, गुनना तजहु खमा† रे॥९

॥ शब्द १३ ॥

हे मन राम नाम चित धौवे‡।

काहे इत उत धाइ मरतु है। अवसिक भजन राम के कौवे§ ॥१॥
गुरु परताप साध की संगति, नाम पदारथ रुचि से खौवे।
हर दम सोहं सब्द उठतु है, बिमल बिमल धुनि गौवे॥२
सुरति निरति अंतर लौ लावै, अनहद नाद गगन घर जौवे।
रमता राम सकल घट ब्यापक, नाम अनंत एक ठहरौवे ३
तहाँ गये जग सों जर|| टूटे, तीनि ताग गुन औगुन नौ¶ वे।
जनम अस्थान खानपुर बुहना**, सेवत चरन भिखानंद चौवे ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सजनी कौल के सोच मोहिं लगो रहत दिन रजनी ॥टेक॥
इन पाँचो परपंच चलायो पाप पुन्न की लदनी।
आयो नफा लेन दियो टूटो†† मरत बहुत तेहि लजनी‡‡।
हरिजन हरि चरचा नित बाँटहिं ज्ञान ध्यानकी ददनी§§ १

* नाराज़ी। † भीतर घुसा या छिपी हुई। ‡ धर। § कर। || जड़। ¶ तीन गुनों का तागा अर्थात सत, रज, तम, और नौ औगुन अर्थात पाँच भूत काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, और चार बिषय अर्थात आसा, मनसा, ईर्षा, बिरोध। ** आज़मगढ़ के ज़िले में एक गाँव का नाम जहाँ भीखा साहब पैदा हुए थे। †† घाटा। ‡‡ लाज। §§ पेशगी दाम।

मनुवाँ इमिल धुमिल* में अरुझेव छूटलि नाम महजनी† २
जगन्नाथ जग बिदित सकल घट ब्रह्म सरूप बिरजनी‡।
खासा आपै आपु न परखत बिषै बिसाहत§ ममनी‖ ३
अंदर की प्रभु सब जानत धौं काह मौज मेरी बमनी¶।
कोर** तनिक जेहिं ओर कृपा किये
भीखा भाग तेहिं जगनी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

मन तुम लागहु सुद्ध सरूपे ॥ टेक ॥
तन मन धन न्यौछावरि वारो बेगि तजो भव कूपे ॥१॥
सतगुरु कृपा तहाँ लै लावो जहाँ छाँह नहिं धूपे ॥२॥
पइया††करम ध्यान सों फटको जोग जुक्ति करि सूपे॥३॥
निर्मल भयो ज्ञान उँजियारो गुंग भयो लखि चूपे ॥४॥
भीखा दिब्य दृष्टि सों देखत सोहं बोलत मू पै ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

मन तुम छोड़हु सकल उदासी ।
राम को नाम तीर्थ घट ही में, दिल द्वारिका
औ काया कासी ॥१॥
करते जग अपने कर बाँधो, तिरगुन डोरि की फाँसी।
भिन्न भिन्न निज गुन बरतावहिं, काहू कै कछु
न सिरासी‡‡ ॥२॥

---

*मलीन व्योहार। †महाजनी। ‡बिराजमान। §मोल लेता है। ‖ममता। ¶टेढ़ी। **तिरछी चितवन। ††खोखला धान, और पई एक कीड़े का भी नाम है जो अन्न में पड़ जाता है। ‡‡बस चलना।

तेहि तें कनक कामनी अरुझो, हरि सों सदा निरासी ।
अंते नैन स्रवन अंते है, रसना अंते साँसी ॥३॥
ब्रह्म सरूप अनूप भूप बर, सोभा सुख को रासी ।
केवल आतम राम बिराजत, परमातम अबिनासी ॥४॥
अपरंपार अखंडित बानी, अकथ कथो नहिं जासी ।
सो परभाव प्रगट सतसंगति, जोग जुगत अभ्यासी ॥५॥
सतगुरु ज्ञान बान जेहिं मार्‍यो, लगी मरम उर गाँसी ।
घायल घुरमित* उलटि गयो त्यों चेतन उदित प्रकासी ६।
जग समुद्र नवका† नर देही, कनिहर‡ गुरु बिस्वासी ।
अमृत हरि को नाम सजीवन, चाखत छकि न अघासी ७॥
बेद बेदांत संत मुख भाखहिं, धन्य जो नाम उपासी ।
मन क्रम बचन जु हरि रंग राते, तजे जगत उपहाँसी ॥८॥
जो एकै ब्यापक आतम तौ, को ठाकुर को दासी ।
ब्रह्म सरूप है साहब सेवक, दिब्य दृष्टि है खासी ॥९॥
अलख राम को लखै सोई जन, जो भ्रम भीति को ढासी§ ।
सोइ जोगी जोगेसुर ध्यानी, जा की रहनि अकासी ॥१०॥
हरि सों प्रीति निरंतर दिन दिन, छूटी भूख पियासी ।
सुरति मिली अवलोकि निरति महँ, कहँ आवे कहँ जासी ११
त्यागि सकल परपंच बिषै हरि ताहि मिलै अन्यासी‖ ।
निरमोही निर्बान निरंजन, निरममता सन्यासी ॥१२॥

* घूमता हुआ । † नाव । ‡ खेवट । § गिरा देवै । ‖ आप से आप ।

मोहनभोग सेख* लै बैठो, सुन्न में आसन डासी।
भीखा पावत† मगन रैन दिन, टाटक‡ होत न बासी।१३॥

॥ शब्द १७ ॥

निज घर काहे न ध्यावत मन तुम।
सिर पर काल कराल घटा लै,
तन को त्रास दिखावत ॥टेक॥
अनहद नाद गगन घहरानो आयुस§ समय जनावत।
हेइ होउ|| आजु कालि दिन बीतत,
भ्रम बसि चेत न आवत ॥१॥
जब आयो तब का कहि आयो, जाहु तो का कहि जावत।
अगुवन¶ चेतु समय बीते पर, पाछे काम नसावत ॥२॥
सतसंगति करु ज्ञान को संग्रह सुरति निरति सुरझावत।
आतम राम प्रकास को छाजा, जम जल निकट न आवत३
जल भरि थल भरि पूरन उमग्यो, भाव रहस्य** बढ़ावत।
जहँ देखो तहँ रूपहि भासै, अपुहिं आपु दरसावत ॥४॥
घर में मौज बाहर फिर मौजै, मौजै मौज बनावत।
कह भीखा सब मौज साहब की, मौजी आपु कहावत ॥५

॥ शब्द १८ ॥

जो कोउ या विधि हरि हिय लावै।
खेती बनिज चाकरी मन तें, कपट कुचाल बहावै ॥१॥

---

* गुरु, मुर्शिद। † खाता है। ‡ ताज़ा। § ज़िन्दगी। || इस उस काम में। ¶ आगे से। ** आनन्द।

या विधि करम अधर्म करतु है, ऊसर बीज बोवावै।
कोटि कला करि जतन करै जो, अंत सो निस्फल जावै २
चौरासी लक्ष जीव जहाँ लगु, भ्रमि भ्रमि भटका खावै।
सुरसरि* नाम सरूप की धारा, सो तजि छाँहि† गहावै ॥३
सतगुरु बचन सत्त सुकिरित सों, नित नव प्रीति बढ़ावै।
भीखा उमग्यो सावन भादों, आपु तें आपु समावै ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

निज रँग रातहु हो धनियाँ‡ ।
तजि लोक लाज कुल कनियाँ§ ॥टेक॥
या में भला कछुक हमरिउ,
तुम्हरे सँग सदा रहनियाँ ।
भजनो सही तबहिं परि है,
जब सकल करम भ्रम भनियाँ‖ ॥१॥
मैं अपनी उतपति परलै दुख,
कहँ लग कहौं अनगिनियाँ ।
जो इत के सुख बिष सम जानै,
सो उत साध परनियाँ¶ ॥ २ ॥
नहिं तौ जल बुंद होइ बिनसहुगे,
अबला** बुद्धि नदनियाँ ।
हरि बिनु सब रँग उतरि जाहिंगे,
मनि मोतो कर पनियाँ ॥ ३ ॥

---

* गंगा जी । † प्रतिबिंब, छाईं । ‡ स्त्री । § लाज । ‖ नष्ट होना । ¶ भागना । ** स्त्री ।

अनमिल मिलै बहुत हरखै,
ज्यों पाइ मगन मनि फनियाँ * ।
मनुष जन्म बड़ भाग मिलो,
गुरु ज्ञान ध्यान के बनियाँ ॥ ४ ॥
जोगहिं कोल्हु जुगत लै पेरो,
बिषै सकल कर घनियाँ ।
या हरि रस को पियत कोइ कोइ,
खोदि† दुइत को छनियाँ ॥ ५ ॥
व्यापक्र जहाँ तहाँ लग साहब,
जक्त बिदित दिल जनियाँ ।
मन भयो ब्रह्म जीव नहि दोसर,
अबिगति अकथ कहनियाँ ॥ ६ ॥
हर दम नाम उठत अभि अंतर,
अनुभव मधुर बचनियाँ ।
सुनत सुनत दिल मौज जगी,
लगी सुरति निरति उनमुनियाँ ॥ ७ ॥
साहब अलख को कौन लखै,
सब थके देव मुनि जनियाँ ।
राजा राम सरूप आतमा,
दृष्टि मिली पिय रनियाँ ॥ ८ ॥
होइ निरास आसा सब त्यागै,
सो केवल निरबनियाँ ।

* साँप । † खोदी, तिनका और किनका ।

कह भीखा धनि भाग ताहि जेहिं,
लाभ नहीं कछु हानियाँ* ॥ ९ ॥

॥ शब्द २० ॥

समुझि गहो हरिनाम,
मन तुम समुझि गहो हरिनाम ॥ टेक ॥
दिन दस सुख यहि तन के कारन,
लपटि रहो धन धाम ॥ १ ॥
देखु बिचारि जिया अपने,
जत† गुनना गुनन बेकाम ॥ २ ॥
जोग जुक्ति अरु ज्ञान ध्यान तें,
निकट सुलभ नहिं लाम‡ ॥ ३ ॥
इत उत की अब आसा तजि कै,
मिलि रहु आतम राम ॥ ४ ॥
भीखा दीन कहाँ लगि बरनै,
धन्य घरी वहि जाम§ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

राम सों करु प्रीति हे मन, राम सों करु प्रीति ॥ १ ॥
राम बिना कोउ काम न आवे,
अंत ढहो जिमि भीति‖ ॥ २ ॥
बूझि बिचारि देखु जिय अपनो,
हरि बिन नहिं कोउ हीति¶ ॥ ३ ॥
गुरु गुलाल के चरन कमल रज,
धरु भीखा उर चीति ॥ ४ ॥

*हानि, घाटा । †जितना । ‡दूर । §पहर । ‖दीवार । ¶मित्र ।

# ॥ गुरु और नाम महिमा ॥

॥ शब्द १ ॥

बीते बारह बरस उपजी राम नाम सों प्रीति ।
निपट लागि चटपटी मानो चारिउ पन गये।
बीति ॥ १ ॥
नहिं खान पान सोहात तेहिं छिन बहुत तन दुर्बल
हुवा ।
घर ग्राम लाग्यो बिषम* धन मानो सकल हारो है
जुवा ॥ २ ॥
ज्यों मृगा जूथ† से फूटि परु चित चकित है बहुतै
डरो ।
ढुंढ़त ब्याकुल बस्तु जनुकै‡ हाथ सें कछु गिरि
परो ॥ ३ ॥
सतसंग खोजो चित्त सों जहँ बसत अलख अलेख ।
कृपा करि कब मिलहिंगे दहुं§ कहाँ कौने भेष ॥ ४ ॥
कोउ कहेउ साधू बहु बनारस भक्ति बीज सदा रह्यौ ।
तहँ सास्त्र मत को ज्ञान है गुरु भेद काहू नहिं
कह्यौ ॥ ५ ॥
दिन दोय चारि बिचारि देख्यों भरम करम अपार है ।
बहु सेव पूजा कीरतन मन माया रत ब्योहार है ॥ ६ ॥
चल्यों बिरह जगाय छिन छिन उठत मन अनुराग ।
दहुं§ कौन दिन अरु घरी पल कब खुलैगो मम भाग ॥ ७

---

* जो सहा न जाय । † झुंड ‡ जैसे । § धौं, न मालूम ।

बहु रेखता अरु कबित साखी सब्द सों मन मान ।
सोइ लिखत सोखत पढ़त निसु दिन करत हरि गुन गान ८
इक ध्रुपद बहुत बिचत्र सूनत भोग* पूछेउ है कहाँ ।
नियरे भुरुकुड़ा ग्राम† जाके सब्द आपे है तहाँ ॥ ९ ॥
चोप लागी बहुत जाय के चरन पर सिर नाइया ।
पूछेउ कहा कहि दियो आदर सहित मोहिं बैसाइया १०
गुरु भाव बूझि मगन भयो मानो जन्म को फल पाइया ।
लखि प्रीति दरद दयाल दरसे‡ आपनो अपनाइया ११
आतमा निज रूप साँचो कहत हम करि कसम कै ।
भीखा आपे आपु घट घट बोलता सोहमस्मिकै§ १२

॥ शब्द २ ॥

मनुवाँ सब्द सुनत सुख पावै ॥ टेक ॥
जेहिं बिधि धुधुकत नाद अनाहद तेहिं बिधि सुरत लगावै ॥ १ ॥
बानी बिमल उठत निसु बासर नेक बिलंब न लावै २
पूरा आप करहि पर कारज नरक तें जीव बचावै ३
नाम प्रताप सबन के ऊपर बिछुरो ताहि मिलावै ४
कह भीखा बलि बलि सतगुरु की यह उपकार कहावै ५

* आख़िरी कड़ी जिस में बनाने वाले का नाम रहता है। † नाम एक गाँव का जहाँ गोबिन्द साहब का स्थान था जिन से भीखा साहब ने उपदेश लिया। ‡ प्रसन्न हुए। § सोहं अस्मि=वह मैं हूं।

॥ शब्द ३ ॥

मनुवाँ नाम भजत सुख लीया ॥ टेक ॥
जन्म जन्म कै उरझनि पुरझनि समुझत करकत हीया।
यह तौ माया फाँस कठिन है का धन सुत बित* तीया† ।१
सत्त सब्द तन सागर माहीं रतन अमोलक पीया।
आपा तजै धसै सो पावै ले निकसै मरजीया‡ ॥ २ ॥
सुरति निरति लौलीन भये जब दृष्टि रूप मिलि थीया§ ।
ज्ञान उदित कल्पद्रुम को तरु|| जुक्ति जमावो बीया॥३
सतगुरु भये दयाल तताच्छिन¶ करना था सो कीया।
कहै भीखा परकासी कहिये घर अरु बाहर दीया** ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

धुनि बजत गगन महँ बीना।
जहँ आपु रास रस भीना ॥ टेक ॥
भेरी†† ढोल संख सहनाई, ताल मृदंग नवीना।
सुर जहँ बहुतै मौज सहज उठि, परत है ताल प्रबीना॥१
बाजत अनहद नाद गहागह, धुधुकि धुधुकि सुर झीना।
अंगुली फिरत तार सातहुं पर, लय निकसत भिन भीना‡‡२
पाँच पचीस बजावत गावत, निर्त चारु§§ छबि दीना।
उघटत तननन धितां धितां, कोउताथेइ थेइ तत
कीना ॥ ३ ॥

---

* धन। † त्रिया, स्त्री। ‡ समुद्र में डुबकी लगा कर मोती निकालने वाला। § थिर हुआ। || पेड़। ¶ तुर्त। ** चिराग़। †† एक बाजे का नाम। ‡‡ भीनी भीनी। §§ सुन्दर।

बाजत जल तरंग बहु मानो, जंत्री जंत्र कर लीन्हा।
सुनत सुनत जिव थकित भयो, मानो ह्वै गयो सब्द
अधीना ॥ ४ ॥
गावत मधुर चढ़ाय उतारत, रुनझुन रुनझुन धीना*।
कटि किंकिनि पग नूपुर की छबि, सुरति निरति
लौलीना ॥५॥
आदि सब्द ओंकार उठतु है, अटुट रहत सब दीना†।
लागी लगन निरंतर प्रभु सों, भीखा जल मन मीना ६

॥ शब्द ५ ॥

गुरु सब्द सरोवर घाट सुनत मन चुभुकैला‡ ॥टेक॥
पाँच पचास गुन गावहीं, हूँ ताल मृदंग उबाट,
कछुक झुन घुमकैला§ ॥ १ ॥
गगन मँडल में रास रचो, लगि दृष्टि रूप के साँट,
देखत मन पुलकैला ॥ २ ॥
नाद अनाहद खान खुलो जब, सुन्न सहर में हाट,
धुधुकि धुन धुधुकैला ॥ ३ ॥
भीखा के प्रभु बैठे देखत, भाव सहज सुख खाट,
मगन मन हुलसैला ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

गुरु दाता छत्री मुनि पाया।
सिष्य होन द्विज¶ जाचक आया ॥ १ ॥

---

*ताधिन ताधिन। †सब दिन यानी सदा एक रस रहता है। ‡डुबकी लगाता है। §गुंकार की आवाज़ आती है। ॥मिलाप, लपेट। ¶भीखा साहब जाति के ब्राह्मण थे और उन के गुरू गुलाल साहब छत्री।

देखत सुभग[*] सुंदर अति काया ।
बचन सप्रेम दीन पर दाया ॥ २ ॥
बूझि बिचारि समुझि ठहराया ।
तन मन सों चरनन चित लाया ॥ ३ ॥
दिन दिन प्रीति बढ़त गत माया[†] ।
कृपा करहिं जानहिं निज जाया[‡] ॥ ४ ॥
साहब आपै आप निराल ।
आतम राम को नाम गुलाल[§] ॥ ५ ॥
सर्ब दान दियो रूप बिचारी ।
पाय मगन भयो बिप्र[||] भिखारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मोहिं डाहतु है मन माया ॥ टेक ॥
एकै सब्द ब्रह्म फिरि एकै, फिरि एकै जग छाया ।
आतम जीव करम अरुझाना, जड़ चेतन बिलमाया ॥१॥
परमारथ को पीठ दियो है, स्वारथ सनमुख धाया ।
नाम नित्य तजि अनितै भावै, तजि अमृत बिष खाया २
सतगुरु कृपा कोऊ कोउ बाचै, जो सोधै निज काया ।
भीखा यह जग रतो[¶] कनक पर,कामिनि हाथ बिकाया ३

॥ शब्द ८ ॥

मेरो हित सोइ जो गुरु ज्ञान सुनावै ॥ टेक ॥
दूजी दृष्टि दुष्ट सम लागै, मन उनमेख[**] बढ़ावै ।
आतम राम सूछम सरूप,केहि पटतर[††] दै समझावै ॥१॥

---

*सुभ अंग । †माया छूटती जाती है । ‡पुत्र । §भीखा साहब के गुरू का नाम । ||ब्राह्मण । ¶मोहित हुआ । **तरंग । ††उपमा ।

सब्दप्रकासबिनाहिं* जोग बिधि, जगमग जोति जगावै।
धन्य भाग ता चरन रेनु ले, भीखा सीस चढ़ावै ॥२॥

॥ शब्द ९ ॥

जो सत सब्द लखावै सोइ आपन हित हेरा ॥ टेक ॥
यहि सिवाय परपंच कर्म बस, सकल दुष्ट भ्रम घेरा ॥१॥
ब्रह्म सरूप प्रगट घट घट में, अनचिन्हार सब केरा ॥२॥
जेहिं बिधि कहत बेदांत, संत मुख सो कहि
करत निबेरा ॥३॥
तन मन वार तिनहिं पर दीन्हो, पस्यो चरन बिच डेरा ४
भीखा जाहि मिलैं गुरु गोबिंद, वै साहब हम चेरा ॥५॥

॥ शब्द १० ॥

को लखि सकै राम को नाम ॥टेक॥
देइ करि कौल करार बिसारो,
जियना बिनु भजन हराम ॥१॥
बरनत बेद बेदांत चहूं जुग,
नहिं अस्थिर पावत बिसराम ॥२॥
जोग जज्ञ तप दान नेम ब्रत,
भटकत फिरत भोर अरु साम ॥३॥
सुर नर मुनि गन पचि पचि हारे,
अंत न मिलत बहुत सो लाम† ॥ ४ ॥
साहब अलख अलेख निकट हों,
घट घट नूर ब्रह्म को धाम ॥ ५ ॥

---

*बग़ैर। †दूर।

खोजत नारद सारद अस अस,
जातु है समय दिवस अरु जाम ॥ ६ ॥
सुगम उपाय जुक्ति मिलबे की,
भीखा इह सतगुरु से काम ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

देह धरि जन्म बृथा गैलो ॥ टेक ॥
पाँच तत्त गुन तीनि संग लिये,
कबहिं न सरनागत ऐला ॥ १ ॥
साधु संग कबहूं नहिं कीन्हो,
माया बस सब दिन गैलो ॥ २ ॥
ऐसहि जन्म सिरात* रे प्रानी,
राम नाम चित नहिं कैलो ॥ ३ ॥
कियो करार नाम भजिबे को,
अनमिल ब्याह गवन भैलो ॥ ४ ॥
सतगुरु सब्द हिये महँ राखो,
हर दम लाभ उदै भैलो ॥ ५ ॥
भीखा को मन थीर होत नहिं,
सतगुरु सत्त पच्छ धैलो ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

होहु सु केवल राम की सरन,
ना तौ जन्म ओ फेरि मरन ॥ १ ॥
तीरथ ब्रत आदि देवा पूजन जजन,
सत नाम जाने बिना नर्क परन ॥ २ ॥

*बीतना।

सब्द प्रकास जाने नैन स्रवन,
गूंगा गुड़ को हिसाब कहे सो कवन ॥ ३ ॥
अलख के लखन को अजपा जपन,
अबिगति गतिन को अकथ कथन ॥ ४ ॥
देह न ग्रेह आदि कर्म करन,
पुरुष पुरान जाको बिदित बरन ॥ ५ ॥
भीखा जल थल नभ रमता रमन,
ताके मिलिबे को गुरु कह्यो सो जतन ॥ ६ ॥

॥ शब्द १३ ॥

नामै चाँद सूर दिन राती। नामै किरतिम* की उतपाती† १
नाम सरसुता जमुना गंगा। नामै सात समुद्र तरंगा ॥२॥
नामै गहिर अगूढ़ अथाह। असरन सरन को चरन निबाह ३
मूल गायत्री ओअंकार। तत तुरिया पद सूच्छम सार॥४॥
पलक दरियाव पुरो हरिनाम। नामै ठाकुर सालिगराम ५
सिव ब्रह्मा मुनि सबको नायक। बीठल नाथ साहब सुखदायक ॥ ६ ॥
नामै पानी नामै पवना। ररंकार मंगल सुख रवना‡ ॥७॥
नामै धरती नाम अकास। नामै पावक तेज प्रकास ॥८॥
नाम महादेवन को देवा। नामै पूजा करता सेवा ॥९॥
नाम जक्त गुरु नामै दाता। नामै अज§ बिज्ञान बिधाता १०
नाम सुमेर महा गंभीर। नामै पारस मलयागीर ॥११॥
नाम असोक सोक सों रहिता। कल्पद्रुम नामहिं को कहिता ॥ १२ ॥

* माया। † उत्पत्ति। ‡ बिलास। § ब्रह्मा।

नामै रिद्धि सिद्धि को करता। नामै कामधेनु ह्वै भरता॥१३॥
नामै अर्ध उर्ध ह्वै आये। चारि खान में नाम समाये॥१४॥
धनराज धनंजै धर्महुं ओई। नामै अगन गनै का कोई॥१५
नामै प्रानायाम कहाये। सोहं सोहं नामै गाये॥ १६ ॥
नामै सुंदर नूर जहूर। नामै लाये निकट हजूर॥ १७ ॥
नाम अनादि एक को एक। भीखा सब्द सरूप अनेक॥१८॥

## ॥ जोगी और जोगीश्वर महिमा ॥

॥ शब्द १ ॥

भजन तें उत्तम नाम फकीर।
छिमा सील संतोष सरल चित दरदवंद पर पीर॥ टेक॥
कोमल गदगद गिरा* सोहावन प्रेम सुधा रस छीर।
अनहद नाद सदा फल पायो भोग खाँड़ घृत खीर १
ब्रह्म प्रकास को भेख बनायो नाम मेखला चीर।
चमकत नूर जहूर जगामग ढाँके सकल सरीर॥ २॥
रहनि अचल अस्थिर कर आसन ज्ञान बुद्धि मति धीर।
देखत आतम राम उघारे ज्यों दरपन मद्धे हीर॥३॥
मोह नदी भ्रम भँवर कठिन है पाप पुन्य दोउ तीर।
हरि जन सहजे उतरि गये ज्यों सूखे ताल को झीर† ४
जग परपंच करम बहतो है जैसे पवन अरु नीर।
गुरु गम सब्द समुद्रहिं जावे परत भयो जल थीर॥ ५॥
केलि करत जिय लहरि पिया सँग मति बड़ गहिर गँभीर।
ताहि काहि पटतरो‡ दीजै जिन तन मन दियो सीर॥६॥

* बानी। † छिछला पानी। ‡ उपमा।

मन मतंग मतवार बड़ो है सब ऊपर बल बीर ।
भीखा हीन मलीन ताहि को छीन भयो जस जीर ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

सतगुरु साहब नाम पारसी, पारस मों चित लावै ।
जाहि नाम तें सिव सनकादिक, ब्रह्मा बिस्नु कहावै ॥१॥
ता के सुर नर मुनि गन देवा, सेवा सुमिरन ध्यावै ।
मध्य सरस्वति गंगा जमुना, सन्मुख सीस नवावै ॥२॥
त्रिस्ना राग द्वेस नहिं तहवाँ, जहवाँ सोहं बोलै ।
ज्ञान बोध बिनु दृष्टि बिलोकै, उर्ध कपाटहिं खोलै ॥३॥
मूल पेड़ अरु साखा पत्र नहिं, फूल बिना फल लागे ।
जंत्र बिना जंत्री धुनि सुनिये, सब्द अभय पद जागे ॥४॥
ता अस्थान मकान किये, होय नाद बिंद को मेला ।
आतम देह समान बिचारो, जोई गुरु सोइ चेला ॥५॥
सो है फाजिल संत महरमी*, पूरन ब्रह्म समावै ।
एकै सोन† बहुत बिधि गहना, समुझै द्वैत नसावै ॥६॥
ता की सरन साँच ह्वै जानहि, अजर अमर जन सोई ।
उटन बिटन‡ बरतन माटी को, चेतन मरै न कोई ॥७॥
अनुभव प्रेम उज्जल परमारथ, रूप अलग दरसावै ।
कह भीखा वह जागत जोगी, सहज समाधि लगावै ॥८॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु सब्द कवन गुन गुनी,
तहँ उठत लहरि पुनि पुनी ॥ टेक ॥

*भेदी । † सोना । ‡ बनना और बिगड़ना ।

पाँच घोड़ चंचल घट भीतर,
मन गयंद बड़ खुनी* ॥ १ ॥
ज्ञान अगिन तन कुंड सकल धरि,
जोग जुक्ति करि हुनी† ॥ २ ॥
सुरति निरति अंतर लै लावो,
गगन गरज धुनि सुनी ॥ ३ ॥
जन भीखा तेहिं पदहिं समानो,
धन‡ जोगेस्वर मुनी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो सब महँ निज पहिचानी,
जग पूरन चारिउ खानी ॥१॥
अविगत अलख अखंड अमूरति,
कोउ देखे गुरु ज्ञानी ॥२॥
ता पद जाय कोऊ कोउ पहुंचे,
जोग जुक्ति करि ध्यानी ॥३॥
भीखा धन‡ जो हरि रंग राते,
सोइ है साधु पुरानी ॥४॥

*हाथी रूपी मन बड़ा खूनी है। †होम । ‡धन्य ।

# ॥ बिनती ॥

॥ शब्द १ ॥

प्रभु जी करहु अपनो चेर ।
मैं तौ सदा जनम को रिनिया, लेहु लिखि मोहिं केर ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ मोह यह, करत सबहिन जेर ।
सुर नर मुनि सब पचि पचि हारे, परे करम के फेर ॥२॥
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, ऐसे ऐसे ढेर ।
खोजत सहज समाधि लगाये, प्रभु को नाम न नेर ॥३॥
अपरंपार अपार है साहब, होय अधीन तन हेर ।
गुरु परताप साध की संगति, छुटै सो काल अहेर* ॥४॥
त्राहि त्राहि सरनागत आयो, प्रभु दरवो† यहि बेर ।
जन भीखा को उरिन कीजिये, अब कागद जिन हेर ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

प्रभु जी नहिं आवत मोहिं होस ।
राम नाम मन में नहिं आवत काकर करौं भरोस ॥१ ।
माला तिलक बनाय बहुत बिधि बिन बिस्वास कै तोस‡ ।
सुमिरन भजन साँच नहिं कीन्हो मन माने को पोस ॥२॥
जोग जुक्ति गुरु ज्ञान ध्यान में लगै तजै तन जोस ।
यह संसार काम नहिं आवै जैसे तृन पर ओस ॥३॥
खोजत सब ..ोड़ अंत न पावै काला मैं का कोस§ ।
आतम राम सरूप निकट हीं माल सुंदर बड़ टोस ॥४॥

---

*शिकार। †दया कीजिये। ‡सामान। §अहं लिये हुए मालिक को ढूढ़ते हैं इस से उस तक नहीं पहुंचते-रास्ता काला कोस अर्थात बहुत लंबा हो जाता है।

भीखा को मन कपट कुचाली दिन दिन होइ फरमोस*।
कारन कवन सब्द होइ मेला यही बड़ा अपसोस ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

अस करिये साहब दाया ॥टेक॥
कृपा कटाच्छ होइ जेहि तें प्रभु, छूटि जाय मन माया॥१॥
सोवत मोह निसा निस बासर, तुमहीं मोहिं जगाया॥२॥
जनमत मरत अनेक बार, तुम सतगुरु होय लखाया॥३॥
भीखा केवल एक रूप हरि, ब्यापक त्रिभुवन राया॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

सरनागत दीन दयाला की,
प्रभु करु आयसु† प्रतिपाला की ॥ टेक ॥
जो जिय महँ निस्चै आवै,
तौ संक‡ कर्म नाहिं काला की ॥१॥
ज्ञान ध्यान कहा जोग जुक्ति है,
चीन्ह तिलक अरु माला की ॥ २ ॥
जा पर होहु दयाल महा प्रभु,
धन्य भाग तेहि ताला§ की ॥ ३ ॥
पिता अनादि कृपा करिकै,
अपराध छिमौ निज बाला की ॥ ४ ॥
भीखा मन परलाप‖ बड़ा
कहि साँच बजावत गाला की ॥ ५ ॥

* फ़रामोश, भूल । † आज्ञा । ‡ शंका, डर । § भाग्य, तक़दीर ।
‖ बकबाद ।

॥ शब्द ५ ॥

यार हो हँसि बोलहु मोसों,
भरम गांठि छूटै प्रभु तोसों ॥ १ ॥
पालन करि आये मो कहँ तुम,
खाय जियाय किये घर पोसे ॥ २ ॥
बचन मेटि मैं कहौं गरज बसि,
दरदवंद प्रभु करौ न गोसो* ॥ ३ ॥
हो करता करमन के दाता,
आगे बुधि आवत नहिं होसो ॥ ४ ॥
तुम अंतरजामी सब जानो,
भीखा कहा करहि अपसोसे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

दीजै हो प्रभु बास चरन में, मन अस्थिर नहिं पास ॥१॥
हौं सठ सदा जीव को काँचो, नहिं समात उर साँस ॥२॥
भीखा पतित जानि जनि छोड़ो, जक्त करैगो हाँस ॥३॥

॥ शब्द ७ ॥

मोहिं राखो जी अपनी सरन ॥ टेक ॥
अपरम्पार पार नहिं तेरो काह कहों का करन ॥१॥
मन क्रम बचन आस इक तेरी, होउ जनम या मरन ॥२॥
अबिरल भक्ति के कारन तुम पर, ह्वै ब्राम्हन देउँ धरन† ॥३॥
जन भीखा अभिलाख इहै नहिं, चहौं मुक्ति गति तरन ॥४॥

* गुस्सा, या फ़ारसी का लफ़्ज़ गोश जिस का अर्थ कान है। †धरना।

॥ शब्द ८ ॥

प्रभु दीन दयाल दया तु करो,
मन माया को उनमेख* हरो ॥ टेक ॥
बोलत अपरम्पार है साहब,
कपट अविद्या भरम छरो† ।
पेट आन मुख आन बतावत,
यहि जग को परपंच जरो ॥ १ ॥
अधम-उधारन सोक-नसावन,
उदय-करावन नाम धरो ।
त्राहि त्राहि प्रभु सरन तिहारी,
यहि बाना को लाज करो ॥ २ ॥
रमिता राम सकल घट पूरन,
नैनन नूर जहूर झरो ।
भीखा केवल ब्रह्म बिराजत,
आतम फूल सरूप फरो ॥ ३ ॥

॥ शब्द ९ ॥

करुनामय हरि करुना करिये,
कृपा कटाच्छ ढरन ढरिये ॥ टेक ॥
भक्तन को प्रतिपाल करन को,
चरन कँवल हिरदै धरिये ॥ १ ॥
व्यापक पूरन जहाँ तहाँ लगु,
रीतो‡ न कहूं भरन भरिये ॥ २ ॥

---

* कुचाल । † ठग लिया । ‡ ख़ाली ।

अब की बार सवाल राखिये,
नाम सदा इक फर[*] फरिये ॥ ३ ॥
जन भीखा के दाता सतगुरु,
नूर जहूर बरन बरिये ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

ए साहब तुम दीनदयाला ।
आयहु करत सदा प्रतिपाला ॥ १ ॥
केतिक अधम तरे तुम चरनन ।
करम[†] तुम्हार कहा कहि जाला[‡] ॥ २ ॥
मन उनमेख[§] छुटत नहिं कबहीं,
सौच[||] तिलक पहिरे गल माला ॥ ३ ॥
तनिकौ कृपा करहु जेहिं जन पर,
खुल्यो भाग तासु को ताला ॥ ४ ॥
भीखा हरि नटवर[¶] बहु-रुपी
जानहिं आपु आपनी काला[**] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

तुम धनि धनि साहब आपे हो,
तहवाँ पुन्न न पापे हो ॥ टेक ॥
जत निरगुन तत सरगुन साँईं,
केवल तुम परतापे हो ॥ १ ॥

---

* फल । † बख़्शिश । ‡ कहा जा सकता है । § कुचाल । || बदन की सफ़ाई, नहाना वग़ैरह । ¶ नट । ** कला, चरित्र ।

रमिता राम तुम अंतरजामी,
सोहं अजपा जापे हो ॥ २ ॥
अद्वै ब्रह्म निरंतर बासी,
प्रगट रूप निज ढाँपे हो ॥ ३ ॥
चहुं जुग किर्तकिर्त कीयो तुम,
जेहि सुकर* सिर थापे हो ॥ ४ ॥
भीखा सिसु† अवलंब‡ रावरो,
तुमहिं माय अरु बापे हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरु राम नाम कैसे जानों, मन करत बिषै कुटिलाई ।
काम क्रोध मद लोभ मोह तें, सवकस§ कबहुं न पाई ॥१॥
पाप पुन्न जुग‖ बिर्छ लगे हैं जन्म मरन फल पाई ।
डार पात के फिरत फेर में चेतन नाम गंवाई ॥ २ ॥
जग परपंच को जाल पसारो चारिउ खान बझाई ।
सोई बाचै याहि फंद से जेहि आपु से लेहिं छोड़ाई ॥३॥
आरत¶ ह्वै जन बिनय करतु है सरन सरन गोहराई ।
भीखा कहै कुफुर** तब टूटै जब साहब करहिं
सहाई ॥ ४ ॥

---

*जिस के सीस पर तुमने अपना सुन्दर हाथ धरा उसे चारो जुग में कृतार्थ कर दिया । †बालक । ‡सहारा§ । सावकाश । ‖जुगल, दो । ¶दीन । **नास्तिकता ।

# प्रेम और प्रीति

॥ शब्द १ ॥

प्रीति की यह रीति बखानौ ॥ टेक ॥
कितनौ दुख सुख परै देँह पर, चरन कमल कर ध्यानौ १॥
हो चेतन्य बिचारि तजो भ्रम, खाँड़ धूरि जनि सानौ २॥
जैसे चात्रिक स्वाँति बुन्द बिनु, प्रान समरपन ठानौ ॥३॥
भीखा जेहिं तन राम भजन नहिं, काल रूप तेहिं जानौ४॥

॥ शब्द २ ॥

कहा कोउ प्रेम बिसाहन* जाय ।
महँग बड़ा, गथ† काम न आवै, सिर के मोल बिकाय॥१
तन मन धन पहिले अरपन करि, जग के सुख न सोहाय।
तजि आपा आपुहिं ह्वै जीवै, निज अनन्य‡ सु खदाय ॥२॥
यह केवल साधन को मत है, ज्यों गूंगे गुड़ खाय ।
जानहिं भले कहै सो कासों, दिल की दिलहिं रहाय।३॥
बिनु पग नाच नैन बिनु देखै, बिन कर ताल बजाय ।
बिनसरवनधुनिसुनैबिबिधिबिधि,बिनरसनागुनगाय ४
निर्गुन में गुन क्योंकर कहियत, ब्यापकता समुदाय§ ।
जहँ नाहीं तहँ सब कुछ दिखियत, अँधरन की कठिनाय५
अजपा जाप अकथ को कथनो, अलख लखन किन पाय।
भीखा अविगति की गति न्यारी, मन बुधि
चित न समाय ॥ ६॥

---

*मोल लेना, ख़रीदना । †सोच समझ । ‡बे मिलौनी, केवल ।
§सब जगह ।

॥ शब्द ३ ॥

जब छूटै मन उनमेखा* निरदोखा सो ॥टेक॥

जग जानत अउरा बउरा,
तेहिं राग नहीं कहुं दोषा, जन मोषा† सो ॥१॥

वा कि गति बिपरीत सकल है,
नर कपूत कर लेखा, अस जोखा सो ॥ २ ॥

कहत सबै यह पेट लागि‡,
कला करत धरि भेषा, तन पोषा सो ॥३॥

सो अपने साहब सों राजी,
प्रेम भक्ति कै रेखा, बड़ जोखा सो ॥ ४ ॥

हरि भक्तन अमृत फल चाख्यो,
पाइ गयो कहुं सेखा§, सुठि‖ चोखा सो ॥५॥

भीखा तेहिं जन की का कहिये,
जिन समझा अलख अलेखा, नहिं धोखा सो ॥६॥

॥ शब्द ४ ॥

पिया मोर बैसल¶ माँझ अटारी, टरै नहिं टारी ॥ टेक॥

काम क्रोध ममता परित्यागल,
नहिं उन सहल जगत कै गारी ॥ १ ॥

सुखमन सेज सुंदर बर राजित,
मिले हैं गुलाल भिखारी** ॥ २ ॥

---

*उपद्रव । †मुक्ति । ‡पेट के निमित्त । §शेख़, गुरू । ‖सुंदर ।
¶बैठा । **माँगता अर्थात भीखाजी को ।

# भेद बानी

॥ शब्द १ ॥

सतगुरु अचरज बस्तु दिखाई, नैन सैन करि
जुक्ति बताई ॥ १ ॥
अबरन बरनन में नहिं आई, मरै जियै आवै
नहिं जाई ॥ २ ॥
सब्द त्रिगुन* कहि सके न सिराई, जहवाँ आपु
निरंजनराई ॥ ३ ॥
सचर अचर जल थल जित देखा, केवल एक
न दोसर भीखा ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

मैं कहूं कौन जो हाल री, रूप अलख देखे बिना ॥टेक॥
जन्मत मरत अनेक बार तन,
फिरि फिरि मारत काल री ॥ १ ॥
जात चलो दम दाम सबै कछु,
नजरि न आवत माल री ॥ २ ॥
बिना मिलन अनमिल साहब सों,
कर मींजत धुनि भाल† री ॥ ३ ॥
थकित भयो मन बुद्धि जहाँ लगु,
कठिन पर्‍यो उर साल री ॥ ४ ॥

---

*बेद बचन । †सिर धुन कर ।

जम्यो* जुगति में गाछ† अनाहद,
धुनि सुनि मिटि जंजाल री ॥ ५ ॥
कली बैठि निज मूल सुरति पर,
लखि जन होत निहाल री ॥ ६ ॥
भीखा आतम फूल अजब,
गुरु राम को नाम गुलाल री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

ऐसो राम कवनि बिधि जानी ।
दृष्टि मुष्टि कबहीं नहिं आवत,
जनम मरन जुग बहुत सिरानी ॥ १ ॥
अगम अगोचर बसत निरंतर,
जा के सीस न पाँव न पानी‡ ।
निर्गुन निर्बिकार सुख सागर,
अपरम्पार अखंडित बानी ॥ २ ॥
ईसुर के केतहि§ ईसुरता,
साहब अविगत अकथ कथानी ।
अगह अकह अनभव अन मूरति,
थाके सकल खोजि मुनि ज्ञानी ॥ ३ ॥
अलख को लखे अदेख को देखे,
व्यापक पूरन चारिउ खानी ।
निरंकार निरुपाधि निरामय,||
भीखा रंग न रूप निसानी ॥ ४ ॥

---

* उगा । † पेड़ । ‡ हाथ । § बहुत । || निर्मोया ।

॥ शब्द ४ ॥

कोउ लखि रूप सब्द सुनि आई ॥ टेक ॥
अविगत रूप अजायब बानी, ता छबि का कहि जाई॥१॥
यह तौ सब्द गगन घहरानो, दामिनि चमक समाई॥२॥
वह तौ नाद अनाहद निसदिन, परखत अलख सोहाई॥३॥
यह तौ बादर उठत चहूंदिसि, दिवसहिं सूर छिपाई ॥४॥
वह तौ सुन्न निरंतर धुधुकत, निज आतम दरसाई॥५॥
यह तौ झरतु है बूंद झराझर, गरजि गरजि झरिलाई ॥६॥
वह तौ नूर जहूर बदन पर, हरदम तूर बजाई ॥ ७ ॥
यह तौ चारि मास को पाहुन, कबहुं नाहिं थिरताई॥८॥
वह तौ अचल अमर की जै जै, अनंत लोक जस गाई॥९॥
सतगुरु कृपा उभै* बर पायो, स्रवन दृष्टि सुखदाई॥१०॥
भीखा सो है जन्म सँघाती, आवहि जाहि न भाई॥११॥

॥ शब्द ५ ॥

ए हरि मीत बड़े तुम राजा
ब्यापक जहाँ तहाँ लगु तुम्हरे,
हुकुम बिना कहुं सरे न काजा ॥ टेक ॥
तिरगुन सूबा मौज बनाया, भिन्न भिन्न तहँ फौज रखाया।
हय† गय‡ रथ सुखपाल बहूता, माया बढ़ी करै को कूता।
कहत बनै नहिं अनघड़ साजा, ए हरि मीत० ॥१॥

---

*दो। †घोड़ा। ‡हाथी।

चारोदिसाकनातगड़ाहै,असमान तंबू बिन चोबखड़ाहै।
पानी अगिनि पवन है पायक, जो कछु काम सो करिबे लायक।
अनहद ढोल दमामा बाजा, ए हरि मीत ०॥ २॥
तारागन पैदल समुदाई, अज्ञा ले जहँ तहँ चलि जाई।
चाँद सूर निस बासर आई, आवतजातमसालदिखाई।
ध्रुव कियो थीर अचल मन धाजा*, ए हरि मीत० ॥३॥
सहजादा है मन बुधि काला, कीन्हेव सकल जगत पैमाला।
काल बड़ा उमराव है भारी, डरे सकल जहँ लग तन धारी।
तुम्हरो दंड सकल सिर ताजा, ए हरि मीत० ॥ ४॥
सत्त सतोगुन मंत्र दृढ़ावा, ज्ञान आदि दे पुत्र बुलावा।
अमल करहु तुम जग में जाई, फेरहु केवल राम दोहाई।
नाम प्रताप प्रकास को छाजा, ए हरि मीत० ॥५॥
चतुरंगिनि उज्जल दल देखा, जोग बिराग बिचार को लेखा।
छिमा सील संतोष को भाऊ, परमारथ स्वारथ नहिं चाऊ।
स्वारथ रत पर पारहु गाजा†, ए हरि मीत० ॥६॥

*ध्वजा। †जो स्वार्थी है उस पर बिजली गिराओ।

रज गुन तम गु कीन्ह्यो मेला, सबहीं भयो सतो-
गुन चेला।
हम तुम आइ कछू नहिं कीन्हा, अज्ञा ईस सीस
पर लीन्हा।
मरत बहुत डर आपु की लाजा, ए हरि मीत ०॥ ७॥
पठयौ काम क्रोध मद लोभा, जातें कीन्ह सकल
तन छोभा।
केवल नाम भजै सो बाचै, नहिं तौ और सकल
मन काचै।
भीखा तुम बिन कौन निवाजा*, ए हरि मीत बड़े
तुम राजा॥ ८॥

॥ शब्द ६॥

बसु पुरुष पुरान अपारा, तब नहिं दूसर बिस्तारा ॥टेक
हफ्तमें† इच्छा अविगत बोलै, सत्त सब्द निरधारा ॥१॥
छठयें ओअं अनहद तुरिया, पँचयें अकासहिं भारा ॥२॥
चौथे बायु सुन्न को मेला, तीजे तेज बिचारा॥ ३ ॥
दूजे अप‡ बीजा पैदाइस, कीन्ह चहै संसारा॥ ४॥
भीखा मूल प्रथी को भाजन§, ता में ले सब धारा॥ ५।

॥ शब्द ७॥

बोलता साहब लो लो लोई, मिथ्या जगत सत्य इक वोई १
नाम खेत जन प्रीति कियारी, जीव बीज तापैर‖ पसारी २
सेवा मन उनमुनी लगाया, लो लो जा जामलि¶ गुरदाया ३

---

*दया या पर्वरिश करना। †सातवाँ। ‡पानी। §बरतन। ‖छींट कर। ¶उगी, जमा।

जोग बढ़नि जल बिषै दवाई, बिरही अंग जरद होइ आई ॥ ४ ॥
गगन गवन मन पवन फ़ुराई, लोलो रंग परम सुखदाई॥५
सुरति निरति कै मेला होई, नाद औ बिंद एक सम सोई६
बाजत अनहद तूर अघाई, लोलो सुनत बहुत सुख पाई ७
अनुभव बालि* उदित उजियारा, आदि अंत मध एक निहारा ॥ ८ ॥
सुद्धसरूप अलख लख पाई, लोलो दरसन की बलि जाई ॥ ९ ॥
पाप पुन्न गत† कर्म निनारा, केवल आतम राम अधारा ॥ १० ॥
भीखा जेहिं कारन जग आये, लोलो जन्म सुफल करि पाये ॥ ११ ॥

## आरती

(१)

गुरु गोबिंद की करत आरती ॥ १ ॥
दिन दिन मंगल सद बिहारती ॥ २ ॥
प्रेम प्रीति तन मनहिं गारती ॥ ३ ॥
जोग ध्यान दीपक सँवारती ॥ ४ ॥
बाती सुत सनेह बरि‡ डारती ॥ ५ ॥
सतगुरु बिरह अगिन उद्गारती§ ॥ ६ ॥

*बाल या फल । †रहित । ‡बट कर । §जगाती, बालती ।

पाप पुन्न सब करम जारती ॥ ७ ॥
भाव थार भक्ती सों धारती ॥ ८ ॥
अभि अंतर हरि नाम उचारती ॥ ९ ॥
तजि बिषया रति चरन निरहती ॥ १० ॥
भीखा आरति सहज उतारती ॥ ११ ॥

( २ )

हरि गुरु चरन किये परनाम ।
आरत जन पावहिं बिसराम ॥ १ ॥
सतगुरु किरपा हरि को नाम ।
भजन आरती आठो जाम ॥ २ ॥
सब्द प्रकास तिल के अस्थाम* ।
घट घट गुरु गोबिंद को धाम ॥ ३ ॥
ब्रह्म सरूप गोर नहिं स्याम ।
सुद्ध अकास नेरा† नहिं लाम ॥ ४ ॥
सतगुरु जुक्ति करायो ठाम ।
भीखा आला दृष्टि मुकाम ॥ ५ ॥

( ३ )

नौबति ठाकुरद्वार बजावै,
पाँचो सहित निरति करि गावै ॥ १ ॥
सतगुरु कृपा जाहि तेहि पासे,
आरति करत मिलन की आसे ॥ २ ॥

---

*स्थान । †पास ।

ज्ञान दीप परकास सोहाती,
दिव्य दृष्टि फेरत दिन राती ॥ ३ ॥
जाचक सुरति निरति पहँ जावो,
दान सरूप आतमा पावो ॥४॥
भीखा एक दुइत का भयऊ,
सर्प समाय रज्जु महँ गयऊ ॥ ५ ॥

( ४ )

आरति बिनै करत हरि भक्ता ।
सुजस रैन दिन सोवत जगता ॥ १ ॥
चित चेतन्न ब्रह्म अनुरक्ता* ।
धुनि सुनि मगन जीव आसक्ता† ॥ २ ॥
सुद्ध सरूप नूर लखि लगता ।
नाम समुद्र लहरि महँ पगता ॥ ३ ॥
बायें सो दहिने पछि सोइ अगता‡ ।
अर्ध उर्ध सम घटत न बढ़ता ॥ ४ ॥
सतगुरु ज्ञान भक्ति को दाता ।
पावत भीख भिखा जोइ जाता ॥ ५ ॥

## ॥ बारह मासा ॥

कोटि करै जो कोय, सतगुरु बिन प्रभु ना मिलैं ॥ टेक ॥
मास असाढ़ जन्म सुभ, बादर अलप सुभाव ।
करम भरम जल अंतर, प्रभु सों परल दुराव§ ॥ १ ॥

*अनुराग से परिपूर्ण । †बिह्वल । ‡पीछे सोई आगे । §दूरी ।

सावन सहज सोहावन, गरजै औ घहराय ।
बुंद झलाझलि झलकै, हरि बिनु कछु न सोहाय ॥ २ ॥
भादों भवन भयंकर, सुनि रैनी उतपात ।
कहिं कहिं दमकै दामिनी, डरपत है बहु गात ॥ ३ ॥
मास कुवार अवधि दिन, बरखा बरखि सिराय ।
नैन निमिख* नाहीं लगै, सिर धुनि धुनि पछिताय ॥४॥
कातिक मास उदासित, सुरति चललि परदेस ।
निरति मिलन के कारन, कब धौं मिटहिं कलेस ॥५॥
अगहन मास जु ध्यान धन, खेती करत किसान ।
नाम बीज लव लावै, बोवै सो लवै† निदान ॥ ६ ॥
पूस जु मास हवाल है, जाड़ जाड़ नियराय ।
ओढ़न जब हरि मिलन को, आनँद प्रेम अघाय ॥७॥
माघ मास जु बसंत रितु, फुल्यो काया बन झारि ।
सगुन सँजोग बिबिधि तन, मिलि है देव मुरारि ॥८॥
फागुन मास जु राग रँग, गुरु के बचन अस्थूल ।
नाद बिंद इक सम भयो, जीव सीव करि मूल ॥ ९ ॥
चैत मास निर्मल तनै, द्रुम‡ नव पल्लव§ लेत ।
रूप अरुन‖ मृदु¶ सकल है, निज आतम छबि देत ॥१०॥
बैसाख मास फल पूरन, जोग जुक्ति प्रनयाम** ।
दृष्टि उलटि कै लगि रहो, निसु दिन आठो जाम ॥११॥
जेठ बिषम तप भजन को, केवल ब्रह्म बिचार ।
कह भीखा सोइ धन्न है, जेकर नाम अधार ॥ १२ ॥

---

*छिन मात्र । †काटै । ‡पेड़ । §पत्ती । ‖लाल । ¶कोमल । **प्राणायाम ।

## ॥ हिँडोलना ॥

हिँडोला माया ब्रह्म को सँग, नाम बोलता अंग ॥टेक॥
स्वारथ परमारथ दोऊ, गाड़ो खंभ बनाय।
निर्बिर्ति औ परबिर्ति यहि बिधि, डोरि बाँधि बँधाय॥१॥
झूलहिं संत असंत दोउ, अज्ञ तज्ञ* विचार।
ये झूलहिं बिषया रत, वे नाम के हितकार ॥ २ ॥
ये झूलहिं काम क्रोध सँग, मोर तोर अघाय।
वे झूलहिं जोग जुक्ति से, मन ज्ञान ध्यान लगाय ॥३॥
ये झूलहिं सुत दारा सहित, मगन बारम्बार।
वे झूलहिं सुद्ध सरूप सँग, दिन दिन रँग उजियार॥ ४ ॥
ये झूलहिं जग जंजाल डूबे, फिकिरि उद्दम लाय।
वे झूलहिं द्वैत मिटाय यहि बिधि, छीर नीर बिलगाय ॥५॥
ये झूलहिं प्रन औ पच्छ लिहे, जाति कुल ब्यौहार।
वे झूलहिं अबरन बरन तजि, सतगुरु चरन आधार॥६॥
ये झूलहिं कोट झराय खंदक, सराजाम सँवारि।
वे झूलहिं इंद्री करत निग्रह, सुरति निरति सँभारि॥७॥
ये झूलहिं सब हथियार हय गय†, लाग बाग तुमार‡।
वे झूलहिं प्रान अपान इक ह्वै, नाद के झनकार ॥ ८ ॥
ये झूलहिं पूत सपूत के सँग, मान बड़ाई जोहि।
वे झूलहिं आतम राम मिलि कै, छोट सब से होहि ॥९॥
ये झूलहिं पाप औ पुन्न फिरि फिरि, मरन धरि औतार।
वे झूलहिं भीखा त्यागि तन को, आपु मिलि करतार ॥१०

---

* अज्ञान और ज्ञान। † घोड़ा हाथी। ‡ तूमार, फैलाव।

( २ )

सतगुरु नावल सब्द हिँडोलवा, सुनतहिं मन अनुरागल।१।
झूलत गुनत रुचित भावल, जियरा चकित उठि जागल।२।
करम भरम सब त्यागल कपट कुचालि मन भागल ॥ ३॥
झूलत चेतन चित लागल, अनहद धुनि मन रातल ॥ ४॥
भीखा जो याहि मत मातल, पासा दाँव पायो तिनमाँगल५

( ३ )

आदि मूल इक रुखवा* ता में तिनि† डार ।
ता बिच इक अस्थूल है साखा बहु बिस्तार ॥ १ ॥
अबरन बरन न आवही छाया अपरम्पार ।
माया मोह व्यापक भयो झूले वार न पार ॥ २ ॥
सतगुरु नावल हिंडोलवा सुरति निरति गहि सार
झूलहिं पाँच सोहागिनि गावहिं मंगलचार ॥ ३ ॥
पौढ़यो अगम हिंडोलवा सत्त सब्द निर्धार ।
झुलत झुलत सुख ऊपजै केवल ब्रह्म बिचार ॥ ४ ॥
अब की बार यह औसर मिलै न बारम्बार ।
फिर पाछे पछिताइबो देँह छुटे बेकार ॥ ५ ॥
जोग जुक्ति कै हिँडोलवा अनहद झनकार ।
जो यहि झुलहि हिंडोलवा ताहि मिलहि करतार ॥ ६ ॥
आवा गवन निवारहू फिरि न होय औतार ।
साधु संगति को मेला झूलहिं नाम अधार ॥ ७ ॥

*पेड़ । †तीन ।

डार पात फल पेड़ में देख्यो सकल अकार ।
भीखा दूसर गति भयो सुद्ध सरूप हमार ॥ ८ ॥

( ४ )

जोग जुक्ति के हिंडोलवा गुरु सहज लखावल ॥ १ ॥
चाँदै राखि सूर पौढ़ावल* पवन डोरि धै पावल ॥ २ ॥
अर्ध उर्ध मुख पावल पुलकि पुलकि† छबि भावल॥ ३ ॥
गगन मगन गुन गावल सुरति निरति में समावल ॥ ४ ॥
भीखा यहि बिधि मन लावल आतम दरसावल ॥ ५ ॥

## ॥ बसंत ॥

( १ )

जब गुरु दयाल तब सत बसंत ।
यहि सिवाय मत है अनंत ॥ १ ॥
श्री पंचमी है पाँच नारि ।
सम गावहिं इक सुर धमारि ॥ २ ॥
धुनि अकास भरि रहलि छाय ।
सुनत मगन उर नहिं समाय ॥ ३ ॥
धन्न भाग जा के यह सँजोग ।
मिल्यौ पदारथ अनँद भोग ॥ ४ ॥
जीव बसायो ब्रह्म अंस ।
बकुला तैं भयो परमहंस ॥ ५ ॥
माघ मकर तन सुफल जानि ।
मिल्यौ पदारथ नाम खानि ॥ ६ ॥

---

* बाईं स्वाँसा रोक कर दहिनी चलाई । † मगन होकर ।

नाद बिंद को जूह* होय ।
वे साहब ये सेवक जोय ॥ ७ ॥
सुन्न मँडल घर भयो भोर ।
सुद्ध सरूप चंद चित चकोर ॥ ८ ॥
भीखा मन मुक्ता चुगत आग ।
गुरु गुलाल जी के चरन लाग ॥ ९ ॥

( २ )

खेलत बसंत रुचि अलखराय ।
रहनि निरंतर समय पाय ॥ १ ॥
नाम बीज फैलाव कीन्ह ।
जगत खेत भरि पबरि† दीन्ह ॥ २ ॥
जाम्यौ आँक‡ अकार नेह ।
दिन दिन बढ़त करम सँदेह ॥ ३ ॥
पेड़ एक लगे तीन डार ।
ऊपर साखा बहु तुमार§ ॥ ४ ॥
कली बैठि गुरु ज्ञान मूल ।
बिगसि बदन फूलो अजब फूल ॥ ५ ॥
फल प्रापत भयो रितु नसाय ।
परम जोति निज मन समाय ॥ ६ ॥
पक्क भयो रस अमी खानि ।
चाखत दृष्टि सरूप जानि ॥ ७ ॥

*समूह । †पबारना, छीटना । ‡अंकुर । §तूमार, फैलाव ।

सोई आदि मध अंत सोइ ।
जीव पवन मन रह्यो न कोइ ॥ ८ ॥
सब्द ब्रह्म भयो सुन्न लीन ।
भीखा राति न तहवाँ दीन* ॥ ९ ॥

( ३ )

चेतत बसंत मन चित चेतन्य ।
जोग जुगति गुरु ज्ञान धन्य ॥ १ ॥
उरध पधास्यो पवन घोर ।
दृष्टि पलान्यो† पुरुब ओर ॥ २ ॥
उलटि गयो थकि मिटलि दाह‡ ।
पच्छिम दिसि कै खुललि राह ॥ ३ ॥
सुन्न मंडल में बैठु जाय ।
उदित उजल छबि सहज पाय ॥ ४ ॥
जोति जगामग झरत नूर ।
ह्वाँ निसु दिन नौबति बजत तूर ॥ ५ ॥
झलक झनक जिव एक होय ।
मत प्रान अपान को मिलन सोय ॥ ६ ॥
रूह अलख नभ फूल्यो फूल ।
सोइ केवल आतम राम मूल ॥ ७ ॥
देखत चकित अचर्ज आहि ।
जो वह सो यह कहौं काहि ॥ ८ ॥
भीखा निज पहिचान लीन्ह ।
वह साबिक§ ब्रह्म सरूप चीन्ह ॥ ९ ॥

*दिन । † तैयार किया, कसा । ‡तपन । § प्राचीन ।

# होली

(१)

होरी सो खेलै जा के सतगुरु ज्ञान बिचार।
यहि सिवाइ जो और करतु है ता को जन्म खुआर॥१॥
इँगल पिंगल है सुन्न मँटानो सुखमन भयो उँजियार।
नूर जहूर बदन पर झलकत, बरखन अघर अधार॥२॥
बाजत अनहद घंटा तहँ धुनि, अविगत सब्द अपार।
पुलकि पुलकि मन अनुभव गावत, पावत अलख दिदार३
अजर अबीर कुमकुमा केसरि, उमगो प्रेम पोखार* ।
राम नाम रस रंग भयो, गत काम क्रोध हंकार॥ ४॥
व्यापक पूरन अगम अगोचर, निज साहब बिस्तार।
भीखा बोलत एक सभन में, है जग सकल हमार॥५॥

(२)

जग नाम प्रकास अकार धरत जड़, आतम राम खेले होरी।
कामक्रोधमदलोभग्रासिननर, आपु तेँ आपु नरक बोरी १
तजि बिषया रत भक्ति भाव जहँ, ज्ञान ध्यान रस रँग घोरी।
संत सभा चोआ अरु कुमकुम, प्रेम बचन छिरकत होरी२
सतगुरु हाथ बिकाय लियो, प्रभु दान दियो बंधन छोरी।
जोग जुक्ति अभ्यास भख्यौ, लै अर्ध उर्ध सुखमन ..री॥३
सुरति निरति लव लीन भयो, सम जीव सीव† दोनों जोरी
ब्रह्मसरूप अनूप दृष्टि भरि, निज प्रति देखि मिलो गोरी।४

*हौज़। †जिसकी सेवा करता है, स्वामी।

अगम अगोचर रूप झलाझलि, सोहं तार लगोरी ।
कहैं भीखा मेरो ऐसो साहब,मन माया अँखुवा* तोरी ॥५॥

( ३ )

ए हो होरी गाई, मधुर मधुर सुर राग चढ़ाई ॥टेक॥
समय सोहावन देखत मानो,
गयो बसंत फाग रितु आई ॥ १ ॥
तन मन धन चरनन पर वारो,
नाम प्रताप गगन धुनि छाई ॥ २ ॥
सुनत सुनत मन मगन भयो है,
सुरति निरति मिलि रास बनाई ॥ ३ ॥
हैाँ† तो सरनागत माँगत हैा,
अब दीजै प्रभु संत दोहाई ॥ ४ ॥
जल थल जीव जहाँ लगि देखाै,
मन को बोध नहीं ठहराई ॥ ५ ॥
काया गढ़ के गगन भवन में,
धुधुकि धुधुकि धुन नाम सुनाई ॥ ६ ॥
भीखा को मन भ्रमत देखि कै,
गुरु गुलाल जी पंथ चढ़ाई ॥ ७ ॥

( ४ )

इक पुरुष पुरान चहूं जुग में,
मिलि आतम राम खेलै होरी ।

*अंकुर । †मैं ।

रंग लगो फगुवा रस बसि,
भयो माया ब्रह्म दुनों जोरी ॥ १ ॥

जग परिपंच करम अरुझे नर,
सबै कहत मोरी मोरी ।

नाम पदारथ भूलि गयो,
गल फाँस परी भ्रम की डोरी ॥ २ ॥

कोउ जोग जुक्ति रस भेद पाइ कै,
सुरति निरति लै रँग बोरी ।

बाजत अनहद ताल पखावज,
उमग्यौ प्रेम अनन* खोरी† ॥ ३ ॥

सतगुरु सब्द अबीर कुमकुमा,
भाव भर्यौ झोरी झोरी ।

भीखा दिब्य दृष्टि करि छिरकत,
पलकन नूर चुवत ओरी‡ ॥ ४ ॥

( ५ )

मन में आनँद फाग उठो री ॥ टेक ॥

इँगला पिँगला तारी देवै, सुखमन गावत होरी ॥ १॥
बाजत अनहद डंक§ तहाँ धुनि, गगन में ताल परो री २
सतसंगति चोवा अबीर करि,दृष्टि रूप लै घोरी ॥ ३ ॥
गुरु गुलाल जी रंग चढ़ायो, भीखा नूर भरो री ॥ ४ ॥

*एक ही का जिस में दूसरे की गुंजाइश नहीं है । †गली ।
‡ओलती, पानी की धार जो छत से गिरती है । §डंका ।

( ६ )

होरी खेलन जाइये, सत सुकरित साथ लगाई ।
यहि माया परपंच फागु में, मति कोइ परे भुलाई ॥१॥
सतगुरु ज्ञान अबीर रंग लै, हद भरि दमहिं चलाई।
पाँच पचीस सखी जहं चाचरि, गावहिं अनहद
डंक बजाई ॥ २ ॥
सुनत मगन मन पवन खसित भयो, सुरति
निरति अरुझाई ।
इँगल पिंगल पिचुकारी छोड़हिं, सुखमन रंग भिंजाई॥३
ब्रह्म सरूप चेतन्न नीर लै, दुरमति मैल बहाई ।
भीखा ता छबि कहहि कौन मुख, एकौ जुक्ति न आई ॥४

( ७ )

आनँद उठत झकोरी फगुवा, आनँद उठत झकोरी।टेक।
अनहद ताल पखावज बाजे, मनमत राग मरोरी॥१॥
काया नगर में होरी खेल्यो, उलटि गयो तेहिं खोरी॥२
नैनन नूर रंग भरि उमग्यौ, चुअत रहत निज ओरी॥३
गुरु गुलाल जी दाया कीन्हो, भीखा चरन लगो री ॥४॥

( ८ )

हरिनाम भजन हठ कीजै हो, स्वाँसा ढरकत रंग भरी
हो होइ समय जात मानो गनि गनि, सिर पर
ठोकत काल घरी ॥ टेक ॥
फगुवा जग भकुवा खेलतु है, स्वारथ रत होरी परी।
परमातम चेतन्न आतमा आइ सरूप गयो छरी* ॥१॥

---

*छल जाना ।

कहत है बेद बेदांत संत को, साँच भक्ति बिनु भव तरी।
परमारथ गुरु ज्ञान अनादर, लोक लाज कुल को डरी॥२॥
जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन, तन पर
आय चढ़ी जरी ।
बात कफ पित कंठ गहो है, नैनन नीर लगो झरी ॥३॥
बिसरयो गथ* अब सान बुझावत, जहँ जहँ बस्तु रही धरी।
हाहाकार करत घर पुर जन, थकित भयो का कहि करी॥४
चतुर प्रबीन बैद कोउ आवो, हाथ उठा देखो नरी†।
भीखा बूझत कहत सबै अब, राम कृस्न बोलो हरी ॥५॥

( ९ )

जाके केवल नाम अधार होरी रंग भरी ।
दुबिधा भाव पखंड तजो है सतगुरु बचन अधार ।
यहि बिधि सुद्धि करी ॥ १ ॥
तन मन वारि चरन पर दीन्हो पवन जोर बरियार।
जोग जुक्ति अवराध कठिन सुठि निपट खरग कै धार।
सनमुख लरी मरी ॥ २ ॥
सुन्न रैन बिच भोर भयो उठि चेतन करत बिचार।
प्रेम पदारथ प्रगट भयो जब ज्ञान अगिन धधकार
देखत जरो बरी ॥ ३॥
आतम राम अखंडित पूरन ब्रह्म सरूप अकार ।
भीखा भाग कहाँ लगि बरनौं जाहि मिले करतार।
धन्य सोई घरी ॥ ४॥

*बोल । †नाड़ी ।

( १० )

धनि फाग खेलन सो जाय, निज पिया पाइ कै ।
नाहीं तै। बैठि तेवान* करै वह रंग करम दुखदाय ।
लावो न भुलाइ कै ॥ १ ॥
भरम भयंकर वार पार नहिं, कर मींजत पछिताय ।
हर दम उठत मरोर हिये, जनु कहे कोउ पिय तुम आय ।
धरो पगु धाइ कै ॥ २ ॥
यहि अंतर सुपना निसु बाती, सोहं आपु जनाय ।
बूझत अरथ बिचार यहै सखि, आपा पति अपनाय ।
मिलो मुसकाइ कै ॥ ३ ॥
सतगुर धन्य जो कह्यो अगुवने, सो अब कृपा जनाय ।
भीखा अलख को लखो कहा, वहँ मन बुधि चित न समाय ।
गावो का बजाइ कै ॥ ४ ॥

## कबित्त

( १ )

कोउ जजन† जपन कोउ तीरथ रटन,‡
ब्रत कोउ बन खंड कोउ दूध को अधार है ।
कोउ धूम पानि§ तप कोउ जल सैन लेवै,
कोउ मेघडम्बरी‖ सो लिये सिर भार है ॥

---

*फ़िक्र । †यज्ञ । ‡घूमना । §धुवाँ पीना अर्थात गाँजा पीना ।
‖बड़ा छाता ।

कोउ बाँह को उठाय ढढ़ेसुरी कहाइ जाय,
कोउ तौ मवन* कोउ नगन† बिचार है।
कोउ गुफाही में बास मन मोच्छही की आस,
सब भीखा सत्त सोई जा के नाम को अधार है॥

( २ )

कोउ प्रानायाम जोग कोउ गुन गावै लोग,
कोउ मानसिक पूजा करे चित चेतना।
कोउ गीता भागवत कोउ रामायन मन,
कोउ होम यज्ञ करे बिधि बेद कहे जेतना॥
कोउ ग्रहन में दानकोउगंगा अस्नान,
कोउ कासी ब्रह्मनाल‡ वे फलही के हेतना§।
भीखा ब्रह्म-रूप निज आत्मा अनूप,
जो न खुल्यो दिव्य दृष्टि खाली कियो
भ्रम एतना॥

( ३ )

राम नाम जाने बिना बृथा है सकल काम,
जैसे नटिनी को नाट‖ पेखनी को पेखना¶।
गुरु जी से ज्ञान लेवे चरनौं मैं चित्त देवे,
मानुष की देही येही जीवन को लेखना॥

*चुप। †नंगे। ‡काशी में एक अस्थान का नाम। §अभिप्राय से। ‖चरित्र। ¶देखने भर का खेल है।

ताखी* औ तिलक भाल सेल्ही औ तूमर† माल
मोर पच्छ पच्छ बाद सुद्ध रूप भेखना।
भीखा दिब्य दृष्टि आपु जपत अजपा जाप,
आपुही को आपु सो तो आपुही में देखना॥

( ४ )

पुरुष पुरान आदि दूसरो न माया बादि,
बोले सत्त सब्द जा में त्रिगुन पसार है।
बीज बढ़ो है तुमार‡ चर अचर बिचार,
ता में मानुष सचेत औ चेतन अधिकार है॥
सतगुरु मत पाय निज रूप ध्यान लाय,
जनम सुफल साँच ता को अवतार है।
गगन गवन करै अनहद नाद भरै,
सुंदर सरूप भीखा नूर उँजियार है॥

( ५ )

जा के ब्रह्म दृष्टि खुलो तन मन प्रान तुलो,
धन्य सोई संत जा के नाम की उपासना।
ज्ञानिन में ज्ञान बोई अनुभव फल जोई,
तजै लोक लाज जा में काल जाल साँसना॥
प्रेम पंथ पग दियो उरध में घर कियो,
मन निर्गुन पद छुटै जग बासना।
जोग की जुगति पाय सुरति निरति लाय,
नाद बिंद सम भीखा लायो दृढ़ आसना§॥

*साधुवाँ की नोकदार टोपी। †तुम्बा। ‡बहुत। §आसन।

( ६ )

आदि अंत मध्य एक नाद बिंद सम पेख,
सब घट सुद्ध ब्रह्म दीखत ज्यौं अकास है ।
काहे को भरम करै जनमि जनमि मरै,
भजत न हठ करि जौ लौं तन साँस है ॥
निज सुख येही जानो दुबिधा न भाव आनो,
अलख अलेख देखो आपुही मैं बास है ।
चित्त ज्यौं चकोर लेवै चंद्रमा को दृष्टि देवै,
आत्मा प्रकासी ज्ञान भीखा निज पास है ।

( ७ )

ज्ञान अनुमान करि चीन्ह ले अमान धरि,
गुरु परताप खुलो भरम कपाट है ।
चाँद सूर एक सम सुरति मिलाय दम,
इंगल पिंगल रंग सुखमन माट है ॥
पूरब पवन जोग पच्छिम की राह होय,
गंग जमुन संगम तहँ त्रिकुटी को घाट है ।
प्रान औ अपान असमान ही में थिर होवे,
भीखा सब्द ब्रह्म को अकास सुन्न हाट* है ॥

( ८ )

भूलो हाट ब्रह्म द्वार काम क्रोध अहंकार माहिं,
रहत अचेत नर मन माया पागो है ।

*बाज़ार ।

अलख अलेख रूप आत्मा है भेख धरे,
कस न पुलकि* जीव ताही पंथ लागो है ॥
अकथ अगाध बोई अनुभव फल जोई,
निसु महा भोर मानो सोय उठि जागो है ।
बाजै अनहद मारू उभै दल मोच्छ झारू,
सूरा खेत माँड़ि रहो भीखा कूर† भागो है ॥

( ९ )

कूर† है खजूर छाया संचै‡ बपु§ झूठी माया,
ग्रसइ रहत यह जगत को हाल है ।
मन परतीत करै सत औ संतोष धरै,
नाम जपै हर दम दमहिं को माल है ॥
साधन को संग जहाँ नाना परसंग तहाँ,
अर्थ नवीन सुनि जागो भाग भाल‖ है ।
धन्य आपु भेद पाय दीन्हो और को बताय,
भीखा गुरु जीव राम नाम तौ गुलाल है ॥

( १० )

बालक सौं भयो ज्वान दारा सुत ध्यान प्रान,
समय गये तें फल लागो भूख रूख है ।
करम धरम जप तीरथ रटत¶ तप,
राम नाम जाने बिना कन** तुख†† खूख‡‡ है ॥

*उमंग से । †कादर । ‡ रक्षा करता है । §शरीर । ‖माथा । ¶घूमता है । **छाँटन । †† भूसी । ‡‡छूछी ।

बिषै बिभव बिलास तूल बड़ा आस पास,
सत औ संतोष नाहिं सबै सुख दुक्ख है ।
जगत समुद्र माहिं नर तन नाव परी,
भीखा कनहरि* गुरु पार मुक्ख मुक्ख है ॥

( ११ )

राम जी सौं नेह नाहीं सदा अबिबेक माहीं,
मनुवाँ रहत नित करत गलगौज† है ।
ज्ञान औ बैराग हीन जीवन सदा मलीन,
आत्मा प्रगट आपु जानि ले भा नौज है ॥
साहब सौं कौल छूटी काम क्रोध लोभ लूटी,
जानि कै बँधायो मीठी बिषै माया फौज है ।
साहब की मौज जहाँ भीखा कीन्ह मौज तहाँ,
साहब की मौज जोई सोई मौज मौज है ॥

( १२ )

खुद एक भुम्मि‡ आहि बासन§ अनेक ताहि,
रचना बिचित्र रंग गढ़्यो कुम्हार है ।
नाम एक सोन आस‖ गहना हूँ द्वैत भास,
कहूं खरा खौंट रूप हेमाहिं¶ अधार है ॥
फेन बुदबुद अरु लहरि तरंग बहु,
एक जल जानि लीजै मीठा कहूं खार है ।
आत्मा त्यौं एक जाते** भीखा कहै याहि मते,
ठग सरकार के बटोही†† सरकार कै ॥

---

*पतवार पकड़ने वाला । †हल्ला । ‡मिट्टी । §बरतन । ‖भ्रम ।
¶[illegible] । **एक ही जाति की । ††मुसाफिर ।

( १३ )

एक नाम सुखदाई दूजो है मलिनताई,
जिव चाहहु भलाई तौ पै राम नाम जपना ॥
तात मात सुत बाम* लोग बाग धन धाम,
साँच नाहीं झूठ मानो रैनि कै सुपना ॥
माया परपंच येहि करम कुटिल जेहि,
जनम मरन फल पाप पुन्न तपना ।
बोलता है आप आई जेते औतार कोई,
भीखा सुद्ध रूप सोई देखु निज अपना ॥

( १४ )

निरमल हरि को नाम सजीवन,
धन सो जन जिन के उर फरेऊ ।
जस निरधन धन पाइ संचतु है,
करि निग्रह किरपिनि मनि धरेऊ ॥
जल बिनु मीन फनी† मनि निरखत,
एकौ घरी पलक नहिं टरेऊ ।
भीखा गुंग औ गूड़ को लेखा,
पर कछु कहे बने ना परेऊ ॥

( १५ )

गये चारि सनकादि पिता‡ लोक आदि धाम,
किये परनाम भाव भगति दृढ़ायऊ ।
पूँछ्यो हँसि प्रीति भाव माया ब्रह्म बिलगाव,
बिधि जग ब्यौहारी प्रति उत्तर न आयऊ ॥

*स्त्री । †साँप । ‡ब्रह्मा ।

किये बहुत समास भये अरथ न भास,
हरि हरि सुमिरन ध्यान आरत सुनायऊ ।
प्रभु हस तन लियो द्विज दरसन दियो,
भीखा अज* सनकादि कर जोरि माथ नायऊ ॥

## ॥ रेख़ता ॥

(१)

पाप औ पुन्न नर झूलत हींडोलना,
ऊँच अरु नीच सब देह धारी ।
पाँच अरु तीनि पच्चीस के बस परो,
राम को नाम सहजै बिसारी ॥
महा कवलेस† दुख वार अरु पार नहिं,
मारि जम दूत दैं त्रास भारी ।
मन तोहिं धिरकार धिरकार है तोहिं,
धृग बिना हरि भजन जीवत भिखारी ॥

(२)

करो बीचार निर्धार‡ अवराधिये§,
सहज समाधि मन लाव भाई ।
जब जक्त की आस तें होहु निरास,
तब मोच्छ दरबार की खबरि पाई ।
न तो भर्म अरु कर्म बिच भोग भटकन लग्यो,
जरा अरु मरन तन बृथा जाई ।

*ब्रह्मा । †क्लेश, कष्ट । ‡निरंतर । §आराधना करो ।

भीखा मानै नहीं कोटि उपदेस सठ,
थक्यो बेदांत जुग चारि गाई ॥

( ३ )

भयो अचेत नर चित्त चिंता लग्यो,
काम अरु क्रोध मद लोभ राते ।
सकल परपंच में खूब फाज़िल हुआ,
माया मद चाखि मन मगन माते ॥
बढ़्यो दीमाग मगरूर हय गज* चढ़ा,
कह्यो नहिं फौज तूमार† जाते ।
भीखा यह ख़्वाब की लहरि जग जानिये,
जागि करि देखु सब झूँठ नाते ॥

( ४ )

झूँठ मैं साँच इक बोलता ब्रह्म है,
ताहि को भेद सतसंग पावे ।
धन्य सो भाग जो सन्त सेवा टहल,
रात दिन प्रीति लवलीन लावे ॥
बचन लै जुक्ति सों सिद्धि आसन करै,
पवन सँग गवन करि गगन जावै ।
प्रगट परभाव गुरु गम्य परचो इहै,
भीखा अनहद्द पहिले सुनावे ॥

( ५ )

दूजे वह अमल दस्तूर दिन दिन बढ़्यो,
घटा अँधियार उँजियार भाया ।

*घोड़ा हाथी । †गिनती, बिस्तार ।

अर्ध से उर्ध भरि जाप अजपा जप्यो,
चाँद अरु सूर मिलि त्रिकुटि आया ॥
झरत जहँ नूर जहूर असमान लौं,
रूह अफताब* गुरु कीन्ह दाया ।
भीखा यह सत्त सो ध्यान परवान है,
सुन्न धुनि जोति परकास छाया ॥

( ६ )

सब्द परकास के सुनत अरु देखते,
छूटि गइ बिषै बुधि बास काँची ।
सुरति गै निरति घर रूप अयो† दृष्टि पर,
प्रेम की रेख परतीत खाँची ॥
आतमा राम भरिपूर परगट रह्यो,
खुलि गई ग्रंथि‡ निज नाम बाँची ।
भीखा यौं पगि गयो जीव सोइ ब्रह्म मैं,
सीव अरु सक्ति की मिलन साँची ॥

( ७ )

सकल बेकार की खानि यह देँहि है,
मल दुर्गंध तेहि भरो माहीं ।
मन अरु पवन यह जोर दोनौं बड़े,
इन को जीत कै पार जाहीं ॥
जाहि गुरु ज्ञान अनुमान अनुभव करै,
भयो आपु आप मिलि नाम पाहीं ।

*सूरज । †आयो । ‡गाँठ ।

भीखा आधार आपार अद्वैत है,
समुँद अरु बुंद कोइ और नाहीं ॥

( ८ )

जहाँ तक समुँद दरियाव जल कूप है,
लहरि अरु बुन्द को एक पानी ।
एक सूबर्न* को भयो गहना बहुत,
देखु बीचार सब हेम खानी† ॥
पिरथवी आदि घट रच्यो रचना बहुत,
मिर्तिका‡ एक खुद भूमि जानी ।
भीखा इक आतमा रूप बहुतै भयो,
बोलता ब्रह्म चीन्है सो ज्ञानी ॥

( ९ )

ब्रह्म भरि पूर चहुं ओर दसहूं दिसा,
भाव आकासवत नाम गहना ।
अजर सो अमर आबरन अबिगति सदा,
आत्मा राम निज रूप लहना ॥
सत्त सोँ एक अवलँब करु आपनो,
तजो बकवाद बहु फुहस§ कहना ।
भीखा अलेख को देखि कै मिलि रहो,
मुष्टिका‖ बाँधि चुप लाइ रहना ॥

*सोना । †सब की निकासी सोना से है । ‡मिट्टी । §झूठी या फूहर बात । ‖मुट्ठी ।

# ॥ मिश्रित ॥

॥ शब्द १ ॥

अगह तुम्हरो न गहना है । अकह तुम कहा कहना है॥१॥
सब्द अरु ब्रह्म अधिकारी । चेतन तुम रूप तन धारी ॥२॥
अबिगति तुम्हरी न गति पावै । कहाँ अस ज्ञान बुधि आवै
तुम्हरो कहिं वार नहिं पारा । केतो अनुमान करि हारा ४
अगम का गम कवन पावे । जहाँ नहिं चित्त मन जावे ५
प्रगट तुम गुप्त सब माहीं । बियापक तुम कहाँ नाहीं॥६॥
सुनहु सब की कहहु सब से । देखहु सब को मिलो तन से ७
जहाँ लगि सकल हौ तुमहीं । धोख यह बीच हम हमहीं ८
छुटै जब तैं व मैं मेरा । तहाँ ठाकुर न कोउ चेरा ॥९॥
केवल सोइ आपु आपै हो । दुइत सोइ जाय जापै हो॥१०॥
उभै* हम एक हौ तुम हीं । हमैं तुम्हैं भेद कम कमहीं॥११॥
भीखा तजो भरम के ताईं । चीन्हो निज आपनो साईं १२

॥ शब्द २ ॥

रखो मोहिं आपनी छाया । लगै नहिं रावरी माया ॥१॥
कृपा अब कीजिये देवा । करौं तुम चरन की सेवा २
आसिक तुझ खोजता हारे । मिलहु मासूक आ प्यारे॥३॥
कहौं का भाग मैं अपना । देहु जब अजप का जपना ॥४॥
अलख तुम्हरो न लख पाई । दया करि देहु बतलाई ॥५॥

---

* दो ।

वारि वारि जावँ प्रभु तेरी। खबरि कछु लीजिये मेरी॥६॥
सरन में आय मैं गीरा। जानो तुम सकल पर* पीरा॥७॥
अंतरजामी सकल डेरो†। छिपो नहिं कछु करम मेरो॥८॥
अजब साहब तेरी इच्छा। करो कछु प्रेम की सिच्छा॥९॥
सकल घट एक ही आपै। दूसर जो कहै मुख का पै॥१०॥
निर्गुन तुम आप गुन धारी। अचर चर सकल नर नारी॥११॥
जानौं नहिं देव मैं दूजा। भीखा इक आतमा पूजा॥१२॥

॥ शब्द ३ ॥

भजन साईं का कर तू खूब, नहीं तो काल मारेगा॥१॥
जुक्ति गुरु ज्ञान है आजूब, लखत दिल दौरि‡ हारेगा॥२॥
तुझी में आपु है महबूब, सोई आप और तारेगा॥३॥
अनाहद बाजता है झूम, सुनत मन पवन धारेगा॥४॥
समाधी सहज लावो तुम, परम पद को सिधारेगा॥५॥
काम अरु क्रोध करते धूम, बिना प्रभु को उबारेगा॥६॥
रमिता रमी एक बहु भूमि, भीखा आतम बिचारेगा॥७॥

॥ शब्द ४ ॥

जानो इक नाम को भाई, और का कौन लेखा है॥१॥
दृष्टि का भेद नहिं पाई, कहो केहि ताहि देखा है॥२॥
सुभग तन मानुखा जाई, भजो दिन जेइ सेषा है॥३॥
गुरू जब भेद बतलाई, सोई जन आपु पेखा है॥४॥
सब्द अरु ब्रह्म सुखदाई, सकल घट नाम लेखा है॥५॥

*पराई। †घट घट में व्यापक। ‡दौड़ कर।

निर्गुन औ सगुन समताई, सोई जग रूप भेषा है॥६॥
अलख का लखन कठिनाई, करम को मार मेखा है॥७॥
कपट मन आस दुखदाई, लिखा भीखा जो रेखा है॥८॥

॥ शब्द ५ ॥

सत्य गहै इक नाम को सोइ संत सयाने।
मन क्रम बचन बिचारि कै दूजो नहिं जाने ॥ १ ॥
जोग जुक्ति गुरु ज्ञान में जिन चित अरुझाने।
पाप अरु पुन्य करम कहा सुभ असुभ हिराने* ॥ २ ॥
अगम अगोचर रूप है फल आनि तुलाने।
प्रेम सुधा रस भावनो जन चाखि लुभाने ॥ ३ ॥
सब्द प्रकास सहज भयो चित चकित भुलाने।
भीखा सुनि तिन देखेऊ बिन आँखिहिं काने ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

काह भये गुरुमुख भये, दिल साँच न आया।
काम क्रोध के बसि परे, झूठी मन माया ॥ १ ॥
अपनी कपट कुचाल तेँ, नाना दुख पावै।
करम भरम डर बीच में सिंह स्यार कहावै ॥ २ ॥
अमृत तजि बिष खातु है, ताको का कीजै।
निज दाँतन रसना कटै, दोस केहि दीजै ॥ ३ ॥
ज्ञान हीन औगति भयो, मरि नरकहिं जाई।
ता में चित चेतन करै, केहि कामै आई ॥ ४ ॥

*खो गये।

लौंड़ी पूँछै पिया हीँ, कहि भेद सुनाया ।
सिर के साँटे* करार किये, खोजि ताहि लै आया ॥५॥
साहब अलख अलेख है, गति लखहि न कोई ।
भीखा निस्चै राम की, इच्छा से होई ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सो हरि जन जो हरि गुन गैनो ।
मन क्रम बचन तहाँ लै लावै, गुरु गोबिंद को पैनो ॥१॥
ता पर होहिं दयाल महा प्रभु, जुक्ति बतावैं सैनो ॥२॥
बूझि बिचारि समझि ठहरावत, तुरत भयो चित
चैनो ॥ ३ ॥
काम क्रोध मद लोभ पखेरू, टूटि जात तब डैनो† ॥४॥
आतम राम अभ्यास लखन करि, जब लेवे निज ऐनो‡ ॥५॥
ब्रह्म सरूप अनूप की सोभा, नहिं कहि आवत बैनो§ ।
भीखा गुरु गुलाल सिर ऊपर, देखत है बिनु नैनो ॥६॥

॥ शब्द ८ ॥

देखो प्रभु मन कर अजगूता‖ ॥ टेक ॥
राम को नाम सुधा सम छोड़त बिषया रस लै सूता ॥१॥
जैसे प्रीति किसान खेत सोँ दारा धन औ पूता ॥२॥
ऐसी गति जो प्रभु पद लावै सोई परम अवधूता ॥३॥
सोई जोग जोगेसुर कहिये जा हिये हरि हरि हूता¶ ॥४॥
भीखा नीच ऊँच पद चाहत मिलै कवन करतूता ॥५॥

*बदले । †पर । ‡दर्पन । §कहने में । ‖अचरज खेल । ¶होता या उठता है ।

॥ शब्द ९ ॥

मन मोर बड़ अवरेबिया[*] ।

हरि भजि सुख नहिं लेत, मन मोर बड़ अवरेबिया ॥ टेक ॥

दिव्य दृष्टि नहिं रूप निरेखत, नूर देत बहु जेबिया[†] ॥१॥

सतगुरु खेत जोति लै बोवल, भीखा जम लियो हिसबिया ॥ २ ॥

॥ शब्द १० ॥

राम नाम भजि लीजै भाई ॥ टेक ॥

देखु बिचारि दूसर कोउ नाहीं,
हितु अपनो हरि कीजै जाई ।

जग परपंच सकल भ्रम जानो,
नाम रंग भींजै सुखदाई ॥ १ ॥

संतन हाट बिकाय बस्तु सो,
नाम अमोल लीजै अनकाई[‡] ।

सो धन धन्य उदार तियागी,
खरचत नहिं छीजै अधिकाई ॥ २ ॥

तजि कर्म सकल भजु दृढ़ मत धरि,
मरिये भा जीजै[§] मन लाई ।

अगम पंथ को चलना है मन,
छाँड़ि दीजै अलसाई ॥ ३ ॥

---

[*] फ़रेबी । [†] ज़ेब, शोभा । [‡] आँक या जाँच कर । [§] चाहे मरै चाहे जियै ।

जहँ लग तहँ लग एक ब्रह्म है,
का सोँ सीखीजै* अतमाई† ।
खोजत खोजत हारि गयो सब,
थाके सकल किनहुं नहिं पाई ॥ ४ ॥
काम क्रोध मद लोभ तजो तुम,
हरि हर दम लीजै गाई ।
जन भीखा वै धन्य साधु जो,
नाम अमल पीवैं छकियाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

तू ज्ञानी जना देखहु आपै आपु बना ॥ १ ॥
आपु बिना आपन नहिं कोई समझहु बूझि बिचारि तना ॥ २ ॥
अगम अगोचर बसत निरंतर साहब एक अनंत घना ॥३॥
मन क्रम बचन जो हरि रँग राते सो अब करैं कर्म कवना॥४॥
(भीखा) ब्रह्म सरूप प्रगट पर अनहद‡ बड़ा तासु मिलना॥५॥

॥ शब्द १२ ॥

करि करम हरिहिं पर वारो, फल सानो§ ना ॥ १ ॥
प्रभु मिलन हेतु प्रगटानो, केहु मानो ना ॥ २ ॥
सब साहब आपुइ अपनो, केहु जानो ना ॥ ३ ॥
प्रभु अनहद धुनि घहरानो, केहु कानो‖ ना ॥ ४ ॥
प्रभु प्रेम भक्ति को बानो, केहु ध्यानो ना ॥ ५ ॥

*सीखिये । †आत्म ज्ञान । ‡कठिन । §मिलावो । ‖सुनो ।

प्रभु व्यापक पुरुष पुरानो, केहु ज्ञानो ना ॥ ६ ॥
मन भीखा भर्म भुलानो, पहिचानो ना ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

तुम जानहु आतम रामा अपनो हित कै ॥ टेक ॥
ज्ञान ध्यान बैराग सुदृढ़ तेहिं प्रेम भक्ति सुख धामा,
गायो गित* कै ॥ १ ॥
सुमिरन भजन बिचार में रत तेहिं, क्रोध होय गत कामा,
इन्द्री जित कै ॥ २ ॥
हरि सौं प्रीति निरंतर जाको, निस दिन आठो जामा,
भजनो नृत कै ॥ ३ ॥
पाप औ पुन्न अधर्म धर्म किये, ऊँच नीच तन खामा,
जन्मै तित कै ॥ ४ ॥
भीखा मन निग्रह† नहिं तब लौं, जिव न लहै बिस्रामा,
चिंता चित कै ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मन अनुरागल हो सखिया ॥ टेक ॥
नाहीं संगत औ सौ ठकठक, अलख कौन बिधि लखिया १
जन्म मरन अति कष्ट करम कहँ, बहुल कहाँ लगि झँखिया २
बिनु हरि भजन को भेष लिये, कहा दिये तिलक
सिर तखिया‡ ॥ ३ ॥
आतम राम सरूप जाने बिन, होहु दूध कै मखिया ॥४॥

*गीत। †शांत। ‡साधुओं की टोपी।

सतगुरु सब्दहिं साँचि गहो, तजि झूँठ कपट मुख भखिया५
बिन मिलले सुनले देखले बिन, हिया करत सुर्ति अँखिया६
कृपा कटाच्छ करो जेहिं छिन भरि कोर तनिक
इक अँखिया ॥ ७ ॥
धन धन सो दिन पहर घरी पल, जब नाम सुधा
रस चखिया ॥ ८ ॥
काल कराल जंजाल डरहिं गे, अबिनासी की धकिया*९॥
जन भीखा पिया आपु भइल, उड़ि गैलि भरम की
रखिया† ॥ १० ॥

॥ शब्द १५ ॥

ना जानौँ प्रभु का धौँ रंग रचो री ॥ टेक ॥
ज्यौँ कुम्हार का चाक फिरावत यहि जग खंभ लगो री १
जोई जोई रँग खानि खानि को सोइ सोइ सब्द करो री २
यहि तन खेल तिकठिया लागो गोटी खूँटि‡ धरौ री ३॥
काम क्रोध दुनो लगे दुकठिया तिकठा खेल उठो री ॥४॥
कह भीखा मोहिं सरन राखिये माँगत हौँ कर जोरी ॥५॥
अबकी बार दुकठिया छूटे तुम लायक यहि थोरी§ ॥६॥

॥ शब्द १६ ॥

सब्द कै उठल मनोरवा‖ हो, अनहद धुनि घहराई ॥१॥
सुनत सुनत चित लागल हो, दिन दिन रुचि अधिकाई २

*धाक, प्रताप। †राख। ‡किनारे। §तुम्हारे लिये यह ज़रा सी बात है। ‖एक राग का नाम।

मन अनुमान मनोरवा हो, सुरति निरति अरुझाई ॥३॥
सब्द प्रकास मनोरवा हो, दिव्य दृष्टि दरसाई ॥४॥
सुद्ध सरूप मनोरवा हो, सतगुरु दिहल लखाई ॥५॥
भीखा हंस मनोरवा हो, छीर नीर बिलगाई ॥६॥

॥ शब्द १७ ॥

सत्त सब्द ऊठन लगो, अनुभौ कछु बरनि न जाई १
आनँद अगम उमँग भयो, ता पद जिव लागो लव लाई २
सुनत सुनत तन तपन गई, छुटि गइ जग करम बलाई ३
नाद बिंद को जूह भयो, मनुवाँ तहँ रहल लुभाई ४
पिरथी गगन इक सम भयो, आपै वहि त्रिभुवनराई ५
दूसर दृष्टि न आवई, सोइ भीखा चरन समाई ॥६॥

॥ शब्द १८ ॥

राम नाम भजि ले मन भाई ।

काहे कै रोस* करहु घरही में, एकै तुम हमरे पितु माई १
देखहु सुमति संग कै भायप†, छिमा सील सँतोष समाई ।
एकै रहनि गहनि एकै मति, ज्ञान बिबेक बिचार सदाई २
होहु परम पद के अधिकारी, संत सभा महँ बहुत बड़ाई ।
कुमति प्रपंच कुचाल सकल यह, तुम्हरी देखि बहुत मुसकाई
अब तुम भजहु सहाय समेतो, पाँच पचीस तीन समुदाई‡ ।
तुम अनादि सुत बड़े प्रतापी, छोट कर्म करि होहि हँसाई ४

*क्रोध, लड़ाई । †भैयादी, भाई बंदी । ‡इकट्ठा करके ।

तुम मोहिं कीन्ह हाल को गेदो[*], इत उत यहँ भरमाई।
तेहिं दुख सुख को अंत कहै को, तन धरि धरि
मोहिं बहुत नचाई ॥५॥
अब अपनी उनमेख[†] तजन की, सपथ[‡] करो दृढ़ मोहिं
सोहाई।
जन भीखा कै कहा मानु अब, मन तोहिं राम कै
लाख दोहाई ॥६॥

॥ शब्द १९ ॥

जोग जुक्ति गुरु लगन लगाई।
साजि बरात बियाहन जाई ॥ १ ॥
उर्ध पवन मन धुजा बिराजै।
सुतरी[§] अस्पी[‖] अनहद बाजै ॥ २ ॥
नरसिंघा[¶] तुरही[¶] सहनाई।
घंटा धुनि अंबर[**] पर छाई ॥ ३ ॥
पालकी सुरति निरति लौ लीना।
लागे पाँच कहार प्रबीना ॥ ४ ॥
अठकठ[††] साज बरनि नहिं जाई।
संगी सो इक एक सोहाई ॥ ५ ॥
अचरज एक जु देखा भली।
दुलहिन खोजन पिय को चली ॥ ६ ॥

---

[*] बच्चा। [†] अभिमान। [‡] क़सम। [§] ऊँट पर का डंका। [‖] घोड़े पर का डंका। [¶] बाजों के नाम। [**] आकाश। [††] आठ काठ का।

सुन्न सिखर पर माँडो छायो।
इँगला पिँगला चौक पुरायो ॥ ७ ॥
प्रेम प्रीति कै साज सजाई।
कुंभक पूरक कलस भराई ॥ ८ ॥
गावहिं पाँच पचीसो गुनी।
सुनत मगन हूँ साधू मुनी ॥ ९ ॥
सेँदुर उदित जोति जगमगे।
आपन नाह* आपु से पगे† ॥ १० ॥
दुलहिन नाम सेव करि पाई।
नाद बिंद बहुतै भौजाई ॥ ११ ॥
भीखा मगन रहे हर हाल।
तजि परपंच जगत को ख्याल ॥ १२ ॥

॥ शब्द २० ॥

हो पतित-पावन नाम हिम्मत न दुरे।
जैसे किरन सूर सम पुरे ॥ टेक ॥
जैसे प्रीति प्रान अरु देँही। तैसे हरि जन परम सनेही १
जैसे प्रीति जला अरु मीना। तैसे सुरति निरति लौ लीना
जैसे पदुम‡ नाल बिच तागा। तैसे जीव ब्रह्म इक लागा। ३
जैसे कीट भृंग रँग जागा। तैसे आतम सौं मन पागा। ४
जैसे भीखा फनि§ मनि लाय। तैसे दृष्टि सरूप समाय॥५॥

* पति। † मिल गये। ‡ कँवल। § साँप।

॥ शब्द २१ ॥

निज आतम भजि लेहु तने, जैसे घरे तैसे बने ॥टेक॥
ज्ञान रत काम तज क्रोध थिर मने ।
और बिषै तज निज रूप जने* ॥ १ ॥
गुरु गम जोग करै युक्ति सधने ।
आपा आपु ही में उक्ति सयने ॥ २ ॥
आदि अंत मध एक व्यापक सघने ।
माया परपंच झूठ जक्त सपने ॥ ३ ॥
दीन के दयाल जन आरत समने ।
केवल भक्ति माँगे भीखा छिन छिने ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ ॥

जान दे करौं मनुहरिया† हो ॥ टेक ॥
अनेक जतन करिके समझाऔं,
मानत नाहिं गँवरिया हो ॥ १ ॥
करत करेरी नैन वैन सँग,
कैसे के उतरब दरिया हो ॥ २ ॥
या मन तें सुर नर मुनि थाके,
नर बपुरा कित धरिया हो ॥ ३ ॥
पार भइलौं पिव पीव पुकारत,
कहत गुलाल भिखरिया हो ॥ ४ ॥

*जाने । †चिरौरी, खुशामद ।

॥ शब्द २३ ॥

तू हे जोगी जना ब्रह्म रूप लख जिव अपना ॥१॥
मैं नाहीं निज साहब आपै कछु इक फेर पर्यौ इतना॥२॥
जोग जज्ञ तप दान नेम ब्रत सोवत साँच जगे सुपना॥३॥
सुख दुख भोग भोगत है जितने तितने पाप पुन्न तपना४
सतगुरु कह्यो बिचारि भेद मुख भीखा अजपा जप जपना ॥५॥

॥ शब्द २४ ॥

इक दिन मन देखल बौराइल ।
सास्तर अंग* सरूप लजाइल ॥ १ ॥
मेरी ओर न जोरत नैना ।
साबिक बचन बोलता बैना ॥ २ ॥
दसा उन्मत मतवाला जैसे ।
डगमग चित पग परता तैसे ॥ ३ ॥
चंचल चकित चहूं दिसि जावै ।
इत उत छिन छिन पल पल धावै ॥ ४ ॥
बिषया लंपट करत अधीना ।
तृस्नावंती सदा मलीना ॥ ५ ॥
जो कतहूं हरि चरचा सुनै ।
तजि माया परपंचहिं गुनै ॥ ६ ॥

*छः अंग कर के अर्थात सर्बांग ।

काम क्रोध मद गर्ब भुलाई।
लहवत* बुद्धि करत लरिकाई ॥ ७ ॥
सो तौ भली बेर नहिं पावै।
जो नहिं राम चरन चित लावै ॥ ८ ॥
थाको बेद बेदांत सिखाई।
भीखा के मन लाज न आई ॥ ९ ॥

॥ शब्द २५ ॥

नैन सेज निज पिय पौढ़ाई, सो सुख मौजै दिलहिं जनाई१
बोलता ब्रह्म आतमा एकै, भाव मिलन को सकै दुराई† २
अगम अगोचर अधर अकथ प्रभु, ता सैं कहौं
कौन मुँह लाई।३।
अंग अंग पर कोटि कोटि छबि, कहत सोभेदबेदसकुचाई
ईसुर की यह प्रगट इसुरता, भीखा ब्यापक रूप अघाई।५।

॥ शब्द २६ ॥

हे मन आतम सौं रति करन, ता तें और सकल परिहरन
परमातम चेतन्य रूख‡ तन, रूप सुपकु§ फल फरन।
दृष्टि बिहंग सुरति लेइ जावै, खात सुखद‖ दुख हरन २
आवत जात केतिक जुग यहि मग, समुझि कबहुं नहिं परन
भीखा दरद पराय¶ जाहि पर, कोर तनिक इक ढरन ३

*लाख सरीखी समझ जो गर्मी पा कर टिघल जाय और फिर कड़ी की कड़ी हो जाय। †छिपाना। ‡पेड़। §अच्छा पका हुआ। ‖सुखदाई। ¶ भाग जाय।

॥ शब्द २७ ॥

हमरो मनुवाँ बड़ो अनारी ।
साहब निकट न करत चिन्हारी ॥ १ ॥
प्रानायाम न जुक्ति बिचारी ।
अजपा जाप न लावै तारी ॥ २ ॥
खोलै न भ्रम तेँ बज्र किवारी ।
निज सरूप नहिं देखि मुरारी ॥ ३ ॥
प्रान अपान मिलन न सँवारी ।
गगन गवन नहिं सब्द उचारी ॥ ४ ॥
सुन्न समाधि न चेत बिसारी ।
यह लालसा* उर बड़ी हमारी ॥ ५ ॥
सर्ब दान गुरु दाता भारी ।
जाचक सिष्य सो लेत भिखारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द २८ ॥

सब भूला किधौं हमहिं भुलाने ।
सो न भुला जा के आतम ध्याने ॥ १ ॥
सब घट ब्रह्म बोलता आही ।
दुनिया नाम कहौं मैं काही ॥ २ ॥
दुनिया लोक बेद मति थापे ।
हमरे गुरु गम अजपा जापे ॥ ३ ॥

*हौसला ।

हरि जन जे हरि रूप समावे ।
घमासान* भये सूर कहावे ॥ ४ ॥
कहे भीखा क्यौं नाहींनाहीं† ।
जब लगि साँच झूठ तन माहीं ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

रे मन हूँ है कवन गति मेरी ।
मेरी समझ बूझ होत देरी ॥ टेक ॥
यह संसार आये गति माया लागी धाये ।
राम नाम नहिं जान्यो मति गति न निबेरी ॥१॥
भजन करारे‡ आये कबहीं न साँचि गाये ।
करम कुटिल करे मति गइ तेरी ॥ २ ॥
भीखा चरनौं में लीजै मन माया दूरि कीजै ।
बार बार माँगै इहै प्रीति लागै तेरी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३० ॥

अधम मन राम नाम पद गहो ।
तातेँ यह तन धरि निरबहो§ ॥ टेक ॥
अलख न लखि जाय अजपा न जपि जाय ।
अनहद के हद नाहीं हो ॥ १ ॥
कथनी अकथ कवनि बिधि होवे ।
जहँ नाहीं तहँ ताही हो ॥ २ ॥
बिन मूल पेड़ फल रूप सोई ।
निज दृष्टि बिन देखी कहो ॥ ३ ॥

---

*युद्ध। †नेत नेत। ‡इक़रार। §निबाह हो।

बिन अकार को रूह नूर है ।
अगिनि बिन भ्रम में दहो ॥ ४ ॥
बोलता है आपु माहीं आतमा है हम नाहीं ।
अविगति की गति महो* ॥ ५ ॥
पूरन ब्रह्म सकल घट व्यापक ।
आदि अंत भरिपूर रहो ॥ ६ ॥
सतगुरु सत दियो सुरति निरति लियो ।
जीव मिलि पिय पहुंच हो ॥ ७ ॥
जन भीखा अब्र कारन छोड़ो ।
तत्त पदारथ हाथ लहो ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

उठ्यो दिल अनुमान हरि ध्यान ॥ टेक ॥
भर्म करि भूल्यो आपु अपान ।
अब चीन्हो निज पति भगवान ॥ १ ॥
मन बच क्रम दृढ़ मत परवान ।
वारो प्रभु पर तन मन प्रान ॥ २ ॥
सब्द प्रकास दियो गुरु दान ।
देखत सुनत नैन बिनु कान ॥ ३ ॥
जा को सुख सोइ जानत जान ।
हरि रस मधुर कियो जिन पान ॥ ४ ॥
निर्गुन ब्रह्म रूप निर्बान ।
भीखा जल ओला गलतान[+]

*महा, बड़ी । [+]लीन ।

॥ शब्द ३२ ॥

किया करार भजन करतार ॥ टेक ॥
जनमत मरत अनेक प्रकार,
त्रसित* कउल पुनि बारंबार ॥ १ ॥
अबकी बार पायो छुटकार,
सुमिरन ध्यान धरो निरधार ॥ २ ॥
पायो सुभग मनुष अवतार,
पवन लगे भ्रमि भुलेउ बिचार ॥ ३ ॥
सुत दारा धन धाम पियार,
नफा कहाँ तैं मूल बिगार ॥ ४ ॥
जब गुरु खोलहिं बज्र किवार,
भीखा सो पहुंचे दरबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

थाम्है मूल पवन को धीरा, जो नेकु गहै दिल धीरा ॥ १ ॥
दूजे अप तीजे तेज अपरबल, चौथे बायु तन पीरा ॥२॥
पँचयेँ अकास छठे तम छोड़ो, सतयेँ होइ मन थीररा॥३॥
अपरम्पार बस्तु की जागह, भीखा बोध फकीरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

मन चाहत दृष्टि निहारी ।
सुरति निरति अंतर लै जावो निज सरूप अनुहारी ॥१॥
जोग जुक्ति मिलि परखन लागो पूरन ब्रह्म बिचारी ।
पुलकि पुलकि आपा महँ चीन्हत देखत छबि उँजियारी२।

*डरा हुआ ।

सुखमन के घर आसन माँड़ो इंगल पिंगलहिं सुधारी।
सुन्न निरंतर साहब आपे सब घट सब तें न्यारी ॥ ३ ॥
प्रेम प्रीति तन मन धन अरपो प्रभुजी की बलिहारी।
गुरु गुलाल के चरन कमल रज लावत माथ भिखारी ॥४॥

॥ शब्द ३५ ॥

जन मन मनहीं मैं धुनि लाई ॥ टेक ॥

गुरु प्रताप साधु की संगति, नाम पदारथ सुनि पाई॥१
सुनत सुनत मन मगन भयो है,फागु सोहावन घर आई२
तन मन प्रान ताहि पर वारो, रहो चरन मैं लपटाई ३
भोखा अब के दाँव तुम्हारो, मन चित दै हरिहीं गाई४

॥ शब्द ३६ ॥

करै पाप पुन्न की लदनी, जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥१॥
लागो हासिल कर्म हैवान,
टूटो परत नहीं कछु फाजिल, जन्मत मरत निदान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ २ ॥
त्यागि भजै हरि नामहीं, हिये प्रीति मन आन।
जोग जुक्ति मन लावे मेरवै* प्रान अपान†।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ३ ॥
गगन गवन करि जाती तेहिं बिच परल उधानी,
सुधि बुधि सबही हरि लियो करब कवन बिधि ध्यान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ४ ॥

*मिलावै। †स्वाँस का नाम।

नाद अनाहद बाजल उह सब्द सुनो बिनु कान,
पुलकि भयो जिय ताहि छिन उदै भयो ब्रह्मज्ञान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ५ ॥
आतम राम निरामय अलख पुरुष निरबान,
भीखा ता छबि देखत सो केहि मुख करौं बयान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

साधो भाई सब महँ निज पहिचानी।
जग पूरन चारिउ खानी ॥ टेक ॥
अबिगति अलख अखंड अनमूरति, कोउ देखे गुरु ज्ञानी १
ता पद जाइ कोऊ कोउ पहुंचे, जोग जुक्ति करि ध्यानी ॥२॥
भीखा धन्य जो हरि सँग राते, सोई हैं साधु परानी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

राम से करु प्रीति अब के राम से करु प्रीति,
हे मन ॥ १ ॥
राम बिना कोउ काम न आवे, अंत ढहेगी भीति,
यह तन ॥ २ ॥
बूझि बिचारि देखु जिय अपने, हरि बिन नाहिं कोउ हीत,
यह बन ॥ ३ ॥
गुरु गुलाल के चरन कमल रज, धरु भीखा उर चीत,
यह धन ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

संतो चरन कमल मन बसले हो ।
ताते जन सरनागति रस ले हो ॥ टेक ॥
गुरु प्रताप साध की संगति जोग जुक्ति उर लसले हो ॥१॥
भीखा हरि पद चहै समाने सब्द सरोवर धसले हो ॥ २ ॥

॥ शब्द ४० ॥

जोग जुक्ति परखन लगो, समुझत वार न पार ॥ १ ॥
नेकु दृष्टि नाहिं आवई, जिउ पर परल खँभार ॥ २ ॥
उबि उबि घुमि घुमि उलटि गयो मन, सुनि धुनि चढ़ल पहार ॥ ३ ॥
सुन्न सिखर पर जाइ रह्यो है, खुलि सब भरम किवार ॥४
बासर पूरन* चंद उगो है, अचरज निज रूप हमार ॥५॥
ज्ञान ध्यान तहवाँ लगो है, भीखा गुरु चरन अधार ॥६॥

॥ शब्द ४१ ॥

मन करिले नाम भजन दम दम ॥ टेक ॥
जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन, छीजै करो किरति जम जम ॥ १ ॥
आतम राम प्रगट निज ता को, तन मन अर्पन कीजै, ब्यापक सम सम ॥ २ ॥
सतगुरु कह्यो सुझाय जवनि बिधि, दृष्टि रूप जल भींजै, मिलन गम गम ॥ ३ ॥

---

*पूरनमासी का दिन ।

होइ एकांत सुतंत्र बैठि कै, अनहद धुनि सुनि लीजै,
बाजत झमझम ॥ ४ ॥

भीखा धन्य जो त्यागि जक्त सुख, हरि को रस मद पीवै
अस जन कम कम ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

आसिक तूँ यारे, खोजो मासूक हरि प्यारे ॥टेक॥
आसिक यारे सब सौँ न्यारे, निकटहिं अपरंपारे ॥१॥
आसिक यारे बहुत पुकारे, हे पिय पिय पपिहा रे।
आसिक यारे स्वाँति अधारे, चात्रिक तन मन वारे ॥२॥
आसिक यारे काज सँवारे, मिलो प्रभु प्रान हमारे।
भीखा यारे एक बिचारे, भ्रम कपटहिं परच* उघारे ॥३॥

॥ शब्द ४३ ॥

मोहिं कहो आपनो सेवक ॥ टेक ॥
हिय जिय नैन स्रवन नासा सिर, अछय पुरुष तुम देवक॥१॥
जेहि चाहो भव तें काढ़न हू, कनहरिया† गुरु खेवक॥२॥
भूखो नैन रूप को चाहत, मिलनि सकल रस मेवक‡ ॥३॥
भीखा अपरंपार तुमहिं अस, कौन भजन करि लेवक॥४॥

*तह, ग़िलाफ़। †पतवार पकड़ने वाला। ‡मेवा।

# ॥ ककहरा ॥

(१)

भजि लेहु सुरति लगाय, ककहरा नाम का ॥ टेक ॥
क–काया में करत कलोल, रैनि दिनि सोहं बोलै ।
ख–खोजै जो चित लाय, भरम को अंतर खोलै ॥१॥
ग–ग्यान गुरू दाया कियो, दियो महा परसाद ।
घ–घुँमड़ि घहरात गगन में, घटा अनाहद नाद ॥२॥
न–नैन सों देखो उलटि कै, ठाकुर को दरबारी ।
च–चमतकार वह नूर, पूर संतन हितकारी ॥ ३ ॥
छ–छिन माँ भजि तिन* कर्म गयो है, जीव ब्रह्म के पास ।
ज–जैजै सब्द होत तिहुं पुर में, सुद्ध सरूप अकास ॥४॥
झ–झकोरि झपाक झपटि, नर समय गँवाई ।
न–नहिं समुझत निज मूल, अंध ह्वै दृष्टि छिपाई ॥५॥
ट–टँड† संकट में ग्रसित है, सुत दारा रहसाई‡ ।
ठ–ठठाय मुसकाय हँसतु है, मनहु परल निधि§ पाई ॥६॥
ड–डाँवाँडोल का फिरहु, नेकु तुम समुझहु भाई ।
ढ–ढरके जबही‖ बुंद, बपू¶ की खबरि न पाई ॥७॥
न–नमो नमो चरनन नमो, धरो नाम कै ओट ।
त–तंत** माल सब राखि लीजिये, कबहुं परत नहिं टोट ८
थ–थकित भयो थहराय, ज्ञान जब हिरदे आया ।
द–दरकि†† हिये बहु जीव, ब्रह्म में आनि समाया ॥९॥

---

*तीन । †झगड़ा । ‡बिलास करता है । §पड़ा हुआ धन । ‖जब जीव निकल गया । ¶शरीर । **तत्व । ††धड़क कर ।

ध–धक्का सब को सहै, जपै सो अजपा जाप ।
न–निबहि जाय सो संत कहावे, जाके भक्ति प्रताप॥१०॥
प–परमेसुर प्रगट, आपु में आपु छिपाय ।
फ–फाजिल जो होय, सोइ यह मतिहिं समाय ॥११॥
ब–बायेँ बस्ती नगर, तजै एक ही बार ।
भ–भय भव भटका भरम निवारै, केवल सत्त अधार ॥१२॥
म–माया परपंच, पाँच में भरमत रहई ।
य–यन्मत* अरु मरत, देँह को अंत न लहई ॥१३॥
र–रमता घट घट बसै, तेहिं काहे नहिं जान ।
ल–लै लाय जो ताहि पुरुष सौँ, पावै पद निर्बान॥१४॥
व–वावागवन† न होय, पुरुष पुरुसोतम जाने ।
श–समुझै कोउ संत, सोई यह भेद समाने ॥ १५ ॥
ष–षट्ट ज्ञान अमान लियो है, कियो बिचार को धार ।
स–संसय काठ कठंगरा, ता सौँ काटत लगे न बार ॥१६॥
ह–हक्क हलालहिँ सिदिक‡ समुझि हराम न खावै ।
छ–छिमा सील संतोष, सहज में जो कछु आवै ॥१७॥
अइएउ§ गुरु गुलाल जी, दियो दान समुदाय ।
जाचक भीख भीखानँद पायो, आतम लियो दरसाय ॥१८॥

---

*जन्मत । †आवागवन । ‡जाइज़ । §आयी ।

# अलिफ़नामा

बिनु हरि कृपा न होय ककहरा ज्ञान का ॥टेक॥
अलिफ-अलाह अभेद सुरति जद मुर्सिद देवे ।
बे-बहकै नहिं दूर निकटहीं दरसन लेवे ॥ १ ॥
ते-ते व्यापक सकल है जल थल बन गृह छाइ ।
से-से आप मासूक बनो है कोउ आसिक दरसाइ ॥२॥
जीम-जबून है जहर जक्त को भोग सुझारी ।
हे-हक्क न समुझत नान करम सोँ करत खुवारी ॥३॥
खे-खिन खिन मन रहत है माया के परपंच ।
दाल-दंभ निग्रह नहीं* कस पावे सुख संच ॥ ४ ॥
जाल-जाल फाँस नर फँस्यो आपु तेँ आपु बझाये ।
रे-ररंकार निरधार जन हीं सहज छुटाये ॥ ५ ॥
जे-जहूर वह नूर देखि जिय आनन्द विलास ।
सीन-संसै तम छूटि गयो है ता पद लियो निवास ॥६॥
शीन-सनै सनै† वह प्रेम प्रीति परमारथ लागै ।
साद-साधना सधै जुक्ति सोँ अनुभौ जागै ॥ ७ ॥
जाद-जाती नाम भयो सब विधि पूरन काम ।
तो-तेज पुंज तपवत चहुं जुग ऐसो प्रभु को नाम ॥ ८ ॥
जो-जो मौजै करै पाप अरु पुन्न न लेखै ।
ऐन-ऐन लेय जद्द हाथ रूप निज साहब देखै ॥ ९ ॥
गैन-ग्यान उद्वैत भयो है सतगुरु के परताप ।
फे-फहमंदा‡ भजन को दिव्य दृष्टि को जाप ॥ १० ॥

---

*कपट को दूर नहीं किया । †धीरे धीरे । ‡जानकार, भेदी ।

क़ाफ़—कहर है लाफ* झूठ की तजिये आसा।
काफ—कमाल करार सत्त को जूह निरासा ॥ ३ ॥
लाम—लाहुत† सुठि‡ सिखर है दूरिहुं तेँ बहु दूर।
मीम—मरजीवा ह्वै रहै सोइ पावै दरस हजूर ॥ ४ ॥
नूँ—नूतन‡ छवि देइ ढुरुहुरा§ सुंदर राजै।
वाव—वाहै वाह सो अहै वचन मुख कहत न छाजै ॥ ५ ॥
हे—हद बेहद इक सम भयो मध्य बोलता आहि।
लाम अलिफ—सो निकटहिं पावो चित दै चितवहु ताहि ६
हमजा—हम हमार द्वैत तहँ नाहिन सोहै।
ये—येक तत्त ह्वै ज्ञान ध्यान तब जन्म न मोहै ॥ ७ ॥
तीनि आँक मेँ वस्तु सकल है रज तम सत सम ईस।
भीखा नाम सुन्न|| जब दीन्हो तब भयो अच्छर तीस ॥ ८ ॥

## ॥ पहाड़ा ॥

एका एक मिले गुर देवा, सिष सोई जो लावे सेवा।
तन मन वार चरन चित धारा, एक दहाई दसवेँ द्वारा ॥ १ ॥
दूआ दुई द्वैत जो तजै, जोग जुगति मिलि आपा भजै¶।
सुरति बिचारि निरति पहँ गयऊ, दुइ पर सुन्न बीस गुन भयऊ ॥ २ ॥
तीया तीनि ताप जब मेटे, तबहीं जीव नरायन भेँटे।
मक्का** मदीना** घट मेँ खोजा, तीन दहाई तीसो रोजा ॥ ३

*गप। †त्रिकुटी। ‡सुंदर। §थरहरा। ||सिफ़र। ¶भागै, दूर हो।
**मुसलमानों के तीर्थ।

चौथे चार खानि हैं जेते, सब घट ब्रह्म बोलता तेते।
घाटि*कहूं नहिं हाल हजूरा, चार दहाई चालिस पूरा॥४॥
पचयँ पाँचो मुद्रा साधे, ससि और सूर अकासे बाँधे।
प्रानायाम पवन परगासा, पाँच सुन्न पर भयो पचासा॥५॥
छठयँ चक्र कठिन मति वाही, जे निबहे जेहि राम निबाही।
चढ़ै पवन ऊरधमुख भाठी, छः दहाई तिह पर साठी॥६॥
सतयँ सब्द अनाहद बाजा, तूर सुनत मनुआँ भयो राजा।
रैयत बंध अमल बरजोरा, सात दहाई सत्तर चोरा॥७॥
अठयँ अष्ट कमल दल फूला, जोति रूप लखि जियरा भूला।
उदित भये परगासित ज्ञाना, आठ दहाई अस्सी भाना ८
नौवँ नाम निरंजन जोती, सहज समाधि जासु की होती।
सो जानै जो जावै तहवाँ, नव दहाई नब्बे जहवाँ॥९॥
दसयँ दसो दिसा मेँ मेला, भीखा ब्रह्म निरंतर खेला।
दसँ दहाई अजपा जाप, बढ़ै दस गुना गुन परताप॥१०॥
जो कोइ नाम पहाड़ा पढ़ै, प्रेम प्रीति दस गूना बढ़ै॥११॥

---

## ॥ कुंडलिया ॥

(१)

जीव कहा सुख पावई बेमुख बहु घर माहिँ॥
बेमुख बहु घर माहिँ एक तेँ एक अपर्बल।
तेहू तेँ हैं अधिक अधिक तेँ अधिक महाबल॥

*कमी।

तेहिं में मन अरु पवन त्रिगुन कै डोरि लगाई।
बाँधे सब जग जाल छुटै कोऊ नहिं पाई ॥
जौ भीखा सुमिरै राम को तौ सकल अर्थ होइ जाहि।
जीव कहा सुख पावई बेमुख बहु घर माहिँ ॥

( २ )

राम रूप को जो लखै सो जन परम प्रबीन ॥
सो जन परम प्रबीन लोक अरु बेद बखानै।
सतसंगति में भाव भक्ति परमानँद जानै ॥
सकल बिषय को त्यागि बहुरि परबेस* न पावै।
केवल आपै आपु आपु में आपु छिपावै ॥
भीखा सब तें छोट होइ रहै चरन लवलीन।
राम रूप को जो लखै सो जन परम प्रबीन ॥

( ३ )

जौ भल चाहो आपनो तौ सतगुरु खोजहु जाइ ॥
सतगुरु खोजहु जाइ जहाँ वै साहब रहते।
निसि दिन इहै बिचारि सदा हरि को गुन कहते॥
समुझै बूझि बिचारि कै तन मन लावै सेव।
कृपा करहिं तब रीझि कै नाम देहिं गुरुदेव ॥
भीखा बिछुरे जुगन के पल महं देहिं मिलाइ।
जौ भल चाहो आपनो तौ सतगुरु खोजहु जाइ ॥

*दखल।

( ४ )

जज्ञ दान तप का किये जो हिये न हरि अनुराग ॥
हिये न हरि अनुराग पागि मन बिषै मिठाई ।
जग परपंच में सिद्ध साध्य मानो नव निधि पाई ॥
जहाँ कथा हरि भक्ति भक्त कै रहनि न भावै ।
गुनना गुनै बेकाम झूँठ मेँ मन सुख पावै ॥
भीखा राम जाने बिना लगो करम माँ दाग ।
जज्ञ दान तप का किये जो हिये न हरि अनुराग ॥

( ५ )

मन क्रम बचन बिचारि कै राम भजे सो धन्य ॥
राम भजे सो धन्य धन्य बपु* मंगलकारी ।
राम चरन अनुराग परम पद को अधिकारी ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह की लहरि न आवै ।
परमातम चेतन्य रूप महँ दृष्टि समावै ॥
व्यापक पूरन ब्रह्म है भीखा रहनि अनन्य ।
मन क्रम बचन बिचारि कै राम भजै सो धन्य ॥

( ६ )

दृढ़ निस्चै हरि को भजै होनी होइ सो होइ ॥
होनी होइ सो होइ निंदवै भावै कोई ।
अहित करै अपमान मान तहँ चहै न वोई ॥

*शरीर

दुर्बचन बहुत मुख पर कहै हठ करि करै बिषाद ।
सो नहिं लावै आपु पर जन ता को रखु मरजाद ॥
परै सो ओढ़ै सीस पर भीखा सनमुख जोइ ।
दृढ़ निस्चै हरि को भजे होनी होइ सो होइ ॥

( ७ )

धनि सो भाग जो हरि भजै ता सम तुलै न कोइ ॥
ता सम तुलै न कोइ होइ निज हरि को दासा ।
रहै चरन लौलीन राम को सेवक खासा ॥
सेवक सेवकाई लहै भाव भक्ति परवान ।
सेवा को फल जोग है भक्त बस्य भगवान* ॥
केवल पूरन ब्रह्म है भीखा एक न दोइ ।
धन्य सो भाग जो हरि भजै ता सम तुलै न कोइ ॥

( ८ )

धरि नर तन हरि नहिं भजै पसु सम करै बिहार ॥
पसु सम करै बिहार मूरख जानै नहिं काज अकाज ।
वृषभ† सदृस कामी बड़ा इंद्री सहित समाज ॥
जड़ सरीर नर बुद्धि नहिं इनके सींग न पौंछ ।
खाहिं पेट भरि सोवहीं जानहिं अगति न मोछ‡ ॥
(भीखा) धृग जीवन धृग जन्म है धृग लीन्हीं अवतार ।
धरि नर तन हरि नहिं भजै पसु सम करै बिहार ॥

*सेवा का फल मेला है क्योंकि भगवान भक्त के बस में हैं ।
†साँड़ । ‡कुगति और मुक्ति में भेद नहीं समझते ।

( ९ )

यह तन अयन* सरूप हरि कुंजी सतगुरु पास ॥
कुंजी सतगुरु पास कृपा करि खोलहिं जबहीं।
बूझहिं जेहि अधिकार बस्तु देखलावहिं तबहीं ॥
जड़ि ताला बज्र कपाट को नहँ बैठे आतम राम।
देखे सुने को गम नहीं नहिं आँखि कान को काम॥
भीखा प्रीति प्रतीति धरु करु इष्ट बचन बिस्वास।
यह तन अयन सरूप हरि कुंजी सतगुरु पास ॥

( १० )

मन लागो गोबिंद सौं छोड़ि सकल भ्रमफाँस ॥
छोड़ि सकल भ्रमफाँस आस नहिं काहु की करते।
यह माया परपंच ताहि महँ रहते डरते ॥
केवल ब्रह्म प्रकास सौं गुरु आप कह्यो करि सैन।
टूटै सकल मन कामना सब्द रूप भयो ऐन ॥
भीखा मन बच कर्मना इक भक्तन कै आस।
मन लागो गोबिंद सौं छोड़ि सकल भ्रम फाँस ॥

( ११ )

जुक्ति मिले जोगी हुआ जोग मिलन को नाम ॥
जोग मिलन को नाम सुरति जा मिलै निरति जब।
दिब्य दृष्टि संजुक्त देखि के मिलै रूप तब ॥
जीव मिलै जा पीव को पीव स्वयं भगवान।
तब सक्ति मिलै जा सीव को सीव परम कल्यान ॥

* घर।

भीखा ईसुर की कला यह ईसुरताई काम।
जुक्ति मिले जोगी हुआ जोग मिलन को नाम॥

( १२ )

सहजहिं दृष्टि लगी रहै तेहि कहिये हरिदास॥
सोहि कहिये हरिदास आस जेहि दूसर नाहीं।
सहजहिं कियो बिचार जाय रहि सतगुरु पाहीं॥
सीस चढ़ायो ताहि को हलुक भयो देइ भार।
टहल करे मुख देखि रुख साहब परम उदार॥
भीखा रीझै कृपा करि देवै रूप प्रकास।
सहजहिं दृष्टि लगी रहै तेहि कहिये हरिदास॥

( १३ )

पाहुन आयो भाव सौं घर में नहीं अनाज॥
घर में नहीं अनाज भजन बिनु खाली जानो।
सत्य नाम गयो भूल झूठ मन माया मानो॥
महा प्रतापी राम जी ताको दियो बिसारि।
अब कर छाती का हनो* गयो सो बाजी हारि॥
भीखा गये हरि भजन बिनु तुरतहिं भयो अकाज।
पाहुन आयो भाव सौं घर में नहीं अनाज॥

( १४ )

बेद पुरान पढ़े कहा जौ अच्छर समुझा नाहिं॥
अच्छर समुझा नाहिं रहा जैसे का तैसा।
परमारथ सौं पीठ स्वारथ सन्मुख होइ बैसा॥

---

*अब हाथ से छाती कूटने से क्या होता है।

सास्तर मति को ज्ञान करम भ्रम में मन लावै।
छुइ न गयो बिज्ञान परम पद को पहुंचावै ॥
भीखा देखे आपु को ब्रह्म रूप हिये माहिँ ।
बेद पुरान पढ़े कहा जौ अच्छर समुझा नाहिं ॥

( १५ )

राम भजे दिन घरी इक जीवन का फल सोइ ॥
जीवन का फल सोइ मगन मन हरि जस गावै ।
परमातम चेतन्य रूप आपा दरसावै ॥
जोग पपील* को मत कठिन अंध धुंध दरबार।
सोहं सन्मुख सहज घर मत बिहंग निरधार ॥
भीखा त्रैगुन गुनन के बस्य परा सब कोइ ।
राम भजे दिन घरी इक जीवन का फल सोइ ॥

( १६ )

राम भजन को कौल किये। दिन ऐसहि ऐसहि जात ।
ऐसहि ऐसहि जात चेत नहिं करत अनारी ।
लोक लाज कुल कानि† मानि हरि नाम बिसारी ॥
अपने मनै सपूत सूर अति से बल भारी ।
जनिहै बिते दिन चारि काल सिर मुगदर मारी ॥
भीखा समुझत गर्भ बास दुख थरथर कंपत गात ।
राम भजन को कौल किये। दिन ऐसहि ऐसहि जात ॥

*चींटी । †प्रतिष्ठा ।

( १७ )

सुत कलित्र* धन धाम सुख माने सुपना को
सो साँच ॥
सुपना को सो साँच मानि ता को पतियाना ।
कहा रह्यो का भयो समुझि नहिं करत अयाना† ॥
ज्याैं पवन उदक‡ भँवरी दियो कहै बवंडर भूत ।
बढ़ो बहुत फिरि मिटि गयो कोउ न रहा इत ऊत ॥
जो भीखा जाने राम को तेहि झूँठ लगत मत पाँच ।
सुत कलित्र धन धाम सुख माने सुपना को
सो साँच ॥

( १८ )

चलनी को पानी पड़ा बरहा§ कभी न होइ ॥
बरहा कभी न होइ भजन बिनु ध्रिग नर देहीं ।
झूँठ परपंच मन गह्यो तज्यो हरि परम सनेही ॥
ज्याैं सुपने लागी भूख अन्न बिनु तन मरि जाही ।
कबहीं के उठे जाग हरख कहुं बिसमै नाहीं ॥
(भीखा) सत्य नाम जाने बिना सुख चाहे जो कोइ ।
चलनी को पानी पड़ो बरहा कभी न होइ ॥

---

*स्त्री। †नादान। ‡पानी। §नहर।

# ॥ साखी ॥

## ॥ भेष रहनी ॥

काया कुंड बनाइ कै घूमि घोटना* देइ ।
बिजया† जीव मिलाइ कै निर्मल घोंटा‡ लेइ ॥१॥
साफो§ सहज सुभाव को छानो सुरति लगाय ।
नाम पियाला छकि रहै अमल उतरि नहिं जाय ॥२॥
जोग जुक्ति सुमिरन बनो हर दम मनिया‖ नाम ।
करम खंडि कंठी गुहो गर बाँधो प्रानायाम ॥३॥
अगम ज्ञान गूदर लियो ढाँको सकल सरीर ।
ब्रह्म जनेऊ मेखला पहिरहिं मस्त फकीर ॥४॥
सेल्ही संसय नासि कै डारो हृदय लगाय ।
तिलक उनमुनी ध्यान धरि निज सरूप दरसाय ॥५॥
ताखी¶ तत्त जो माल** है राखो सीस चढ़ाय ।
चरन कमल निरखत रहो मौजै मौज समाय ॥६॥
तूमा†† तन मन रूप है चेतनि आब‡‡ भराय ।
पीवत कोई संत जन अमृत आपु छिपाय ॥७॥
कुबरी§§ पानी‖‖ अंग भो पवन दंड बरजोर ।
लागी डोरी प्रेम की तम मेटो भयो भोर ॥८॥
पौवा¶¶ अधर अधार को चलत सो पाँव पिराय ।
जो जावे सो गुरु कृपा कोउ कोउ सीस गँवाय ॥९॥

---

*घुमाय के घोटै। †भाँग। ‡घूंट। §छन्ना। ‖माला का दाना। ¶साधुओं की टोपी। **माला। ††तुंबा। ‡‡पानी। §§छड़ी, बैरागिन। ‖‖पानि=हाथ। ¶¶खड़ाऊँ।

मुरछल मन उनमान का छाया ज्ञान अकार ।
उष्न* ताप निस दिन सहै केवल नाम अधार ॥१०॥
अर्ध उर्ध के बीच में कमरबस्त† ठहराय ।
इँगला पिँगला एक है सुखमन के घर जाय ॥११॥
झोरी मौज अनयास‡ की बटुआ आनंद§ लेय ।
मृगछाला त्रिकुटी भई बैठि सब्द चित देय ॥१२॥
सकल संत कै रेनु§ लै गोला गोल बनाय ।
प्रेम प्रीति घसि ताहि को अंग बिभूति लगाय ॥१३॥
भिच्छा अनुभव अन्न ले आतम भोग बिचार ।
रहै सो रहनि अकासवत बरजित जानि अहार ॥१४॥
जटा बढ़ावे भाव की जब हरि कृपा अमान ।
मुद्रा नावे नाम की गुरु सब्द सुनावे कान ॥१५॥
आड़बंद|| हर हाल की अलफ़ी¶ रहनि अडोल ।
बाघम्बर** है सुन्न का अविगत करत कलोल ॥१६॥
पाँच पचीस धुई लगी धीरज कुंड भराय ।
ज्ञान अगिन ता में दिये बिषय इन्हन†† जरि जाय॥१७॥
फाहुलि‡‡ अगम अचिंत की चौपी§§ ध्यान लगाय ।
नूर जहूर झलकत रहै ता में मन अरुझाय ॥१८॥
भेख अलेख अपार है कहत न ज्ञान समाय ।
सुन्न निरंतर अलख है खोज करै कोउ जाय ॥१९॥

---

*गरमी । †कमरबद । ‡आसा से रहित । §धूल । ||लँगोट । ¶बिना बँहोली का कुरता । **शेर के चमड़े का बस्त्र । ††इंधन । ‡‡फरुही । §§नाप का कटोरा ।

साहब सब घट रमि रहो पूरन आपै आप ।
भीखा जो नहिं जान ही सहै करम संताप ॥२०॥

॥ ब्राह्मन या ब्रह्म ज्ञानी रहनी ॥

ब्राह्मन कहिये ब्रह्म-रत ब्रह्म मई को ज्ञान ।
ब्रह्म गायत्री जाप करि ब्रह्म रूप पहिचान ॥२१॥
ब्रह्म जनेऊ मेखला ब्रह्म कमंडल दंड ।
ब्रह्म भोग भिच्छा लिये ब्रह्मै आसन मंड ॥२२॥
ब्राह्मन कहिये ब्रह्म-रत है ता का बड़ भाग ।
नाहिंत* पसु अज्ञानता गर डारे तिन ताग† ॥२३॥
संत चरन में लगि रहे सो जन पावे भेव ।
भीखा गुरु परताप तें काढ़ेव कपट जनेव ॥२४॥

॥ संत महिमा ॥

संत चरन में जाइ कै सीस चढ़ायो रेनु‡ ।
भीखा रेनु के लागते गगन बजायो बेनु ॥२५॥
बेनु बजायो मगन ह्वै छुटी खलक की आस ।
भीखा गुरु परताप तें लियो चरन में बास ॥२६॥

॥ मिश्रित ॥

जोग जुक्ति अभ्यास करि सोहं सब्द समाय ।
भीखा गुरु परताप तें निज आतम दरसाय ॥२७॥
नाम पढ़ै जो भाव सों ता पर होहिं दयाल ।
भीखा के किरपा कियो नाम सुद्दृष्टि गुलाल ॥२८॥

* नहीं तो । † तीन तागा अर्थात जनेऊ । ‡ धूल ।

जाप जपै जो प्रीति सौं बहु बिधि रुचि उपजाय ।
साँझ समय औ प्रात लगु तत्त पदारथ पाय ॥२९॥
राम को नाम अनंत है अंत न पावै कोय ।
भीखा जस लघु बुद्धि है नाम तवन सुख होय ॥३०॥
एक संप्रदा सब्द घट एक द्वार सुख संच ।
इक आतम सब भेष मौं दूजो जग परपंच ॥३१॥
भीखा भयो दिगम्बर* तजि कै जक्त बलाय ।
कस्त† करो निज रूप को जहँ को तहाँ समाय ॥३२॥
भीखा केवल एक है किरतिम भयो अनंत ।
एकै आतम सकल घट यह गति जानहिं संत ॥३३॥
एकै धागा नाम का सब घट मनिया माल ।
फेरत कोई संतजन सतगुरु नाम गुलाल ॥३४॥
आरति हरि गुरु चरन की कोइ जाने संत सुजान ।
भीखा मन बच करमना ताहि मिलै भगवान ॥३५॥
आरति बिनवै ब्रह्म को केवल नाम निहोर ।
बारम्बार प्रनाम करु गुरु गोबिंद की ओर ॥३६॥

*साधू जो नंगे रहते हैं । †क़स्द=इरादा ।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजैं जिस में वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावैं और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उन को मिलैं उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करैं।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत व्यय होता है तो भी सर्व साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग मुस्तक़िल अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिन की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकें आगे छपैंगी बिना माँगे भेज दी जायँगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा परंतु डाक महसूल उन के ज़िम्मे होगा और पेशगी दाम न देने की हालत में वी० पी० कमिशन भी उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी० पी० कमिशन लिया जायगा।

अब दरिया साहब बिहार के महात्मा और ग़रीबदास पंजाब के महात्मा की बानी हाथ में ली गई हैं।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

अक्तूबर, १९०९ ई०

इलाहाबाद।

# संतबानी पुस्तक-माला

| पुस्तक | मूल्य |
|---|---|
| तुलसी साहब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... | २) |
| ,, ,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र .. | ॥=) |
| कबीर साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ... | ।≡) |
| [दूसरा एडिशन विशेष शब्दों के साथ ॥)] | |
| ,, ,, शब्दावली भाग २ ... ... ... | ॥≈) |
| ,, ,, अखरावती ... ... ... ... | -) |
| पलटू साहब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ... ... | ॥) |
| ,, ,, शब्दावली, भाग २ ... ... ... | ।-)॥ |
| चमरदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ... | ॥)॥ |
| ,, ,, भाग २ ... ... ... | ।≡)॥ |
| रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ... | ।-)॥ |
| जगजीवन साहब की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ... | ॥-) |
| दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र, दूसरा एडिशन, कितनेही अधिक पदों और साखियों के साथ ... ... ... ... ... ... | ।)॥ |
| भीखा साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... | ।≡) |
| सहजोबाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ... | ।) |
| दयाबाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ... | =)॥ |
| गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी ... ... ... | )॥ |
| अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र भी अंग्रेज़ी पद्य में छपा है (यह रमनीय पुस्तक एक मेम ने लिखी है संतबानी पुस्तक-माला की नहीं है) ... ... ... ... ... | =) |

मूल्य में डाक महसूल व वाल्यू पेअबल कमिशन शामिल नहीं है।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,

इलाहाबाद।

# ग़रीबदास जी की बानी

## जीवन-चरित्र सहित

जिस में

उन महात्मा की चुनी हुई अति कोमल और
भक्ति बढ़ाने वाली साखियाँ और पद शोध
कर मुख्य मुख्य अंगों और रागों
के अनुसार रक्खे गये हैं

और गूढ़ शब्दों के अर्थ व संकेत भी भक्तों की
कथा के साथ नोट में लिख दिये गये हैं।

---



---

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुई

सन् १९१०

२२८ सफ़हा]  [दाम ॥।=)

# निवेदन

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हम ने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हम ने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्त-लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक पिछले पाँच बरस के उद्योग से हो सका असल या नक़ल कराके मँगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। भर सक तो पूरे ग्रंथ मँगा कर छापे जाते हैं और फुटकर शब्दों की हालत में सर्व साधारन के उपकारक पद चुन लिये जाते हैं। कोई पुस्तक बिना कई लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी जाती, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दी जाय। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय बेधक हों जिन से आँख हटाने का जी न चाहे और अतःकरन शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के संक्षेप वृत्तांत और कौतुक फुट नोट में लिख दिये जाते हैं।

# सूचीपत्र

# जीवन-चरित्र

महात्मा ग़रीबदास जी मौज़ा छुड़ानी तहसील झज्जर ज़िला रोहतक (पंजाब) में बैसाख सुदी पूनो संबत १७७४ बिक्रमी मुताबिक़ ईसवी सन १७१७ को प्रगट हुए। वह जाति के जाट धनखड़े या दलान गोत्र के थे और पेशा ज़मींदारी का करते थे। अपने घर मौज़ा छुड़ानी ही में सतसंग खड़ा करके जीवों को चेताते रहे और सारी उमर गृहस्थ में रह कर ६१ बरस की उमर में भादो सुदी २ बिक्रमी संबत १८३५ मुताबिक़ ईसवी सन १७७८ को चोला छोड़ा। इस हिसाब से जान पड़ता है कि ग़रीबदास जी और महात्मा चरनदास जी एक ही समय में बिराजमान थे चरनदास जी के जन्म से चौदह बरस पीछे यह प्रगट हुए और उनके चोला छोड़ने से चार बरस पहिले गुप्त हुए।

ग़रीबदास जी के दो लड़की और चार लड़के थे। बाज़े कहते हैं कि उनके बेटों ही में से एक गद्दी पर बैठा और बाज़ों का कथन हैं कि उनके गुरमुख चेले सलोतजी ने गद्दी पाई। जो हो पर इस वक़्त तो यहां रिवाज है कि औलाद ही को महंती मिलती है और वह गृहस्थ ही में रहा करते हैं।

ग़रीबदासजी पूरी साध गति के थे और उन्हों ने कबीर साहब को अपना गुरू धारन किया। कबीर साहब अनुमान तीनसौ बरस इनके पहिले हुए थे लेकिन ग़रीबदासजी से उन का मेला होने की बाबत कितनों का तो बिस्वास है कि सुपने में दर्शन हुए और उपदेश मिला और कुछ लोग कहते हैं कि बारह बरस की उमर में ग़रीब-दासजी मौज़ा छुड़ानी में पौहे चरा रहे थे कि कबीर साहब प्रगट हुए और एक छोटी भैंस को जो कभी गाभिन नहीं हुई थी दिखला कर कहा कि इस का दूध हम को पिलाओ। ग़रीबदासजी ने जवाब दिया कि यह दूध नहीं देती जिस पर कबीर साहब बोले कि देखो तो सही ज़रूर देगी। ग़रीबदासजी ने ज्योंहीं हाथ लगाया उस छोटी भैंस के थन से दूध टपकने लगा। यह चमत्कार देख कर ग़रीबदासजी को कबीर साहब के समरथ होने का बिस्वास हुआ और उन के चरनों पर गिर कर उपदेश लिया। पहली कथा ज़ियादा समझ में आती है।

बाईस बरस की उमर में ग़रीबदासजी ने एक ग्रंथ रचना शुरू किया जिस में सत्तरह हज़ार चौपाई और साखी उनकी हैं और उसी के साथ कबीर साहब की सात हजार साखियाँ शामिल की हैं उन्हीं सत्तरह हजार कड़ियों में से इस पुस्तक के अंग और कड़ियाँ चुन कर छापी गई हैं।

ग़रीबदासजी के पन्थ के बहुत से लोग हैं और अब तक उनका बंश भी मौजूद है। मौजा छुड़ानी में फागुन सुदी दसमी को एक बड़ा मेला ग़रीबदासियों का उन महात्माजी का जारी किया हुआ अब तक होता है।

ग़रीबदास जी की बाबत बहुत से चमत्कार मशहूर हैं लेकिन वह सब लिखने के लायक़ नहीं हैं, सिर्फ़ दो एक चुनकर लिखे जाते हैं-

(१) एक साल सूखा पड़ा। सेवकों ने प्रार्थना की तो आप ने दया से ऐसी मौज की कि खूब मेंह बरसा। यह चर्चा दिल्ली में बादशाह के कान तक पहुंची। बादशाह पर उसी समय में एक दुशमन ने चढ़ाई की थी इस लिये बादशाह ने बड़े आदर और सतकार से बहुत से हाथी और सवार भेजकर ग़रीबदासजी को बुलाया। इन्हों ने जलूस को तो लौटा दिया और आप सादी चाल से एक घोड़ी पर चढ़ कर पाँच सेवकों के साथ दिल्ली पहुंचे। और महात्मा चरनदासजी के स्थान पर ठहर कर वहाँ से पैदल बादशाह के यहाँ गये। बादशाह ने दीनता से दुशमन से बचाने के लिये बिनती की। महात्माजी बोले कि अगर तुम तीन बातें छोड़ दो तो दुशमन तुम्हारा बाल बाँका न कर सकेगा-एक तो गोवध, दूसरे अनाज पर कर, तीसरे बहुत सी बेगमों का रखना। इस पर बादशाह के दरबारियों ने बादशाह को भड़काया कि यह फ़क़ीर हिन्दू है और अपने मत के जाल में हुज़ूर को भी फँसाया चाहता है। बादशाह ने उन नादानों की सलाह में आकर ग़रीबदासजी को मय उन के सेवकों के क़ैदख़ाने में तीन तालों में बंद कर दिया। पहरेवाले ने ताने से कहा कि देखें तो अगर सच्चे फ़क़ीर हो तो बन्दीख़ाने से निकल जाव। कुछ देर बाद महात्माजी ने ऐसी मौज की कि तीनों दरवाज़े और ताले खुल गये और वह अपने सेवकों के साथ निकल कर अपने स्थान को वापस

आये। अगले दिन जब बादशाह को खबर हुई तो वह लज्जित हुआ और फिर दोबारा उनको बुलाया पर वह नहीं आये। फिर बादशाह ने पाँच गाँव की जागीर देनी चाही उसके लेने से भी उन्हों ने इनकार किया।

(२) मौज़ा आसोध ज़िला रोहतक के एक साहूकार का इकलौता बेटा संतोषदास ग़रीबदासजी की महिमा सुन कर उनका चेला हुआ और कुछ दिन बाद उस की प्रार्थना पर उन्हों ने उसे साधू बना लिया। यह सुन कर उस के बाप को बड़ा क्रोध आया और ग़रीबदासजी के स्थान पर जाकर बहुत भला बुरा कह कर बोला कि तू ने मेरे बेटे को तो साधू बना लिया है अब उसकी घर-वाली तेरी बहिन का क्या हाल होगा। महात्माजी ने उसके कटु बचन के जवाब में बहुत कोमलता से कहा कि अगर तुम अपनी पतोह को मेरी बहिन बनाते हो तो वह मेरी बहिन ही होकर रहेगी। महात्मा जी के मुख से यह बचन निकलते ही उस औरत को मौज़ा आसोध में बैराग आया और अपनी चूड़ी वग़ैरह फोड़ कर साधुनी बन गई और ग़रीबदासजी की सेवा में रहने लगी।

और कथायें बहुत सी मशहूर हैं मगर मामूली रिद्धि शक्ति की हैं जो ग़रीबदासजी सरीखे साध गुरू की अपरंपार महिमा को नहीं लखातीं।

ग़रीबदासजी के पहिनने का जामा और बँधी हुई पगड़ी और धोती जूता और लोटा और कटोरा और पलँग अब तक मौज़ा छुड़ानी में उनकी समाध के स्थान पर मौजूद हैं जहाँ लोग दर्शन को जाते हैं॥

# गरीबदास जी की बानी

## बंदना

नमो नमो सतपुरुष कूँ, नमस्कार गुरु कीन्ह ।
सुर नर मुनि जन साधवा, संतन सर्बस दीन्ह ॥
सतगुरु साहब संत सब, डंडौत औ परनाम ।
आगे पीछे मद्ध हूं, तिन्ह पर जा कुरबान ॥
निराकार निर्बिषयं, काल जाल भय-भंजनं ।
निर्लेपं निज निर्गुनं, अकल अनूपं सुन धुनं ॥
सोहं सुरत समायतं, सकल समाना निरत लै ।
उजल हिरंब्रर* हर दमं, बेपरवाह अथाह है ।
वार पार नहिं मद्धुतं ॥

## चेतावनी का अंग

पानी की इक बूँद सूँ साज बनाया जीव ।
अंदर बहुत अँदेस था बाहर बिसरा पीव† ॥१॥

---

*हिरन्मय, निर्बिकार । †पुराणों में कथा है कि जब प्राणी गर्भ में आता है तब उसे ईश्वर का निरंतर दर्शन होता है और ईश्वर से प्रार्थना किया करता है कि इस मलाशय से मुझे बाहर कीजिये मैं प्रतिदिन आप का ध्यान किया करूँगा परन्तु बाहर आते ही संसार की माया से अज्ञानी होकर उस को भूल जाता है ।

पानी की इक बूँद सूँ आज बनाया साँच ।
राखन हारा राखिया जठर अगिन की आँच ॥२॥
पानी की इक बूँद सूँ साज बनाया साँच ।
कौड़ी बदले जात हैं कंचन साटे* काँच ॥३॥
पानी की इक बूँद सूँ साज बनाया सोध ।
तू जग में पंडित भया पढ़ा अठरहो बोध ॥४॥
धरनीधर जाना नहीं कीन्हा कोटि जतन्न ।
जल से साज बनाय कर मानुस किया रतन्न ॥५॥
धरनीधर जाना नहीं जिन्ह सिरजा जल बूँद ।
गुलजारा दरसै नहीं चसमैं फिर गई धूँध ॥६॥
धरनीधर जाना नहीं जिन्ह सिरजा जल बूँद ।
नाड़ी सहस सँवारि कर लाया नख सिख गूँद ॥७॥
धरनीधर जाना नहीं जिन्ह सिरजा तन साज ।
चेत सकै तो चेतिये बिगर जायगा काज ॥८॥
पानी की इक बूँद से अजब बनाया ख्याल ।
धरनीधर जाना नहीं आय पड़ा जम जाल ॥९॥
उरध मुखी जब रहे थे तल सिर ऊपर पाँव ।
राखनहारा राखिया जठर अगिन की लाव† ॥१०॥
अस्थि चाम रग रोम सब किस ने कीया गूँध ।
उदर बीच पोषन किया बिन जननी के दूध ॥११॥
तुही तुही तुतकार थी जपता अजपा जाप ।
बाहर आकर भरमिया बहुत उठाये पाप ॥१२॥

*साथ । †लवर ।

तुही तुही तुतकार थी ररंकार धुन ध्यान ।
जिन्ह यह साज बनाइया ताकूँ ले पहिचान ॥१३॥
वजू* उरध मुख जपै था ररंकार धुन धीर ।
वा तालिब कूँ याद कर जिन्ह यह धरा सरीर ॥१४॥
वजू उरध मुख जपै था जोनी जिंद जहान ।
बाहर मूल गँवाइया पूजत है पाखान ॥१५॥
जठर अगिन से राखिया ना साँईं गुन भूल ।
वह साहब दरहाल है क्यों बोवत है सूल ॥१६॥
आध घड़ी की अध घड़ी आध घड़ी की आध ।
साधू सेती गोसटी† जो कीजे सो लाभ ॥१७॥
पाव घड़ी तो याद कर नीमाना सन‡ खोय ।
सतगुरु हेला देत है बिषै सूल नहिं बोय ॥१८॥
अलिफ अलह कूँ याद कर कादिर कूँ कुरबान ।
साँईं सेती तोड़ कर राखा अधम जहान ॥१९॥
अलिफ अलह कूँ याद कर जिन्ह कीन्हा यह साज ।
उस साहब कूँ याद कर पाला जल बिन नाज ॥२०॥
संसारी में आन कर कहा किया रे मूढ़ ।
सूआ सेमर सेइया लागे डौंड़े टूट ॥२१॥
सूआ सेमर सेइया बारह बरस बिसास§ ।
अंत चोंच खाली पड़ी डौंड़े बीच कपास ॥२२॥
सूआ सेमर सेइया ऐसे नर या देँह ।
जम किंकर तुझ लेगया मुख में देकर खेह ॥२३॥

---

* वजू=पंचस्नाना, जप । † बात चीत । ‡ पूरा बरस । § बिस्वास ।

आदि समय चेता नहीं अंत समय अँधियार ।
मद्ध समय माया रते पाकर लिये गँवार ॥२४॥
अंत समय बीतै घनी तन मन धरै न धीर ।
उस साहब कूँ याद कर जिन्ह यह धरा सरीर ॥२५॥
धूआँ का सा धौरहर बालू की सी भीत ।
उस खाविंद कूं याद कर महल बनाया सीत ॥२६॥
धूआँ केरा धौरहर यह बालू का साज ।
उस खाविंद कूं याद कर साजी गैब अवाज ॥२७॥
धूआँ केरा धौरहर बालू जेहा भेव ।
गैबी से गैबी मिलै तौ परसै दिल देव ॥ २८ ॥
गैब अजाती पिंड में जा का गैबी नावँ ।
सुन्न सनेही जानिये मढ़ी महल नहिं ठावँ ॥२९॥
भगति हेत गृह बँधिया माटी महल मसान ।
तैं साहब जाना नहीं भूला मूढ़ जहान ॥ ३० ॥
भगति हेत गृह बँधिया घन नामी घट माहिं ।
बिन सतगुरु की बंदगी साहब पावै नाहिं ॥३१॥
भगति हेत गृह बँधिया घन नामी घट माहिं ।
साधू जन सेये बिना साँई पावै नाहिं ॥ ३२ ॥
भगति हेत काया धरी घन नामी घट बीच ।
नीव लगै नहिं नारियर भावैं परमल सींच ॥३३॥
यह माटी का महल है तासे कैसा नेह ।
जो साँईं मिल जात हैं तौ पारायन देह ॥ ३४ ॥

यह माटी का महल है खाक मिलेगा धूर ।
साँईं के जाने बिना गदहा कुत्ता सूर* ॥ ३५ ॥
यह माटी का महल है छार मिलै छिन माहिँ ।
चार सकस† काँधे धरे मरघट कूं ले जाहिँ ॥३६॥
जार बार तन फूँकिया होगा हाहाकार ।
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु कहैं पुकार ॥ ३७ ॥
जार बार तन फूँकिया मरघट मंडन माँड ।
या तन की होरी बनी मिटी न जम की डाँड ॥३८॥
जार बार तन फूँकिया मेटा खोज खलील‡ ।
तू जानै मैं रहूंगा यहाँ तो कछू न ढील ॥ ३९ ॥
जार बार तन फूँकिया फोकट मिटे फिराक§ ।
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु बोलै साख ॥ ४० ॥
जार बार कोइला किया होगया मरघट राख ।
छाँड़े महल मँड़ेरिया‖ क्या कौड़ी धन लाख ॥४१॥
चढ़ कर तुरँग कुदावते और पालकी फील¶ ।
ते नर जंगल जा बसे जम कूँ फेरा लील ॥४२॥
अरब खरब लौं द्रव्य है उदय अस्त बिच जाह** ।
बिन साँईं की बंदगी डूब मुए दह†† माँह ॥ ४३ ॥
अरब खरब लौं द्रव्य है रावत‡‡ कोटि अनंत ।
नाहक जग में आइया जिन्ह सेये नहिं संत ॥४४॥

---

* सुअर । † आदमी । ‡ एक भक्त जिन के बिषय में कथा है कि बादशाह ने जीते जी आग में जला देना चाहा पर भगवत की दया से चिता फूल की क्यारी बन गई । § बियोग । ‖ मँड़ई । ¶ हाथी । ** मर्तबा । †† कुंड । ‡‡ राजा ।

माया हुई तो क्या हुआ भूल रहा नर भूत ।
पिता कहैगा कौन कूँ तू बेस्या का पूत* ॥ ४५ ॥
काया माया काल हैं बिन साहब के नावँ ।
चेत सकै तो चेतिये बिन संतौं नहिं दावँ ॥ ४६ ॥
ऐसा अंजन आँजिये सूझै त्रिभुवनराय ।
काम धेनु अरु कलप बृछ घटही माँझ लखाय ॥४७॥
जोनी संकट मेटहूं जो बिसरै नहिं मोहिं ।
जिन्ह संसारी चित धरी नहीं छुड़ाऊँ वोहि ॥४८॥
लख चौरासी बंध तैं सतगुरु लेत छोड़ाय ।
जे उर अंतर नाम है जोनी बहुरि न जाय ॥४९॥
सब माया के ख्याल हैं सब माया के चोज ।
बिन साँई की बन्दगी जंगल हूैगा रोज† ॥५०॥
महसूदी‡ चौतार नर खासे पहरे खूब ।
अंत मसाने जा बसे बिना भगति महबूब ॥ ५१ ॥
जोनी संकट मेटहूं देहूं निःचल बास ।
उर अंतर में राखहूं जम की नहीं तिरास ॥५२॥
जो जन हमरी सरन है जाका हूं मैं दास ।
भगति अनाहद बन्दगी अनँत लोक परकास ॥५३॥
बेमुख प्रानी जाहिंगे दोजख दुन्द बहीर§ ।
वा कूं नर नहिं सुमिरते जिन्ह यह धरा सरीर ॥५४॥

---

* एक संस्कृत ग्रंथ में लिखा है कि बिष्णु और महादेव के सम्बाद में बिष्णु ने कहा था कि मेरी स्त्री लक्ष्मी हरजाई है और मेरा पुत्र कामदेव उन्मद है । † रोना, बिलाप । ‡ जिस को देख कर लोग सिहाते हैं । § कुल परिवार सहित ।

इस माटी के महल में मगन भया क्यों मूढ़ ।
कर साहब की बन्दगी उस साँईं कूँ ढूंढ़ ॥५५॥
इस माटी के महल में मन बाँधी बिष पोट ।
अहरन* पर हीरा धरा ताहि सहै घन चोट ॥५६॥
काँचा हीरा किरच ह्वै नहीं सहै घन मार ।
ऐसा मन यह ह्वै रहा लेखा ले करतार ॥५७॥
हीरा घन की चोट सहि साँचे कूँ नहिं आँच ।
वह दरगह† में क्या कहै जाके सँग हैं पाँच‡ ॥५८॥
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु हेला दीन ।
बन बस्ती में ना रहै ले जाता जम बीन ॥५९॥
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु कहा पुकार ।
बिना भगति छूटै नहीं बहु बिधि जम की मार ॥६०॥
संतौं सेतीं ओलने§ संसारी से नेह ।
सो दरगह में मारिये सिर में देकर खेह ॥६१॥
भग्ति गरीबी बंदगी संतौं सेतीं हेत ।
जिन्ह के निःचल बास है आसन दीजे सेत ॥६२॥
कुटिल बचन कूँ छाँड़ि दे मान मनी कूँ मार ।
सतगुरु हेला देत जनि डूबै काली धार ॥६३॥
इस माटी के महल में नातर कीजै मोद ।
राव रंक सब चलैंगे आपे कूँ ले सोध ॥६४॥
मात पिता सुत बंधवा देखें कुल के लोग ।
रे नर देखत फूँकिये करते हैं सब सोग ॥६५॥

*निहाई । †दरबार । ‡ पाँच दूत । §शिकायत ।

महल मँड़ेरी नीम सब चलै कैान के साथ ।
काागा रैाला हो रहा कछू न लागा हाथ ॥६६॥
गलताना गैबी चला माटी पिंडय जोख ।
आया सो पाया नहीं अन आये कूँ रोक ॥६७॥
यह मन मंजन कीजिये रे नर बारंबार ।
साँईं से कर दोसती बिसर जाय संसार ॥६८॥
अंत समय की बात सुन तेरा संगी कैान ।
माटी में माटी मिलै पवनहिं मिलिहै पैान ॥६९॥
ये बादर सब धुंध के मन माया चितराम* ।
दीखै सो रहता नहीं सप्तपुरी सब धाम ॥ ७० ॥
जनम जनम को मैल है जनम जनम की घात ।
जड़ नर तोहि सूझै नहीं ले चला चोर बिरात ॥७१॥
जाते कूँ नर जान दे रहते कूँ ले राख ।
सत्त सब्द उर ध्यान धर मुख सूँ कूड़ न भाख ॥७२॥
निरबानी के नाम से हिल मिल रहना हंस ।
उर मैं करिये आरती कधी न बूड़ै बंस ॥ ७३ ॥
पंछी उड़ै अकास कूँ कित कूँ कीन्हा गैान ।
यह मन ऐसे ज़ात है जैसे बुदबुद† पैान ॥७४॥
धन संचै तो संत का और न तेरे काम ।
अठसठ तीरथ जो करे नाहीं संत समान ॥७५॥
धन संचै तो सील का दूजा परम सँतोख ।
ज्ञान रतन भाजन‡ भरो असल खजाना रोक ॥७६॥

*नक़्शबन्दी । †बुलबुला । ‡बरतन ।

दया धर्म दो मुकट हैं बुद्धि बिबेक बिचार।
हर दम हाजिर हूजिये सौदा त्यारंत्यार ॥७७॥
नाम अभय पद निरमला अटल अनूपम एक।
यह सौदा सत कीजिये बनिजी बनिज अलेख॥७८॥
यह संजम सैलान कर यह मन यह बैराग।
बन बसती कितही रहौ लगे बिरह का दाग॥७९॥
रंचक नाम सँभारिये परपंची कूँ खोय।
अंत समय आनंद है अटल भगति देउँ तोय॥८०॥
जा घट भगित बिलास है ता घट हीरा नाम।
जो राजापृथ वी-पती ता घर मुस्ते* दाम॥८१॥
साहब साहब क्या करै साहब तेरे पास।
सहस इकीसौं† सोधि ले उलट अपूठा‡ स्वाँस॥८२॥
गगन मँडल में रम रहा तेरा संगी सोय।
बाहर भरमे हानि है अंतर दीपक जोय॥८३॥
चित के अंदर चाँदना कोटि सूर ससि भान।
दिल के अंदर देहरा काहे पूज पखान॥८४॥
रतन रसायन नाम है मुक्ता महल मजीत§।
अंधे कूँ सूझै नहीं आगे जलै अँगीठ॥८५॥
नाम बिना निबहै नहीं करनी करिहैं कोट।
संतौं की संगत तजी बिष की बाँधी पोट॥८६॥
झिल मिल दीपक तेज कै दसौं दिसा दरहाल।
सतगुरु की सेवा करै पावै मुक्ता माल॥८७॥

---

* बहुत। †इक्कीस हज़ार छःसौ स्वाँसा दिन रात में चलती है।
‡निर्मल। §मसजिद।

ले का लाहा* लीजिये ले की भर ले भार ।
　ले की बनिजी कीजिये ले का साहूकार ॥ ८८ ॥
रतन खजाना नाम है माल अजोख अपार ।
　यह सौदा सत कीजिये दुगुने तिगुने चार ॥८९॥
निरगुन निरमल नाम है अवगत नाम अबंच ।
　नाम रते सो धनपती और सकल परपंच ॥९०॥
ऐसे लाहा लीजिये संत समागम सेव ।
　सतगुरु साहब एक है तीनौं अलख अभेव ॥९१॥
चेत सकै तो चेतिये कूकै संत सुमेर ।
　चौरासी कूं जात है फेर सकै तो फेर ॥ ९२ ॥
मन माया की डुगडुगी बाजत है मिरदंग ।
　चेत सकै तो चेतिये जाना तुझे निहंग† ॥ ९३ ॥
नंगा आया जगत में नंगाही तू जाय ।
　बिच कर ख़्वाबी ख्याल है मन माया भरमाय ॥९४॥
फूँक फाँक फारिग किया कहीं न पाया खोज ।
　चेत सकै तो चेतिये ये माया के चोज‡ ॥ ९५ ॥
नैना निरमल नूर के बैना बानी सार ।
　आरत अंजन कीजिये डारो सिर से भार ॥९६॥

* लाभ । † नंगा ( बिना अंग के) । ‡ बिलास ।

# गुरुदेव के अंग

पुर पट्टन पर लोक है अदली सतगुरु सार ।
भग्ति हेत से उतरे पाया हम दीदार ॥ १ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला अललपच्छ की जात ।
काया माया ना उहाँ नहीं पिंड नहिं नात ॥ २ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला उजल हिरंबर आद ।
भलका ज्ञान कमान का घालत है सर साध ॥३॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुन्न बिदेसी आप ।
रोम रोम परकास है दे हौं अजपा जाप ॥ ४ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला मगन किये मुस्ताक ।
प्याला प्रेम पिलाइया गगन मँडल गरगाप ॥५॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु की सैन ।
उर अंतर परकासिया अजब सुनाये बैन ॥ ६ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु की सैल ।
बजर पौरि पट खोल कर ले गया भीनी गैल ॥७॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के तीर ।
सब संतन सिरताज है सतगुरु अदल कबीर ॥८॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के माँह ।
सब्द सरूपी अंग है पिंड प्रान नहिं छाँह ॥ ९ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला गलताना* गुलजार ।
वार पार की मत नहीं नहिं हलका नहिं भार ॥१०॥

---

* मतवाला ।

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के मंझ ।
अन्डों आनंद पोख ही बैन सुनाये कुँज* ॥११॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के नाल ।
पीतम्बर ताखी† धस्यो बानी सब्द रसाल‡ ॥१२॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के नाल ।
गमन किया परलोक से अललपच्छ की चाल ॥१३॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के नाल ।
ज्ञान जोग औ भक्ति सब दीन्ही नजर निहाल ॥१४॥

ऐसा सतगुरु हम मिला बेपरवाह अबंध ।
परम हंस पूरन पुरुष रोम रोम रबि चंद ॥ १५ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला है जिंदा जगदीस ।
सुन्न बिदेसी मिल गया छत्र मुकट है सीस ॥१६॥

सतगुरु के लच्छन कहूं मधुरे बैन विनोद ।
चार बेद षट सास्तर कहा अठारह बोध ॥ १७ ॥

सतगुरु के लच्छन कहूं अचल विहंगम चाल ।
हम अमरापुर ले गया ज्ञान सब्द के नाल ॥ १८ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला तुरिया के रे तीर ।
सब बिद्या बानी कहै छानै नीर अरु छीर ॥१९॥

जिंदा जोगी जगत-गुरु मालिक मुरसिद पीव ।
काल कर्म लागै नहीं नहिं संका नहिं सींव§ ॥२०॥

---

* कुंज चिड़िया अपने अंडे को बैठ कर नहीं सेती बल्कि सुरत से। † टोपी। ‡ रसीली। § हद।

जिंदा जोगी जगत गुरु मालिक मुरसिद पीर ।
दुहूँ दीन झगड़ा मचा पाया नहीं सरीर* ॥२१॥
ऐसा सतगुरु हम मिला मालिक मुरसिद पीर ।
मारा भलका† भेद से लगे ज्ञान के तीर ॥ २२ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला तेज पुँज के अंग ।
झिलमिल नूर जहूर है रूप रेख नहिं रंग ॥२३॥
ऐसा सतगुरु हम मिला तेज पुँज की लोय‡ ।
तन मन अरपौं सीस हू होनी होय सो होय ॥२४॥
ऐसा सतगुरु हम मिला खोले बज्र किवार ।
अगम दीप कूं लेगया जहाँ ब्रह्म दरबार ॥ २५ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला खोले बज्र कपाट ।
अगम भूमि कूं गम करी उतरे औघट घाट ॥२६॥
ऐसा सतगुरु हम मिला मारी गाँसी सैन ।
रोम रोम में सालती पलक नहीं है चैन ॥ २७ ॥
सतगुरु भलका खैंच कर लाया बान जो एक ।
साँस उभारे सालता पड़ा कलेजे छेक ॥ २८ ॥
सतगुरु मारा बान कस कैबर§ गाँसी खैंच ।
भरम करम सब जरि गये लई कुबुधि सब ऐंच ॥२९॥
सतगुरु आये दया कर ऐसे दीन-दयाल ।
बंदि छोड़ाई बिरद‖ सुनि जठर अगिन प्रतिपाल।३०।

---

* कहते हैं कि कबीर साहब के चोला छोड़ने पर उनके हिन्दू शिष्य चाहते थे कि शरीर को दाह करैं और मुसलमान चाहते थे कि गाड़ दैं परन्तु शरीर गुप्त हो गया और इस तरह आपस का झगड़ा मिटट गया । †कमान । ‡ लौ । §काँटीदार गाँसी जो घुसने पर निकलती नहीं । ‖स्तुति (चेतावनी की पहिली साखी का नोट देखो)

जठर अगिन से राखिया प्याया अमृत छीर ।
जुगन जुगन सतसंग है समझ कुटिल बेपीर ॥३१॥

जोनी संकट मेटि हैं ऊरध मुख नहिं आय ।
ऐसा सतगुरु सेइये जम से लेत छुड़ाय ॥ ३२ ॥

जम जोरा जा से डरे धर्मराय के दूत ।
चौदह* कोर न चंपहीं सुन सतगुरु की कूत† ॥३३॥

जम जोरा जा से डरै धर्मराय धर धीर ।
ऐसा सतगुरु एक है अदली अदल कबीर ॥३४॥

जम जोरा जा से डरै मिटे कर्म के अंक ।
कागज लीरैं‡ दरगह दई चौदह कोर न चंप ॥३५॥

जम जोरा जा से डरै मिटे कर्म के रेख ।
अदली अदल कबीर है कुल के सतगुरु एक ॥३६॥

ऐसा सतगुरु हम मिला पहुंचा बंक निदान ।
नौका नाम चढ़ाय कर पार किये परवान ॥३७॥

ऐसा सतगुरु हम मिला भवसागर के माँह ।
नौका नाम चढ़ाय कर ले राखे निज ठाँह ॥ ३८॥

ऐसा सतगुरु हम मिला भवागसर के बीच ।
खेवट सब कूं खेवता क्या उत्तम क्या नीच ॥३९॥

चौरासी की धार में बहे जात हैं जीव ।
ऐसा सतगुरु हम मिला ले परसाया पीव ॥४०॥

---

*जम गिनती में १४ हैं । †बल । ‡धज्जियाँ—अर्थ यह है कि कर्म के लेखे फट कर मालिक की दरगाह में दाखिल हो गये अब चौदह जम कोर नहीं दबा सकते ।

चौरासी की धार में बहे जात हैं हंस ।
ऐसा सतगुरु हम मिला अलख लखाया बंस ॥४१॥
माया का रस पीय कर फूट गये दोउ नैन ।
ऐसा सतगुरु हम मिला बास दिया सुखचैन॥४२॥
माया का रस पीय कर होगये डावाँडोल ।
ऐसा सतगुरु हम मिला ज्ञान जोग दिया खोल ॥४३॥
माया का रस पीय कर होगये भूत खबीस ।
ऐसा सतगुरु हम मिला भग्ति दई बकसीस ॥४४॥
माया का रस पीय कर फूट गये पट चार ।
ऐसा सतगुरु हम मिला लिये निसंक उधार ॥४५॥
माया का रस पीय कर डूब गये दुहुं* दीन ।
ऐसा सतगुरु हम मिला ज्ञान जोग परबीन ॥४६॥
माया का रस पीय कर भये सठ† गारत गोर‡ ।
ऐसा सतगुरु हम मिला परघट लिये बहोर ॥४७॥
सतगुरु कूं क्या दीजिये देवे को कछु नाँय ।
सम्मन‖ को साका§ किया सेऊ‖ भेट चढ़ाय ॥४८॥

---

*हिंदू और मुसलमान । †शठ=दुष्ट । ‡सत्यानास । §साका=शोहरत नाम । ‖समन एक भक्त थे उनकी स्त्री जिसका नाम नेकी था और पुत्र जिसका नाम सेऊ था यह दोनों भी पक्के भक्त थे । एक समय कबीर साहब अपने चेलों कमाल और फ़रीद के साथ उनके स्थान पर पधारे । इन भक्तों के घर में न एक कौड़ी थी और न अन्न । बेचारे घबराये कि किस तरह ऐसे महात्माओं का सन्मान करें । इधर उधर माँगने गये कुछ नहीं मिला तब सेऊ की मा ने अपने पती और पुत्र से कहा कि जाकर कहीं अन्न की चोरी करो, पर दोनों पहिले तो रुके आखिर माता के समझाने से सेऊ तैयार हो गया और बाप भी साथ हो लिया । सेऊ एक बनिये के घर में

सिर साँटे* की भगति है और कछू नहिं बात ।
सिर के साँटे पाइये अविगत अलख अनाद ॥४९॥
सीस तुम्हारा जायगा कर सतगुरु कूँ दान ।
मेरा मेरी छाँड़ दे यही गुप्त है दान ॥५०॥
सीस तुम्हारा जायगा कर सतगुरु की भेँट ।
नाम निरंतर लीजिये जम की लगै न फेट ॥५१॥
साहब से सतगुरु भये सतगुरु से भये साध ।
ये तीनौँ अँग एक हैं गति कछु अगम अगाध ॥५२॥
साहब से सतगुरु भये सतगुरु से भये संत ।
घर घर भेष बिलास अँग खेलैँ आद अरु अंत ॥५३॥

---

सेँध मार कर घुसा और कुछ अन्न चुरा कर लाया। बाप ने जो बाहर खड़ा था अन्न को देख कर कहा कि चोरी भी की तो इतना अन्न न लाये कि जिससे पूरा पड़े। इस पर सेऊ फिर बनिये के घर में घुसा। बनिया जाग पड़ा और सेऊ को पकड़ लिया। सेऊ ने बिनती की कि मेरा पिता बाहर खड़ा है मेरा पाँव बाँध कर डोरी अपने हाथ में रक्खो और मेरा सिर सेंध के छेद से बाहर निकाल दो जिस में मैं अपने पिता से दो बात कर लूं क्योंकि सबेरे तो मारा ही जाऊँगा। इस बात को बनिये ने मंजूर किया। सेऊ ने बाहर सिर निकाल कर पिता से कहा कि तुरंत मेरा सिर काट लो नहीं तो सबेरे जब पहिचाने जायँगे तो घर भर पकड़ा जायगा और साध सेवा में बिघ्न पड़ेगा। पिता ने ऐसाही किया और बेटे के सिर को काट कर घर में एक आले पर छिपाकर रख दिया और जो अन्न चोरी का मिला था उससे समन और नेकी ने भोजन बनाकर कबीर साहब और उनके दोनों चेलों के सामने धरा। कबीर साहब ने पूछा कि सेऊ कहाँ है वह भी आवे तो हम भोग लगावें। समन और नेकी जवाब देने में हिचकिचाये परंतु अंतर-जामी कबीर साहब ने सेऊ के सिर को मँगा कर अपना अमी रूपी प्रसाद उसके मुख में डाल कर जिला दिया।

* बदले।

ऐसा सतगुरु सेइये बेग उतारै पार ।
चौरासी भ्रम मेटई आवागमन निवार ॥५४॥
अंधे गूंगे गुरु घने लँगड़े लोभी लाख ।
साहब से परचै नहीं काव्य बनावैं साख* ॥५५॥
ऐसा सतगुरु सेइये सब्द समाना होय ।
भवसागर में डूबते पार लगावै सोय ॥५६॥
ऐसा सतगुरु सेइये सोहं सिंधु मिलाप ।
तुरिया मध आसन करै मेटै तीनौं ताप ॥५७॥
तुरिया पर पुरिया† महल पार ब्रह्म का देस ।
ऐसा सतगुरु सेइये सब्द-बिज्ञाना नेस‡ ॥५८॥
तुरिया पर पुरिया महल पार ब्रह्म का धाम ।
ऐसा सतगुरु सेइये हंस करै निःकाम ॥५९॥
तुरिया पर पुरिया महल पार ब्रह्म का लोक ।
ऐसा सतगुरु सेइये हंस पठावै मोख§ ॥ ६० ॥
तुरिया पर पुरिया महल पार ब्रह्म का दीप ।
ऐसा सतगुरु सेइये राखै संग समीप ॥ ६१ ॥
गगन मँडल गादी जहाँ पार ब्रह्म का धाम ।
सुन्न सिखर के महल में हंस करै बिस्राम ॥६२॥
सतगुरु पूरन ब्रह्म है सतगुरु आप अलेख ।
सतगुरु रमता राम है या में मीन न मेख ॥ ६३ ॥
सतगुरु आदि अनादि है सतगुरु मध अरु मूल ।
सतगुरु कूँ सिजदा करूँ एक पलक नहिं भूल ॥ ६४ ॥

*कबित और साखी । †बनाया । ‡नेष्ठावान । §मोक्ष ।

पट्टन घाट लखाइया अगम भूमि का भेद ।
ऐसा सतगुरु हम मिला अष्ट कमल दल छेद॥६५॥
पट्टन घाट लखाइया अगम भूम का भेव ।
ऐसा सतगुरु हम मिला अष्ट कमल दल सेव ॥६६॥
पुर पट्टन की पैंठ में सतगुरु लेगया मोय ।
सिर साँटे सौदा हुआ अगली पिछली खोय ॥६७॥
पुर पट्टन की पैंठ में सतगुरु लेगया साथ ।
जहँ हीरे मानिक बिकैं पारस लागा हाथ ॥ ६८ ॥
पुर पट्टन की पैंठ में है सतगुरु की हाट ।
जहँ हीरे मानिक बिकैं सौदा मरनोँ साँट ॥ ६९ ॥
पुर पट्टन की पैंठ में सौदा है निज सार
हम कूँ सतगुरु लेगया औघट घाट उतार ॥ ७० ॥
पुर पट्टन की पैंठ में प्रेम पियाले खूब ।
जहँ हम सतगुरु लेगया मतवाला महबूब ॥ ७१ ॥
पुर पट्टन की पैंठ में मतवाला मस्तान ।
हम कूँ सतगुरु लेगया अमरापुर अस्थान ॥ ७२ ॥
बंकनाल के अंतरे तिरबेनी के तीर ।
मानसरोवर हंस है बानी कोकिल कीर* ॥७३॥
बंकनाल के अंतरे तिरबेनी के तीर ।
जहँ हम सतगुरु लेगया चवै† अमी रस छीर ॥७४॥
बंकनाल के अंतरे तिरबेनी के तीर ।
जहँ हम सतगुरु लेगया बंदीछोर कबीर ॥ ७५ ॥

*तोता । †टपकता है ।

भँवर गुफा में बैठ कर अमी महा रस जोख ।
ऐसा सतगुरु मिल गया सौदा रोकम रोक* ॥७६ ॥
भँवर गुफा में बैठ कर अमी महा रस तोल ।
ऐसा सतगुरु मिल गया वजर पौरि दइ खोल ॥७७ ॥
भँवर गुफा में बैठ कर अमी महा रस जोख ।
ऐसा सतगुरु मिल गया लेगया हम परलोक ॥७८ ॥
पिंड ब्रह्मंड से अगम है न्यारी सिंधु समाध ।
ऐसा सतगुरु मिल गया देखा अगम अगाध ॥७९ ॥
पिंड ब्रह्मंड से अगम है न्यारी सिंधु समाध ।
ऐसा सतगुरु मिल गया दिया अछय परसाद ॥ ८० ॥
औघट घाटी ऊतरे सतगुरु के उपदेस ।
पूरन पद परकासिया ज्ञान जोग परवेस ॥ ८१ ॥
सुन्न सरोवर हंस मन न्हाये सतगुरु भेद ।
सुरत निरत परचा भया अष्ट कमल दल छेद ॥८२॥
सुन बेसुन से अगम है पिंड ब्रह्मंड से न्यार ।
सब्द समाना सब्द में अवगत वार न पार ॥ ८३ ॥
सतगुरु कूँ कुरबान जाँ अजब लखाया देस ।
पारब्रह्म परवान है निरालंब निज बेस ॥ ८४ ॥
सतगुरु सोहं नाम दे गुझ† बीज बिस्तार ।
बिन सोहं सीझै‡ नहीं मूल मंत्र निज सार ॥ ८५ ॥
सोहं सोहं धुन लगे दरद मंद दिल माहिं ।
सतगुरु परदा खोलहीं परा लोक लेजाहिं ॥ ८६ ॥

* मक़दा नक़दी । † गुप्त । ‡ पैवस्त न हो ।

सोहं जाप अजाप है बिन रसना है धुन्न ।
चढ़ै महल सुख सेज पर जहाँ पाप नहिं पुन्न ॥८७॥
सोहं जाप अजाप है बिन रसना है धुन्न ।
सतगुरु दीप समीप है नहिं बस्ती नहिं सुन्न ॥८८॥
सुन बस्ती से रहित है मूल मंत्र मन माहँ ।
जहँ हम सतगुरु लेगया अगम भूमि सत ठाँह ॥८९॥
मूल मंत्र निज नाम है सुरत सिंधु के तीर ।
गैबी बानी अरस* में सुर नर धरै न धीर ॥ ९० ॥
अजब नगर में लेगया हम कूँ सतगुरु आन ।
झलकै बिंब अगाध गत सूतै चादर तान ॥ ९१ ॥
अगम अनाहद दीप है अगम अनाहद लोक ।
अगम अनाहद गमन है अगम अनाहद मोख॥९२
सतगुरु पारस रूप है हमरी लोहा जात ।
पलक बीच कंचन करै पलटै पिंडा गात ॥९३॥
हम तो लोहा कठिन हैं सतगुरु बने लोहार ।
जुगन जुगन के मोरचे तोड़ गढ़े घन सार ॥९४॥
हम पसुआ-जन† जीव हैं सतगुरु जात भिरंग† ।
मुरदे से जिन्दा करैं पलट धरत हैं अंग‡ ॥ ९५ ॥
सतगुरु सिकलीगर बने यह तन तेगा देह ।
जुगन जुगन के मोरचे खोवैं भरम सँदेह ॥ ९६ ॥

---

*मुसलमानों में नवें यानी सब से ऊँचे स्वर्ग का नाम।
†नरपशु। ‡जैसे भृंगी (मखोहरी) झींगुर वग़ैरह को मार कर अपने खौंता में उस पर बैठ कर अपने भौंकार शब्द से जिला कर उसको अपना ऐसा रूप वाला बना लेती है।

सतगुरु कंद कपूर हैं हमरी तिनका देह ।
स्वाँति सीप का मेल है चंद चकोरा नेह ॥ ९७ ॥
ऐसा सतगुरु सेइये बेग उधारै हंस ।
भवसागर आवै नहीं जोरा काल बिधंस ॥९८॥
पट्टन नगरी घर करै गगन मंडल गहनार ।
अललपंख ज्यौं संचरै सतगुरु अधम उधार ॥९९॥
अललपंख अनुराग है सुन्न मँडल रह थीर ।
दास गरीब उधारिया सतगुरु मिले कबीर ॥१००॥

## सुमिरन का अंग

ऐसा अविगत राम है आदि अंत नहिं कोय ।
वार पार की मत नहीं अचल निरंतर सोय ॥१॥
ऐसा अविगत राम है अगम अगोचर नूर ।
सुन्न सनेही आदि है सकल लोक भरपूर ॥२॥
ऐसा अविगत राम है गुन इंद्री से न्यार ।
सुन्न सनेही रम रहा दिल अंदर दीदार ॥३॥
ऐसा अविगत राम है अपरंपार अलाह ।
कादिर कूँ कुरबान है वार पार नहिं थाह ॥४॥
ऐसा अविगत राम है कादिर आप करीम ।
मेरा मालिक मेहरबाँ रमता राम रहीम ॥५॥
अल्लह अविगत राम है बेचगून* चित माहिं ।
सब्द अतीत अगाध है निरगुन सरगुन नाहिं॥६॥

* बेचून ।

अल्लह अविगत राम है बेचगून निरबान ।
मेरा मालिक है सही महल मढ़ी नहिं थान ॥७॥
अल्लह अविगत राम है निराधार आधार ।
नाम निरंतर लीजिये रोम रोम की लार ॥८॥
अल्लह अविगत राम है निरबानी निरबंद ।
नाम निरंतर लीजिये ध्यान चकोरा चंद ॥९॥
अल्लह अविगत राम है कीमत कही न जाय ।
नाम निरंतर लीजिये मुख से कहि न सुनाय॥१०॥
अल्लह अविगत राम है निरबानी निरबंद ।
नाम निरंतर लीजिये हिलमिल मीन समुंद ॥११॥
दुहूं दीन मध ऐब है अलह अलख पहिचान ।
नाम निरंतर लीजिये भगत हेत उतपान ॥१२॥
अष्ट कमल दल राम है बाहर भीतर राम ।
पिंड हाड़ में राम है सकल ठौर सब ठाम ॥१३॥
सकल बियापी सुरत में मन पवना गहि राख ।
रोम रोम धुन होत है सतगुरु बोले साख ॥१४॥
मूल कमल में राम है स्वाद चक्र में राम ।
नाभि कमल में राम है हृदय कमल बिस्राम ॥१५॥
कंठ कमल में राम है त्रिकुटि कमल में राम ।
सहस कमल दल राम है सुन बस्ती सब ठाम ॥१६॥
अचल अभंगी राम है गलताना दम लीन* ।
सुरत निरत के अंतरै बाजे अनहद बीन ॥१७॥

* महव ।

राम कहा तो क्या हुआ उर में नहीं यकीन ।
 चोर मुसै घर लूटहीं पाँच पचीसो तीन ॥१८॥
राम कहंते राम है जिन के दिल हैं एक ।
 बाहर भीतर रमि रहा पूरन ब्रह्म अलेख ॥१९॥
राम नाम निज सार है मूल मंत्र मन माहिं ।
 पिंड ब्रह्मंड से रहित है जननी जाया नाहिं॥२०॥
राम रटत नहिं ढील कर हर दम नाम उचार ।
 अमी महा रस पीजिये बहुतक बारंबार ॥२१॥
कोट गऊ जे दान दे कोट जज्ञ जेवनार ।
 कोट कूप तीरथ खनै* मिटै नहीं जम मार ॥२२॥
कोटिन तीरथ ब्रत करै कोटिन गज कर दान।
 कोटि अस्व बिप्रों दिये मिटै न खैंचा तान ॥२३॥
पारबती के उर धरा अमर भई छिन माहँ ।
 सुक की चौरासी मिटी निरालंब निज नाम† ॥२४
अगम अनाहद भूमि है जहाँ नाम का दीप ।
 एक पलक बिछुरै नहीं रहता नैनों बीच ॥२५॥
साहब साहब क्या करै साहब है परतीत ।
 भैंस सींग साहब भया पाँड़े गावैं गीत‡ ॥२६॥

---

*खोदै ।

†देखो नोट साखी नंबर २-४ "साध महिमा का अंग" [आगे] ।

‡एक पाँड़े किसी महात्मा के पास उपदेश लेने गये। महात्मा ने पूछा तुम किसको सब से अधिक प्यार करते हो । पाँड़े बोले एक भैंस को जिसे हम ने पाला है। महात्मा ने कहा कि उसी का ध्यान किया करो । पाँड़ेजी गुरू के कथन अनुसार अपनी भैंस के ध्यान में लीन हो गये यहाँ तक कि उनको ध्यान में भैंस नज़र आने

राम सरीखा राम है संत सरीखे संत ।
नाम सरीखा नाम है नहीं आदि नहिं अंत ॥२७॥
महिमा सुन निज नाम की गहे द्रोपदी चीर ।
दुस्सासन से पचि रहे अंत न पाया बीर* ॥२८॥
सेत बँधा पाहन तिरे† गज पकड़े थे ग्राह‡ ।
गनिका चढ़ो बिमान में§ निरगुन नाम मलाह ॥२९॥

लगी । एक दिन महात्मा ने उनको ध्यान के समय बुलाया, पाँड़े आँख मूंदे हुए बोले कि महाराज मैं घोंची भैंस की सींग में फँस गया हूं किस तरह बाहर निकलूं । महात्मा ने ऐसी दृढ़ता ध्यान की देख कर दया से पाँड़े से भैंस का ध्यान छुड़ा कर मालिक के ध्यान में लगा दिया जिससे मालिक का मेला होगया ।

*युधिष्ठिर पांडव, कौरवों के साथ जुआ खेलने में अपनी स्त्री द्रोपदी को हार गये तब दुस्सासन नामी कौरव ने द्रोपदी को सभा में नंगी करने के लिये उस की साड़ी खींची । ऐसे गाढ़ के अवसर पर द्रोपदी ने दीन होकर अपने इष्ट श्रीकृष्ण का स्मरण किया जिनके प्रताप से साड़ी इतनी बढ़ती गई कि दुस्सासन खींचते २ हार गया पर उसका अंत न पाया ।

†लँका और हिन्दुस्तान के बीच में समुद्र पर पुल बांधने के लिये बन्दर लोग राम नाम लिखकर समुद्र में पत्थर फेंकते थे जो नाम के प्रभाव से तैरते थे और इस तरह पुल तैयार होगया ।

‡किसी नदी में एक हाथी को जो नहाने उतरा था मगर पकड़ कर खींचे लिये जाता था, हाथी ने भगवान को टेरा तब उन्होंने प्रगट होकर उसको उबारा ।

§एक बेश्या को मरते समय जम दूत सता रहे थे कि एक साधू आगये । बेश्या ने अति बिलाप कर उन से रक्षा माँगी । साधूजी ने उसे मंत्र उपदेश का अधिकारी न समझ कर कहा कि वह नाम लो जो तोते को पढ़ाते हैं । बेश्या ने राम नाम लिया और उसके उच्चारन करते ही बिमान आया जिस पर चढ़ कर वह बैकुंठ को सिधारी ।

बरदी ढरी कबीर के भग्ति हेत के काज* ।
सेऊ कूँ तो सिर दिया बेच बन्दगी नाज† ॥ ३० ॥

कहँ गोरख कहँ दत्त थे कहँ सुकदे कहँ ब्यास ।
भग्ति हेत से जानिये तीन लोक परकास ॥३१॥

कहँ पीपा कहँ नामदेव कहाँ धना बाजीद ।
कहँ रैदास कमाल थे कहँ थे फकर फरीद ॥३२॥

कहँ नानक दादू हुते कहँ ज्ञानी हरिदास ।
कहँ गोपीचँद भरथरी ये सब सतगुरु पास ॥३३॥

कहँ जंगी चरकट हुते कहाँ अधम सुलतान ।
भग्ति हेत परगट भये सतगुरु के परवान ॥३४॥

कहँ नारद प्रहलाद थे कहँ अंगद कहँ सेस ।
कहाँ बिभीखन ध्रुव हुते भग्ति हिरंबर पेस ॥३५॥

कहँ जयदेव थे कपिल मुनि कहँ रामानँद साध ।
कहँ दुरबासा कृस्न थे भग्ती आद अनाद ॥३६॥

कहँ ब्रह्मा अरु बेद थे कहँ सनकादिक चार ।
कहँ संभू अरु बिस्नु थे भगति हेत दीदार ॥ ३७ ॥

ऐसा निरमल नाम है निरमल करै सरीर ।
और ज्ञान मँडलीक‡ हैं चकवै§ ज्ञान कबीर ॥३८॥

---

*देखो नोट साखी नंबर १० भक्ति का अंग " (आगे) । †देखो नोट सफ़हा १५-१६ । ‡छोटे २ मंडल के राजा । § चक्रवर्त्ती राजा ।

राम नाम सदनै पिया बकरे के उपदेस* ।
अजामील से उद्धरे भगति बंदगी पेस† ॥३९॥
नाम जलंधर‡ ने लिया पारा रिप परवान ।
धन सतगुरु दाता धनी दई बंदगी दान ॥४०॥
गगन मंडल में रहत है अबिनासी आलेख ।
जुगन जुगन सतसंग है घर घर खेलै भेख ॥४१॥
काया माया खंड है खंड राज अरु पाट ।
अमर नाम निज बंदगी सतगुरु से भइ साँट ॥४२॥

*सदन जाति के कसाई एक भारी भक्त हुए हैं। कहते हैं कि एक बार उनके घर ऐसे समय पाहुन आया जब घर में माँस न था। सदन ने चाहा कि एक बकरे का छोटा अंग काट के काम चला लिया जाय इस पर बकरा बोला कि हमारे तुम्हारे सिर काटे का बैर चुकना है सो काट लो और अंग नहीं काट सकते, यह सुन कर सदन को ज्ञान आया और तब से आप जीव नहीं मारते थे बाजार से माँस मोल लेकर बेचते थे और एक सालिगराम की बटिया से जो जितना माँगे तौल देते थे। कथा है कि एक दिन एक ब्राह्मन सालिगराम की बटिया की ऐसी दुर्दशा देख कर सदन से माँग कर अपने घर लाया और प्रान प्रतिष्ठा करके उस को सिंहासन पर पधारा। रात को सालिगराम ने सुपना दिया कि हमको हमारे भक्त के पास जहाँ से लाया है पहुंचा दे हम वहीं प्रसन्न हैं।

†अजामिल जाति का ब्राह्मन था पर अति कुकर्मी। एक दिन भाग से उसे साध सेवा मिली और उस ने दीनता करी जिस पर साध महात्मा ने बर दिया कि तुझको बेटा होगा उसका नाम नारायण रखना इससे तेरा कल्याण होजायगा। कुछ दिन पीछे बेटा हुआ और उस से अजामिल को ऐसी प्रीति हुई कि एक दम सामने से न हटाता था और मरते समय उसी का नाम नारायण रटता हुआ प्रान छोड़े और इस नाम के प्रताप से स्वर्ग में बासा पाया।

‡ज'धर एक राक्षस था जिसे श्रीकृष्न ने छल कर मारा और उन के प्रताप से उस को ऊँचा स्थान मिला।

अमर अनाहद नाम है निरभय अपरंपार ।
रहता रमता राम है सतगुरु चरन जुहार ॥४३॥
अबिनासी निःचल सदा करता कूँ कुरबान ।
जाप अजपा जपत है गगन मँडल धर ध्यान ॥४४॥
बिन रसना हू बंदगी बिन चस्में दीदार ।
बिन सरवन बानी सुनै निर्मल तत्त निहार ॥४५॥
मैं सौदागर नाम का टाँड़े पड़ा बहीर* ।
लदते लदते लादिये बहुर न फेरा† बीर ॥४६॥
नाम बिना क्या होत है जप तप संजम ध्यान ।
बाहर भरमै मानवी अभि अंतर में जान ॥४७॥
उजल हिरंबर भगति है उजल हिरंबर सेव ।
उजल हिरंबर नाम है उजल हिरंबर देव ॥४८॥
नाम बिना निपजै नहीं जप तप करिहैं कोट ।
लख चौरासी त्यार है मूड़ मुड़ाया घोंट ॥४९॥
नाम सरोवर सार है सोहं सुरत लगाय ।
ज्ञान गलीचे बैठ कर सुन्न सरोवर न्हाय ॥५०॥
मान सरोवर न्हाइये परमहंस का मेल ।
बिना चुँच मोती चुँगै अगम अगोचर खेल ॥५१॥
गगन मँडल में रमि रहा गलताना महबूब ।
वार पार नहिं छेव‡ है अबिचल मूरत खूब ॥५२॥
ऐसा सतगुरु सेइये जो नाम दृढ़ावे ।
भरमी गुरुवा मत मिलो जो मूल गँवावे ॥५३॥

*साज़ सामान । †आवागमन । ‡आकार, खंड ।

सोहं सुरत लगाय ले गुन इंद्री से बंच ।
नाम लिया तब जानिये मिटे सकल परपंच ।।५४।।
नामै निःचल निरमला अनँत लोक में गाज ।
निरगुन सरगुन क्या कहै प्रगटा संतों काज ।।५५।।
अबिनासी के नाम में कौन नाम निज[†] मूल ।
सुरत निरत से खोज ले बास बड़ी अक[*] फूल ।।५६।।
फूल सही सरगुन कहा निरगुन गंध सुगंध ।
मन माली के बाग में भँवर रहा कहँ बंध ।।५७।।
भँवर बिलंबा केतकी सहस कमलदल माहिं ।
जहाँ नाम निज नूर है मन माया तहँ नाहिं ।।५८।।
पंडित कोटि अनंत हैं ज्ञानी कोटि अनंत ।
स्रोता कोटि अनंत हैं बिरले साधू संत ।।५९।।
जिन्ह मिलते सुख ऊपजै मेटैं कोटि उपाध ।
भवन चतुरदस ढूँढ़िये परम सनेही साध ।।६०।।
राम सरीखे साध हैं साध सरीखे राम ।
सतगुरु को सिजदा करूं जिन्ह दीन्हा निज नाम।।६१
भग्ति बन्दगी जोग सब ज्ञान ध्यान परतीत ।
सुन्न सिखरगढ़ में रहै सतगुरु सब्द अतीत ।।६२।।
ऐसा सतगुरु सेइये पार उतारै हंस ।
भग्ति मुक्ति को देत है मिलि है सोहं बंस ।।६३।।
सोहं बंस बखानिये बिन दम देही जाप ।
सुरत निरत से अगम है लै समाध[†] गरगाप ।।६४।।

[*] कि, या । [†] बिलम रहा ।

सुरत निरत मन पवन पर सोहं सोहं होय ।
सिव मंतर गौरी कहा अमर भई है सोय ॥६५॥
ररंकार तो धुन लगै सोहं सुरत समाय ।
हद बेहद पर बास हूँ बहुरि न आवै जाय ॥६६॥
गुफ़* गायत्री नाम है बिन रसना धुन ध्याय ।
महिमा सनकादिक लही सिवसंकर बल जाय ॥६७॥
अजब महल बारीक है अजब सुरत बारीक ।
अजब निरत बारीक है महल धसे बिन बीक† ॥६८॥
ऐसा राम अगाध है अबिनासी गंभीर ।
हद जीवों से दूर है बेहदियों के सीर ॥ ६९ ॥
ऐसा राम अगाध है बेकीमत करतार ।
सेस सहस फन रटत है अजहुं न पाया पार ॥७०॥
ऐसा राम अगाध है अपरंपार अथाह ।
उर में कृत्रिम ख्याल है मौला अलख अलाह ॥७१॥
ऐसा राम अगाध है निरभय निःचल पीर ।
अनहद नाद अखंड धुन तन मन हीन सरीर ॥७२॥
ऐसा राम अगाध है बाजीगर भगवंत ।
निरसँध निरमल देखिया वार पार नहिं अंत ॥७३॥
पारब्रह्म बिन परख है कीमत मोल न तोल ।
बिना वजन अरु राग है बहुरंगी अनबोल ॥७४॥
महिमा अविगत नाम की जानत बिरले संत ।
आठ बखत सुबिधान‡ है मुनि जन रटैं अनंत ॥७५॥

*गुप्त । †डर । ‡कमाई किये जाने लायक़ ।

चंद सूर पानी पवन धरनी पोल अकास ।
पाँच तत्त हाज़िर खड़े खिजमतदार खवास ॥७६॥
काल करम करे बंदगी महाकाल अरदास* ।
मन माया अरु धरमराय सब सिर नाम उपास ॥७७॥
काल डरै करतार से मन माया का नास ।
चंदन अँग पलटै सबै खाली रह गया बाँस† ॥७८॥
सजन सलोना राम है अब मत अंतहि जाय ।
बाहर भीतर एक है सब घट रहा समाय ॥७९॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी एक ।
आदि अंत जा के नहीं ज्यों का त्योंहीं देख ॥८०॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी ऐन ।
महिमा कही न जात है बोलै मधुरे बैन ॥८१॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी आद ।
सतगुरु महरम तासु का साख भरत सब साध॥८२॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी पीर ।
चरन कमल हंसा रहै हम हैं दामनगीर ॥८३॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी आप ।
हद बेहद से अगम है जपते अजपा जाप ॥८४॥
एसा भगली जोगिया जानत है सब खेल ।
बीन बजावै मोहनी जोग जंत्र सब मेल ॥८५॥
ब्रह्मादिक से मोहिया मोहे सेस गनेस ।
संकर की तारी लगी अडिग समाध हमेस ॥८६॥

*अर्ज़दाश्त । †मलयाचल पर्बत में चंदन की सुगंध से सब बृक्ष चंदन सरीखे हो जाते हैं पर बाँस का बृक्ष सुगंधित नहीं होता है ।

गन गँधरप ज्ञानी गुनी अजब नवेला नेह ।
क्या महिमा कहुँ नाम की मिट गये सकल सँदेह ॥८७॥
सुन्न बिदेसी बस रहा हमरे नैनोँ मंझ ।
अलख पलक में खलक में सतगुरु सब्द समंझ ॥८८॥
सुन्न बिदेसी बस रहा हमरे हिरदे माहिँ ।
चंद सूर ऊगै नहीँ निस बासर जहँ नाहिँ ॥८९॥
सुन्न बिदेसी बस रहा हमरे त्रिकुटी तीर ।
संख परम छबि चाँदनी बानी कोकिल कीर* ॥९०॥
सुन्न बिदेसी बस रहा सहस कमल दल बाग ।
सोहं ध्यान समाध धुन और तीब्र बैराग ॥९१॥
सुमिरन तब ही जानिये जब रोम रोम धुनि होय ।
कुंज कमल में बैठ कर माला फेरे सोय ॥ ९२ ॥
सुरत सुमिरनी हाथ ले निरत मिले निरवान ।
ररंकार रमता लखै असल बन्दगी ध्यान ॥ ९३ ॥
अष्ट कमलदल सुन्न है बाहर भीतर सुन्न ।
रोम रोम मेँ सुन्न है जहाँ काल की धुन्न ॥ ९४ ॥
तुमहीँ सोहं सुरत हैा तुमही मन अरु पौन ।
इस मेँ दूसर कौन है आवै जाय सो कौन ॥ ९५ ॥
इस मेँ दूसर कर्म है बँधी अबिद्या गाँठ ।
पाँच पचीसो ले गईं अपने अपने बाट ॥ ९६ ॥
नाम बिना सूना नगर पड़ा सकल मेँ सोर ।
लूट न लूटी बंदगी होगया हंसा भोर ॥ ९७ ॥

* तोता ।

अगम निगम कूँ खोज ले बुद्धि बिबेक बिचार।
उदय अस्त का राज दे तौ बिन नाम बिगार॥९८॥
ऐसा कौन अभागिया करै भजन कूँ भंग।
लोहे से कंचन भया पारस के सतसंग॥ ९९॥

## भक्ति का अंग।

पारस तुम्हरा नाम है लोहा हमरी जात।
जड़ सेती जड़ पलटिया तुम कूँ केतिक बात॥१॥
बिना भगति क्या होत है ध्रू* कूँ पूछे जाहि।
सवासेर अन्न पावते अटल राज दिया ताहि॥२॥
बिना भगति क्या होत है कासी करवत† लेह।
मिटै नहीं मन बासना बहु बिधि भरम सँदेह॥ ३॥
भगति बिना क्या होत है भरम रहा संसार।
रत्ती कंचन पाय नहिं रावन चलती बार‡॥ ४॥

*ध्रुव राजा उत्तानपाद की बड़ी रानी के पुत्र थे जो अपनी छोटी रानी को अधिक चाहता था। एक बार अपने पिता की गोद में जाकर बैठे जिस पर छोटी रानी ने यह कह कर उठा दिया कि तुम्हारा ऐसा पुण्य नहीं है कि इस गोद में बैठो। ध्रुव के कलेजे में यह बात लग गई और घर से निकल गये और नारद जी के उपदेश से मालिक की भक्ति करके तारागण में सब से ऊँचा और अचल लोक पाया।

†काशी में काशी करवत एक स्थान है जहाँ एक कुए में आरे लगे थे और लोग उस पर मुक्ति के हेतु कट मरते थे।

‡कहते हैं कि लंका सोने की बनी थी लेकिन रावन जो राम-द्रोही था मरते समय ख़ाली हाथ गया।

संग सुदामा संत थे दारिद का दरियाव ।
कंचन महल बकस दिये तंदुल भेंट चढ़ाव* ॥५॥
दो कौड़ी का जीव था सेना जात गुलाम ।
भग्ति हेत गृह आइया धरा सरूप हजाम† ॥६॥
पीपा को परचा हुआ मिले भक्त भगवान ।
सीता मग जोवत रही द्वारावती निधान‡ ॥७॥

*सुदामा श्रीकृष्ण के गुरु भाई थे परन्तु महा दरिद्र । एक बार अपनी स्त्री के कहने से कुछ चावल श्रीकृष्ण की भेट के लिये लेकर उनसे मिलने गये । श्रीकृष्ण ने आदर सत्कार तो बहुत किया पर जाहिर में कुछ दिया नहीं । जब सुदामा घर को लौटे तो देखा कि उनका कच्चा झोपड़ा सोने का महल बन गया है ।

†किसी राजा के यहाँ सेना नाऊ भक्त हजामत बनाने की नौकरी पर था । एक दिन हजामत बनाने के लिये जा रहा था कि राह में साधू लोग मिल गये और वह साधु-सेवा में लग गया, उसके बदले भगवान आप उस राजा की हजामत बना आये ।

‡पीपा जी गागरौनगढ़ के राजा थे जो अपनी सीता नामक रानी के साथ साधू हो गये और स्वामी रामानन्द जी से उपदेश लिया । इन की प्रचंड भक्ति और महिमा का भक्तमाल में बहुत वर्णन लिखा है । जिस कथा का गरीबदास जी की इस साखी में इशारा है वह इस तरह पर है कि पीपा जी और उन की स्त्री सीता द्वारका को गये और वहाँ असली दिव्य द्वारका में पहुंच कर ( जो समुद्र में डूब गई है ) साक्षात श्रीकृष्ण का दर्शन पाने के हेतु एक दिन सीता के साथ समुद्र तट पर पहुंचे । वहाँ सीता को खड़ी कर पीपा जी आप समुद्र में कूद कर ग़ायब हो गये और सात दिन तक दर्शन का रस और भगवान की प्रसादी छाप अपने शरीर पर लेकर आज्ञानुसार समुद्र से बाहर निकले जहाँ सीता उनका रास्ता देख रही थी । पीपा जी ने यह छाप मंदिर के पुजारियों को सौंप कर आज्ञा की कि जो लोग इस छाप को अपने शरीर पर लगावेंगे वह भगवत पद पावेंगे ।

धना भगत की धुन लगी बीज दिया जिन्ह आन।
सूखा खेत हरा हुआ कंकर बोये जान* ॥ ८ ॥
रैदास रँगीला रंग है दिये जनेऊ तोड़।
जग्य ज्योनार चोले धरे इक रैदास इक गौड़† ॥९॥
माँझी मरद कबीर है जगत करै उपहास।
केसो बनजारा भया भगत बड़ाई दास‡ ॥ १० ॥

*धना भक्त के पिता ने अपने पुत्र को खेत बोने के लिये बीज देकर दिया। इसी समय कुछ भूखे साधू आगये, उन्हें धना ने सब बीज दे दिया और बाप के डर से सारे खेत में कंकड़ बो दिये (एक जगह ऐसा लिखा है कि साधुओं के तुम्बों के बीज बो दिये) फिर जाकर पिता को ख़बर दी कि खेत बो दिया। कुछ दिन पीछे पिता को नौकरों से असल हाल मालूम हो गया और बड़े क्रोध में खेत पर गये पर वहाँ पहुंच कर क्या देखा कि अन्न का खेत खूब लहलहा रहा है।

†चित्तौड़ की रानी ने जो रैदास जी की चेली थी एक बार काशी में किसी उत्सव पर गौड़ ब्राह्मणों को न्योता दिया। ब्राह्मणों ने इनकार किया कि वह चमार की चेली है हम उस के यहाँ भोजन नहीं कर सकते। इस पर रैदास जी ने उन लोगों को समझाया कि राज धान्य में दोष नहीं है और हम कुछ उसे छूने न जायँगे फिर कौन सा झगड़ा है। ब्राह्मण लोग क़ाइल होकर राज़ी हो गये। जब खाने को बैठे और थोड़ा बहुत खा चुके तो देखते क्या हैं कि पंगत में हर ब्राह्मण के इधर उधर एक एक रैदास (चमार) है। ब्राह्मणों ने घबरा कर खाने से हाथ खींच लिया उस पर रैदास जी ने समझाया कि डरो मत और नाखून से अपने काँधे की चमड़ी चीर कर दिव्य जनेऊ दिखा कर हँसते हुए वहाँ से चल दिये। इस महिमा को देख कर ब्राह्मणों ने फिर भोजन किया—[देखो जीवन-चरित्र रैदासजी की बानी में]।

‡काशी के पंडित जो कबीर साहब से बहुत द्वेष रखते थे उन्हों ने एक बार नगर भर में यह मशहूर कर दिया कि आज कबीर के

सोहं ऊपर और है सत्त सुकृत इक नाम ।
सब हंसौं का बंस है सुन बस्ती नहिं गाम ॥११॥
सोहं ऊपर और है सुरत निरत का नाँव ।
सोहं अंतर पैठ कर सत्त सुकृत लौ लाव ॥ १२ ॥
सोहं ऊपर और है बिना मूल का फूल ।
जा की गंध सुगंध है ता को पलक न भूल ॥१३॥
सोहं ऊपर और है बिन बेली का कंद ।
नाम रसायन पीजिये अबिचल अति आनंद॥१४॥
सोहं ऊपर और है कोउ का जानै भेव ।
गोप गोसाईं गैब धुन ता की कर ले सेव ॥१५॥
सुरत लगै अरु मन लगै लगै निरत धुन ध्यान ।
चार जुगन की बंदगी एक पलक परमान ॥१६॥
सुरत लगै अरु मन लगै लगै निरत तिस ठौर ।
संकर बकसा मिहर कर अमर भई तब गौर॥१७॥
सुरत लगै अरु मन लगै लगै निरत तिस माहिं ।
एक पलक तहँ सँचरै कोटि पाप अघ जाहिं ॥१८॥
अविगत की अविगत कथा अविगत है सब ख्याल ।
अविगत सौं अविगत मिलै कर जोगै तब काल॥१९॥
अमर अनूपम आप है और सकल हैं खंड ।
सूच्छम से सूच्छम सही पूरन पद परचंड ॥२०॥

---

यहाँ सब भूखों और कंगलो को पाँच पाँच सेर अन्न बटेगा, यह सुन कर हज़ारों आदमी की भीड़ उन के दरवाज़े पर जमा हुई। कबीर साहब चुपचाप किसी बहाने से बाहर चले गये और उनके पीछे भगवान बनजारे का रूप धरे बहुत से बैल अन्न से लदे हुए वहाँ छोड़ गये जो कंगलों को उन की आशा से अधिक बाँटा गया ।

अधम उधारन भगति है अधम उधारन नावँ ।
अधम उधारन संत हैं जिनके मैं बल जावँ ॥२१॥
गज गनिका अरु भीलनी सेवरी प्रेम सहेत ।
केते पतित उधारिया सतगुरु गावै नेत ॥ २२ ॥
राम रसायन पीजिये यहि औसर यहि दाव ।
फिर पीछे पछतायगा चला चली हो जाव ॥२३॥
राम रसायन पीजिये चोखा फूल चुवाय ।
सुन्न सरोवर हंस मन पीया प्रेम अघाय ॥२४॥
कहता दास गरीब है बाँदी-जाद* गुलाम ।
तुम हो तैसी कीजिये भक्ति हिरंबर नाम ॥ २५ ॥

## बिनती का अंग

साहब मेरी बीनती सुनों गरीब-निवाज ।
जल की बूंद महल रचा भला बनाया साज ॥१॥
साहब मेरी बीनती सुनिये अर्स अवाज ।
मादर पिदर करीम तू पुत्र पिता को लाज ॥२॥
साहब मेरी बीनती कर जोरँ करतार ।
तन मन धन कुरबान है दीजै मोहिं दीदार ॥३॥
पाँच तत्त के महल मैं नौ तत का इक और ।
नौ तत से इक अगम है पारब्रह्म की पौर ॥४॥
सुरत निरत मन पवन कूँ करो एकत्तर† यार ।
द्वादस उलट समोय ले दिल अंदर दीदार ॥ ५ ॥

*ख़ानाज़ाद । †इकट्ठा ।

चार पदारथ महल में सुरत निरत मन पौन ।
सिव द्वारा खुलि है जबै दरसै चौदह भौन ॥ ६ ॥
सील सँतोष बिबेक बुध दया धर्म इकतार ।
अकल यक़ीन इमान रख गही बस्तु निज सार ॥ ७ ॥
साहब तेरी साहबी कैसे जानी जाय ।
त्रिसरेनू* से झीन है नैनों रहा समाय ॥ ८ ॥
अनँत कोटि ब्रह्मंड का रचनहार जगदीस ।
ऐसा सूच्छम रूप धर आन बिराजा सीस ॥ ९ ॥
साहब पुरुष करीम तूं अविगत अपरंपार ।
पल पल माँहैं बंदगी निरधारों आधार ॥ १० ॥
दरदमंद दरवेस तूँ दिल दाना महबूब ।
अचल बिसंभर बस रहा सूरत मूरत खूब ॥ ११ ॥
साँस सुरत के मद्ध है न्यारा कभी न होय ।
ऐसा साछीभूत है सुरत निरंतर जोय ॥ १२ ॥
सुरत निरत से झीन है जगन्नाथ जगदीस
त्रिकुटी छाजे पुर रहै है ईसन का ईस ॥ १३ ॥
कोटि जग्य असुमेध कर एक पलक धर ध्यान ।
षट दल के री बंदगी नहीं जग्य उनमान ॥ १४ ॥
जित सेतीं दम ऊचरै सुरत तहाँई लाय ।
नाभी कुंडल नाद है त्रिकुटी कमल समाय ॥ १५ ॥
अठसठ तीरथ भरमना भटक मुआ संसार ।
बारह बानी †ब्रह्म है जाका करो बिचार ॥ १६ ॥

*तीन परमाणु का एक त्रिसरेणु होता है । † छः कमल पिंड के और छः ब्रह्मांड के ।

अठसठ तीरथ जाइये मेले बड़ा मिलाप ।
पत्थर पानी पूजते साध संत मिल जाप ॥ १७ ॥
सनकादिक सेवन करै सुकदे बोलै साख ।
कोटि ग्रन्थ का अरथ है सुरत ठिकाने राख ॥ १८ ॥
साहब तेरी साहबी कहा कहूं करतार ।
पलक पलक की दीठ में पूरन ब्रह्म हमार ॥ १९ ॥
एते करता कहाँ हैं वह तो साहब एक ।
जैसे फूटी आरसी टूक टूक में देख ॥ २० ॥
करौं बीनती बंदगी साहब पुरुष सुभान* ।
संख असंखो बरन है कैसे रचा जहान ॥ २१ ॥
साहब तेरी साहबी समझ परै नहिं मोहिं ।
एता रूप जहान जग कैसे सिरजा तोहिं ॥ २२ ॥
एक बीज इक बिंदु है एक महल इक द्वार ।
चरन कमल कुरबान जाँ सिरजे रूप अपार ॥२३ ॥
मौला जल से थल करै थल से जल कर देत ।
साहब तेरी साहबी स्याम कहूं की सेत ॥ २४ ॥
साहब मेरा मिहरबाँ सुनिये अरस अवाज ।
पंजा राखो सीस पर जमहौं होत तिरास ॥ २५ ॥
मादर पिदर परान तूँ साहब समरथ आप ।
रोम रोम धुन होत है सब्द सिंधु परकास ॥ २६ ॥
तन मन धन जगदीस का रती सुमेर समान ।
मिहर दया कर मुझ दिया तन मन वारौं प्रान ॥ २७ ॥

*पवित्र ।

यह माया जगदीस की अपनी कहैं गँवार ।
जमपुर धक्के खायँगे नाहक करैं बिगार ॥ २८ ॥
रावन के सँग ना चली लंक भभीखन दीन ।
यह माया अपनी नहीं सुनो संत परबीन ॥ २९ ॥
काया अपनी है नहीं माया कहाँ से होय ।
चरन कमल में ध्यान रख इन दोनों को खोय ॥३०॥
ये तो जान अनीत हैं काया माया काल ।
इन दोनों के मद्ध है सोहं सब्द रसाल ॥ ३१ ॥
ओं अरु सोहं सार है मूल फूल परबेस ।
सिव ब्रह्मादिक रटत हैं ध्यान धरत है सेस ॥३२॥
मैं समरथ के आसरे दमक दमक करतार ।
गफलत मेरी दूर कर खड़ा रहूं दरबार ॥ ३३ ॥
सुनो पुरुष मेरी बीनती साहब दीन-दयाल ।
पतित-उधारन साइयाँ तुम हो नजर निहाल ॥ ३४ ॥
समरथ का सरना लिया ताहि न चाँपै काल ।
पारब्रह्म का ध्यान धर होत न बाँका बाल ॥ ३५ ॥
नागदमन* निरगुन जड़ी ऐसा तुम्हरा नाम ।
तच्छक तीछा डरत है हर दम जप ले नाम ॥ ३६ ॥
आतम इंद्री कारने मत भटकावै मोहिं ।
जगन्नाथ जगदीस गुरु सरना आया तोहिं ॥ ३७ ॥
चरन कमल के ध्यान से कोटि बिघन टल जाँहि ।
राजा होवै लोक का जहाँ परै हुम† छाँहि ॥ ३८ ॥

---

*नाम साँप की जड़ी का। †हुमा चिड़िया जिस की निस्बत कहते हैं कि उस का साया पड़ने से आदमी बादशाह हो जाता है।

हुमा छाँह जा पर परै पिरथी-नाथ कहाय ।
पसु पंछी आदम सबै सनमुख परखै ताय ॥ ३९ ॥
दिव्य-दृष्टि देवा दयाल सतगुरु संत सुजान ।
तिरलोकी के जीव कूँ परख लेत परवान ॥४०॥
अगले पिछले जन्म कूँ जानत है जगदीस ।
मुंडमाल सिव के गले पहिर रहे ज्यौं ईस* ॥४१॥
करुनामई करीम जप अलह अलख का ध्यान ।
सत्त पुरुष सुख सिंधु में जपत समाने प्रान ॥४२॥
दम सूं दम कूँ समझ ले उठत बैठ आराध ।
रंचक ध्यान समान सुध पूरन सकल मुराद ॥४३॥
अर्ध नाम कुंजर जपा भया ग्राह से पार† ।
उभय घड़ी खट्वाँग जप ऐसा नाम उचार‡ ॥४४॥
अनंत कोटि ब्रह्माँड में बटक§ बीज बिस्तार ।
सुरत सरूपी पुरुष है तन मन धन सब वार ॥४५॥
सुन्न सपेदा स्याम है भूर भद्र बैराट ।
तिल प्रमान में पैठ कर उतरो औघट घाट ॥४६॥

---

*एक समय पारबतीजी ने शिवजी से पूछा कि यह मुंडमाल जो आप पहिने हुए हैं उस में किन २ के सिर हैं । शिव जी बोले कि तुम हम को इतनी प्रिय हो कि जितने जन्म तुमने धरे हैं तुम्हारे हर एक शरीर का मुंड मैं ने अपने गले में डाल रक्खा है ।

†देखो नोट पृष्ठ २४) ।

‡ राजा खट्वांग से किसी समय में देवता लोगों ने अति प्रसन्न होकर कहा कि जो चाहो सो बरदान माँगो । राजा बोले पहिले यह बतलाइये मेरी उमर कितनी बाक़ी है । देवतावों ने कहा सिर्फ़ दो घड़ी और जियोगे । यह सुन कर राजा ने अपने चित्त को एकाग्र कर परमेश्वर का नाम जपना शुरू किया और दोही घड़ी में अपना काम बना लिया । §बड़ का पेड़ ।

रतन अमोली फूल है सो साहब के सीस ।
जो रँग नाहीं स्त्रिष्टि में देखा बिस्वे बीस ॥४७॥
कोटि ध्यान असनान कर कोटि जोग बैराग ।
कोटि कुटुँब गृह तज गये दरसत ना अनुराग॥४८॥
राग* रूप रघुबीर है छाँह धूप से न्यार ।
सात स्वर्ग पर सो तपै कैसे हो दीदार ॥ ४९ ॥
सतगुरु अर्थ† बिवान है हिरदे बैठा आय ।
जब वा खोलै चाँदनी पल में देह लखाय ॥५०॥
सतगुरु के सदके करूँ अनँत कोटि ब्रह्मंड ।
निरगुन नाम निरंजना मेटत है जम दंड ॥५१॥
सतगुरु के सदके करूँ तन मन धन कुरबान ।
दिल के अंदर देहरा तहाँ मिले भगवान ॥५२॥
दिल के अंदर देहरा जा देवल में देव ।
हर दम साखी-भूत है करो तासु की सेव ॥५३॥
जल का महल बनाइया धन समरथ साँइं ।
कारीगर कुरबान जाँ कुछ कीमत नाँइं ॥५४॥
कोटि जतन कर राखिया जठरा के माइं ।
गर्भ बास की बीनती सुनि पुरुष गुसाइं ॥५५॥
नैन नाक मुख स्रवन लै सब साज बनाया ।
दस्त चरन चिन्तामनी परिपूरन काया ॥ ५६ ॥
कली कली कर जोड़िया नाड़ी निरवाना ।
दस सहस्र का वन्ध लाय नाभी असथाना ॥५७॥

*प्रेम । †बस्तु

तालू कंठ भिरकुटी रसना मुख माईं ।
  दाढ़ अरु दंत बनाइया धन अलख गुसाईं ॥५८॥
पलकोँ के छज्जे बने मुँह महल मुँडेरे ।
  जै जै जै जगदीस तूँ धन साहब मेरे ॥ ५९ ॥
ग्रीवा* हाड़ी रुधिर में ले संधि मिलाई ।
  ऊपर चाम लपेट कर नख रोम बनाई ॥६०॥
तलुवे एँड़ी आँगुली पिँडरी परवाना ।
  जोड़े जाँघ बनाइया कादिर कुरबाना ॥६१॥
कमर करंक† करीम ने क्या जोड़ लगाई ।
  नस नाड़ी का बँध दे गिरह गाँठ बँधाई ॥६२॥
पेट पीट पूरन किये परमानँद स्वामी ।
  भुजा खबे कुहनी बनी समरथ धन नामी ॥६३॥
आँत [illegible] में राख कर क्या परदा कीन्हा ।
  एक द्वार दो देहरी अन जल का सीना ॥६४॥
अष्ट कमल दल आरती हर दम हर होई ।
  नाभि कमल में प्रान नाथ राखे निरमोई ॥६५॥
माया की बुरकी† पड़ी मारग नाहिं पावै ।
  दस इंद्री लारै लगी अब कौन छुटावै ॥ ६६ ॥
बड़वा नल का द्वार है नाभी के नीचे ।
  जो सतगुरु भेदी मिलै तहँ अमृत सींचे ॥ ६७ ॥
जठर अगिन जा कूँ कहैं जो छूधा लावै ।
  [illegible] से लिखा ना मिटै कोइ भेदी पावै ॥ ६८ ॥

*गरदन । †हड्डी का पिंजर । †परदा

तीन पेच हैं कुंडलिनी नाभी के पासा ।
जा के मुख से नीकले जल अगिन अकासा ॥६९॥
मल मूतर की कोथली[*] दो न्यारी कीन्ही ।
दम का दगड़ा[†] गगन कूं ऐसा परमानी ॥ ७० ॥
मन माया मौजूद है काया गढ़ माहीं ।
बीच पुरंजन बसत है सो पावै नाहीं ॥ ७१ ॥
पाँच भार[‡] जो आदि है जा के सँग डोलै ।
तीन लोक कूँ खा गई मुख से नहिं बोलै ॥ ७२ ॥
बड़ी कुसंगन सुपचनी[§] सुध बुध बिसरावै ।
चिंता चेरी चूहरी[§] नित नाद बजावै ॥ ७३ ॥
महा दरिद्र की गाँठ बाँध आगे धर देवै ।
तीन लोक के चिंत कूँ निस बासर सेवै ॥ ७४ ॥
काम क्रोध रसिया जहाँ मद मोह मवासी ।
लोभ लँगर[||] वहं बटत है जहँ बारह मासी ॥ ७५ ॥
राग द्वेष रागी बड़े नित गावैं गीता ।
हरष सोग हाजिर खड़े दो रहजन[¶] मीता ॥ ७६ ॥
बीच पुरंजन बैठ कर बहु नाच नचावै ।
लोक परगने बाँट कर बड़दच्छा[**] द्यावै ॥ ७७ ॥
आतम सिर आराधिया जो ध्यावहु ध्यावै ।
कुबुध कलाली जारनी[††] बिष प्याला प्यावै ॥ ७८ ॥
मनसा मालिन आन कर नित सेज बिछावै ।
तहाँ पुरंजन बैठ कर नित भोग करावै ॥ ७९ ॥

---

*थैली । †रास्ता । ‡बोझ अर्थात तत्व । §भंगन । ||सदाबर्त । ¶बटमार । **बरिच्छा । ††बिभिचारनी ।

तीन लोक की मेदनी* सब हाजिर होई ।
मन रंगी के रंग में रंगा सब कोई ॥ ८० ॥
आसन असथल उठ गये कुछ पिंड न प्राना ।
फेर पुरंजन आनकर घाला घमसाना ॥ ८१ ॥
दुरमति दूती और है इक दारुन माया ।
जैसे काँजी† दूध में घृत खंड कराया ॥ ८२ ॥
द्वादस कोटि कटक चढ़ै कुछ गिनती नाहीं ।
लालच नीचन की बहै जिन फौजाँ माहीं ॥ ८३ ॥
संसा सोच सराय में सूतक दिन राती ।
जीवतही जूती परैं जम तोरै छाती ॥ ८४ ॥
रहजन कोटि अनंत हैं काया गढ़ माहीं ।
ममता माया बिस्तरी तिर्गुन तन माहीं ॥ ८५ ॥
बाँकी फौज पुरंजना कुछ पार न पावै ।
मन राजा के राज में क्या भग़ति करावै ॥ ८६ ॥
मन के मारे मुनि बहे नारद से ज्ञानी ।
सिंगी रिषि पारासरा कीन्हे रजधानी ॥ ८७ ॥
चढ़े पुरंजन इंद्र पर कर धाई धाई ।
गौतम रिषि की इस्तरी सँग कीन्हा जाई‡ ॥ ८८ ॥
नारि अहल्या सूँ रते सुरपति से देवा
इंद्र सहस भग होगये कुछ ख्याल न भेवा‡ ॥ ८९ ॥

*पृथ्वी । †सिरका ।

‡एक बार देवराज इन्द्र का मन गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या को देख कर मोहित होगया, विचार किया कि यह सुन्दरी हम को कैसे प्राप्त हो क्योंकि सिवाय बड़े तड़के स्नान के हेतु और कभी ऋषि जी घर से बाहर जाते नहीं । तब आधी रात को मुरग़ा का रूप

दुरबासा पकरे गये सुरपति की नगरी।
नारि उरवसी मोहिया मन माया सगरी* ॥९०॥
जो जीते सो जूझ के मन माया खाये।
सिव जोगी भागे फिरे ले मदन चुराये ॥ ९१ ॥
जा के संग पुरंजनी महमत्ती† नारी।
गुरू मछन्दर सिंगलदीप कीन्हे घर बारी‡ ॥९२॥

---

धर कुकरूँकूँ की आवाज़ दी। ऋषि जी यह समझ कर कि सवेरा होगया घबरा कर जागे और गंगा स्नान करने चले गये। इन्द्र गौतम का रूप धारण करके अहिल्या के पास आये और कहा कि अभी रात बहुत है स्नान की बेला नहीं है इस लिये हम लौट आये, यह कह कर अहिल्या के संग भोग किया। जाते समय गौतम जी भी पहुंच गये उनके देखते ही इन्द्र का कपट रूप उड़कर असल रूप प्रगट होगया। गौतम ऋषि ने श्राप देकर अहल्या को पत्थर कर दिया और इन्द्र के सब शरीर में एक हज़ार भग बना दिये।

*दुर्वासा ऋषि उर्वसी अप्सरा पर मोहित हो कर उस के संग इन्द्र के यहाँ पकड़े गये। जब दुर्बासा के पिता अत्री ऋषि को यह हाल मालूम हुआ तब उन्हों ने इन्द्र से कह सुन कर दुरबासा को छुड़ाया।

†ज़बरदस्त।

‡गोरखनाथ के गुरू मछन्दरनाथ घूमते घूमते सिंगलदीप पहुंचे, वहाँ के राजा का देहांत होगया था उसकी देह में अपने तपोबल से जा समाये और बहुत काल तक राज और भोग बिलास किया और कई लड़के लड़की पैदा हुए। राजा के चोले में समाने के पहिले उन्हों ने अपने चेले गोरखनाथ को बचन दिया था कि बारह बरस में हम लौट आवैंगे पर जब वह समय आया तो राजा (मछन्दर नाथ) ने इस डर से कि कहीं गोरखनाथ आकर न सतावै कड़ा हुक्म जारी किया कि सिवाय नाचनेवालियों और उनके समाजियों के कोई महल में न घसने पावे। यह हाल देख कर गोरखनाथ तबलची का रूप धर कर एककसबी के साथ दरबार में घसे और वहाँ मछन्दर-नाथ के सन्मुख पहुंच कर उन को चेताया जिस पर वह लज्जित हुए और तुर्त चोला त्याग कर अपने निज स्थान को फिर आये।

ब्रह्मा का आसन डिगा कुछ कही न जाई ।
जहाँ पुरंजन आनकर बड़ धूम मचाई ॥ ९३ ॥
राजा एक पुरंजना तिहुं लोक बड़े रा ।
सुर नर मुनि जन सब डरैं पकरे समसेरा ॥९४ ॥
तीन लोक ताखत* किये कुछ रही न बाकी ।
अव्वल बली बरियाम है चँद सूरज साखी ॥ ९५ ॥
नव औतार पुरंजना धर आये देही ।
ओहि रावन राघो भया मन माया येही ॥ ९६ ॥
हनूमान अरु जामवँत नल नील कहावै ।
अंगद अरु सुग्रीव कूँ रन माहिं जुझावै ॥ ९७ ॥
तीन लोक घानी घली मन माया नाँची ।
कंस केसि चाँडूर कूँ सिसुपाल न बाँची† ॥ ९८ ॥
रावन महिरावन मुए हिरनाकुस खाये ।
संखासुर से दलमले कहिँ खोज न-पाये‡ ॥९९ ॥
सूरे§ सावन्त‖ मंडलीक¶ चकवै** सब खाये ।
चुनकट होयकर चुग लिये किन्ह भेद न पाये ॥१००॥
डरै पुरंजन एक से जो जाना जाई ।
निज मन का आरंभ कर सुरती लै लाई ॥१०१॥
सील संतोष बिबेक बुध समता जब आवै ।
दया धरम के चैातरे गुरुज्ञान सुनावै ॥ १०२ ॥

---

तभी की यह कहावत है कि गोरखनाथ ने तबले पर ऐसा बजाया था "जाग मछन्दर गोरख आया"।

*ज़ेर । †यह राजाओं और बीरों के नाम हैं जिनको श्रीकृष्णचन्द्र ने मारा । ‡राक्षसों के नाम जो औतार सरूपों के हाथ से मारे गये। §सूर । ‖बीर। ¶राजा। **चक्रवर्ती भूप ।

सील संतोष बिबेक से जा के दरबाना ।
काम क्रोध भागे जबै गढ़ देखा सामाँ ॥ १०३ ॥
लोभ मोह मारे परे सेना सब भागी ।
सतगुरु के परताप से जब आतम जागी ॥१०४॥
पुरुष पुरंजन पाकड़ा गढ़ घेरा जाई ।
निज मन की फौजाँ धसीं काया गढ़ माहीं ॥१०५॥
अकल यकीन इमान रे मनसा भइ थीरं ।
अजपा तारी धुन लगी जम कटे जंजीरं ॥१०६॥
थाक्यो मन पिंगल चढ़ा परवान परेवा* ।
कोटि पदम की दामिनी गरजत बहु भेवा ॥१०७॥
प्रान अपान† समान कर सुरती लौ लाई ।
दुहु वर कोट ढहाइया अरु तहँ बड़ खाई ॥१०८॥
भरम बुरज भाने सबै सोलह सुर धाई ।
सतरह सुरती हंसिनी सब खबरैं लाई ॥ १०९ ॥
चढ़ा बिहंगम नाद भर निरगुन निरबानी ।
सिव साहब के लिंग पर गिर गंगा आनी ॥११०॥
मान तलाई मालवे‡ तिरबेनी तालं ।
गंगा जमना सरसुती जब छुटी दयालं ॥१११॥
सिव साहब के लिंग पर तिरबेनी बूड़े ।
कलमष§ कसमल कट गये सब बंधन छूटे ॥११२॥
परा नंद नित बूझहीं दरबार हमारे ।
अमृत की भाठी झरै कलमष कूँ जारै ॥ ११३ ॥

*कबूतर की तरह। †नीचे की वायु। ‡उपजाऊ देश। §पाप।

ब्रह्म-रंध्र* का घाट है घट मठ से न्यारा ।
सुरति हंसनी चढ़ गई लख पूरब द्वारा ॥ ११४ ॥
सतगुरु मेरा महरमी काया घर आया ।
जिन्ह माटी के महल में निज ब्रह्म लखाया ॥११५॥
बाहर भीतर एक है पल जोड़े प्रानी ।
हिरदे ही में देख ले वह अगम निसानी ॥ ११६ ॥
सुन्न सलहला† पंथ है पद पारख लीजै ।
जटा कुंडली जाइये अमृत रस पीजै ॥ ११७ ॥
जटा कुंडली पर बसै सतपुरुष बनानी ।
जहँ समरथ का तख्त है धुन अनहद बानी ॥११८॥
जहँ वहँ रहन कबीर की निज मंदिर महली ।
चढ़ै सही गिर गिर परै वह पंथ सलहली ॥११९॥
पैड़ी पंथ न पग धरन कैसे कर जाऊँ ।
मिला रहै अरु ना मिलै कहँ सुरत लगाऊँ ॥१२०॥
ऊँची भुमि अकास मठ जहँ जाय न कोई ।
सुरत निरत से अगम है धुन ध्यान समोई ॥१२१॥
दरस परस देवल धजा फरकै दिन राती ।
जोत अखंडित जगमगै दीपक बिन बाती ॥१२२॥
नभ से न्यारा नूर है झीने से झीना ।
ज्ञान ध्यान की गम नहीं परखै परबीना ॥१२३॥
संख कलप जुग होगये जो टरै न टारा ।
खड़ग बान बेधे नहीं है अधर अधारा ॥ १२४ ॥

*तीसरा तिल । †रपटीला ।

पत्थर में हीरा चलै धन धरती जानै ।
लाख लोग पासै खड़े दरसत पाषानै ॥ १२५ ॥
सात आवरन बेधिहै जो पावै हीरा ।
काया में से उड़ चले पलकोँ के तीरा ॥ १२६ ॥
उरगन* हीरा गह लिया सुरती घर आना ।
सेत धजा देवल खिमै† जहँ कोट निसाना ॥१२७॥
कमल रूप करतार है नैनों के माहीं ।
सातो कमल सरीर में वह न्यारा साँई ॥१२८॥
जागत सोवत है नहीं कछु खाय न पीवै ।
चिरंजीव चिंतामनी जो बहु जुग जीवै ॥१२९॥
काल कर्म आगे खड़े लावै जिस लागै ।
भगली भगल उचारिहै बिद्या अनुरागै ॥१३०॥
काल कर्म आगे खड़े नित नाच कराहीं ।
भगली भावै सो करै जा की गम नाहीं ॥१३१॥
पलक बीच पैमाल‡ है सब खंड ब्रह्मंडा ।
अजब नबेली मेदनी§ छिन में परचंडा ॥१३२॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस से कंपैं दिन राती ।
निर्दावे‖ सोई भये जिस काल न खाती ॥१३३॥
अनंत कोटि ब्रह्मांड का चरबन कर लेई ।
महा काल की डाढ़ में आवे सब कोई ॥१३४॥

*साँप । †झलकै । ‡नाश । §पृथ्वी । ‖निर्भय ।

काल डरै करतार से कर बंधन जोड़ी ।
संख असंखौ चल गये सिव बिस्नु करोड़ी ॥१३५॥
अकल पुरुष साहब धनी अविगत अबिनासी ।
गरीबदास सरना लिया काटो जम फाँसी ॥१३६॥

## कुसंगत का अंग

कमल फूल मन भँवर है काँटा कर्म कुसंग ।
पाँच बिषय सूँ बँध रहा कैसे लागे रंग ॥ १ ॥
काया सरवर मीन मन दसौ दिसा कूँ जाय ।
बिषय लहर दिल देह में भगति न रंच* सुहाय॥२॥
कुटिल बासना कमल† में पावत नहीं मुराद ।
मरजीया‡ मन कूँ करै जहँ पथ अगम अगाध॥३॥
सुरभी§ बँधी चमार के ब्राह्मन बोई भाँग ।
चंदन खर के लेपिये कुंदन बदले राँग ॥ ४ ॥
कर्म कटारी बाँध के करै भारथी जंग‖ ।
अपने सिर लेवै नहीं प्राछित सौंपै गंग ॥ ५ ॥
तरन तारनी बकस दे हमरे प्राछित काट ।
पारब्रह्म सूँ ऊलझै परभी न्हावे घाट ॥ ६ ॥
बगुला हंसा एक सर एकै रूप रसाल ।
वह सरवर मोती चुगै वह मच्छी का काल ॥७॥
सीप पियत है स्वाँति कूँ बिच है खारी नीर ।
माहँ मोती नीपजै करनी बंध सरीर ॥ ८ ॥

*कुछ। †हृदय। ‡गोताख़ोर। §गाय। ‖महाभारत सरीखी लड़ाई।

नग फूटा बिकता नहीं सारा लीजै सोध ।
हीरा पत्थर में बसै धन धरती ले खोद ॥९॥
कदली माँह कपूर है गज मोती अँदहून ।
चुभक चिड़ैया चौंच भर पैठे गज नाखून ॥१०॥
यौ तो सतसँग तुझ कहा कुसंग कहूं भय भीत ।
स्वाँति पड़ें जो सरप मुख करता जहर अनीत ॥११॥
भूम पड़े जैसा फलै सुर की संगत कीन ।
नीचन मुख नहिं देखना ना कोइ मिलै कुलीन ॥१२॥
लोहे चुम्बक प्रीतड़ी* दोनों जड़ जगदीस ।
चेतन चेतन लें मिलै ल्हीस मिलत है ल्हीस ॥१३॥
रूमी† बस्तर अंतरा लोहा पारस बीच ।
चार जुगन मेला नहीं रहते निकट नगीच ॥१४॥
ऐसा नीच न जान दे साहब के दरबार ।
समझत नहिं अज्ञान बुध लग रहे करम लगार ॥१५॥
करम भरम भारी लगे मनसा चंचल चाव ।
बुध बेधै नहिं सुरत खत महल न लगे लगाव ॥१६॥
पिंगल घाटी ना लखी हरफ‡ न लगी कसीस ।
ये दोनौं परसिद्ध हैं लाल झमक्कै सीस ॥१७॥
कौन कुसंगत ना लखा आड़ा परदा खोल ।
यह तन तालिब कूँ दिया माहँ रतन अमोल ॥१८॥
गदहा मिसरी प्याइये जा का योही काल ।
माखी घृत नहवाइये परसत ही पैमाल ॥१९॥

---

* प्रीत । † जन । ‡ नक़्श, कर्म का लेखा ।

जवासा जल रोग है आक* सूख बरखंत।
ओला अगिनी एकसर संसारी बिच संत ॥२०॥
अठसठ तीरथ में मिली देखो गंगा ज्ञान।
न्यारी धारा चलत है गंगा सागर जान ॥२१॥
सतगुरु संगत सार है सकल कुसँग सब जीव।
पानी में निकसै नहीं अनेक जतन कर घीव ॥२२॥
परमानँद से बिछुड़ता यह मन हंसा काग।
मुक्ति नहीं सतगुरु बिना कहाँ छिपै लै दाग ॥२३॥
कमरी के रँग ना चढ़ै कोइला नहीं सपेद।
सतगुरु बिन सूझै नहीं कहा पढ़त है बेद ॥२४॥
कौड़ी बदले जात है यह मानिक नग हंस।
पाँचो सेती बँध रहा जुग जुग होत विधंस ॥२५॥
पाँच पचीस कुसंगनी सुन्न सिखर नहिं न्हाहिं।
सतगुरु सूँ मेला नहीं यौं चौरासी जाहिं ॥ २६ ॥
सतगुरु सूरत नगर से आये हैं बड़ काज।
काम कदर जानै नहीं हंसा चढ़ै जहाज ॥२७॥
कस्तूरी की बासना मिरगा लेत सुबास।
निरख परख आवै नहीं बहुरि ढँढोरै घास ॥२८॥
कस्तूरी महकंत है साहब है संबूह।
नौका चढ़ै न नाम की अंधे डूबत कूँह ॥ २९ ॥

*मदार।

# संगत का अंग

संगत कीजै साध की संसारी भटकंत ।
पिंजर सूआ बसत है किस कूँ बूझै पंथ ॥ १ ॥
सतगुरु की संगत भली हंसा थीर मुकाम ।
जुगन जुगन के बीछुरे परसे लोक निदान ॥ २ ॥
साधौं की संगत करै बड़ भागी बड़ देव ।
आपन तो संसा नहीं और उतारै खेव ॥ ३ ॥
संगत सुर की कीजिये असुर न आवै होस ।
बुध भ्रष्टो सूँ संग क्या उलटा देही दोस ॥४॥
संगत सुर की कीजिये असुरन सूँ क्या हेत ।
डार मूल पावै नहीं ज्यौं मूली का खेत ॥ ५ ॥
संगत सुर की जो रहै असुरौं की है गंध ।
सुर हैं स्वरगालोक के असुर मलीने जिंद ॥ ६ ॥
सूआ सतगुरु कहत है पिंजरे परे परान ।
खिड़की खुलते उड़ गया मंतर लगा न कान ॥७॥
अंतर हेत न प्रीत पद सूए ज्यौं संसार ।
पिंजरा खाली तासु का उड़ गया बनौं मँझार ॥८॥
सत गुर दत दाता* कहै बानी बड़ी बलंद ।
मुख बोले क्या होत है अंतर हेत न अंध ॥ ९ ॥
सुअटा खाली रह गया पार पहूँचा नाहिं ।
राम राम प्रानी कहै जम की नगरी जाहिं ॥१०॥

*तोता के पढ़ाने की बोली ।

सुअटा पढ़ै सुभान गत अंतर नहीं उचार ।
  कुंज* कुरल† अँड पोखहीं कोसन सहस हजार ॥११॥
कुरल अंड हर हेत जप अललपच्छ गहि तार ।
  हिरदा सुद्ध सरीर सर‡ कच्छप दृष्ट निहार ॥१२॥
ऐसी संगत जो मिलै तो साँई सूँ भेट ।
  ऊपरली बरबाद है जम मारैगा फेट ॥ १३ ॥
कुरला कच्छप अलल कूँ किन समझाया ज्ञान ।
  आड़ा परदा है नहीं हिरदे अंतर ध्यान ॥ १४ ॥
ऐसी संगत जो मिलै भगत गर्भ प्रहलाद§ ।
  नारद से सतगुरु मिलैं सूझै अगम अगाध ॥१५॥
सुकदे गर्भ जोगेस्वर§ ध्रुव का ध्यान अमान ।
  लाख बरस के बह गये पाँच बरस परवान ॥१६॥
जैसे मीन समुद्र में दसो दिसा कूँ जाय ।
  हृदय कमल में पैठ कर जो खोजै सो पाय ॥१७॥
ज्यौं कुंजर सिर धुनत है अगला‖ जनम सुझंत ।
  अबकी हेले¶ नर करे तो सेऊँ पूरे संत ॥१८॥
राज दुवारे जाय कर रापत** रोवै काहि ।
  पग जंजीर न डारिये कजली बन कूँ जाहि ॥१९॥
सीस महावत बसत है अंकुस मोड़ समोड़ ।
  बचन फिरत है पलक में साँई नाहीं लोड़†† ॥२०॥

---

*कुंजबन चिड़िया । †कोक चिड़िया । ‡ तालाब । §कहते हैं कि प्रहलाद और सुकदेव मा के पेट से भक्त पैदा हुए । ‖ पुरबला । ¶बार । ** हाथी । †† इच्छा ।

ऐसा हाफिज[*] फील है रहत गयंद गियान ।
राज दुवारे बन्धिया बिन साँई के ध्यान[†] ॥२१॥
सुन्न समुद जो मन रहै तो नहिं भरमै प्रान ।
अरस कुरस से भिन्न है देखै अकल अमान ॥ २२ ॥
सुन्न सरोवर सिखर सर सूभर[‡] तालम ताल ।
मन मरजीया छोड़िये लावै हीरा लाल ॥ २३ ॥
सुन्न सरोवर सैर कर गगन उड़ाना मन्न ।
अगम भूमि भूलै नहीं लावै नाम रतन्न ॥ २४ ॥
सुन्न सिखर संगत करै भूलै खोज न पंथ ।
फेर उलट हटिहै नहीं रावत जेहा दंत[§] ॥ २५ ॥
सती पुकारै सर[‖] चढ़ी मुख बोलत है राम ।
कौतुक देखन सो गये जिनके मन सहकाम ॥ २६ ॥
सती जरै अरु सर जरै कौतुक देखनहार ।
धाम जहाँ का तहाँ है मिलै रूप संसार ॥ २७ ॥
सती बहुर उपजै नहीं घर जाने की प्रीत ।
सती रटत है राम कूँ कौतुक गावै गीत ॥ २८ ॥
जनम पुरबला सूझई जरिहैं बारंबार ।
बिषय बासना उर बसै तन कूँ करिहैं छार ॥ २९ ॥

---

* कुरान को याद किये हुए । †मशहूर है कि हाथी को अपना पिछला जन्म याद रहता है कि मैं कौन था और भगवन्त को भूल जाने से पशु जोनि पाई इसी सोच में हाथी खड़ा २ अपना शरीर और सिर धुनता है और प्रण करता है कि अगले जन्म में जो दया से मनुष्य तन पाऊँगा तो मालिक को कभी न बिसारूँगा । ‡ शुभ्र=प्रकाशमान । §जैसे हाथी के दाँत बाहर निकले हुए फिर भीतर नहीं पैठते । ‖चिता ।

सती न संका जरन की काम लुब्ध* घट बीच ।
सकल सखी झूलन चलीं जैसे सावन तीज ॥ ३० ॥
जनम इकीस जो सँग जरै तौ स्वर्गापुर बास ।
मन इच्छा फल पावहीं पुरुष समीप निवास॥ ३१ ॥
नारी पुरुष पिरेम सूँ बैठे स्वर्ग अकास ।
नव करोर दिव्य† बरस लग पुरवत मन की आस ॥३२॥
करनी भरनी भुगत कर पैठत हैं मृत लोक ।
बिना भगति भावै नहीं सब संगत में दोष ॥ ३३ ॥
तपी तपै तन कूँ दहै पाँचो इंद्री साध ।
नहिं इच्छा दीदार की भूले आदि अनाद ॥ ३४ ॥
लाख वज्र कूँ झेल कर सूरे जूझैं खेत ।
बादी जोगी हठ करैं चिनगी बरखै रेत ॥ ३५ ॥
बादी जोगी बँध रहा मन इच्छा बड़ राज ।
अंत बेर यौं मारिये ज्यौं तीतर पर बाज॥ ३६ ॥
तन तो बाँबी होगया मन की गई न बान ।
स्वर्ग पहुंच दोजख गये सतगुरु लगे न कान ॥३७॥
तन की तारी लावई मनसा जरै मसाल ।
राज पाय नरकै परै बाँधी पोट जवाल‡ ॥ ३८ ॥
पाँचो द्रीइं मन छठा फिरता डाँवाँडोल ।
सप्त पुरी का राज तज लगे तपस्या झोल॥ ३९ ॥
तप से धीर न होत है यह मन रंगा राज ।
साहब की नहिं बंदगी साजा झूठा साज ॥ ४० ॥

*लोभ । †देवताओं का बरस । ‡ ख़राबी ।

तप तारी तन में लगी परगन* की तकसीस ।
साहब की नहिं बंदगी सतगुरु ना बकसीस ॥ ४१ ॥
मन इच्छा नित तू करै राज करन मन लोभ ।
बहु बिध घट में कामना ज्यों बिरछा पर गोभ† ॥४२॥
सँगत कुसंगत अंतरा इकसाँ ही मत जान ।
ज्यों सोवत है सेज पर त्यों धरे अंत मसान ॥४३॥
पारख‡ प्रेम न आवही ना कहिं हाट जुखंत ।
सौदा तबहीं होत है भेटैं सतगुरु संत ॥ ४४ ॥
जैसे माता गर्भ को राखै जतन बनाय ।
ठेस लगै तो छीन है ऐसे भगति दुराय§ ॥ ४५ ॥
दम सुमार आधार रख पलकों मद्ध धियान ।
संतों की संगति करै समझ बूझ गुरु ज्ञान ॥ ४६ ॥
इड़ा पिंगला सोध कर चढ़ गिरवर कैलास ।
दो दल की घाटी जहाँ भगल बिदाहै|| दास ॥ ४७ ॥
ब्रह्म रंध्र के द्वार को खोलत है कोइ एक ।
द्वारे से फिर जात हैं ऐसे बहुत अनेक ॥ ४८ ॥
संख भगल छल होत है नद है परले पार ।
संगत सतगुरु की करै तब पावै दीदार ॥ ४९ ॥
संसारी सूँ साख क्या ऊसर बरषा देख ।
बोवै बीज न खेत हित तो क्या काटै मेख ॥ ५० ॥
नाम रते निरगुन कला मानस नहीं मुरार¶ ।
ज्यों पारस लोहा लगै काटिहै करम लगार ॥ ५१ ॥

*परगना । †नया कुला । ‡परखने में । §छिपाय । ||घास निकालने के लिये खेत को फिर से जोतने का नाम । ¶मुराद ।

# बैराग का अंग।

बैराग नाम है त्याग का पाँच पचीसौ माहिँ।
जब लग संसा सरप है तब लग त्यागी नाहिँ॥ १॥

बैराग नाम है त्याग का पाँच पचीसौ संग।
ऊपर की कैंचल तजी अंतर बिषय भुअंग॥ २॥

असन बसन सब तज गये तज गये गाँव गिरेह।
माहँ संसा सूल है दुरलभ तजना येह॥ ३॥

बाज कुही* गत ज्ञान की गगन गरज गरजंत।
लूटै सुन्न अकास तेँ संसा सरप भछंत॥ ४॥

नित ही जामै नित मरै संसय माहिँ सरीर।
जिनका संसा मिट गया सो पीरन सिर पीर॥ ५॥

ज्ञान ध्यान दो सार है तीजे तत्त अनूप।
चौथे मन लागा रहै सो भूपन सिर भूप॥ ६॥

कासी करवत लेत है आन कटावे सीस।
बन बन भटका खात है पावत ना जगदीस॥ ७॥

संसा तो संसार है तन पर धारै भेख।
मरकब† होहिँ कुम्हार के सन्यासी अरु सेख॥ ८॥

मन की भीनी ना तजी दिलही माहिँ दलाल।
हर दम सौदा करत है करम कुसंगति काल॥ ९॥

मन सेती खोटी गढ़ै तन सूँ सुमिरन कीन।
माला फेरे क्या हुआ दुर कुहन बेदीन॥ १०॥

---

*शिकरा। †कुम्हार के लादने के जानवर यानी गधे।

तन मन एक वजूद कर सुरत निरत लौ लाय।
बेड़ा पार समुद्र होइ एक पलक ठहराय ॥ ११ ॥
दृष्टि पड़े सो फना* है धर† अंबर‡ कैलास§ ।
किरतम बाजी झूठ है सुरत समोवो स्वाँस ॥ १२ ॥
सुरत स्वाँस कूँ एक कर कंज‖ किनारे लाय ।
जा का नाम बिराग है पाँच पचीसो खाय ॥ १३ ॥
पाँच पचीसो भून कर बिरह अगिन तन जार ।
सो अबिनासी ब्रह्म है खेलै अधर अधार ॥ १४ ॥
त्रिकुटी आगे झूलता बिनहीं बाँस¶ बरंत** ।
अजर अमर आनंद पद परखै सुरत निरंत ॥ १५ ॥
यह महिमा कासे कहूं नैनौं माहीं नूर।
पल पल मैं दीदार है सुरत सिंधु भरपूर ॥ १६ ॥
झीना दरसै दास को पुहुप रूप परमान ।
बिन ही बेली गहबरे†† है सो अकल‡‡ अमान ॥१७॥
अकल अभूमी§§ आदि है जा के नाहीं अंत ।
दिलही अंदर देव है निर्मल निर्गुन तंत ॥ १८ ॥
तन मन सेती दूर है माहैं मंझ मिलाप ।
तरवर छाया बिरिछ में है सो आपै आप ॥ १९ ॥
नौ तत के तो पाँच हैं पाँच तत्त के आठ।
आठ तत्त का एक है गुरू लखाई बाट ॥ २० ॥
चार पदारथ एक कर सुरत निरत मन पैान ।
असल फकीरी जोग यह गगन मँडल कूँ गैान ॥ २१ ॥

---

* नाश होने वाला है। † धरती। ‡ आकाश । § स्वर्गादि । ‖ शिव-नेत्र । ¶ खंभा । ** रस्सी। †† घने पेड़ । ‡‡ अकाल। §§ बेठौर।

पंछी घाला आलना तरवर छाया देख ।
गरभ जून के कारने मन मैं किया बिबेक ॥ २२ ॥
जैसे पंछी बन रमा संझा ले बिसराम ।
प्रात समय उड़ जात है सो कहिये निःकाम ॥ २३ ॥
जा के नाद न बिंदु है घट मठ नहीं मुकाम ।
गरीबदास सेवन करै आदि अनादं राम ॥ २४ ॥

## लै का अंग

लै[1] लागी तब जानिये जग सूँ रहै उदास ।
नाम रटै निरभय कला हर दम हीरा स्वाँस ॥ १ ॥
लै लागी तब जानिये जग सूँ रहै उदास ।
नाम रटै निरदुंद होय अनहदपुर मैं बास ॥ २ ॥
लै लागी तब जानिये हर दम नाम उचार ।
एकै मन एकै दिसा साँई के दरबार ॥ ३ ॥
लै लागी तब जानिये हर दम नाम उचार ।
एकै मन एकै दिसा खड़ा रहै दरबार ॥ ४ ॥
लै लागी तब जानिये हर दम नाम उचार ।
धीरे धीरे होयगा वह अल्लह दीदार ॥ ५ ॥
लै लागी तब जानिये हर दम नाम हनोज ।
बिकट पंथ पावै नहीं मौनी केसा खोज[+] ॥ ६ ॥
लै लागी तब जानिये हर दम नाम हनोज ।
मैं मेरी कूँ पटक दे सिर से डारो बोझ ॥ ७ ॥

*खोता लगाया । [1]लौ । [+]जैसे गूंगा किसी बेजाने हुए स्थान या मनुष्य की खोज में सैन से पूछै तो पता नहीं लग सकता ।

लै लागी तब जानिये लै की लगै दुकान।
 ले लँगर[*] सौदा करै छाँड़ महातम मान ॥ ८ ॥
लै लागी तब जानिये लै की लगै दुकान।
 बखत परे सौदा करै कोठे डारै ज्ञान[†] ॥ ९ ॥
महँगा सस्ता देख ले सौदा करै विचार।
 दुगुने तिगुने चैागुने करिहै साहूकार ॥ १० ॥
महँगा सस्ता देख ले सौदा करै समोय[‡]।
 दूने तिगुने चैागुने कर ले जाता कोय ॥ ११ ॥
पूँजी साहूकार की बंजारा संसार।
 पूंजी माल गँवाइया नाहक वहै बिगार ॥ १२ ॥
ये पुरपट्टन ये गली बहुरि न देखै आय।
 सतगुरु सूँ सौदा हुआ भर ले माल अघाय ॥ १३ ॥
ये पुरपट्टन ये गली बहुरि न देखै आय।
 सतगुरु सूँ सौदा हुआ लीजै माल लदाय ॥ १४ ॥
ये मुकते[§] निज पैठ हैं ये मुकते बाजार।
 सतगुरु सूँ सौदा भया भरले बालद[‖] लार ॥ १५ ॥
राम नाम निज सार है राम नाम निज मूल।
 राम नाम सौदा करो राम नाम नहिं भूल ॥ १६ ॥
इस दुनियाँ मैं आय कर इन चारौं कूँ बंध।
 काम क्रोध छोह चूहरा[¶] लोभ लपटिया अंध ॥ १७ ॥
मोह मवासी पकर ले ममता का सिरताज।
 दुरमत दामनगीर होइ निःचल नगरी राज ॥ १८ ॥

---

[*] ख़ैरात-खाना। [†] कोठे पर ज्ञान को पटक दे। [‡] घुस कर। [§] अनेक। [‖] बैल। [¶] भंगी।

ज्ञान जोग अरु भगति ले सील संतोष समाधि ।
लै लागी तब जानिये छूटै सकल उपाधि ।। १९ ।।
ज्ञान जोग अरु भगति ले सील संतोष बिबेक ।
लै लागी तब जानिये जब दिल आवै एक ।। २० ।।
गगन गरज भाठी चुए हीरा घंटिक सार ।
लै लागी तब जानिये उतरै नहीं खुमार ।। २१ ।।
गगन गरज भाटी झरै चोखा फूल चुअंत ।
सिर के साँटे पाइये कोई साधु पिअंत ।। २२ ।।
गगन गरज घन बरषहीं बाजे दीरघ नाद ।
अमरापुर आसन करैं जिन्ह के मते अगाध ।। २३ ।।
गगन गरज घन बरषहीं बाजै अनहद तूर ।
लै लागी तब जानिये सन्मुख सदा हजूर ।। २४ ।।
गगन गरज घन बरषहीं दामिन खिमै अखंड ।
दास गरीब कबीर है सकलदीप नौ खंड ।। २५ ।।

## साँच का अंग

साँचा सतगुरु जो मिलै हंसा पावै थीर ।
झकझोले जूनी मिटै मुरसिद गहिर गँभीर ।। १ ।।
साँचे कूँ तो साँच है कूड़े कूँ है कूड़ ।
बैल होत कंगाल का गल मैं पहरे जूड़ ।। २ ।।
साँचे कूँ परनाम है झूठे के सिर दंड ।
ठौर नहीं तिहुं लोक मैं भरमत है नौ खंड ।। ३ ।।

साँचे का सेवन करो झूठे कूँ ले लूट ।
साँच सब्द सूँ यौं डरै ज्यौं स्याने की मूठ* ॥ ४ ॥
साँचे का सुमिरन करो झूठे द्यो जंजाल ।
साँचा साहब आप है झूठ कपट सब काल ॥ ५ ॥
साँचे के चरनौं लगो झूठे का ल्यो सीस ।
साँच सकल में रहैगा झूठ न बिस्वे बीस ॥ ६ ॥
साँचे कूँ सब सौंप द्यो भगति बंदगी नाम ।
झूठा कपटी मारिये हमरे कौने काम ॥ ७ ॥
साँचे कूँ स्वर्गापुरी झूठा दोजख माहिं ।
चंद सूर की आयु† लग दोजख निकसै नाहिं ॥ ८ ॥
साँचे संकर रीझहीं ब्रह्मा जोड़ैं प्रीत ।
बिसनू करैं प्रतिपाल हद‡ सकल संत संगीत ॥ ९ ॥
साहब जिन्ह के उर बसै झूठ कपट नहिं अंग ।
तिन्हका दरसन न्हान है कहँ परबी फिर गंग ॥ १० ॥
साँचे के सनमुख रहो झूठे सूं क्या नेह ।
संख जुगन जुग परैगी झूठे के मुख खेह ॥ ११ ॥
झूठा सब संसार है साँचा है सो एक ।
पारब्रह्म सतपुरुष पद सब बसुधा§ की टेक ॥ १२ ॥
साँचे साँई संत जन झूठे हैं सब लोक ।
मेढक मछली तड़फड़ै ज्यौं ओछे जल जौंक ॥ १३ ॥
साँचे सदा मसंद‖ पर उस चंगे दरबार ।
झूठौं के जूती पड़ै जम किंकर की मार ॥ १४ ॥

*गुनी के जादू का बान । †आयुर्दाय । ‡बहुत । §पृथ्वी । ‖तकिया मसनद ।

झूठे कपटी जीव सब साँचे संत सुजान ।
तिरबाचा छूटै नहीं झूठाँ ना कर कान ॥ १५ ॥
साँचों के सँग चालिये झूठाँ संग न जाह ।
रावन मिलता है नहीं बीभीखन की बाँह ॥ १६ ॥
बीभीखन लंका दई रावन कटिहै मूड़ ।
साँचे साधू भवँर हैं झूठे गोबर भूढ़* ॥ १७ ॥
झूठा कंसा मारिये फिर चानूर चमार ।
रुकमिन कूँ ब्याहन गया सीस कटा सिसुपाल ॥१८॥
बालि सहस्राबाहु से मारे छाती तोर ।
साँचा जन प्रहलाद है झूठी जल गइ होरि† ॥१९ ॥
हिरनाकुस के उदर कूँ नख से गेरा फार।
निरगुन सूँ सरगुन भये धर नरसिँघ औतार ॥ २० ॥
द्रोपदि चीर बधाइया‡ पीतंबर पटनाल ।
दूसासन से पच गये कौरौं पड़ा जवाल§ ॥ २१ ॥
दुर्जोधन की मेदनी होगई खंड बिहंड ।
द्रोनाचार्ज भीषम पिता बचे न धर सिर दंड ॥ २२ ॥
गज अरु ग्राह उबारिया पसू जूनि सूं संत ।
दान मेड़ छाँड़ी नहीं करन तुड़ाये दंत‖ ॥ २३ ॥

---

*गुजुवा । †होलका जो अग्नि से अमर समझी जाती थी अपने भतीजे प्रहलाद भक्त को जलाने के लिये गोद में लेके आग में बैठी सो आप ही जल गई और प्रहलाद बच गये । ‡बढ़ाया । §खराबी ।

‖राजा करन ने दान के समय सोना कम होजाने पर अपना दाँत तोड़ डाला कि उसमें से जड़ा हुआ सोना निकाल कर दान कर सकें ।

महाभारत के जंग में पाँच उबारे पंड ।
जुगन जुगन की भक्तनी घंटा लै रख अंड* ॥ २४ ॥
साँचों के संगति रहै झूठों सेतीं दूर ।
परमेसुर करुना मई रहै सकल घट पूर ॥ २५ ॥
बालमीक आये सुपच बजा पाँच-जन नाद ।
पंडौं जग असुमेध में एकै पाया साध† ॥ २६ ॥

*भगवंत ने भरुही चिड़िया की प्रार्थना पर महाभारत के मैदान में उसके अंडों की रक्षा के लिये हाथी का घंटा गिरा कर उन को ढाँक कर बचा दिया ।

†पांडवों के राजसूय यज्ञ में यद्यपि पृथ्वी भर के सब ऋषीश्वर और मुनीश्वर और योगीश्वर आदि उपस्थित थे पर श्रीकृश्न का पंचजन्य शंख जो चिन्ह यज्ञ के सुफल होने का है नहीं बजा । राजा युधिष्ठिर ने कारण पूछा तो श्रीकृश्न ने उत्तर दिया कि यह सब जो जमा हुए हैं अहंकारी हैं इन में कोई सच्चा भक्त नहीं है, जाव बाल्मीकि नामक स्वपच अर्थात डोम को जो सच्चा भक्त और महात्मा है आदर सहित बुला लाओ तब यज्ञ सुफल होगा । यह सुन कर भीमसेन स्वपच को बुलाने को भेजे गये । भीमसेन ने अहंकार से स्वपच से कहा कि चल तुझे राजा ने याद किया है । स्वपच ने जवाब दिया कि मैं पूजा पर बैठा हूं जरा माला मेरी खूंटी से उतार कर मुझे दे दीजिये तो जाप करके तुर्त चला आऊं । भीमसेन ने कुभाव से माला को खूंटी से उतार कर देना चाहा पर यद्यपि उनको अस्सी हजार हाथी का बल था उस माला को न उठा सके, फिर भी अहंकार न छूटा और नाक भौं चढ़ाकर बोले कि तूही उठकर लेले मुझे देर होती है । जब भीमसेन लौटकर गये तो श्रीकृश्न से कहा कि महाराज स्वपच थोड़ी देर में हाजिर होता है । श्रीकृश्न हँस कर युधिष्ठिर से बोले कि आप खुद जाकर बुला लाइये । जब राजा युधिष्ठिर स्वपच के घर पहुंचे तो उसे खिचड़ी पकाते पाया, बड़ी आधीनता से प्रार्थना की कि यज्ञ में सुशोभित होकर उसे सुफल कीजिये । स्वपच बोला कि मैं तो नीच डोम यज्ञ में बैठने योग्य नहीं हूं पर राजा की आज्ञा सिर आँखों पर धरता

भेखौं के लसकर फिरैं बानी चोर कठोर।
सतगुर धाम न परसहीं चैारासी के ढोर[*] ॥ २७ ॥
पारंगत[†] परिचय नहीं बानी कहै बनाय।
धरमराय दरगह[‡] सहै झूठा लतरी[§] खाय ॥ २८ ॥
कपटी कूं भावै नहीं भगति मुकति की रीत।
झूठा लंगर फिरत है साधौं टोहत सीत[||] ॥ २९ ॥

हूं ज़रा खिचड़ी खालूं। राजा ने जवाब दिया सब काम से निपट लीजिये मुझे जल्दी नहीं है। स्वपच ने हाँडी से थोड़ी खिचड़ी निकाल कर राजा के सामने धरी, राजा ने यह कह कर कि धन्य भाग उसके जिसे भक्तों का प्रसाद मिले पूरे भाव से हाथ फैलाया परन्तु स्वपच ने अपना हाथ खींच लिया कि ऐसा नहीं हो सकता श्रोर उठकर राजा के साथ हो लिया। जब यज्ञ में पहुंचा तो श्री कृश्न ने पांडवौं की स्त्री द्रौपदी से उत्तम उत्तम प्रकार के भोजन बनवा रक्खे थे जिसे थालोँ में रुकमिणीजी ने सजाकर स्वपच के सामने धरा। स्वपच मीठे सलोने खट्टे इत्यादि सब प्रकार के भोजन एक साथ सानकर मुंह में भरने लगा। यह तमाशा देख कर द्रौपदी के जी में आया कि आख़िर तो डोम मेरे पकाये हुए उत्तम खानों का स्वाद क्या जाने। इस ख़याल के उपजते ही स्वपच ने हाथ खींच लिया श्रोर पंचजन्य शंख जो उसके आते ही बजने लगा था एक बारगी बंद हो गया तब लोग फिर श्रीकृश्न के समीप आये। श्रीकृश्न बोले कि द्रौपदी से पूछो कि उसके जी में क्या ख़याल गुज़रा। द्रौपदी बड़ी लज्जित हुई तब श्रीकृश्न ने आज्ञा की कि यह भोजन अशुद्ध होगया रुकमिणी दूसरी सामग्री भोग की भाव पूर्बक बनावे तब स्वपच भक्त के भोग के योग्य होगी। इस पर द्रौपदी ने बड़ी नेष्ठा से दूसरा भोग तैयार करके दीनता के साथ स्वपच के आगे धरा श्रोर ज्योंही स्वपच ने खाना शुरू किया पंचजन्य शंख बजने लगा और यज्ञ सुफल हुआ।

[*] चौपाया। [†] जो भवसागर पार हुए हैं। [‡] दरबार। [§] पनही। [||] साधौं का प्रसाद खोजता है।

साँचे सूरे संत हैं मरदाने जूझार* ।
लाख दोस ब्यापै नहीं एक नामकी लार॥ ३० ॥
सत्त सुकृत अरु बंदगी जा उर ज्ञान विवेक ।
साध रूप साँईं मिले पूरन ब्रह्म अलेख ॥ ३१ ॥
सत्त सुकृत संतोष सर आधीनी अधिकार ।
दया धरम जा उर बसै सो साँईं दीदार ॥ ३२ ॥
आदि अंत मध संत हैं रंचक झूठ जहान ।
कपटी जुग जुग कपट है लख चैारासी खान ॥३३॥
साँचे कूँ संका नहीं झूठे भय घर माहिं ।
कोट किले क्या चुनत है झूठा छूटै नाहिं ॥ ३४ ॥
साँईं बिन कित ठौर है साँईं बिन कित बास ।
साँच मिलैगा सांच में झूठे जाहिं निरास॥ ३५ ॥
साँच भगति नरहर† रची झूठा रचा जहान ।
झूठा सब संसार है साँचे साधू जान ॥ ३६ ॥
सत्त सुकृत की बंदगी सत्त सुकृत का जाप ।
झूठे दोजख‡ दीजिये साँचा आपै आप ॥ ३७ ॥
साहब सेती दोसती संतोँ सेती प्यार ।
तिन्ह को संका है नहीं धरमराय दरबार ॥ ३८ ॥

---

*योधा । †परमेश्वर । ‡नरक ।

# बिचार का अंग

ज्ञान बिचार न ऊपजै क्या मुख बोलै राम ।
संख बजावै बादई रते न निरगुन नाम ॥ १ ॥
ज्ञान बिचार बिबेक बिन क्यौं दम तोरै स्वाँस ।
कहा होत हरि नाम सूँ जो दिल ना बिस्वास ॥२॥
ज्ञान बिचार बिबेक बिन क्यौं भौंकत है स्वान ।
दस योजन जल मैं रहै भीजत ना पाखान ॥ ३ ॥
ज्ञान बिचार बिबेक बिन क्यौं रैंकत खर गीध ।
कहा होत हरि नाम सूं जो मन नाहीं सीध ॥४॥
समझ बिचारे बोलना समझ बिचारे चाल ।
समझ बिचारे जागना समझ बिचारे ख्याल ॥ ५ ॥
करै बिचारै समझ कर खोज बूझ का खेल ।
बिना मथे निकसै नहीं है तिल अंदर तेल ॥ ६ ॥
जैसे तिल मैं तेल है योँ काया मध राम ।
कोल्हू मैं डारे बिना तत्त नहीं सहकाम ॥७॥
बिचार नाम है समझ का समझ न परी परक्ख ।
अकलमंद एकै घना बिना अकल क्या लक्ख ॥८॥
बिना बिचारे क्या लहै कस्तूरी भटकंत ।
बिन बूझे नहिं पाइये गाँव डगर मग पंथ ॥ ९ ॥
ज्ञान सफा के चौक मैं जहाँ बिचार बिबेक ।
कुटिलाई जिव बहुत हैं निरमल अंगा एक ॥१०॥

बिना बिचारे भरम है सुरपति सरिखा होय ।
गौतम रिषि गुरुवा बड़े जा की पती जोय* ॥११॥
बिना बिचारे बिचरता बैरागी सुकदेव ।
सप्त पुरी में गमन कर ढूँढ़े जनक बिदेह† ॥१२॥

*बिना बिचार के इन्द्र सरीखा दूषित हो जाता है जिसने अहिल्या के संग प्रसंग किया ।

†शुकदेव जी के पिता व्यासजी ने उन को बहुत समझाया कि घर के त्याग करने से कुछ परमार्थ का काम नहीं बनता पर शुकदेव जी के मन में यह बात न बैठती थी सातो पुरी इत्यादि की यात्रा करते ही रहे तब व्यासजी ने थक कर उन से कहा कि एक बेर राजा जनक से मिल लो फिर जो जी में आवे सो करो । शुकदेव जी राज़ी हुए और राजा जनक के पास गये । राजा जनक को राज्य कार्य में फँसा हुआ देख कर इन के मन से उनकी महिमा जाती रही । जब जनक ने पूछा कि कैसे आये तो उत्तर दिया कि पिता जी से आप के ज्ञानी और बिदेह होने की महिमा सुनी थी सो देख लिया और हम तो बन में एकान्त बास करेंगे । इस पर जनक ने अपने तपोबल से ऐसा चमत्कार किया कि राज्य भवन में जहाँ वह बैठे थे बड़े ज़ोर से आग लग गई । राजा जनक निश्चिन्त बैठे अपना काम करते रहे परन्तु शुकदेव जी अपनी कोपीन और कमंडल सम्हाल कर भागने लगे । इस पर राजा हँसे और कहा कि इसी को त्याग कहते हो! मेरा सब महल और माल जल रहा है सो मुझे फ़िकर नहीं है और तुम एक लँगोटी के बचाने में बेचैन हो गये, याद रक्खो कि जितना तुम को अपनी लँगोटी और कमंडल का बन्धन है उतना मुझे अपने सकल राज का नहीं है । त्याग मन से होता है तन से नहीं, जब तुम्हारे संग तन, दसों इन्द्री, मन और पंच भूत का कुटुम्ब लगा है तो बाहरी कुटुम्ब के त्याग से क्या होता है । शुकदेव जी यह सुन कर बहुत लज्जित हुए और फिर बन बास का ख़याल छोड़ दिया ।

गोरखनाथ सुनाथ है जंतर मंतर जोग ।
सतगुरु मिले कबीर से काटे दीरघ रोग* ॥१३॥
गँधरपसेन गदहा भया पुत्तर पिता सराप ।
बिना बिचारे पैठ माँ सुना उरबासी लाप† ॥१४॥
जादो गये बिचार बिन भरमे छप्पन क्रोड़ ।
दुर्बासा से छल किया लागी मोटी खोड़‡ ॥१५॥

* गोरखनाथ जी कबीर साहब का नाम सुन कर उन की परीक्षा के अभिप्राय से काशी में आये और आकाश में त्रिशूल पर आसन मार कर बैठे और कबीर साहब को आवाज़ दी कि यहाँ आवो तो बातालाप करें । कबीर साहब ने जवाब दिया कि आप बड़े सिद्ध हैं मैं तो महा अधम हूं क्योंकर आप तक पहुंच सकता हूं । फिर कबीर साहब ने सत्यलोक में जो पिंड और ब्रह्मांड के परे है आसन लगा कर गोरखनाथ को दया से दर्शन दिये । गोरखनाथ चकित होगये और कबीर साहब के पूरे सतगुरु होने के क़ायल होकर चरनों पर गिरे यह कबीर गोरख की गोष्टी में प्रसिद्ध कथा है ।

† राजा गन्धर्पसेन को उरबसी अप्सरा का गान सुनकर मोहित होने से गदहे का चोला धारण करना पड़ा ।

‡खोड़=बड़ा अपराध—एक समय दुर्बासा ऋषि घूमते २ द्वारिका में पहुंचे जहाँ छप्पन करोड़ यादवों के लड़के खेल रहे थे। लड़कों ने कलोल में श्रीकृश्न के पुत्र परम सुन्दर शाम्ब को स्त्री का रूप बना कर उस के पेट पर एक तवा बाँध दिया जिस में गर्भवती मालूम हो, फिर ऋषि के सन्मुख लाकर कहा कि यह स्त्री गर्भवती है लज्जा से बोलती नहीं पर जानना चाहती है कि इस गर्भ से पुत्र होगा या कन्या । दुर्बासा ध्यान से असल बात समझ गये और क्रोध में आकर शाप दिया कि इस गर्भ से लोहे का मूसर उत्पन्न होगा जो सारे यादवों के बंश का नाश करेगा । यह सुन कर सब लड़के घबरा गये और जो शाम्ब के पेट का कपड़ा खोला तो तवे के बदले उस में से लोहे का मूसर गिर पड़ा । जब यह समाचार श्रीकृश्न को मिला उस समय वह यादवों की सभा के बीच में बैठे हुए थे । यादवों ने सलाह करके

इजै बिजै थे पैारिया बिसुन पैार दरबान ।
बिन बिचार राकस भये बड़ कलंक है मान* ॥१६॥
रावन सिव का तप किया दीन्हे सीस चढ़ाय ।
दस मस्तक बीसो भुजा जो दीन्हे सो पाय† ॥१७॥

मूसर को लोहार से रेतवा कर समुद्र में छोड़वा दिया और एक छोटा सा टुकड़ा जो नहीं रेता गया उस को भी समुद्र में डलवा दिया । कितने दिन पीछे समुद्र की लहरों से वह रेत किनारे लग कर जम आई और पटेरा (सरपत) रूप हो गई और इसी को ले ले कर प्रभास क्षेत्र से लैाटती बेरा यादव लोग नशे की हालत में आपस में लड़ कट मरे । लोहे के बचे हुए टुकड़े को एक मछली लील गई थी जब वह जाल में फँसी तो वह लोहा एक व्याध के हाथ लगा और उसने उस टुकड़े की अपने तीर की गाँसी बनाई । यादवों के संहार के बाद पीपल के पेड़ के नीचे पैर पर पैर रक्खे श्रीकृश्नचन्द्र बैठे थे, दूर से उन के चरण की चमक को मृगा के कान समझ कर बहेलिये ने तीर मारा जिस से उन का शरीर छूट गया ।

* बैकुंठ में भगवान के पार्षद जय, बिजय द्वारपाल पहरा दे रहे थे, कि ब्रह्मा के मानसिक पुत्र सनक, सनन्द, सनातन, सनत्कुमार चारो ऋषि जिन की सदा पाँच बरस की अवस्था रहती है भगवान के दर्शन को आये । दोनों द्वारपालों ने उन को लड़का समझ कर बेत से रोक दिया । ऋषियोँ को इस अपमान पर क्रोध आया और शाप दिया कि तुम दोनों पृथ्वी पर जाकर राक्षस योनि को प्राप्त हो । इसी बीच में बिष्णु भगवान मुसकाते हुए वहाँ आ पहुंचे । ऋषि लोग उन को देख कर अपने शाप पर लज्जित हुए और कहा कि तीन जन्म में तुम दोनों का उद्धार हो जायगा । भगवान बोले कि यह हमारी इच्छा से हुआ और ऋषियों को आदर पूर्बक महल में ले गये । फिर यही दोनों द्वारपाल पहिले जन्म में हिरण्यकश्यिप और हिरण्याक्ष, दूसरे जन्म में रावण और कुंभकर्ण और तीसरे जन्म में शिशुपाल और दन्तवक्र हुए, तिस के बाद बैकुंठ को गये ।

† रावण ने शिवजी की भारी तपस्या की और कितनी ही बार अपने मस्तकों को काट काट कर शिवजी के प्रसन्न करने को अग्नि

लंक राज रावन किया खोया बिना बिचार ।
पलक बीच परलय भये लंका के सरदार* ॥१८॥
सीता सतवंती सही रामचंद्र की नार ।
रावन दानै छल लई बिनही ज्ञान बिचार* ॥१९॥
पारासर सेवन करै कुटिल कला घट माहिं ।
कन्या सूँ संगम किया ज्ञान बिचारा नाहिं† ॥२०॥

कुंड में होम कर दिया इसी से रामचन्द्र जी जब उस के सिर काटते थे तो तुर्त दूसरे सिर उन की जगह निकल आते थे । इस से यह सिद्ध हुआ कि जो दे सो पावे ।

* जब श्रीरामचन्द्र मारीच राक्षस को जो मृग का रूप धारण करके प्रगट हुआ था मारने गये और लक्ष्मण जी भी जिन को रामचन्द्र सीता जी की रक्षा के लिये छोड़ गये थे सीता जी के कटु बचन से रामचन्द्र जी की खोज में चले तो उन्हों ने सीता के चारो ओर एक लकीर खींच दी कि उसके बाहर कदापि पग न धरैं । सीता जी को अकेला पाकर रावण यती का बेष धर कर भीख माँगने आया । सीताजी ने देखा और भीतर से भीख देना चाहा तब यती रूपी रावण बोला कि मेरे गुरू ने बँधी भिक्षा लेने का निषेध किया है । सीताजी धर्म लोप से डर कर भिक्षा देने लकीर के बाहर निकलीं कि रावण ने तुर्त सीता सती को दान करते हर लिया । इसी अत्याचार के प्रभाव से रावण ने लंका को जलवाया और आप मट्टी में मिल गया ।

† पाराशर ऋषि ने मछोदरी से नाव में भोग किया (यह कन्या उन्हीं के बीज से मछली के पेट से पैदा हुई थी जो बीज गंगा में नहाते वक़् ऋषि जी का किसी समय में गिर गया था और एक मछली ने खा लिया था) उस मछोदरी ने कहा अभी दिन है लोग देखते हैं तब ऋषि ने अपनी सिद्ध शक्ति से अँधेरा कर दिया आकाश में बादल आ गये । फिर स्त्री ने कहा मेरे बदन से मच्छी की बदबू आती है ऋषि ने बदबू को बदल के ख़ुशबू कर दिया । नतीजा इस संगत का यह हुआ कि व्यास जी उस मछोदरी से पैदा हुए ।

उद्दालक के नासकेत गये फूल बनराय ।
पिता बचन जब मेटिया तौ जम नगरी जाय* ॥२१॥

नारद मुनि निग्गुन कला ततबेता† तिहुं लोक ।
नर सेतीँ नारी भया यह होना बड़ धोख‡ ॥२२॥

* उद्दालक ऋषि के पुत्र नासकेत जी के पिता ने आज्ञा दी कि पूजा के लिये पुष्प जल्द लाओ। नासकेत फूल लेने बन को गये पर देर लग गई और ऋषि जी की पूजा का समय निकल गया। जब नासकेत जी लौट कर आये तो पिता क्रोध से बोले कि क्या तुम यमपुरी होकर आये जो इतनी देर लगाई। यह सुन कर नासकेत पिता को पुष्प इत्यादिक देकर प्रणाम कर यमपुरी को चले गये और अपने तपोबल से उसी देह से लौट आये। उद्दालक ऋषि ने यह देख कर पुत्र को गले से लगा लिया कि उस की योग सिद्धि पूर्व जन्म की है और अपने बेबिचारे बचन पर बहुत पछतावा किया।

† तत्व ज्ञानी।

‡ एक समय नारद मुनि ने बैकुंठ में जाकर भगवान से कहा कि महाराज अब मैं ने आप की माया को जीत लिया। भगवान मुस्करा कर बोले कि आप बड़े ज्ञानी हैं आप के लिये माया को जीत लेना क्या बड़ी बात है, इस पर नारद मुनि फूले न समाये। थोड़ी देर पीछे भगवान ने मुनि जी से कहा कि आज कान्यकुब्ज देश के राजा से मिलने को हम जाते हैं आप का जी चाहे तो हमारे साथ गरुड़ पर आप भी सवार हो लीजिये। यह सुन कर नारद भी भगवान के साथ चले। कान्यकुब्ज देश की सीमा पर बन में एक सुन्दर ताल देख पड़ा नारद जी की इच्छा से बिष्णु भगवान वहाँ उतरे और कहा कि आप का चित्त चाहे तो झटपट स्नान पूजा कर लीजिये। नारद जी स्नान के लिये नदी में धसे जब डुबकी लगा कर उछले तो स्त्री हो गये और इस बीच में बिष्णु गरुड़ पर चढ़ कर बैकुंठ को लौट आये। नारद जी स्त्री वेष में बिचारने लगे कि मैं सुन्दर युवा स्त्री हूं मेरे योग्य पति भी मिलना चाहिये। इतने में वहाँ का राजा शिकार खेलता हुआ पहुंचा और स्त्री पर मोहित होकर पूछा कि तुम किस की कन्या हो और इस बन में क्या करने आई। स्त्री

पुत्र बहत्तर बाक छल नर से नारी कीन्ह ।
मान डिंभ छूटा नहीं ततबेता मतहीन ॥२३॥

बोली कि मैं कुछ नहीं कह सकती आप को जो उचित जान पड़े सो कीजिये। राजा उस सुन्दरी को घोड़े पर बैठा कर अपने राजभवन में लाये और अपनी पटरानी बनाया और दोनों बड़े प्रेम से रहने लगे। समय पाकर रानी को १२ पुत्र और १२ कन्या उत्पन्न हुईं फिर उनके बिवाह होकर १२ पतोहें और १२ दामाद घर आये और पोते और नातियों की नई टकसार खुली। अब तो रानी को बड़ा अहंकार हुआ कि मेरे बराबर संसार में कौन भाग्यवान हो सकता है। इस तरह रानी-रूप नारद के साठ बरस बीते। उस समय एक दूसरे देश के राजा ने उस राज पर चढ़ाई की और युद्ध में रानी के बारहों पुत्र मारे गये। रात को जब लड़ाई बंद हुई रानी अपने पति को लेकर लड़कों के छिन्न भिन्न मृतक शरीर उठा लाई और अति बिलाप करने लगी कि मुझ सी दुखिया अभागी संसार में दूसरी न होगी। गर्ब-प्रहारी भगवान को यह दीन दशा नारद की देख कर दया आई और ब्राह्मण का रूप धर कर प्रगट हुए और रानी को समझाया कि इस रोने पीटने से क्या मिलेगा तुम्हारे पुत्र प्यासे मारे गये हैं इस से जल्द स्नान करके उनको तिलांजलि दो जिस में उन की प्यास बुझै मंत्र हम पढ़ देंगे। ऐसा सुन कर रानी झटपट उसी ताल में स्नान को धँसी जब ग़ोता लगा कर पानी के ऊपर सिर निकाला तो जटा लटकाये मूछ बढ़ाये नारद का रूप हो गई और भौंचक्की हो कर इधर उधर देखने लगी। भगवान भी अपना रूप धारण करके नारद से बोले कि मुनिजी देखते क्या हो जल्द अपनी लँगोटी पहिन कर तुंबा उठाओ और मेरे साथ चलो राजा से मिलने को देर होती है। नारद जी दौड़ कर भगवान के चरणों पर गिरे और कहा कि धन्य आप की माया वह आप ही के आधीन है और मैं आप की शरण हूं। भगवान मुस्करा कर बोले कि आप यह कैसी बहकी बातैं करते हो अभी तो आपने छिन भर हुआ ग़ोता लगाया था। नारद बोले कि अब रहने दीजिये और मुझे राजा के पास जिस की रानी बन कर साठ बरस साथ रही फिर न लेचलिये।

भृगू भरम मैं बह गये कीन्हा नहीं बिचार ।
त्रिभुवन नाथ बिसंभरै लात घात करतार* ॥२४॥
बिन बिचार तन क्या धरे कुटिलाई बस प्रान ।
नाहीं सुरत सरीर की ता घट कैसा ज्ञान ॥२५॥
गोपी लुट गईं कृस्न की अर्जुन सरिखे संग ।
लख संधानी बान कर जीते भारी जंग† ॥२६॥
काया गोपी लूटिया अर्जुन चले न बान ।
होनी होय सो होत है समझ बूझ यह ज्ञान† ॥७२॥

*एक समय देवताओं में यह बिचार होने लगा कि ब्रह्मा बिश्नु और महादेव में कौन बड़ा है इस परीक्षा लेने को सब देवता और ऋषियों ने भृगुजी को भेजा। भृगुजी पहले अपने पिता ब्रह्मा के सामने आये और प्रणाम नहीं किया जिस पर ब्रह्मा को ऐसा क्रोध आया कि शाप देना चाहा पर मूर्ख लड़का समझ कर रुक गये। फिर भृगुजी कैलाश में महादेव जी के पास गये शिव उनको देख कर बड़े आदर से भेटने को चले कि भृगु ने पीछे हट कर कहा कि ख़बरदार हम को छुओ नहीं क्योंकि अशुद्ध चिता-भस्म और मुंडमाल धारण किये हो। यह सुन कर महादेव जी क्रोध में भर त्रिशूल लेकर भृगुजी को मारने दौड़े भृगु जी भागते भागते बैकुंठ में जा घुसे तब बचे। बैकुंठ में पहुंचने पर भृगु ने बिश्नु को सुख सय्या पर सोता पाया जिस पर उन्हों ने बड़े ज़ोर से बिश्नु की छाती में लात मारी। बिश्नु महाराज चौंक पड़े और भृगु के चरण पकड़ कर सुहराने लगे और बोले कि कहाँ बज्र से अधिक कठोर मेरा हृदय और कहाँ पुष्प से भी कोमल आप का चरणारबिन्द इस से मेरे जगाने में आप को बड़ा कष्ट हुआ क्षमा कीजिये। भृगुजी ने शरमा कर सिर नीचा कर लिया। फिर देवताओं की सभा में जाकर ख़बर दी कि तीनों देवताओं में बिश्नु सब से बड़े हैं क्योंकि वही शान्त हैं।

†जब कृष्ण भगवान का इस संसार से कूँच करने का समय आया तो अर्जुन से कहा कि आज के सातवें दिन द्वारिका को समुद्र डुबा देगा

# जरना* का अंग

ऐसी जरना चाहिये ज्यौं पृथ्वी तत धीर ।
खोदे से कसकै नहीं ऐसा बज्र सरीर ॥ १ ॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यौं अप† तेज अनूप ।
न्हावै धोवै थूकदे तामस नहीं सरूप ॥ २ ॥
ऐसी जरना चाहिये पवन तत्त परमान ।
कुटिल वचन कोई कहै मानै नहीं अमान ॥ ३ ॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यौं अगिन तत्त में होय ।
जो कुछ परै सो सब जरै बुरा न बाचै कोय ॥ ४ ॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यौं गगन तत्त गलतान ।
बुरा भला बाचै नहीं ता में सकल समान ॥ ५ ॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यौं तरवर‡ के तीर ।
काटै चीरै काठ को तौ भी मन है धीर ॥ ६ ॥
बृच्छ नदी अरु साध जन तीनौं एक सुभाव ।
जल न्हावै फल बृच्छ दे साध लखावे नाँव ॥७॥

---

इस लिये तुम हमारी स्त्रियों को माल असबाब समेत हस्तिनापुर को ले जावो तुम उनकी रक्षा करने की सामर्थ्य रखते हो। यह सुन कर अर्जुन सब स्त्रियों को लेकर रवाने हुए रास्ते में काबा अर्थात भीलों ने लूटने को घेरा। अर्जुन ने डाकुओं के मारने को अपना गांडीव धनुष चलाना चाहा परन्तु चलाने की कौन कहे उस को चढ़ा भी न सके, वह सामर्थ्य और बल श्रीकृष्णचन्द्र के साथ ही गुप्त हो गये और जिस अर्जुन ने अठारह अक्षौहिणी दल के महाभारत में उसी धनुष बाण से सब को जीता था उन के देखते २ काबों ने सब स्त्रियों को लूट लिया।

*सहना, आपा घालना, लगन। †जल। ‡पेड़।

ऐसी जरना चाहिये ज्यौं घनहर* जल मेह ।
सबही ऊपर बरसता ना दिल दोष सनेह ॥ ८ ॥
दीठी अनदीठी करौं जिन की लूँ मैं दाद† ।
सँग से कभी न बिच्छरूँ खेलूँ आदि अनाद ॥ ९ ॥
दीठी अनदीठी करैं जिन की लूँ मैं दाद ।
सँग से कभी न बिच्छरूँ परम सनेही साध ॥१०॥
दीठी अनदीठी करौं जिनकी लूँ मैं दाद ।
सँग से कभी न बिच्छरूँ हर दम नाम अराध ॥११॥
दीठी अनदीठी करौं सब अपने सिर लेहिं ।
सँग से कभी न बिच्छरूँ जो मुझ सरबस देहिं ॥१२॥
दीठी अनदीठी करौं जिन के हूं मैं संग ।
भक्ति पुरातम देत हौं चढ़त नवेला रंग ॥ १३ ॥
दीठी अनदीठी करौं जिनके हूं मैं साथ ।
भक्ति पुरातम देत हौं पीड़ा लगै न गात ॥ १४ ॥
दीठी अनदीठी करौं जिनके हूं मैं तीर ।
बजर टूटते राखहीं पीड़ा नहीं सरीर ॥ १५ ॥
दीठी अनदीठी करौं सो साधू परबीन ।
नाम रते निरबंध हौं छाँड़े दोनौं दीन ॥ १६ ॥
दीठी अनदीठी करौं सो साधू सिर-पोस ।
जो बीतै सो सिर धरौं देहिं न काहू दोस ॥ १७ ॥
दीठी कूँ कहि देत हौं जिनके दिल नाहिं थीर ।
ताके सँग हम ना रहौं सो कुहन बेपीर ॥ १८ ॥

*गहरा बादल । †न्याव, बख़शिश ।

जरना जोगी जगतगुरु जरना है जगदीस ।
जरना आप अलेख है राखो अपने सीस ॥ १९ ॥
जरना जोगी जगतगुरु जरना अलह अलेख ।
जरना कभी न डिगमिगै जरना निःचल देख ॥२०॥
जरना जोगी जगतगुरु जरना आप करीम ।
जरना हमरे उर बसै जम नहिं चंपै सीम* ॥ २१॥
जरना जोगी जगतगुरु जरना अलख अलाह ।
जरना कूँ कुरबान जाँ जरना बेपरवाह ॥ २२ ॥
जरना जोगी जगतगुरु जरना रमता राम ।
जरना कूँ कुरबान जाँ जरना है निःकाम ॥२३॥
जरना पूरन ब्रह्म है जरना करता आप ।
जो कछु लखै सो सब जरै जरना है गरगाप॥२४॥
जरै सो अछै निरंजन कहिये जरै सकल में देव ।
जरना जोगी गुरमुखी जरना अलख अभेव॥२५॥
जरना जोगी जुग जुग जिवै जरना प्रलय न जाय ।
जरना जोगी जगतगुरु पद में रहै समाय ॥२६॥
जरना जोगी जुगजुग जिवै जरना प्रलय न होय ।
जरना जोगी जगतगुरु सब्द समाना सोय ॥२॥
कसनी कसै कपूर ज्यौं करनी करै करार ।
जरना जोगी जगतगुरु आप तरै जग तार ॥२८॥
सिंघ साध का एक मत जीवत ही कूँ खायँ ।
यह जग मुरद-फरोस† है पर द्वारे नहिं जायँ ॥२९॥

---

*जम अपनी सीमा याने हद पर नहीं रोक सकता । †मुर्दा-परस्त याने मुर्दा पूजने वाले से मतलब है ।

सिंघ साध का एक मत भच्छन करैं बिचार ।
यह जग मुरद फरोस है जाहिं न आन दुआर ॥३०॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यौँ अललपच्छ के अंग ।
अंडा छुटै अकास तैँ बहुर मिलै सतसंग* ॥३१॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यौँ अललपच्छ के होय ।
सतसंगत सेवत रहा बिछुर गया दिन दोय* ॥ ३२ ॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यौँ चंदन के अंग ।
मुख से कछू न कहत है तन कूँ खात भुवंग ॥३३॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यौँ पारस के होय ।
लोहे से सोना करै कह न सुनावै कोय ॥ ३४ ॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यौँ पृथ्वी-पति इन्द्र ।
मोती मुक्ता होत है बूँदै स्वाँत समुन्द्र ॥३५॥
जरना बिन जोगी अफल बस्तु न लागै हाथ ।
बिन जरना क्या पाइये भाट बकै पर-बात† ॥३६॥
कथनी से क्या होत है करनी कारन मूल ।
करनी कर जरना जरै लगै पान फल फूल ॥३७॥
कथनी में कुछ है नहीं करनी में रँग लाग ।
करनी कर जरना जरै सो जोगी बड़ भाग ॥३८॥
अनंत कोटि धुन होत है अनंत कोटि झनकार ।
एती सुन जरना जरै सो जोगी करतार ॥३९॥

*एक चिड़िया जिसकी निस्बत कहा जाता है कि वह इतने ऊँचे आकाश में रहती है कि वहाँ जब अंडा देती है तो रास्ते में बायुमंडल की रगड़ से अंडा सेय जाता है और बच्चा पैदा होकर पृथ्वी पर पहुंचने के पहिले उसके पंख जम आते हैं और वह रास्ते ही से अपने माता पिता की संगत में लौट जाता है। †दूसरौँ के गुन ।

अनंत कोटि धुन होत है अनंत कोटि छबि रंग।
एती लख जरना जरै सो साधू सब्द बिहंग ॥४०॥
अनंत कोटि बाजे बजैं अनंत कोटि रबि तेज।
एती लख जरना जरै सो साधू परसै सेज ॥४१॥
साहब से परचै भये दुनिया बीच अधीन।
एती लख जरना जरै सो साधू परबीन ॥४२॥
साहब से परचै भये उस दरबार अबाद।
इहाँ न परगट होत हैं परम सनेही साध ॥४३॥
काँछ* बाँछ* परबन्ध है सतबादी नर सूर।
साहब के दरबार में जिन्ह मुख रहता नूर ॥४४॥
काँछ बाँछ को कस रहे सतबादी नर एक।
साँई के दरबार में रहै जिन्हों की टेक ॥४५॥
जरना साहब संत है जरना सतगुरु साँच।
जरना पाँचो तत्त है ऐसी जरना काँछ ॥४६॥
जरै सो अबिचल रहैगा जरै सो परलय नाहिं।
जरना जोगी ना मरै आवागमन ना जाहि ॥४७॥
जरै सो निरगुन नूर है जरै सो निरगुन तंत।
जरै सो साहब आप है जरै सो सत भगवंत ॥४८॥
ज्ञान जोग कूँ सब जरै जरै नाम निरधार।
आठ सिद्ध नौ निद्ध कूँ जरना अधम उधार ॥४९॥
भक्ति मुक्ति कूँ सब जरै जरै जोग बैराग।
आपा ठहरावे नहीं यह मत पूरन भाग ॥५०॥

*इच्छा।

दया धर्म को सब जरै जरै सील संतोष ।
मनी कुफर ब्यापै नहीं मिल पद रहै अजोख ॥५१॥
मुख से कहै सो सब जरै सरवन सुनै समोय ।
मन की धारन सब जरै सो जन निःचल होय ॥५२॥
चार मुक्ति जरना जरै बिहिस्त बैकुंठ बिलास ।
काया माया सब जरै सो साधू निज दास ॥५३॥
पुर पट्टन नगरी बसै भेद न काहू देत ।
कीड़ी कुंजर* पोषता अपना नाम न लेत ॥५४॥
पुर पट्टन नगरी बसै निरधारं आधार ।
लख चैारासी पोषता ऐसी जरना सार ॥५५॥
चैारासी भाँड़े गढ़ै खेलै खेल अनंत ।
जाकी जरना देख कर जे कोइ साधै संत ॥५६॥
चैारासी भाँड़े गढ़ै खेलै खेल अपार ।
खान पान सब देत है ऐसा समरथ सार ॥५७॥
कहि न सुनावै और कूँ जो कुछ करै सो लीन† ।
जाकी जरना देख कर संत भये बेदीन ॥ ५८ ॥
परचे कोट अनंत हैँ अजमत‡ कोट अनंत ।
कीमत कोट अनंत है जरना जोगीकंत ॥ ५९ ॥
कच्छ मच्छ बारह§ कुरम‖ सेस धैाल¶ फन धार ।
ब्रह्मंड कोट अनंत है रोम रोम की लार ॥६०॥

* चीँटी से हाथी तक । † गुप्त । ‡ करामात । § बाराह । ‖ कुरम और कच्छ दोनौं एक ही हैं ज़ियादा "दिग्गज" का शब्द लगता है क्यौंकि आठौं दिशा के गज और शेष नाग पृथ्वी को सम्हाले हुए हैं । ¶ सपेद ।

एती लख जरना जरै कारन कवन अलेख ।
संत सूर जरना जरै कोइ हमरी जरना देख ॥६१॥
धौल गगन गिरनार* है बसुधा† ब्रह्म बिलास ।
हमरी जरना देख कर बस्तु लहै कोइ दास ॥६२॥
निरगुन सरगुन सब कला बहुरंगी वरियाम‡ ।
पिंड ब्रह्मंड पूरन पुरुष अवगत रमता राम ॥६३॥
अनँत कला कलधूत§ हैं अनँत कला परवान ।
ऐसी जरना तू जरै धन कादिर‖ कुरबान ॥६४॥
सब जानत है जगत गुरु कहि न सुनावै कोय ।
ऐसी जरना तू जरै नहीं किसी से होय ॥६५॥
जुगन जुगन के पाप सब जुगन जुगन के मैल ।
जानत है जगदीस तू जोर किये बद-फेल ॥६६॥
करमौं कारन देख कर मौन रहे मुसताक ।
तेरी जरना देख कर संतौं हासिल हाथ ॥६७॥
जरना बड़ जाजुल्ल¶ है जरना नाद समोय ।
ऐसी जरना सो जरै जा तन सीस न होय ॥६८॥
जरना जरै सो जालिम जोगी जरना जालिम जिंद ।
जरना जरै सो आपै आपं काल करम नहिं फंद ॥६९॥
परदा कभी न पाड़िये** जे सिर जलै अँगीठ ।
चाबुक तोड़ौ चौपटे गुनहगार की पीठ ॥७०॥
परदा कभी न पाड़िये जे सिर बलै अँगार ।
चाबुक तोड़ौ चौपटे गुनहगार सिर भार ॥७१॥

*नाम पहाड़ का जिस पर बहुत से सिद्ध रहते हैं । †पृथ्वी ।
‡ वरीयान=सब से श्रेष्ठ । §निर्दोष । ‖शक्तिमान । ¶खूब जलता हुआ । **उघारिये ।

परदा कभी न पाड़िये अपने ही सिर लेह ।
चाबुक तोड़ौ चैापटे गुनहगार मुख खेह ॥७२॥
परदा कभी न पाड़िये जे सिर आई होय ।
चाबुक तोड़ौ चैापटे सार झरंता लोह ॥७३॥
परदा कभी न पाड़िये जे जाता है सीस ।
चाबुक तोड़ौ चैापटे हुकम सरे जगदीस ॥७४॥
परदा कभी न पाड़िये जो जाती है जान ।
चाबुक तोड़ौ चैापटे नीर छीर कूँ छान ॥७५॥
एती जरना जब जरै सतगुरु से है भेँट ।
बका बकाई करत हैं जिन्ह हट्टी गुरु फेँट* ॥७६॥
जिन के अंतर लगन है जोर कहैंगे राम ।
बका बकाई करत हैं आन झखैं बेकाम ॥७७॥
पृथ्वी का गुन लीजिये औगुन उर नहिं धार ।
जिनके दिल मैं एक है दूजे को दैं डार ॥७८॥
सब्द अनाहद्द जो रते दूजा नहीं उपाव ।
सुन्न मँडल मैं रम रहा ना जहँ करम लगाव ॥७९॥
अनहद मंदल† बाजहीं बारह मास अचंभ ।
कबीर दास गरीब कूँ भक्ति दई आरंभ ॥८०॥

## निश्चय का अंग

अपने दिल साधू नहीं वा कूँ दरसा साध ।
भैंस सींग से जानिये गत कुछ अगम अगाध‡ ॥१॥

---

*जो संसारी गुरू की लपेट मैं रहेंगे वह बाद बिबाद में जन्म गँवावगे। †तबला, मृदंग। ‡देखो नोट पृष्ठ २३।

उसके मन की फुरत है अपने मनकी नाहिं ।
गनिका चढ़ी बिमान में अजामील की बाँहि*॥२॥
तीन धात हैं पिता की चार धात हैं माय† ।
सिष स्वामी इकसा मिलै हंसा पहुंचै ठाँय ॥३॥
निःचय ऊपर नामदेव पाहन दूध पिलाये ।
भैंस सींग में साहब आये नाम रतन धन पाये‡॥४॥

*अजामिल के कुकर्मी होने और अंत में नारायण नाम के प्रताप से तर जाने की कथा नोट पृष्ठ २६ में लिखी है परंतु उसकी बदौलत उसकी बेश्या का भी उद्धार होने का प्रमान कहीं नहीं पाया जाता ।

†बालक में पिता और माता दोनों के अंश से तीन तीन बस्तु की उत्पत्ति लिखी है--पिता के अंश से हड्डी रग और मज्जा (या गूदा) और माँ से बाल लोहू और माँस, चौथी बस्तु माँ के अंश से कौन सी बनी है इस का प्रमान हम को कहीं नहीं मिला । महात्मा चरनदास जी ने पिता के अंश में रग की जगह बीर्ज लिखा है और माता के अंश में बाल की जगह त्वचा ।

‡नामदेवजी की प्रचंड भक्ति जगत-प्रसिद्ध है । यह बामदेव जी की बिधवा कन्या के उदर से भगवत की दया दृष्टि से हज़रत ईसा की भाँत जनमे थे। इन के नाना भी बड़े भक्त और माता पूरी सती और प्रेमी थीं । नामदेवजी के बिषय में बहुत से चमत्कार लिखे हैं । लड़कपन ही से इन की परमार्थ में रुचि थी और उसी अवस्था में एक बार उन के नाना ठाकुर जी की सेवा उनके सपुर्द कर के बाहर गये । जब नामदेवजी ने ठाकुर जी के सामने दूध धरा और उन्होंने न पिया तो इन्हों ने समझा कि हम से अप्रसन्न हैं और तीन दिन तक मंदिर में बिना अन्न पानी के दुखी पड़े रहे अंत को ठाकुर जी ने कटोरा उनके हाथ से लेकर दूध पी लिया और थोड़ा सा उनको प्रसाद दिया ।

किसी मेले के समय में नामदेव जी अपना जूता कमर से बाँध कर पंढरपुर के ठाकुरद्वारे में दर्शन को गये संजोग से जूता किसी ने देख लिया और इन को मार कर मंदिर से निकाल दिया । बेचारे मंदिर

निःचय ही से देवल फेरा पूजो क्यौं न पहारा ।
नामदेव दरवाजे बैठा पंडित के पिछवारा ॥५॥
निःचय ही से गऊ जियाई निःचय बच्छा चूगै ।
देस दिसंतर भक्ति गई है फिर को लावै भूगै* ॥६॥
गोपीचन्द भरथरी जोगी निःचय राज बिराजी† ।
निःचय होय तो नेड़े निपजै क्या पंडित क्या काजी॥७
निःचय सेऊ सीस चढ़ाया चोरी संत सिधारे ।
बनिया कूँ जहँ पकड़ लिया है करदे‡ सीस उतारे§॥८॥
पिता समन और माता नेकी जिन कै निःचय भारी
जहाँ कबीर कमाल फरीदा भोजन की भइ त्यारी§ ।९

के पीछे जा कर दर्शन न मिलने से व्याकुल होकर बैठ गये और वहाँ बिनती करने लगे उसी दम मंदिर जड़ से फिर कर द्वारा उन की ओर हो गया ।

*एक बार बादशाह ने उनको पकड़ बुलाया और कहा कि तुम ने सिद्धाई का ढचर फैला रक्खा है हमारी गाय मर गई है उसको जिला दो नहीं तो क़तल कर डाले जावगे । नामदेवजी ने बहुत उजर किया कि मैं तो एक नीच छीपी हूं मुझ में कोई गुन नहीं है—पर बादशाह ने न माना आख़िर को महात्मा जी ने भगवत चरन में बिनती की और गाय जी उठी ।

एक बार घर में आग लगी तो नामदेवजी और सामान जो घर के बाहर रक्खा हुआ था उसको भी आग में मालिक की मौज से उस का लगना समझ कर डालने लगे । भगवान ने उन का छप्पर का घर दूसरा बिचित्र रीति से आप रच दिया ।

†राजा भर्थरी बड़े त्यागी और जोगी हुए और राजा गोपीचद्र उनके भांजे उनके चेले बने ।

‡ छुरी से । §देखो नोट पृष्ठ १५-१६

सेऊ के धड़ सीस चढ़ाया मीन मेख नहिं कोई ।
हाजिर नाजिर मिले बिसंभर ऐसा निःचय होई १०
तपिया के तौ जकतक* कीना लोदिया के घर आये ।
ताड़ी घाल लिये परमेसर निःचय हाथ बँधाये ॥११॥
निःचय ऊपर बालद आई और केसो बन्जारा ।
नौलख बोरी लदा लदीना कासी नगर मँझारा† १२
निःचय पंडा पाव‡ बुझाया जगन्नाथ के माहीं ।
अटका फूट पड़ा पाँवन पर अजहूं बात न भाई १३
कासी तज कर मगहर पहुंचे ऐसा निःचा कहिये ।
सतगुरु साख समझ ले भाई थीर पकर थिर रहिये§ १४
कासी मरे सो जाय मुक्ति कूँ मगहर गदहा होई
पुरुष कबीर चले मगहर कूँ ऐसा निःचा जोई§ १५
कासी के तो पंडित कूकैं मगहर मरो न भाई ।
वा तौ पृथ्वी सूची नाहीं त्रिसंक पड़ो बिल्लाई§ १६।
कासी तज मगहर कूँ चाले किया कबीर पयाना ।
चादर फूल बिछेही छाँड़े सब्दै सब्द समाना‖ १७

*झगड़ा । †देखो नोट पृष्ठ ३४-३५ । ‡पावक=आग [ जगन्नाथजी के मंदिर में आग लग जाने से वहाँ का रसोइया जलने लगा कबीर साहब ने काशी में धरती पर पानी गिरा कर आग बुझा दी ] ।

§कबीर साहब काशी से जाकर मगहर में रहे थे और वहीं शरीर त्याग किया । मगहर को मग्गह देस बोलते हैं और लोगों का बिश्वास है कि वहाँ मरने से गधे की जोनि मिलती है क्योंकि गुरुद्रोही राजा त्रिशंकु का शरीर जो अधर में लटक रहा है उस की छाया उस भूमि पर पड़ने से वह अपबित्र हो गई है ।

‖कबीर साहब के अंतकाल के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि हिन्दुओं ने इन के मृतक शरीर को जलाना और मुसलमानों ने गाड़ना चाहा इस पर बहुत झगड़ा हुआ अंत को चद्दर उठा कर देखा तो

मगहर में तो कबर बनाई बिजलीखान पठाना।
कासी-चौरा उड़ गया भौंरा दूनौं दीन दिवाना॥१८॥
कनक जनेऊ कंध दिखाया है रैदास रँगीला।
धरे सातसै रूप तास कूँ ऐसी अद्भुत लीला* १९
पीपा तो दरिया में कूदे ऐसा निःचा कहिये।
मिले बिसम्भर नाथ तासु कूँ झूठी भक्ति न गहिये†२०
सेना के घर साहब आये करी हजामत सेवा।
संतौं की तो सरधा राखी पारब्रह्म निज देवा‡ २१
नरसी की तो हुंडी झाली कागज सीस चढ़ाया।
धयोती का तो ब्याह भया जब भात भरन कूँ आया§२२

मृतक स्थान पर शरीर नदारद था फूल और खाट पड़ी थी (कितने खाट की जगह पान कहते हैं) तब हिन्दुओं ने फूल लेकर मगहर में उन की समाधि बनाई और मुसलमानों ने जिन में कबीर साहब का जेठा चेला बिजलीख़ाँ पठान प्रधान था क़बर बनाई। काशी में उसी समय एक भौंरे के कहने से कबीर साहब के गुरुमुख शिष्य धर्म्मदासजी ने कबीर-चौरा बनाया।

*देखो नोट पृष्ठ ३४। †देखो नोट पृष्ठ ३३। ‡देखो नोट पृष्ठ ३३।

§नरसी जो गुजरात देश के बासी थे जिन की प्रचंड भगवत भक्ति प्रसिद्ध है। इन की महिमा ग्रथौं में बहुत कुछ बर्नन की है। दो चमत्कार जो इस कड़ी में लिखे हैं एक तो यह है कि जब नरसीजी दान देते देते कंगाल हो गये थे एक समय साधुओं ने आकर इन को घेरा कि द्वारिका की जात्रा के लिये ख़र्च दो। नरसीजी ने अपनी नादारी हज़ार कही पर जब साधुओं ने पिंड न छोड़ा तो हुंडी द्वारिका को भगवान के ऊपर साँवल साह के नाम से लिख दी। वहाँ ईश्वर ने आप साँवल साह का रूप धर कर उन को हुंडी का दाम चुका दिया। दूसरे यह कि जब उन की बड़ी बेटी के लड़का हुआ अर्थात नरसीजी के दोहता पैदा हुआ तो छठियारे के लिये कुछ न था भगवान ने आप उस रसम को अदा किया।

तिरलोचन के भये बिरतिया ऐसी भक्ति कमाई ।
संतौँ के तो नाल फिरे अरु तीन लोक ठकुराई* २३॥
जीवन मूल बिसम्भर† साहब आतमदेव बिनानी‡।
जहँ जहँ भीर परी संतौँ कूँ छाना दूध अरु पानी२४
प्रहलाद भक्त कूँ दई कसैाटी चौरासी बरताया ।
नरसिँह रूप धरे नारायन खंभ फार कर आया§ २५

*तिरलोचनदेव वैश्य कुल के भक्त थे इन को साधु सेवा में सहायता के लिये एक नौकर की बड़ी खोज थी श्रोर मन का आदमी नहीँ मिलता था आख़िर को भगवान तीन लोक के ठाकुर अर्थात स्वामी नैाकर का भेष धर आप इन की चाकरी में रहे ।

†बिश्वंभर । ‡ बिज्ञानी ।

§प्रह्लाद भक्त का पिता हिरण्य-कश्यप बड़ा ईश्वर-द्रोही था श्रोर अपने बेटे को राम नाम लेने से रोकता था । इसी अकस से प्रहलाद को सारे दंड चैारासी के दिये, अर्थात पहाड़ से गिराया, ज़ंजीर से बाँध कर नदी में डलवाया, हाथी से रूँदवाना चाहा, ज़मीन में गड़वाया, अंग में साँप लिपटवाया, तोप पर रक्खा, सिर पर आरा फेरा, उलटा टाँग कर तीर चलाये, चिता बना कर जलवाया (देखो होलिका की कथा नोट पृष्ठ ६४), बिष पिलाया श्रोर आख़िर को खंभे से बाँध कर खड्ग से सिर काट डालना चाहा तब ईश्वर ने नरसिंह रूप धर कर हिरण्य-कश्यप का पेट नख से फाड़ कर उस का बध किया । इस अवसर के भयानकपन को नीचे लिखे हुए दंडक छंद में इस तरह लिखा है—

गगड़ गड़गड़ान्यो खम्भ फाल्यो चरचराय निकस्यो नरनाहर को रूप अति भयानो है । ककट कटकटावै दाढ़ै दशन लपलपावै जीभ अधर फरफरावै मोछ व्योम व्याप्य मानो है । भभरि भरभराने लोग हडरि-हर पराने धाम थथरि थरथराने अङ्ग चिते चाहत खानो है । कहत रघुनाथ कोपि गर्जे नरसिंह जबै प्रलय को पयोधि मानो तड़पि तड़-तड़ानो है ॥

ध्रू का ध्यान अमान अगोचर डिगै न डोलै भाई ।
सप्त पुरी पर तारी लागी कोटि कल्प जुग जाई* २६
नारद पुंडरीक और व्यासा गोरख जनक बिदेही ।
द्वादस कोट बंध जिन तोरी भक्ता परम सनेही† ॥२७॥
सुल्तानी बाजीद फरीदा देत तत्त गलताना ।
जब राजा कूँ नाम दिया जब सब्दै सब्द समाना† ॥२८
कहा बखानूँ कोटिन निर्नय राजा पारँग कीन्हा ।
अकल अजीत उदित अध्यातम गोरख से परबीना†२९
बसिष्ट बिश्वामित मद माते मन माया जिन जीते ।
कागभसुंड डंड नहिं जाके अवगत आनंद चीते†॥३०॥
लोमष ऋषि और मारकंड को ध्यान लगा वा पद में ।
अबिनासी से अरस परस है सुरत बसी अनहद में†३१
मोरद्धुज तामरधुज राजा अम्बरीक अनुरागी ।
हरीचन्द पद हाजिर नाजिर मन से माया त्यागी†३२
द्रोपद सुता के चीर बढ़ाये पीतंबर पहराना ।
अंत भये कछु वार न पारा दूसासन हैराना‡ ॥३३॥
पंडों के जग अस्वमेध में सुपच बजाया संख ।
द्रोपदी के दिल में राखी काढ़ी मन की बंक§ ॥३४॥
निःचा ऊपर नाम का कहा ज्ञान कहा ध्यान ।
निःचा खेत निपाइया काँकर बोई जान‖ ॥३५॥

*देखो नोट पृष्ठ ३२ ।
†भक्तजन, ऋषि, मुनि और राजाओं के नाम ।
‡देखो नोट पृष्ठ २४ ।
§देखो नोट पृष्ठ ६५-६६ ।
‖देखो नोट पृष्ठ ३४ ।

काम लुब्ध पाखँड रचा धरे बिसंभर रूप ।
ऐसा निःचा चाहिये मारे राजा भूप ॥३६॥

सील सँतोष बिबेक बुध दया धर्म इक तार ।
बिन निःचै पावै नहीं साहब का दीदार ॥३७॥

सत बोलै साँची कहै दिल में परै न बाँक ।
मुसकी घोड़ा सेत होय अकल अकीनै झाँक ॥३८॥

निःचै गोकुल गूजरी बिनही बेड़े पार ।
पंडित के दिल दुई थी गुरवा रह गये वार* ॥३९॥

ज्यों मीरा राठौर को राखी नहीं अधार ।
पकर्यो लोहा ज्ञान को कोटौं कटक सँघार ॥४०॥

मीरा हाथ सितार था पद गावै लौ लाय ।
पत्थर की थी पर्तिमा जा में गई समाय† ॥४१॥

---

*श्रीकृश्नकी आज्ञा से गोपियाँ दुर्बासा ऋषि के लिये भोजन लेकर जमुना पार गई थीं जब कि जमुना जी ने फट कर जाने का रास्ता दे दिया ॥

†मीरा बाई मेरते के राजा की बेटी और चित्तौड़ के राना की पतोहू थीं । इन की अनुपम भक्ति संसार भर जानता है । देवी की पूजा करने से इनकार करने पर इन को सास ने अपने घर से अलग दूसरे घर में रख दिया जहाँ वह बेरोक टोक भगवत-भक्ति और साध सेवा में रात दिन लगी रहती थीं । यह बात राना को न सुहाई ख़ासकर साधुओं की बेधड़क संगत करना । राना ने मीरा बाई को रोकने के लिये कोई जतन उठा न रक्खा लेकिन जब कुछ बस न चला तो चरनामृत के नाम से घोर बिष का प्याला उब को भेजा । मीरा बाई उसे सिर पर चढ़ा कर पीगईं और कुछ असर न हुआ । कहते हैं कि भगवान इन के साथ साक्षात बैठ कर चौसर खेलते थे । मीरा बाई बृन्दाबन गईं और वहाँ जीव गोसाईं से मिलना चाहा । गोसाईं जी ने कहला भेजा कि हम स्त्रियों से

भवन तेग थी काठ की जैसे चमकी बीज ।
ओटनहारा को नहीं अवगत अलख अछीज* ॥४२॥
भवन गमन गगनै किया घोरे सुधा गुलाम ।
ज्यौं मिसरी साहब मिले बरछी लोह लगाम ॥४३॥

नहीं मिलते जिस पर मीराबाई ने जवाब दिया कि मैं तो वृन्दा-बन में सिवाय श्रीकृष्ण के सब को सखी रूप जानती थी आज मालूम हुआ कि उन के और भी पट्टीदार हैं । यह सुन कर गोसाईं जी अति लज्जित हुए और मीरा बाई के दर्शन को आप नंगे पाँव दौड़े आये । वृन्दाबन से मीरा बाई फिर चित्तौड़ लौटीं पर राना की बुद्धि वैसीही भृष्ट पाकर द्वारिका में जा बसीं । चित्तौड़ में मीरा बाई के छोड़ते ही ऐसे उपद्रव खड़े हुए कि राना डरा कि मीरा बाई को दुख देने के कारन ईश्वर का कोप हुआ और घबरा कर उन को बुलाने के लिये आदमी भेजे । जब वह न आईं तो कई ब्राह्मन भेजे जो मीरा बाई के द्वार पर धरना बैठे अंत को मीरा बाई रनछोड़ जी से बिदा होने को उन के मंदिर में गईं और भक्त-माल में लिखा है कि मूर्त्ति के सन्मुख एक प्रेम का पद जिस की अंतिम कड़ी यह है—"मीरा के प्रभु गिरिधर नागर मिलि बिछुड़न नहिं कीजे" गाया कि मूर्त्ति में समा कर लुप्त हो गईं और सिवाय इस के कि रनछोड़ जी की मूर्त्ति पर पीताम्बर की जगह मीरा बाई की सारी देख पड़ी और कोई चिन्ह उन का बाक़ी न रहा ।

*भवन भक्त, जाति के राजपूत चौहान, राना के एक भारी कामदार थे । एक बेर राना के साथ शिकार में एक हिरनी के पीछे घोड़ा डाला और उस को तलवार से मारा । वह हिरनी गाभिन थी उस का बच्चा भी दो टुकड़े हो गया । भवन जी को बड़ी ग्लानि आई और उस दिन से प्रण किया कि लोहे की तलवार के बदले काठ की तलवार रखना । एक चुग़लख़ोर ने राना से कह दिया, राना ने इन को तलवार दिखलाने को कहा । जब इन्हों ने म्यान से काठ की तलवार खींची तो वह फ़ौलाद की हो कर बिजली की नाईं चमकी कि सब की आँखें चौंधिया गईं । भक्त का ओटनहार अर्थात रक्षा करने वाला भगवंत आप ही है ।

करनहिँ जाँचे आन कर मंगत किया जुहार ।
मो कूँ पारस दीजिये दालिद्दर बेडार* ॥४४॥
करन तौहि कूँ दसत में सोच परी बड़ भीर ।
धरती कूँ खोदन लगा मेटी जन की पीर* ॥४५॥
पारस ठहका आन कर लगी तीर की भाल ।
परसत ही सोना भया कीन्हा करन निहाल* ॥४६॥
ऐसो निःचा चाहिये पारस पूरन हाथ ।
जो रंगे सोई रँगे साँईं जेही दात ॥ ४७ ॥
गगन मँडल हुन बरखिया तीन बेर तत सार ।
सीता लछमन राम की मध मूरत करतार ॥४८॥
सो मूरत क्यूँ ना पूजहीँ पत्थर ढेला डार ।
सीता लछमन राम के लीजे चरन जुहार ॥४९॥
ग्यारह रुद्रों पर तपै द्वादस मद्ध मिलाप ।
सूछम मूरत सूँरते ब्रह्म सब्द गरगाप ॥५०॥

---

*कथा है कि राजा करन सवासौ मन सोना हर रोज़ दान किया करते थे एक दिन भगवान उन की जाँच करने को मँगता के भेष में आये और राजा से ताज़ा सोना माँगा [गरीबदासजी ने पारस पत्थर का माँगना लिखा है] राजा का प्रण था कि कभी किसी का सवाल ख़ाली न जाय इस से बड़ी फ़िकर में पड़ कर जंगल को निकल गये और सोँच में धरती को तीर से कुरेदने लगे। भगवान को उन की दशा देख कर करुना आई और तीर की गाँसी के तले पारस पत्थर रख दिया जिस के छूते ही गाँसी सोने की होगई और राजा ने निहाल होकर पारस पत्थर को धरती में से निकाल लिया और ताज़ा सोना बन गया ।

कोट धुजा* किस काम का सूम सकल है चाल ।
  असी गंज† बाँटे नहीं परा तासु पर ज्वाल‡ ॥५१॥
दिल दानी है तासुका सदाबरत मन माहिं ।
  पृथ्वी पारस हो रही हुन बरषी जिस ठाहिं ॥५२॥
सुअर गऊ कूँ खात है बिसमिल§ करै हमेस ।
  दोऊ दीन दोजख गये जम तेहि पकरे केस ॥५३॥
करदी करद‖ चलावहीं जीव जोनि पर जाय ।
  नैन बैन सूँ मिलि रहा छाती परदे पाय ॥५४॥
यह ता काफ़िर करम है धरम नहीं यह पाप ।
  द्रोही नबी रसूल के डूबैंगे गरगाप ॥ ५५ ॥
जिव हिंसा जो करत हैं या आगे क्या पाप ।
  कंटक जूनि जहान में भँटा सिंह अरु साँप ॥५६॥
आतम प्रान उधार ही ऐसा धरम न और ।
  कोटि जग्ग असुमेध फल सब्द समाना भौंर ॥५७॥

## साध महिमा का अंग

धन जननी धन भूमि धन धन नगरी धन देस ।
  धन करनी धन सुकुल धन जहाँ साध परबेस ॥१॥
जा ऊदर साधू बसै सो ऊदर है पाख¶ ।
  सनकादिक से उपज ही सुकदे बोले साख** ॥२॥

---

*पहिले क़ायदा था कि पूरे करोड़ रुपये पर एक फरहरा खड़ा कर दिया करते थे जो निशान करोड़पती होने का समझा जाता था।

†ख़ज़ाना। ‡ज़वाल। §ज़िबह। ‖छुरी। ¶ पाक।

** कथा है कि एक समय में महादेव जी पारबती जी को एकान्त में तत्व-ज्ञान का उपदेश दे रहे थे पासही एक पेड़ था जिसके खोढ़र

गंदा अंडा गरद मिल परा बिरिछ के खोढ़ ।
संकर तत्त सुनाइया पारबती गई पौढ़** ॥ ३ ॥
धन संकर धन गीरजा धन सुकदे धन ब्यास ।
धन जननी सुकदेव की द्वादश बरस बिलास** ॥४॥
जहाँ साध जन औतरे तहाँ भक्ति का भेव ।
गोरख उपजे ज्ञान जब भभूत दई महदेव* ॥ ५ ॥
सूया अनसूया मिले तीनौं देवा ध्यान ।
सब्द स्वरूपी औतरे दत्तात्रे परमान† ॥ ६ ॥

या खोखली पेड़ी में एक गंदा अंडा सुग्गे का पड़ा हुआ था, वह उस चरचा के प्रताप से सजीव होकर फूटा और बच्चा बन कर बड़ा हो गया। कथा के बीच में पारबती जी को औंघाई आगई तब वह सुग्गा जो कथा को सुन रहा था पारबती जी की जगह हुंकारी भरने लगा जिस में महादेव जी कथा को बंद न करदें। जब कथा समाप्त हुई तो महादेवजी ने पारबती जी को सोता देख कर पूछा कि तुम तो सो गई थीं हुंकारी कौन भरता था। पारबती जी ने कहा मैं नहीं जानती। इस पर महादेव जी ने क्रोध में भर कर अपना त्रिशूल छोड़ा। सुग्गा भागा और त्रिशूल ने उसका पीछा किया। रास्ते में ब्यास जी की स्त्री सूर्य्य की पूजा कर रही थीं और उनका मुंह खुला हुआ था सुग्गा उनके मुंह में होकर पेट में समा गया और बारह बरस तक उनके पेट में रहा क्योंकि त्रिशूल को उस स्त्री के बध करने का अधिकार न था। जब ब्यास आदिक ने जाकर महादेव जी से बिनती की तब शिव जी ने त्रिशूल को फेर लिया और सुग्गा शुकदेव जी के रूप में ब्यास जी की स्त्री के उदर से निकल कर जंगल को चला। ब्यासजी उनको फेर लाने को पीछे दौड़े तो शुकदेव जी ने उनको ज्ञान सुनाया।

*गोरखनाथ जी जोगी महादेव के उपासक थे।

†अत्रय ऋषि की स्त्री अनसूया के अंतर में ध्यान करते समय त्रिदेव ने अपना अंश डाल दिया जिस से दत्तात्रेयजी उत्पन्न हुए। इन्हों ने चौबीस गुरू धारन किये।

संत सुरसरी चलत हैं मारू देस बहंत ।
बागड़ मंझ बिलास होय नदी सुरसरी संत ॥७॥
साध नदी दो अगम नग इन सम तुल नहिं और ।
साध भक्ति के खंभ हैं नदिया बिरछा मौर ॥८॥
साँईं सरिखे संत हैं यामें मीन न मेख ।
परदा अंग अनादि है बाहर भीतर एक ॥ ९ ॥
साँईं सरिखे देखले बरतावै जे कोय ।
सप्त कोस जल चढ़ गया जहाँ साध मुख धोय* ॥१०॥
सकल मेदिनी† भर गई सब्द न पूटा‡ फेर ।
सप्त कोस क्या बात है डूबे मेरु सुमेर ॥ ११ ॥
ऐसे साधू संत जन पार ब्रह्म की जाल ।
सदा रते हरि नाम सूँ अंतर नाहीं घाल ॥ १२ ॥
साध अगाध अपार जन परमानँद सूँ प्रीत ।
कहवत के तौ संत हैं अवगत अलख अतीत ॥१३॥
साध सगे हैं जगत में संत सगाई साँच ।
साधू ढूँढ़न नीकलूँ बहु बिधि काछूँ काछ ॥१४॥
साध समुंदर गगन गत सुन्न समाने सोय ।
परमानँद के परमहंस एक कहूं की दोय ॥ १५ ॥
साध समुंदर लाल नग संत हीरौं की खान ।
सतगुरु बेदी बाँचहीं सुनतेही परवान ॥ १६ ॥

*गिरनार पहाड़ जहाँ अच्छे साधू रहते हैं वहाँ से सात कोस नीचे हनुमान धारा गिरती है । †पृथ्वी । ‡पीठ ।

महिमा कीजे संत की तन मन धन सब देहि ।
सिर माँगे टालो नहीं मोरद्धुज लखि लेहि* ॥१७॥
संत सलहली सेज के जिन मैं कैसी भिन्न ।
साहब साँई ऊतरे नाम धराया जन्न† ॥ १८ ॥
संत सलहली सेज के जिन के कैसी भिन्न ।
साहब परगट संत हैं जिन का एकै मन्न ॥ १९ ॥
मोड़ अमोड़ं मगन है हद बेहद मैं सैल ।
साहब साधू पाक है उपजी बाजी मैल ॥ २० ॥
माल मुलक सब घूर है बिन साँई के नाह‡ ।
दुनिया अलग बिजोग है साधू साहब माँह ॥२१॥

*राजा मोरध्वज की प्रचंड भक्ति की बहुत सी कथा हैं । जिस बात का यहाँ ज़िकर है वह यह है कि श्रीकृष्न अर्ज्युन को राजा मोरध्वज की असदृश भक्ति की लीला दिखलाने के आप एक बूढ़े ब्राह्मन का रूप धर कर और अर्ज्युन को अपना पुत्र बना कर राजा के घर आये और कहा कि रास्ते में लड़के को बाघ ने पकड़ा था और हमारे बहुत बिनती करने पर इस शर्त पर छोड़ा कि राजा मोरध्वज का दहिना अंग हमारे खाने को लाओ । राजा ने जवाब दिया कि बड़े भाग मेरे कि यह निकाम देह साध सेवा में काम आवै और बूढ़े ब्राह्मन के कहने मुताबिक़ अपनी रानी और कुंवर को आज्ञा दी कि आरे से चीर कर सिर से पाँव तक दो टुकड़े कर दो । आरा उठा कर राजा के सिर पर रक्खा गया और एक ओर से रानी और दूसरी ओर से राजकुंवर चलाने लगे कि इस में राजा की बाँई आँख से एक आँसू टपक पड़ा । इस पर बूढ़े ब्राह्मन बोले कि यह दान अब अशुद्ध हो गया क्योंकि तुम रोये जो चिन्ह दुःख और खेद का है । राजा ने उत्तर दिया कि ऐसा कदापि नहीं है बरन बाँई आँख अपनी अभाग्यता पर शोक करती है कि हमारी ओर का अंग साध सेवा में न लगा । इस पर श्रीकृश्न ने प्रसन्न होकर निज रूप से दर्शन दिया ।

†भक्त । ‡नेह ?

माल मुलक सब घूर है पाक परम गुरु संत ।
  जिन सूँ साहब निकट है तिन मैं कैसा अंत ॥२२॥
जिन में नाहीं अंतरा अरस परस परवान ।
  साहब साधू एक हैं दुनिया दूजी जान ॥ २३ ॥
संत सामना संत में दुनिया है सो न्यार ।
  जिन में दूजी भिन्न क्या राते सिरजनहार ॥२४॥
साध समुंदर कमल गति माहैं साँई गंध ।
  जिन में दूजी भिन्न क्या सो साधू निरबंध ॥२५॥
कमल न डूबै जल चढ़ै माहैं मधुकर* बास ।
  जैसे चंद कमोदिनी यूँ साँई निज दास ॥ २६ ॥
नौ नेजे जो जल चढ़ै कमल न भींजै गात ।
  माहैं ज्ञान सुगंध सर† आदि अंत का साथ ॥२७॥
नौ नेजे जो जल चढ़ै बूँद न लागै पान ।
  ऐसे साधू अगम गत संसारी परवान ॥ २८ ॥
कमल पत्र की बासना जाको कवन सरूप ।
  महकै गंध अपार गति सूँघत बड़े बड़े भूप ॥२९॥
भूप संत साधू कहे जुगन जुगन के राव ।
  सप्त पुरी नहिं बासना जिनके भक्ति पसाव‡॥३०॥
मन मधुकर काया केवड़ा महकत गंध अजोख ।
  हूंट हाथ गढ़ अगम है रच राखे सब लोक ॥३१॥
स्वर्ग सलेमा§ बास है तिरबेनी के घाट ।
  आगे अगम अगाध गति अवर नहाहीं आठ‖॥३२॥

*भँवरा । †तालाब । ‡क़द्र । §सुखाला । ‖पाँच तत्व और तीन गुन ।

संत सरोवर हंस हैं भच्छन करैं बिचार ।
पुहुप बासना ज्यूँ रहैं राई रिंच न भार* ॥ ३३ ॥
साध कमल मध बासना ऐसा हलका अंग ।
मैल मनोरथ ना रहै निरमल धारा गंग ॥ ३४ ॥
साध सँगत हरि भक्ति बिन कोई न पावै पार ।
निरमल आदि अनादि है गंदा सब संसार ॥३५॥
साध साध सब कोउ कहै साध सुमत से जान ।
कुमत कमावे जीव है जैसे जल पाखान ॥ ३६ ॥
ज्यूँ जल में पाखान है भींजत नाहीं अंग ।
चकमक लागे अगिन है कहा करे सतसंग ॥ ३७ ॥
जहँ महिमा है साध की चरन कमल से हेत ।
जुगन जुगन उर मैं रखूँ ध्रू प्रहलाद सकेत ॥३८॥
साध संत के ऐन† में बसैं हुजूर अमान ।
जा घर निंदा साध की सो घर डूबे जान ॥ ३९ ॥
लख छल छिद्दर मैं करूँ अपने संतों काज ।
हिरनाकुस ज्यूँ मारहूँ नरसिंघ धरहूं साज‡ ॥४०॥
स्वर्ग पतालों सकल में है अनुरागी राम ।
नरसिँघ होकर अवतरे प्रहलाद भक्त के काम‡॥४१॥
जहँ जन की महिमा सुनूँ तहँ मैं गमन करंत ।
वो तो नगर अमान है जहँ मेरे प्यारे संत ॥ ४२ ॥

*जैसे फूल में सुगंध जिस का रत्ती भर बोझ नहीं होता । †घर, आँख । ‡देखो नोट पृष्ठ ८८ ।

साध साध सब कोउ कहै साध समुंदर तीर ।
अवगत की गत को लखै मिल गये नीर कबीर* ॥४३॥
नीर कबीर निरंजनं अंजन धरे सदेस† ।
अंजन मंजन माँजिये जब होवे परवेस ॥ ४४ ॥
साध कहावन कठिन है मग पर धरे न पाँव ।
सहँगी‡ संगत है नहीं चढ़ो नाम की नाव ॥ ४५ ॥
साध कहाया जगत में परचे पड़े न प्रान ।
जग सोभा जब होयगी मिलै अलख निरबान ॥४६॥
सब्द मिलावा अंग रस परसन है दीदार ।
रोम रोम तारी लगै झिलमिल किरन अपार ॥४७॥
बरषै किरन अबरन गत रिमझिम रिमझिम रंग ।
जो देखै सोई कहै अरस परस परसंग ॥ ४८ ॥
संत सकल के मुकट हैं साँईं साध समान ।
बड़ भागी वे हंस हैं जिन संतों नाल पिछान ॥४९

॥ राग-धुनि ॥

आज मेरे आये संत सुजान ।
तन मन धन वारूँगी प्रान ॥ टेक ॥
चरन कमल रज डारूँ सीस ।
मानो आप मिले जगदीस ॥ १ ॥

---

*कबीर साहब नौजनमतुआ बालक की दशा में काशी के लहरतारा तालाब में बहते मिले थे [देखो जीवन-चरित्र कबीर शब्दावली भाग १ में]। †निकट । ‡सस्ती, सहज ।

संत की महिमा कही न जाय ।
अठसठ तीरथ चरनौं माँय ॥ २ ॥
संत की महिमा अपरम्पार ।
पूरन ब्रह्म मिले करतार ॥ ३ ॥
संत की महिमा अगम अगाध ।
नारद से उधरे प्रहलाद* ॥ ४ ॥
ध्रू भैंटे नारद निर्बान ।
अमरापुर पर रचे बिमान* ॥ ५ ॥
संत की महिमा अगम अगाह ।
बूड़न तैं राखे गज ग्राह† ॥ ६ ॥
संत की महिमा निस्चल थीर ।
द्रोपद सुता की बढ़ गई चीर‡ ॥ ७ ॥
संत की महिमा अधिक सुमेर ।
भिलनी के जूठे खाये बेर§ ॥ ८ ॥
संत की महिमा निस्चल अंक ।
बालमीक का बाजा संख‖ ॥ ९ ॥
संत की महिमा अमन अमान ।
देखो गनिका चढ़ी बिमान¶ ॥ १० ॥

---

*प्रहलाद भक्त की कथा नोट पृष्ठ ८८ में और ध्रू भक्त की नोट पृष्ठ ३२ में दी है। प्रहलाद को गर्भ में और ध्रू को बन में नारद मुनि ने उपदेश दिया था।

†देखो नोट पृष्ठ २४। ‡देखो नोट पृष्ठ २४।

§सेवरी भिल्लिनी के दाँत से कुतर कर चीखे हुए बेर श्री रामचन्द्र ने बड़ी रुचि से भोग लगाये।

‖देखो नोट पृष्ठ ६५-६६। ¶देखो नोट पृष्ठ २४।

संत की महिमा पद गरगाप ।
तिरलोचन के बिर्तिया आप* ॥ ११ ॥
पंडरपुर नामा निर्बान ।
देवल फेर छवा दई छान† ॥ १२ ॥
कासीपुरी कबीर कमाल ।
गैबी बालद लाइ रसाल‡ ॥ १३ ॥
दिया भंडारा जन रैदास ।
कनक जनेऊ पद परकास§ ॥ १४ ॥
संत की महिमा कही न जाय ।
पीपा कूद परे दरियाय‖ ॥१५॥
दास गरीब संत कूँ सेव ।
चौरासी मिट गइ सुकदेव¶ ॥१६॥

*देखो नोट पृष्ठ ८८ ।

†पंडरपुर के ठाकुरद्वारे का दरवाजा फिर जाने और नया छप्पर बन जाने का हाल नामदेव भक्त की कथा नोट पृष्ठ ८५ में देखो।

‡भगवंत ने कबीर की लाज रखने को बैलौं अन्न उन के द्वारे पर पहुंचा दिया [देखो नोट पृष्ठ ३४-३५ ] कमाल कबीर साहब के पुत्र और चेले थे ।

§देखो रैदास जी की कथा, नोट पृष्ठ ३४ ।

‖देखो नोट पृष्ठ ३३ ।

¶ तोते की चौरासी छूट कर शुकदेव जी का चोला पाने की कथा देखो नोट पृष्ठ ९३-९४।

# पारख का अंग

अनंत कोटि अवतार हैं नहिं चितवै बुध नास ।
खालिक खेलै खलक में छः ऋतु बारह मास ॥१॥

पीछे पीछे हरि फिरैं आगे संत सुजान ।
संत करैं सोइ साँच है चारो जुग परमान ॥२॥

साँई सरिखे साध हैं इन सम तुल नहिं और ।
संत करैं सोइ होत है साहब अपनी ठौर ॥३॥

संतौं कारन सब रचा सकल जमीं असमान ।
चंद सूर पानी पवन जग तीरथ औ दान ॥४॥

ज्यूँ बच्छा गउ की नजर में यूँ साँई औ संत ।
हरि जन के पीछे फिरैं भक्त बछल भगवंत ॥५॥

धारा मेरे संत की मुझ से मिटै न अंस ।
बुरी भली भाषै नहीं सोई हमारा बंस ॥६॥

संखों जिव परलै करै संखों उतपति ख्याल ।
ऐसे समरथ संत हैं एक खिसै* नहिं बाल ॥७॥

गरजैं इन्द्र अनंत दल बहु बिध बरषा होय ।
संखों जिव परलै करैं संखों उतपति होय ॥८॥

इच्छा कर मारैं नहीं बिन इच्छा मर जाहिं ।
निःकामी निज संत हैं तहँ नहिं पाप लगाहिं ॥९॥

बरषैं तड़कैं डोब दैं तारैं तीनो लोक ।
ऐसे हरिजन संत हैं सौदा रोकम रोक† ॥१०॥

*उखड़े । †नकद, खरा ।

बहतर छोहन छै करी कूरुकूछत्तर देख[*] ।
कपिल सँघारे सगर के पाप लगा नहिं एक[†] ॥११॥
द्वादस कोट निनानवे गोरख जनक बिदेह ।
यूँ तारे यूँ डोब दे यामैं नहीं सँदेह ॥१२॥
सील माहिं सब लोक हैं ज्ञान ध्यान बैराग ।
जोग जग्य तप होम नेम गंगा गया पराग ॥१३॥
संतोष स्वर्ग पाताल सब और कहा मृत लोकू ।
फिर पीछे कूँ क्या रहा जब आया संतोष ॥१४॥
बिबेक बिहंगम अचल है आया हिरदे माहिं ।
भक्ति मुक्ति औ ज्ञान गति फिर पीछे कुछ नाहिं ॥१५॥
दया सर्ब का मूल है छिमा छका जो होय ।
तिरलोकी कूँ तार दे नाम निरंजन गोय ॥१६॥
दस हजार रापत[‡] बली कामदेव महमंत ।
जा सिर अंकुस सील का तोरत गज के दंत ॥१७॥
क्रोध बली चंडाल है बल रापत द्वादस सहंस ।
एक पलक में डोब दे अनंत कोट जिव हंस ॥१८॥
जा सिर अंकुस छिमा का मारे तुस तुस[§] बीन ।
तिरलोकी से काट दे जे होय साधु प्रबीन ॥१९॥

---

*कथा है कि कुरुक्षेत्र में महाभारत के संग्राम में बहत्तर छोहनी दल जमा हुआ था जिन में से एक न बचा—एक छोहनी में दस हज़ार हाथी, तीस हजार रथ, एक लाख मल्ल या पहलवान, दस लाख घोड़े, और छत्तीस करोड़ सिपाही होना बतलाते हैं ।

†कपिलमुनि ने राजा सगर के साठ हज़ार पुत्रों को जो उन से दुर्बचन बोले थे भस्म कर दिया ।

‡हाथी । §भूसी, छिलका ।

लोभ सदा लहरा रहै तिरलोकी में इच्छ ।
बल रापत* बीस सहस है पलक पलकके बिच्छ ॥२०॥
ता अंकुस संतोष है तिरलोकी से काढ़ ।
काटै कोटक कटक दल संतोष तेग बड़ बाढ़॥२१॥
मोह मवासी मस्त है बल रापत* तीस सहंस ।
तिरलोकी परिवार है जहँ उपजे तहँ बंस ॥२२॥
जा सिर अंकुस बिबेक है पूरन करै मुराद ।
तिरलोकी की बासना ले बिबेक सब साध ॥२३॥

## ब्रह्म बेदी

ज्ञान सागर अति उजागर निरबिकार निरंजनं ।
ब्रह्म ज्ञानी महा ध्यानी सत सुकृत दुख भंजनं॥१॥
मूल चक्र गनेस बासा रक्त बरन जहँ जानिये ।
क्लिँग जाप कुलीन तज सब सब्द हमरा मानिये ॥२॥
स्वाद चक्र ब्रह्मादि बासा जहँ साबित्री ब्रह्मा रहै ।
ओँ जाप जपंत हंसा ज्ञान जोग सतगुरु कहै ॥३॥
नाभि कमल में बिस्नु बिसंभर जहँ लछमी सँग बास है ।
हँग जाप जपंत हंसा जानत बिरला दास है ॥४॥
हृदय कमल महादेव देवं सती पारबती संग है ।
सोहं जाप जपंत हंसा ज्ञान जोग भल रंग है ॥५॥
कंठ कमल में बसै अबिद्या ज्ञान ध्यान बुधि नासही ।
लील चक्र मध काल कर्मं आवत दम कूँ फाँसही ॥६॥
त्रिकुटी कमल परमहंस पूरन सतगुरु समरथ आप है ।
मन पैाना सम सिंध मेलो सुरत निरत का जाप है॥७॥

*हाथी ।

सहसकमलदल आप साहब ज्यूँ फूलन मध गंध है।
पूर रहा जगदीस जोगी सत समरथ निरबंध है॥८॥
मीन खोज* हनोज† हर दम उलट पंथ की बाट है।
इला पिंगला सुखमन खोजो चल हंस औघट घाट है॥९॥
ऐसा जोग बिजोग बरनौ जो संकर ने चित धरा।
कुंभक रेचक द्वादस पलटै काल करम तिस तैं डरा॥१०॥
सुन्न सिंघासन अमर आसन अलख पुरुष निर्बान है।
अति लौलीन बेदीन मालिक कादिर कूँ कुरबान है।११।
है नरसिंघ अबंध अवगत कोट बैकुंठ नख रूप है।
अपरंपार दीदार दरसन ऐसा अजब अनूप है।१२।
घुरै निसान अखंड धुन सुन सोहं बेदी गाइये।
बाजै नाद अगाध अगहे जहँ ले मन ठहराइये॥१३॥
सुरत निरत मन पवन पलटै बंकनाल सम कीजिये।
स्रवै‡ फूल अस्थूल अस्थिर अमी महारस पीजिये।१४
सप्तपुरी मेरुडंड खोजो मन मनसा गहि राखिये।
उड़िहैं भँवर अकास गमनं पाँच पचीसो नाखिये§॥१५
गगन मँडल की सैल करले बहुर न ऐसा दाव है।
चल हंसा परलोक पठाऊँ भौसागर नहिं आव है॥१६॥
कंदर्प|| जीत उदीत¶ जोगी षटकर्मी यह खेल है।
अनुभव मालिन हार गूँधै सुरत निरत का मेल है॥१७॥

*मछली की राह जिस का निशान नहीं होता। †सदा। ‡चुवै। §रोकिये। ||कामदेव। ¶प्रकाशमान।

सोहं जाप अथाप थरपी त्रिकुटी संजम धुन लगै।
मान सरोवर न्हान हंसा गंग सहसमुख जित बहै ॥१८॥
कालिन्द्री कुरबान कादिर अवगत मूरत खूब है।
छत्र सेत बिसाल लोचन गलताना महबूब है ॥१९॥
दिल अंदर दीदार दरसन बाहर अंत न जाइये।
काया माया कहा बपुरी[*] तन मन सीस चढ़ाइये ॥२०॥
अवगत आदि जुगादि जोगी सत पुरुष लौलीन है।
गगन मँडल गलतान गैबी जाति अजाति बेदन है ॥२१
सुख सागर रतनागर निरभय बिन मुख बानी गावही।
बिन आकार अजोख निरमल दृष्टिमुष्टि न आवही २२
झिलमिल नूर जहूर जोती कोट पदम उजार है।
उलट नैन बेसुन्न बिस्तर जहाँ तहाँ दीदार है॥२३॥
अष्टकमलदल सकल रमता त्रिकुटी कमल मध निरखहीं।
सेत धजा सुन गुमठ[†] आगे पचरँग झंडे फरकहीं ॥२४॥
सुन्न मंडल सतलोक चलिये नौ दर मूँद बेसुन्न है।
बिन चसमों एक बिम्ब[‡] देखा बिन सरवन सुनि धुन्न है२५
चरन कमल में हंस रहते बहुरंगी बरियाम है।
सूछम मूरत स्याम सूरत अचल अभंगी राम है ॥ २६॥
नौ मुखंध[§] निसंक खेले: दसवें दर मुख[‖] मूल[¶] है।
मालिन रूप अनूप सजनी बिन बेली का फूल है॥२७॥

[*] बेचारी। [†] गुम्बज। [‡] प्रकाशमान गोलाकार। [§] द्वारे। [‖] मुख्य। [¶] सार वस्तु।

स्वास उस्वास पवन कूँ पलटै नागफनी कूँ भूच[*] है ।
सुरत निरत का बाँध बेड़ा गगन मँडल कूँ कूँच है॥२८॥
सुनले जोग बिजोग हंसा सब्द महल कूँ सिध करो ।
गहु गुरज्ञान बिज्ञान घानी जीवतही जग मैं मरो ॥२९॥
उजल हिरंबर सेत भौंरा अछै बृछ सत बाग है ।
जीते काल बिसाल सोहं तरतीजन बैराग है ॥ ३० ॥
मनसा नारी कर पनिहारी खाकी[†] मन जहँ मालिया ।
कुंभक काया बाग लगाया फूले फूल बिसालिया ॥ ३१ ॥
कच्छ मच्छ कुरम धौलं सेस सहस-फन गावहीं ।
नारद मुनि से रटैं निस दिन ब्रह्मा पार न पावहीं ॥ ३२ ॥
संभु जोग बिजोग साधा अचल अडिग समाध है ।
अवगत की गत नाहिं जानी लीला अगम अगाध है॥३३॥
सनकादिक औ सिध चौरासी ध्यान धरत हैं तासु का ।
चौबीसो अवतार जपत हैं परमहंस प्रकास का ॥३४॥
सहस अठासी औ तैंतीसो सूरज चंद चिराग है ।
धर[‡] अंबर[§] धरनीधर[‖] रटते अवगत अचल बिहाग है ३५
सुर नर मुनिजन सिध अरु साधक पारब्रह्म कूँ रटत हैं ।
घर घर मंगलचार चौरी ज्ञान जोग जहँ बटत हैं ॥ ३६ ॥
चित्रगुप्त धरमराय गावै आदि माया ओंकार है ।
कोट सरसुती लाप करत हैं ऐसा ब्रह्म दरबार है॥३७॥
कामधेनु कलपबृछ जाके इन्द्र अनंत सुर भरत है ।
पारबती कर जोर लछमी सावित्री सोभा करत है॥३८॥

---

[*]भौंचना । [†]पिंडी । [‡]धरती । [§]आकाश । [‖]शेषनाग ।

गंधर्ब ज्ञानी अरु मुनि ध्यानी पाँचो तत्त खवास है।
त्रिगुन तीन बहुरंग बाजी कोइ जन बिरले दास है॥ ३९॥
ध्रू प्रहलाद अगाध स्वर्ग है जनक बिदेही जोर है।
चले बिमान निदान* बीता धर्मराय की बँध तोर है॥४०॥
गोरखदत्त जुगादि जोगी नाम जलंधर लीजिये।
भरथरी गोपीचन्द सीझे ऐसी दिच्छा दीजिये ॥४१॥
सुलतानी बाजीद फरीदा पीपा परचे पाइया।
देवल फेरा गोप गुसाँई नामा की छान छवाइया॥४२॥
छान छवाई गऊ जिवाई गनिका चढ़ी बिवान में।
सदना| बकरे कूँ मत मारे पहुँचे आन निदान में ॥४३॥
अजामेल से अधम उधारे पतित-पावन बिरद§ तासु है।
केसो आन भया बनजारा षट दल कीन्ही हाँस है॥४४॥
धना‖ भक्त का खेत निपाया माधो* दई सिकलात है
पंडा पाव** बुझाया सतगुरु जगन्नाथ की बात है ॥४५॥
गैबी ख्याल बिसाल सतगुरु अचल दिगंबर†† थीर है।
भक्ति हेत काया धर आये अवगत सत्त कबीर है॥४६॥

*आदि कर्म्म। |देखो नोट पृष्ठ ८४। +देखो नोट पृष्ठ २६। §बिरद=कीर्ति ‖देखो नोटपृष्ठ ३४। *सकलात पीताम्बर-माधवदास जगन्नाथजी के एक प्रेमी पुजारी थे जिनको कोई कड़ी बीमारी हो गई थी। और पुजारी लोग उनको समुद्र किनारे बैठा आये। रात को जब माधवदासजी को जाड़ा लगा तो जगन्नाथजी अपना पीताम्बर उनको ओढ़ा आये और आरोग कर दिया। सबेरे पीताम्बर मुर्ति पर न पाकर उस की खोज पड़ी तो पुजारियों ने उसे माधवदास के तन पर पाकर उन की महिमा जानी और आदर से मंदिर में लाये।

**पाव आग देखो नोट पृष्ठ ८६।

†† बिना वस्त्र।

नानक दादू अगम अगाधू तिरी जहाज खेवट सही ।
सुख सागर के हंसा आये भक्ति हिरंबर उर धरी ॥४७॥
कोटि भानु प्रकास पूरन रोम रोम की लार है ।
अचल अभंगी है सतसंगी अवगत का दीदार है॥४८॥
धन सतगुरु उपदेस देवा चौरासी भ्रम मेटहीं ।
तेज पुंज तन देँह धरके इस बिध हम कूँ भैंटहीं॥४९॥
सब्द निवास अकास बानी यह सतगुरु का रूप है ।
चंद सूर न पवन पानी जहाँ छाँह न धूप है ॥५०॥
रहता रमता राम साहब अवगत अलह अलेख है ।
भूले पंथ बिडंब* बानी कुल का खाविंद† एक है॥ ५१ ॥
रोम रोम मैं जाप जप ले अष्ट कमल दल मेल है ।
सुरत निरत को कमल पठवो जहँ दीपक बिन तेल है॥५२॥
हर दम खोज हनोज‡ हाजिर तिरबेनी के तीर है ।
दास गरीब तबीब§ सतगुरु बन्दीछोड़ कबीर है ॥ ५३ ॥

---

## सुलच्छन कुलच्छन

उत्तम कुल करतार दे द्वादस भूषन संग ।
रूप द्रब्य दे दया कर ज्ञान भजन सतसंग ॥ १ ॥
सील सँतोष बिबेक दे छिमा दया इकतार ।
भाव भक्ति बैराग दे नाम निरालँब सार ॥ २ ॥
जोग जुगत जगदीस दे सूछम ध्यान दयाल ।
अकल अकीन अजनम जत अठसिध नौनिध ख्याल॥३॥

*पाखंड । †स्वामी । ‡सदा । §वैद्य ।

सुरग नरक बाँचे नहीं मोछ बंध से दूर।
बड़ी गरीबी जगत मैं संत चरन रज धूर ॥ ४ ॥
जीवत मुकता सो कहो आसा तृस्ना खंड।
मन के जीते जीत है क्यूँ भरमे ब्रह्मंड ॥ ५ ॥
साला* करम सरीर में सतगुरु दिया लखाय।
गरीबदास गलतान† पद नहिं आवै नहिं जाय॥६
चौरासी की चाल क्या मो सेती सुन लेह।
चोरी जारी करत है जाके मुखड़े खेह ॥ ७ ॥
काम क्रोध मद लोभ लट छुटी रहै विकराल।
क्रोध कसाई उर बसै कुसब्द छुरा घर घाल॥ ८ ॥
हरष सोग है स्वान गत संसा सरप सरीर।
राग दोष बड़ रोग है जम के परे जँजीर ॥ ९ ॥
आसा तृस्ना नदी में डूबे तीनो लोक।
मनसा माया बिस्तरी आतम आतम दोष ॥१०॥
एक सत्रु इक मित्र है भूल परी रे प्रान।
जम की नगरी जाहिगा सब्द हमारा मान॥ ११॥
निंदा बिंदा‡ छाँड दे संतौं सूँ कर प्रीत।
भवसागर तिर जात है जीवत मुक्त अतीत॥१२॥
जो तेरे उपजै नहीं तो सब्द साख सुन लेह।
साछीभूत सँगीत है जा सूँ लावो नेह ॥ १३ ॥

*घर, स्थान। †मदहोश, मस्त। ‡बुरा भला कहना।

स्वर्ग सात असमान पर भटकत है मन मूढ़ ।
खालिक तो खोया नहीं इसी महल में ढूँढ़ ॥१४॥
करम भरम भारी लगै संसा सूल बबूल ।
डाली पातौं डोलते परसत नाहीं मूल ॥ १५ ॥
स्वाँसाही में सार पद पद में स्वाँसा सार ।
दम देही का खोज कर आवागमन निवार ॥१६॥
बिन सतगुरु पावै नहीं खालिक खोज बिचार ।
चौरासी जग जात है चीन्हत नाहीं सार॥ १७ ॥
मरद गरद मेँ मिल गये रावन से रनधीर ।
कंस केस चानूर से हिरनाकुस बलबीर ।। १८ ॥
तेरी क्या बुनियाद है जीव जनम धर लेत ।
गरीबदास हरि नाम बिन खाली परसी* खेत॥ १९॥

## ॥ सवैया ॥

बाजीद† दुनी‡ सेती विचरा,
कादिर कुरबान सँभाला है ।
फँद टूट गया तब ऊँट§ मुआ,
तहँ पकर पलान‖ उतारा है ॥ १ ॥
अरवाह¶ चली कहु कौन गली,
धौरा** पीरा अक†† कारा है ।

*पड़ा । †दादू दयाल के एक चेले का नाम । ‡दुनिया । §मन । ‖ऊँट की काठी । ¶सुरत । **सपेद । ††या ।

कहिं पैर पियादा पालकियाँ,
कहिँ हस्ती* का असवारा है ॥ २ ॥
सत खुद्द खुदाय अलह लखिया,
सब झूठा सकल पसारा है ।
कपड़ें फाड़े तन से डारे
अब सत्त प्रनाम हमारा है ॥ ३ ॥
बीबी रोवैं चोली धोवैं,
तू सुन भरतार हमारा है ।
मैं ना मानूँ मस्तान भया,
लागा निज निकट निवारा है ॥ ४ ॥
उर मैं अविनासी आप अलह,
सतगुरु कूँ पार उतारा है ।
कहँ गल कंटक दुनिया दूती,
येहू बन कैसा गारा† है ॥ ५ ॥
हम जान लिया जगदीस गुरू,
जिन जंतर‡ महल सँवारा है ।
कुछ तौल न मोल नहीं जा का,
देखा नहिं हलका भारा है ॥ ६ ॥

---

*हाथी । †घना । ‡कलौं का ।

कुछ रूप न रेख विवेक लखा,
चाखा नहिं मीठा खारा है ।
गलतान* समान समाय रहा,
जो पिंड ब्रह्मंड से न्यारा है ॥ ७ ॥
सुर संख समाधि लगाय रहे,
देखा इक अजब हजारा† है ।
कहै दास गरीब अजब दरिया,
झिल मिल झिल वार न थारा है ॥ ८ ॥

( २ )

सुख सागर न्हान चलो हंसा‡,
भवसागर भूल रहे लोई ।
कुल काट§ लगा जम आन ठगा,
अगली पिछली सबही खोई ॥ १ ॥
निंदत नेमी लर ताय लिये,
कुछ समझैं हैं नहिं गुरु-द्रोही ।
संतौं का दोष धरैं दिल मैं,
अघ पाप के बीज बहुत बोई ॥ २ ॥
सुसरे सालौं हितकार करैं,
सासू साली कोई नंदोई ।
जग लड़े मरैं परतीत नहीं,
बोलै नहिं साँच जगत धोई ॥ ३ ॥
लगरे‖ भडुए नहिं भेद लहैं,
गुझ¶ बीरज मंत्र कूँ हम गोई ।

*मस्त, मदहोश । †सहसदलकमल । ‡जीव । §मैल, दाग़ । ‖फ़रेबी । ¶गुप्त

साधू माखन मध छाक रहे,
जग पीवत है पिछली छोई* ॥ ४ ॥
दिन आवत है सुनि दंग भया,
जम तलब छुटी तब दे रोई ।
कहे दास गरीब जगाय रहे,
भडुए निस बासर रहैं सोई ॥ ५ ॥

( ३ )

तप राज लिया बड़ जुलम किया,
आगम अँधरो नहिं सूझत है ।
घट मैं सत सालिग्राम सही,
चेतन होकर जड़ पूजत है ॥ १ ॥
पाती तोरै नहिं मुख मोरै,
पाहन पानी सूँ लूझत† है ।
अंधे बहिरे गूँगे गहले‡,
नहिं सब्द अनाहद बूझत है ॥ २ ॥
काम धेनु सदा कलप बृच्छ कला,
जहँ अमी महारस दूझत§ है ।
कहै दास गरीब गगन गादी,
गैबी गलताना गूँजत है ॥ ३ ॥

( ४ )

झलकै निज नूर जहूर सदा,
बिभै‖ निरधार अपार कला ।

---

*छाछ । †उलझता है । ‡बेसमझ । §दुहा है । ‖फैल रही है ।

कादिर कुरबान अमान सही,
रहता रमता है अलख अलाह ॥ १ ॥
सरबंग अभंग अनाहद है,
जल थल पूरन है सुन्न सिला ।
दरवेस दयाल निहाल करै,
करनी भरनी डूबै न जला* ॥ २ ॥
घट देँह सनेह नहीं जाके,
सरवन चसमैं नहिं कंठ गला ।
कुछ रूप न रंग अभंग बिधा,
सोवै न जगै बैठा न खला† ॥ ३ ॥
करले दीदार जुहार‡ सही,
तेरा जुगन जुगन होय जात भला ।
कहै दास गरीब अलख लखिये,
कोइ दरगह मैं पकरै न पला§ ॥ ४ ॥

( ५ )

निरबान निरंजन चीन्ह भइया,
दुख दारिद मोछ करै करता ।
गरभ बास मिटै निज नाम रटे,
क्यूँ जुगन जुगन चोले धरता ॥ १ ॥
चल थीर करो अवगत नगरी,
तू लख चौरासी क्यूँ फिरता ।
सत संगत ले निज साधन की,
नहिं नाम बिना कारज सरता ॥ २ ॥

*जल में । †खड़ा । ‡प्रणाम । §पल्ला, दामन ।

दयावंत बिबेकि भये ज्ञानी,
टुक छेड़ करे से सब लड़ता ।
चुंडित* मुंडित* सब पकर लिये,
इनसे जम किंकर† ना डरता ॥ ३ ॥
तू कौन कहाँ से आन फँदा,
देख आग बिरानी क्यूँ जरता ।
समझै नहिं सीख सुदरगह‡ ले,
बड़े भूत भये जो पिंड भरता ॥ ४ ॥
मुकता होने का भेद कहूं,
चल चौँर सोहंगम जित ढुरता ।
कहै दास गरीब निवास सदा,
जहँ नाद अखंड अजब घुरता ॥५॥

( ६ )

झलकै जोती मुकता मोती,
निरभै निरबानी भैँटा है ।
त्रिकुटी ताना भर नाम नली§
एकै लख पूरन पेटा‖ है ॥ १ ॥
इक बिंद पिछान जहान रचा
कोइ बाप कहै कोइ बेटा है ।
कोइ पीतसरे¶ कोइ पाति** लगा
कोइ ससुर भया समधेटा†† है ॥ २ ॥

*जटा धारी और मूड़ मुड़ाये हुए भेष । †दूत, नौकर । ‡अच्छी दरगाह को पकड़ । §बुनने की नली जिस पर सूत भरा होता है । ‖ताज़ा तैयार हुआ कपड़ा । ¶चचिया ससुर । **पति । ††समधी ।

जद काल महा बली पकड़ लिया,
मरघट में आकर लेटा है।
साऊ* सबही खप्पर फोरैं,
सिर फोर दिया पुत जेठा† है।
गत बूझत है जद फूँक दिया,
खर खोज नहीं सब मेटा है ॥ ३ ॥
कहै दास गरीब उपाध लगी,
सब भूत भये जग हेठा है ॥ ४ ॥

( ७ )

मग‡ पूछत है परतीत नहीं,
नादी§ बादी‖ झगड़ा ठानैं।
मुकता रुकता नहिं राह लहैं,
नहिं साध असाध कूँ जानत हैं ॥ १ ॥
देवल जाहीं मसजिद माहीं,
साहब का सिरजा भानत हैं¶।
पंडित काजी डोबी** बाजी,
नहिं नीर खीर†† कूँ छानत हैं ॥ २ ॥
चेतन का गल काटत हैं,
धर पत्थर पाहन मानत हैं।
कहै दास गरीब निरास चले,
धिरकार जनम नर लानत है ॥ ३ ॥

*साथी। †बड़ा बेटा। ‡राह। §भेष। ‖पंडित। ¶मालिक के पैदा किये हुए जीवों की हिंसा करते हैं। **डुबा दी। ††दूध।

( ८ )

दुख दुंद उपाध में जीव बँधे,
समरथ की नहीं उपासा* है ।
नेमी धर्मी धर्म धाम फिरैं,
साध संगत कूँ हासा† है ॥ १ ॥
बघनी ठगनी कूँ लूट लिये,
चीन्हा नहिं निरगुन रासा है ।
जल अरघ दिया जम आन लिया,
न्हाते जल बारह मासा है ॥ २ ॥
सूझै नहिं सिंध अबंध बिद्या,
पाती तोरैं नर घासा है ।
जम मारत है मुगदर मोढ़े‡,
चसमौं मैं देत धवाँसा है ॥ ३ ॥
चंचल चोर कठोर कुटिल,
क्या पहिरत मलमल खासा है ।
जम नगन करै साहब की सौं,
देगा तुझ बहुत तिरासा है ॥ ४ ॥
दिल खोज भइया निज नाम जपो,
सत पूरन ब्रह्म खुलासा है ।
कहै दास गरीब पत्थर पटको,
तुम डारो निरगुन पासा है ॥ ५ ॥

*उपाशना । †हँसते हैं । ‡कंधा ।

(९)

जुलमी जुलमाना छाँड़ भइया,
गल काटत है बदला लीजै ।
खिचड़ी खाना तज हलवाना*,
सुरापान† पराधी‡ क्यूँ कीजै ॥ १ ॥
रहै कोट बरस सँग साधौं के,
जल में पाहन का क्या भीजै ।
चंदन बन में रँग लावत है,
इक बाँस बिटंबी§ ना सीझै ॥ २ ॥
बहिरे आगे पद छंद कहा,
समझै नहिं मूढ़ कहा रीझै ।
कहै दास गरीब कुटिल काजी,
चल ज्वाब सरे‖ में क्या दीजै ॥ ३ ॥

(१०)

पापी परभात¶ नहीं भैंटै,
मुख देखत पाप लगै जा का ।
जननी नौ मास तिरास दई,
धिरकार जनम तिसकी मा का ॥ १ ॥
चौरासी कुंड पड़ै पापी,
है जुगन जुगन कुंभी पाका ।
गर्भ छेदन बेधन पीर लगै,
मिटता नाहीं इच्छा टाँका ॥ २ ॥

---

*बकरी का बच्चा । †शराब खोरी । ‡अपराध । §गठीला । ‖शरा यानी हज़रत मुहम्मद की नसीहतों की किताब । ¶तड़के ।

जिस सेरी* साधू संत गये,
वह मारग कठिन बहुत बाँका ।
कहै दास गरीब घर बूझ भइया,
भया तीन लोक सावंत साका† ॥ ३ ॥

## रेखता

(१)

अजब महरम मिला ज्ञान अगहै‡ खुला,
परख परतीत सूँ दुंद भागा ।
सब्द की संध में फंद मनुवाँ गया,
बिरह घनघोर में हंस जागा ॥ १ ॥
अष्ट दल कमल मध जाप अजपा चलै,
मूल कूँ बंध बैराट छाया ।
तिरकुटी तीर बहु नीर नदियाँ बहैं,
सिंध सरवर भरे हंस न्हाया॥ २ ॥
खेचरी भूचरी चाचरी उनमुनी,
अकल अगोचरी नाद हेरा ।
सुन्न सतलोक वूँ गमन हंसा किया,
अगमपुर धाम महबूब मेरा ॥ ३ ॥
अछर की डोर घनघोर में मिल गई,
भेद भेदा मैं करतार महली ।
दास गरीब यह बिषम§ बैराग है,
समझ देखो नहीं बात सहली‖ ॥ ४ ॥

*तंग रास्ता । †किसी शूर बीर की कीर्त्ति का नया सम्वत् । ‡दुर्लभ । §कठिन । ‖सहज ।

( २ )

बिरह की पीर जिस गात गूदा नहीं,
बीझ पिंजर गया अस्थि सूखा* ।
उनमुनी रेख† धुन ध्यान निःचल भया,
पाँच जहूद‡ तन ठोक फूँका ॥ १ ॥
लगैगी दाह जब धाहै§ देता फिरै,
बिरह के अंग में रोवता है ।
पलक आँझू‖ झरै ध्यान बिरहन धरै,
प्रेम रस रीत तन धोवता है ॥ २ ॥
हाड़ तन चाम गूदा असत¶ गलत है,
उड़ैगा गात तन रुई रंगा** ।
पिंड तन पीत†† उदीत‡‡ बैराग है,
देत है मद्ध ज्यूँ कूक§§ बंगा‖‖ ॥ ३ ॥
हंस परमहंस सरबंग से जा मिला,
बिरह बियोग यह जोग जोगी ।
दास गरीब जहँ पास प्याले फिरैं,
पीवते सही रस भोग भोगी ॥ ४ ॥

---

*बिरही की छाती में गूदा बाक़ी नहीं रहता और पिंजर जर-जर होकर हाड़ सूख जाता है [बीझना=खुंदजाना । अस्थि=हाड़] †डोरी । ‡पंच दूत अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को जला दिया । §दोहाई । ‖आँसू । ¶अस्थि, हाड़ । **समान । ††पीला । ‡‡उदित=प्रकाशमान । §§चीख़ । ‖‖बाँस की पोर–जिस तरह हवा का झौंका लगने से बाँस चीख़ता है ।

( ३ )

दीद बर दीद परतीत परतच्छ है,
नयन के नाद में गरक* होई ।
अजब गलतान कुरबान इक तन्त† है,
सब्द अतीत कूँ परख लेई ॥ १ ॥
जस पानी के बीच में बुदबुदा होत है,
फिर पानी के बीच पानी समाया ।
तस ब्रह्म दरियाव में अद्भुत ख्याल है,
कोइ पारखी संत की दृष्ट आया ॥ २ ॥
सब्द टकसाल की लहर छानी‡ नहीं,
जस दीप दरवंत§ भोडल|| धरीता¶ ।
संत सूभर** भरैं तन्त मस्तक धरैं,
हद्द का जीव सब सकल रीता†† ॥ ३ ॥
जस तिल्ली में तेल है काठ में अगिन है,
दूध में घिर्त मथ काढ़ लीया ।
सोई नर साध अगाध निःचल भये,
नूर प्याला जिन्हौं जान पीया ॥ ४ ॥
नाभि के कमल पर बुर्द‡‡ बाजी रची,
सुरत औ निरत का नाहिं मेला ।
मेरु डंड मैदान पर कला§§ सन्मुख करै,
सो जानता होय नट भगल|||| खेला ॥ ५ ॥

---

*डूबना । †तत्व । ‡छिपी । दिखाई देता है । ||अबरक । ¶धरने से ।
**शुभ्र=स्वेत, निर्मल । ††ख़ाली । ‡‡आधी । §§कर्तब । ||||झूठा ।

वंक बाजीगरी बिषम सा खेल है,
नूर प्याले पिवै पैठ सैझै[*] ।
लाख बानी पढ़ै ध्यान सुन में धरै,
महल का मरहमी भेद बेधै[†] ॥ ६ ॥
अजगैब[‡] के कोट में चोट लागै नहीं,
सब्द अतीत में नेस[§] होई ।
दास गरीब गुर-भेद से पाइये,
अगमपुर धाम की बाट जोई ॥ ७ ॥

( ४ )

घट घट में नाद उच्चार बानी,
मिहीं[‖] महल में मारफत[¶] पावता है ।
ताल मिरदंग जहँ संख सुर पूरिये[**],
बिना मुख नाद बजावता है ॥ १ ॥
तूर तुतकार धुमार[††] तिस नगर में,
अजब गुलजार इक नूर चंपा ।
कोकिला बैन सुख चैन सुनते भये,
बिधा[‡‡] है हंस लै बिरछ कंपा[§§] ॥ २ ॥
आद अरु अंत इक मद्ध मेला भया,
सिखर की सुन्न में जिकर[‖‖] लागी ।
केतकी कमल जहँ अजब बाड़ी बनी,
भँवर गुंजार निःतन्त[¶¶] रागी ॥ ३ ॥

---

*सहज में। †पावे। ‡अज़ग़ैब—छिपा हुआ। §निष्ठुर। ‖झीना। ¶गुरज्ञान। **भरिये। ††धूम। ‡‡छिद गया। §§चिड़िया फँसाने की कल। ‖‖जाप। ¶¶निःतत्त।

दुलहनी दंग दुलहा भई देख कर,
संख रबि झिलमिलै नूर जोती ।
अजब दरियाव जहँ कोट बेड़े पड़े,
चुगत है हंस बिन चंच* मोती ॥ ४ ॥
जहँ गुमठ अनूप इक सेत छत्तर बना,
गगन गुलजार जहँ नूर गादी ।
दास गरीब दिल दूसरा दूर कर,
सब्द अतीत सुन में समाधी ॥ ५ ॥

( ५ )

देव ही नहीं तौ सेव किस की करूँ,
किसे पूजूँ कोई नाहिं दूजा ।
करता ही नहीं तौ किरत† किस की करूँ,
पिंड ब्रह्मंड में एक सूझा ॥ १ ॥
जागा ही नहीं तौ जाग किस कूँ कहूं,
सोता ही नहीं किस कूँ जगाऊँ ।
खोया ही नहीं तौ खोज किसका करूँ,
बिछुड़ा नहीं किसे ढूँढ लाऊँ ॥ २ ॥
बोलता संग और डोलता है नहीं,
कला के कोट (अलख) छिप रहा प्यारा ।
गैब से आया और गैब छिप जायगा,
गैब ही गैब रचिया पसारा ॥ ३ ॥
प्रान कूँ सोध कर मूल कूँ दर गहो,
बेद के धुंध‡ से अलख न्यारा ।

*चोंच ।†कीर्त्ति । ‡अँधेरा ।

बेद कुरान कूँ छाँड़ दे बावरे,
नूर ही नूर करले जुहारा ॥ ४ ॥
करमना भरमना छाँड़ दे बावरे,
छाँड़ सब बरत इक बैठ ठाहीं ।
दास गरीब परतीत ही तैं कहै,
ब्रह्मंड की जोत इस पिंड माहीं ॥ ५ ॥

---

## ॥ झूलना ॥

(१)

चढ़ो नाम की नाव जहाज भइया,
तेरा पार चलन कूँ जो दिल है जी ।
अजब कहर मैं नाव लागी,
जहँ मन मलाह जाजुल[*] है जी ॥१॥
चप्पे[†] चित लावो बरदवान[‡] बाँधो,
बड़ा पंथ के बीच कूल[§] है जी ।
जहँ भँवर भारी नाव डिगमिगै है,
ठेका खावे गहि गलहरी[||] जी ॥२॥
सूवा बोलता खाक के पिंजरे में,
सुरत सिंध मेला बुलबुल है जी ।
चिदानन्द चीन्हो ब्रह्म गाजता है,
जैसे मधुकर बासना फूल है जी ॥६॥

---

[*]जुलमी । नाव का पानी उलचना । [‡]पाल । [§]खाड़ी । [||]गलही, नाव का माथा ।

कहै दास गरीब दलाल सोई,
सौदा नाम कीन्हा सम तुल है जी ॥४॥

(२)

बंदी-छोड़ साहब का नाम लीजे,
कटै फंद सब अंध नहिं चीन्हता है।
देई* धाम कूँ पूज कर मगन होई,
देखो सब्द की नहीं यकीनता† है ॥१॥
भेदी भेद दीन्हा सब्द महल का रे,
सीढ़ी सुन्न में लायकर पैठ धाये।
मारा मोरचा पहलई मोह का जी,
बही‡ ज्ञान तरवार सिर काट लाये ॥२॥
चढ़े सील संतोष बिबेक बंका,§
जहँ काम दल कटक‖ सब फूक दीन्हे।
जब दया के चौतरे चार आये,
अनुराग निःतन्त निर्बान चीन्हे ॥३॥
आँखी मार¶ मैदान गढ़ कोट ढाया,
सफर जंग की राड़** है खेत भाई।
दुरजन मार कर गगन में नाद बाजा,
देख दीद बरदीद परतीत आई ॥४॥
चित चौतरे बैठ कर बाँधिया जी,
हम लोक परलोक कूँ गमन कीन्हा।

*देवी। †बिश्वास। ‡चली। § शूरबीर। ‖फ़ौज। ¶पलक भाँजते।
**लड़ाई।

उलटी चाल चाले नहिँ चूके हैँ जी,
निरालंब निरबान निःतन्त चीन्हा ॥५॥
गैबी गैब दरियाव में मार गोता,
जैसे मीन का खोज नहिं पावता है ।
कहै दास गरीब दरहाल धारा,
परबी प्रेम की बेग नहवावता है ॥६॥

( ३ )

बंदी-छोड़ साहब का ध्यान धरो,
निरलंब निज नूर निज नेक है जी ।
जल थल में थीर गंभीर गैबी,
देखो लोक परलोक में एक है जी ॥१॥
धर ध्यान दुरबीन यकीन कीजै,
दिल देहरे बैठकर परख भाई ।
कुरबान करतार के सेहरे पर,
जहँ सुरत औ निरत दो निरख आई ॥२॥
अलह नूर मौला मगन आप है जी,
गलतान सुबहान* सही देख लीजै ।
बैठा अरस† के तखत पर आप साँई,
दीदार के वास्ते सीस दीजै ॥३॥
देख दीदार दरहाल दरिया,
जाके मुकट पर संख रबि झिलमिलै जी ।
जोती जगमगै जोग बिजोग बानी,
जाकी खलक में पलक जहान है जी ॥४॥

*पाक (खुदा) । †अर्श ।

नहिं दीखता मुगध* दृष्ठि आवै,
संत खोज लिया कलधूत† है जी ।
सुन्न सैल कर सिंध में सुरत पैठी,
जहँ आप अवगत अनभूत है जी ॥५॥
मनी मार कर छत्र कूँ फेर भइया,
होय अदल अवधूत इस भेद हाजी‡ ।
अलह बैठ कर आप इन्साफ करता,
चित चौतरे चूक नहिं भई काजी ॥६॥
पड़ै गैब की मार सुमार नाहीं,
देखे कुफर कूँ कुफर दिखावता है ।
फजल सिर फजल जहँ होय भइया,
जाके एक नहिं पलकी लावता है ॥ ७ ॥
सुन्न सिखर के महल में दिया डेरा,
चौक चाँदनी बिच नहिं पला§ पकड़ै ।
कुफर कूं मार पैमाल नीचा करै,
लालखाँ‖ बाँध कर जहाँ जकड़े ॥ ८ ॥
मलागिर की सेज सूली नजर आवती,
मिले सुलतान कूँ कुफर तोड़ा ।
दास गरीब कबीर सतगुरु मिले,
सुरत और निरत का तार जोड़ा ॥ ९ ॥

( ४ )

बंदी-छोड़ साहब कूँ चीन्ह भइया,
मारो नूर के सिंध में गैब गोता ।

*गँवार । †सोना । ‡जिसने हज्ज किया है । §पल्ला । ‖मन ।

बिन पंख पंखी उड़ै भँवर सुन मैं चढ़ै,
अछै बृच्छ मैं बैठ निज सुन तोता ॥ १ ॥
दया की दाल और नाम चोखा* चुगै,
सत्त गुरदत्त बानी बिलासा ।
प्रेम के पींजरे बीच बैठा रहै,
करम खिड़की दई तोड़ फाँसा ॥ २ ॥
इक पींजरे पास मंजार† बैठा रहै,
खोज कर खोज कर खोज खोजी ।
कौन से भेद से अरस झूलत रहै,
चुगै मत चुगा यह ऋद्धि‡ रोगी ॥ ३ ॥
सुन्न के ताक§ मैं पाँच परपंच हैं,
तीन के भवन पर गमन कीजै ।
खड़ा मंजार सिर पीट रोवै सदा,
उड़ै आकास बृछ अछै लीजै ॥ ४ ॥
प्रेम बानी पढ़ै नाम निःचै रटै,
चंद चकोर ज्यूँ ध्यान ध्यानी ।
दास गरीब यह खेल जो याद है,
तौ पींजरा छोड़ नहिं ब्रह्म ज्ञानी ॥ ५ ॥

( ५ )

बंदी-छोड़ साहब कूँ देख भइया,
तेरे नैन में बैन बिलास बानी ।

*चावल । †बिल्ली । ‡यह ऋद्धि अर्थात बिभूति रोग रूप है ।
§आला ।

कच्छ कुरम जिन धौल धरनी धरे,
लोक परलोक इक सब्द ठानी ॥ १ ॥
सूछम सा रूप बिस्तार एता किया,
आदि अरु अंत मध्य नाहिं है रे ।
स्रिष्ट का करता तो स्रिष्ट मैं रम रहा,
नैन के बीच मैं सही है रे ॥ २ ॥
गुलबास निवास जो पुहुप गँध झीन है,
मुग्ध की दृष्ट मैं नाहिं आवै ।
सुरत की सैल से निरत आगे चलै,
बिना आकार का भेद पावै ॥ ३ ॥
पिंड ब्रह्मंड से सिंध न्यारी कहूं,
तिर्कुटी भिर्कुटी नाहिं दसमाँ ।
हद्द बेहद्द के मद्ध निज महल है,
रोसनो सेज बिन देख चसमाँ ॥ ४ ॥
रँग महल की सैर जहँ सुरत निःचल करै,
निरत कूं वार और पार पेलै ।
पिंड ब्रह्मंड का खोज पावै नहीं,
बिना आकार आकार मेलै ॥ ५ ॥
स्रवन और नैन जहँ नासिका है नहीं,
नहीं मन पवन जहँ सीस द्वारा ।
सत कमल काया नहीं खोया पाया नहीं,
नूर जहूर अवगत हजारा ॥ ६ ॥

जहँ रहत है हंस जो सिंध सूभर* भरा,
मीन के खोज मुस्ताक रहना ।
दास गरीब कबीर सतगुरु मिले,
समझ कर खेल नहिं भेद कहना ॥ ७ ॥

( ६ )

भली भाँत के भेद सूँ रहना यारो,
अगर दीप के धाम कूँ जाना है जी ।
चिदानंद कूँ चीन्ह दीदार पावै,
जा का तंबू बनाया असमाना है जी ॥ १ ॥
बैठा चाँदनी चौक में यार मेरा,
अडील† परदा नहीं तासु के जी ।
बानी बोलता अमर अनुराग रागी,
जा का गावना को नहीं गा सके जी ॥ २ ॥
अरस कुरस पर पंथ है झीन मेरा,
मीन खोज की बाट लखावता हूं ।
पलक बीच में सिरे की सैर करता,
अगर दीप के धाम चलावता हूं ॥ ३ ॥
कहूं बात बैराट के घाट की जी,
ज्ञानी ज्ञान कूँ पाय कर बूड़ जाते ।
इक झिलमिली सिंध है दीप दरिया,
कोई ब्रह्म ज्ञानी जहाँ जाय न्हाते ॥ ४ ॥
बहै गंग कैलास आकास माहीं,
संभु‡ सीस पर सैल है अगम रासा§ ।

*शुभ्र=निर्मल । †बिना डील का । ‡संभु=शिव । §राशि=समूह ।

जहँ दत्त गोरख नहीं ध्यान ध्यानी,
अचल नूर ही नूर देखो तमासा ॥ ५ ॥
अरस कुरस के बाग में कौन माली,
जहँ नूर जहूर के कंद* हैं जी ।
कहै दास गरीब सँभाल भइया,
देखो चाखते नहीं सो अंध हैं जी ॥ ६ ॥

( ७ )

खबरदार होय खेलना यार भाई,
चिदानंद की चाँदनी बीच रहना ।
पग पीठ उलटा नहीं फेरिये जी,
सब्द स्वाल के सुने से सीस देना ॥ १ ॥
कुफल जड़ी है यार महबूब मेरे,
सप्तपुरी का भेद नहिं भेदता है ।
उलट पवन द्वादस के दीप जाई,
षट कमल कूँ मूढ़ नहिं छेदता है ॥ २ ॥
ब्रह्म लोक की बात सुन रीझ जाता,
रँग रोसनी दीप नहिँ दीखता है ।
तप जोग कर भक्ति भय मान भाई,
अब साखि सब्दी कहा सीखता है ॥ ३ ॥
गुल सफा की गली में नफस† कूँ गाड़दे,
मार ले मोरचा तीर तुक्का ।
सीस कूँ काट कर हाथ महबूब‡ दे,
इस्क कूँ छोड़ दे कहाँ लुक्का§ ॥ ४ ॥

*कंद मूल । †नफ़स=इच्छा । ‡प्रीतम । §छिपा ।

मन्सूर कूँ देख मौसूल यूँ हूजिये,
अनल ही हक्क बोलै दिवाना* ।
सीस कर कटे हैं रुधिर मुख धोवता,
इस्क नहिं छोड़ सूली चढ़ाना ॥ ५ ॥
इस्क ही इस्क मैं फूँक तन दिया है,
बहे है अस्थि† दरियाव माहीं ।
कहै दास गरीब यह इस्क साँचा सही,
अमर मन्सूर है हक्क साँई ॥ ६ ॥

( ८ )

जल थल के बीच मैं रम रहा तू,
देख दीदार दर हाल है रे ।
वह सेत सुभान‡ जहान माहीं,
जो अजब महबूब अकाल है रे ॥ १ ॥
पारस की खान तो मुत्र की धार में,
कहाँ मोती हीरा लाल है रे ।
गलतान असमान मैं अजब मौला,
इक स्रिष्टि तिरलोक कहा माल है रे§ ॥ २ ॥
जल बूँद सूँ जून‖ जहान सब होत है,
इक पलक के बीच पैमाल है रे ।

---

*मनसूर फ़क़ीर अनल हक्क (=हम ही खुदा हैं) कहते थे जिन्हें मुसलमानों ने सूली चढ़ा दिया। मौसूल=भगवंत के साथ एक होजाना। †हाड़। ‡सुबहान=पवित्र। §एक तिलोंक की सृष्टि क्या हैसियत रखती है उस की रची हुई अनंत तिलोंकियाँ हैं। ‖योनि।

पाखंड कूँ पूज पाखंड परलै गया,
  ख्रिष्टि सूवा ठगा जाल है रे ॥ ३ ॥
पत्थर के फेल से फैज पाई नहीं,
  सीस जम दूत कासाल है रे।
कौन मारै कहो कौन मर जात है,
  छाँड़ हंसा चला खाल* है रे ॥ ४ ॥
अगर मूल के फूल की बासना कहत हूँ,
  झिलमिली रंग रसाल है रे।
सेत ही हंस जहँ सेत सरवर भस्यो,
  सेत ही कमल जहँ ताल है रे ॥ ५ ॥
बुदबुदे संख कहँ राव और रंक है,
  नजर दर नजर निहाल है रे।
दरियाव की लहर दरियाव लैलीन है,
  भँवर और फील जल झाल है रे ॥ ६ ॥
भर्म की बुरज सब सीत के कोट हैं†,
  अजब ख्याली रचा ख्याल है रे।
दास गरीब वह अमर निज ब्रह्म है,
  एक ही फूल फल डाल है रे ॥ ७ ॥

## अरिल

(१)

मौला मगन मुरारि बिसंभर चीन्ह रे।
  दिल अंदर दीदार अरस दुरबीन रे ॥ १ ॥

*शरीर। †धुआँ का सा कोट जो जाड़े में आकाश में बन जाता है।

इला पिंगला फेर सुखमना ध्यावही ।
त्रिकुटि झरोखै बैठि परम पद पावही ॥ २ ॥
झलकै सिंध अपार मुक्ति का धाम रे ।
अचल अगोचर देख पुरुष बरियाम* रे ॥ ३ ॥
निकट निरंजन नूर जहूर जुहारिये ।
मीनी मारग खोज सिंध यूँ फारिये ॥ ४ ॥
नैनौं ही में लाल बिसाल अलेख है ।
हरे हाँरे कहता दासगरीब रूप नहिं रेख है ॥५॥

( २ )

है मौला मस्तान मुलायम महल रे ।
चीन्हो सब्द सिताब जीवना सहल रे ॥ १ ॥
राजा रंक फकीर फना हो जायँगे ।
बिना बंदगी बाद बहुत पछतायँगे ॥ २ ॥
जनम पदारथ पाय पुरुष जाना नहीं ।
गीदी गदहा स्वान सब्द माना नहीं ॥ ३ ॥
लेखा बारंबार धरमराय लेत है ।
हरे हाँरे कहता दास गरीब कसौटी देत है ॥४॥

( ३ )

बिना मूल अस्थूल गगन मैं रम रहा ।
कोई न जाने भेव सकल सब भ्रम रहा ॥१॥
अछै बृच्छ बिस्तार अपार अजोख है ।
नहीं गाम नहिं धाम मुक्त नहिं मोख है ॥२॥

*श्रेष्ठ ।

छत्र सिँघासन सेत पुरुष का रूप है ।
बरन अबरन बिचार न छाया धूप है ।। ३ ।।
देख पदम उँजियार परख नहिं आवही ।
करम लिखा सो होय टरै नहिं भावही* ।। ४ ।।
अवगत पूरन ब्रह्म परस परवान रे ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब सब्द पहचान रे ।। ५

( ४ )

सिव ब्रह्मा का राज इंद्र गिनती कहाँ ।
चार मुक्ति बैकुंठ समझ एता लहा ।। १ ।।
संख जुगन की जूनि† उमर बड़ धारिया ।
जा जननी कुरबान सु कागज फारिया‡ ।। २ ।।
एती उमर बिलंद§ मरेगा अंत रे ।
सतगुरु लगे न कान न भैँटे संत रे ।। ३ ।।
सौ करोड़ मँडलीक‖ जु सावँत¶ संग हैँ ।
सूरे अनंत अपार पड़े बेनंग हैँ ।। ४ ।।
लंक सरीखा कोट चोट पैमाल है ।
मरना है मैदान सही सिर काल है ।। ५ ।।
रावन की रस रीत रँगीला राज था ।
चौदह भवन बिवान मनोमई साज था ।। ६ ।।

---

*भावी=होनहार । †योनि । ‡जिस का कर्म का लेखा चुक गया उस की जन्म देने वाली (मा) पूजने जोग्य है । §वृथा गई । ‖एक देश का राजा । ¶बीर ।

इंदर बरुन कुबेर सुमेर सलामिया* ।
होय होय गये अनंत घने बहु नामिया ॥७॥
तैंतिस कोट की बंध त्रिथा† सुन लीजिये ।
बाँध लाया ससि भानु सजा सुर‡ दीजिये ॥८॥
एक रे जोरा काल सु कूप उसारिया§ ।
ऐसे छल बल कीन्ह सु रावन मारिया ॥९॥
फोकट राजर पाट पिटेगा अंत रे ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब भजो निज कंत रे ।१०

( ५ )

महमूदी चौतार हजारा‖ पहिरता ।
सुलतानी का देस बलख सा सहर था ॥ १ ॥
सोलह सहस सहेली पदमनी भोग रे ।
सतगुरु के उपदेस लिया तज जोग रे ॥ २ ॥
तुरी¶ अठारह लाख ऊँट गैवर** घना ।
सीस महल में सैल बाग नौलख बना ॥ ३ ॥
कस्तूरी तन लेप गुलाबी गंध रे ।
खाना खाते खूब परम निःचिंत रे ॥ ४ ॥
दल बादल गज ठाठ अदल तूमार रे ।
सहदाने†† सहनाई महल धूमार‡‡ रे ॥ ५ ॥
हीरे मोती मुकता जवाहिर लाल रे ।
निस दिन खूबी खैर खजाने माल रे ॥ ६ ॥

---

*सिर झुकाते थे । †कष्ट । ‡देवता । §लटकाया । ‖चार लड़की हज़ारा फूलों की माला । ¶घोड़ा । **हाथियों का झुंड । ††तुरही । ‡‡धूम ।

लागा बान बिहंगम सब्द सबूह रे ।
झलका* मारा ऐंच दूहबर दूह† रे ॥ ७ ॥
राज पाट गज ठाठ छाँड़ कफनी लई ।
सार सब्द की चोट तोर बख्तर गई ॥ ८ ॥
नजरी नजर निहाल जिंदा गुरु पीर था ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब तबीब‡ कबीरथा॥९

( ६ )

क्या राजा क्या रैत§ अतीत अतीम|| रे ।
जोधा गये अपार न चम्पी सीम रे ॥ १ ॥
यह दुनिया संसार बतासा खाँड़ का ।
जोरा पीवे घोर बिसरजन¶ माड़ का ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ बटाऊ लूटहीं ।
हिरस खुदी घट माँह सु बहु बिध कूटहीं॥ ३ ॥
संसा सोग सरीर सुरसरी** बहत हैं ।
नाहीं चौदह भुवन गमन†† मैं रहत हैं ॥ ४ ॥
दुरमत दोजख माहिं दलै‡‡ बहु भाँत है ।
सतगुरु भैंटा होय तो निःचै साँत§§ है ॥ ५ ॥
आजिज जीव अनाथ परा है बंद मैं ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब जगत सब फंद मैं॥६

*भाला । † अंधकार रूपी भ्रम दूर हो गया । ‡ बैद । § रैयत । || यतीम । ¶ धोवन । ** नदी । ††थिर नहीं रहते आवागमन लगा रहता है ।‡‡जलै । §§शांत ।

( १ )

मरदाने मर जाहिं मनी पर मार है ।
 ऐसा महल अनूप पलक में छार है ॥ १ ॥
जोरा* बुरी बलाय जीव जग भूँच† है ।
 पलक पहर छिन माहिं नगारा कूँच है ॥ २ ॥
सुरत सुहंगम नेस पेस है बावरे ।
 बदी बिदारो‡ बेग धनी कूँ ध्याव रे ॥ ३ ॥
दम की डोरा खोज दरीआ§ खूब है ।
 अगर दीप सतलोक अजब महबूब है ॥ ४ ॥
सुता‖ पुत्र गृह नार छार सब गात रे ।
 का सूँ लाया नेह संग नाहिं साथ रे ॥ ५ ॥
हंस अकेला जाय हिरंबर हेत रे ।
 सब्द हमारा मान लाम निज चेत रे ॥ ६ ॥
कोतल घोड़े पीनस¶ रथ संग पालकी ।
 गज गैवर** दल ठाठ निसानी काल की ॥ ७ ॥
हक हलाल पहिचान बदी कर दूर रे ।
 यह मुरगी रब रूह गऊ क्या सूर†† रे॥ ८ ॥
तीतर चिड़ी बटेर भखे हलवान रे ।
 मुल्ला बाँग पुकार अलह रहमान रे ॥ ९ ॥
रमजानी रमजान घास चोखा दिया ।
 पकड़ पछाड़ी रूह कहो यह क्या किया॥ १० ॥

---

*जुल्म । †गँवार । ‡फाड़ डालो, नाश करो । §झोपड़ा । ‖बेटी । ¶एक तरह की छोटी पालकी । **हाथियों का झुंड । ††सूअर ।

खूनी खून मँझा'र खाल क्यूँ काढ़ता ।
देखे रब रहमान गला क्यूँ बाढ़ता* ॥ ११ ॥
ऐसे बूड़ै नाव होत हैं गरक रे ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब नाम निज परख रे १२

( ८ )

जानै जाननहार सकल को जानता ।
घट घट में अबिनासी पूरन प्रान था ॥ १ ॥
अवगत भिन्न अभिन्न महल में महल है ।
हाजिर नाजिर देख कहा क्या गहल[†] है ॥२॥
अलख पलक के बीच अकासा ईस रे ।
सुरत निसानै लाय देख जगदीस रे ॥ ३ ॥
सेत बरन सुभ रंग बिरंग बिचार रे ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब देख दीदार रे ॥४॥

( ९ )

हिरदय कपट कमाल लाल पावै नहीं ।
बहुत परिस्रम भूल गाँठ गहिरी गही ॥ १ ॥
मरजीवा[‡] मन मारि महोदध[§] पैठ रे ।
अनहद सब्द घमोर[||] जहाँ टुक बैठ रे ॥ २ ॥
त्रिकुटी कमल पर सिंध सरोवर सुन्न रे ।
हूठ हाथि गढ़ छाँड़ तहाँ रख मन्न रे ॥ ३ ॥
लगै कोट पर चोट अकार पसार है ।
उपजे सेती भिन्न जो बस्तु नियार है ॥ ४ ॥

*काटता । †ग़फ़लत । ‡समुद्र में मोती की खोज में गोता लगाने वाला । §समुद्र । ||घमघोर ।

अलख अलेल पदम सदन* जहँ लाइये।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब रहत† घर पाइये ॥५॥

(१०)

नग सरवर पर तरवर‡ साखा नहिँ मूल रे।
अछै बृच्छ अस्थान जहाँ मन फूल रे ॥ १ ॥
पीघू§ अनन्त अपार पड़े तिस धाम रे।
तत-बेता परम हंस बसैँ निःकाम रे ॥ २ ॥
समाधान संजूत‖ सलेमाबाद रे।
अज अमर घर देखो आद अनाद रे ॥ ३ ॥
वैकुंठ रिहिस्त बिसार नास ह्वै जात है।
चल बसा सतलोक नबेला साथ है ॥ ४ ॥
अगर डोरहंचढ़ देख झिलमिली सुन्न रे।
अजर अमर घर बसा पाप नहिँ पुन्न रे ॥५॥
तहँ वहँ पदम अनन्त परेवा¶ जाहिँगे।
अछै बृच्छ फल हंस तहाँ वहँ खाहिँगे ॥ ६ ॥
अमर भूमि अस्थान प्रान जहँ चाल रे।
अनंत कोटि तहाँ सिद्ध अमीते** माल रे ॥७॥
अवगतपुर का राजा अवगत नाम है।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब हमारा गाम है ॥८॥

---

*घर। †रहित=मोक्ष। ‡पेड़। §पैगू=पन्ना की क़िस्म का एक जवाहिर। ‖संयुक्त। ¶कबूतर अर्थात् जीव। **बेहिसाब।

( ११ )

यह सौदा सतभाय* करो परभात रे।
तन मन रतन अमोल बटाऊ† साथ रे ॥ १ ॥
बिछुर जायँगे मीत मता सुन लीजिये।
बहुर न मेला होय कहो क्या कीजिये ॥ २ ॥
सील संतोष बिबेक दया के धाम हैं।
ज्ञान रतन गुलजार सँघाती राम हैं ॥ ३ ॥
धरम धजा फरकंत फरहरैं लोक रे।
ता मध अजपा नाम सु सौदा रोक‡ रे ॥ ४ ॥
चलै बनिजवा§ ऊठ‖ हूंठ गढ़ छाँड़ रे।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब लगै जम डाँड़ रे ॥५॥

( १२ )

जम जोरा का जाल काल खग¶ सीस रे।
हैफ** होत छिन माहिं सुमिर जगदीस रे ॥१॥
ऐसा साज बनाय बिसर नहिं जाइये।
जनम पदारथ खोय बहुर कहँ पाइये ॥ २ ॥
जम जोरा का जोर कठोर बिजोग है।
सर्ब लोक सिर साल सु दीरघ रोग है ॥ ३ ॥
जो जाने तो जान सब्द कूँ मान रे।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब होत है हान रे ॥४॥

*सत्त भाव। †ठग। ‡नक़द दाम से लेना। §बंजारा, प्राण। ‖उठना। ¶चिड़िया। **अफ़सोस।

( १३ )

सावँत* औ मँडलीक† गये बहु सूर रे।
राजा रंक अपार मिले सब धूर रे ॥ १ ॥
रूई लपेटी आग अँगीठी आठ रे।
कोतवाल घट माहिं मारता काठ‡ रे ॥ २ ॥
नरक बहै नौ द्वार देहरा गंद रे।
क्या देखा कलि माहिँ पड़ा क्यूँ फंद रे ॥ ४ ॥
हासिल§ का घर दूर हजूर न चालता।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब हटों‖ में लाल था॥५॥

( १४ )

हाट पटन बाजार वजन¶ फीका पड़ा।
जम किंकर का तौक आन गल मैं पड़ा ॥ १ ॥
मार भुहैँ मुँह खाय सीस धर पाटहीं।
जम रोकै नौ द्वार गला और घोंट** हीं ॥२॥
रंचक स्वाद सरीर सिंघासन सेज रे।
पड़ी जुगन जुग भूल न छाँड़े हेज†† रे ॥ ३ ॥
जैसे मधु की माखी मधुवा‡‡ भोग रे।
छार§§ दई मुख माहिं लूटि हैं लोग रे ॥ ४ ॥

---

*बीर। †एक मंडल का राजा। ‡चोर को हवालात रखने के लिये लकड़ी मैं छेद करके उस मैं पाँव डाल कर कील से ठोंक देते हैँ। §लाभ, तत्त्व बस्तु। ‖हाट=दूकान। ¶तौल। **घंटी, घाँटी। ††प्यार। ‡‡जैसे मधु-मक्खी शहद इकट्ठा करती है पर उसे खाने नहीँ पाती उसका मज़ा मधुवा चिड़िया या शहद निकालने वाले लूटते हैँ। §§राख, धूल।

ऐसा संग्रह कीन्ह संग ना चालिहै ।
हर दम अजपा नाम जपो यह माल है ॥ ५ ॥
दौरा* दूत न चोर तिसै नहिं लूटि हैं ।
जूनी संकट बंध नाम से छूटि हैं ॥ ६ ॥
उर मैं आसन मार खजाना खूब है ।
जप तप कौने काम बेचना दूब† है ॥ ७ ॥
लालेँ के ब्योपार पलक टुक मूँद रे ।
खैरचटा मत खाह अज्ञानी गूँद‡ रे ॥ ८ ॥
काँटे कुटिल करीर§ सरीर झरोरिहै‖ ।
चल सतगुरु के देस जु पदम करोर है ॥ ९ ॥
सूली सेज सुरंग तुरंग नचावते ।
जिन के नाम न गाम कहीं नहिं पावते ॥१०॥
मरना है महबूब हक्क दर हक्क रे ।
नजर करो निरताबो¶ पदम परक्ख रे ॥ ११ ॥
सुजनी सेज बिछाय के चँवर ढुरावते ।
जा घर रवनी रंभा** रागी गावते ॥ १२ ॥
सून महल अरु मंदिर बासे काग रे ।
हरे हाँ रे कहता दासगरीब जगत निरभाग††रे१३

( १५ )

खलक मुलक कूँ देख सँघाती कोउ नहीं ।
जम का है मुख्तार सीस बैठे वहीं ॥१॥

---

*धावा मार कर चोरी करने वाले । †बाहरी जप तप घास का बेचना है । ‡गोंद । §एक काँटेदार पेड़ । ‖छिझोर लगा देगा । ¶बिचार और निर्नय करो । **सुंदर बेश्या । ††अभागा ।

होगा हाल बिहाल सब्द कूँ सोध रे ।
पुत्र बिसारा माता बालक गोद रे ॥२॥
और सहेली आन सैन बतलाइया ।
कंठ धुकधुकी आन यान* समझाइया ॥ ३ ॥
ऐसे मौला† खोया महल के माहिँ रे ।
हरे हाँ रे कहता दासगरीब वृच्छ मध छाँह रे॥४॥

( १६ )

न्यारा कभी न होय निरंजन देह से ।
रहा सकल घट पूर परम सुख नेह से ॥ १ ॥
ज्यूँ दरिया मध लीन मीन मग जोह रे ।
पंछी पैर अकास खोज‡ नहिं होय रे ॥ २ ॥
बिन पंखौं के भौंरा उड़ै अकास कूँ ।
इला पिंगला सुखमन सोधै स्वास कूँ ॥ ३ ॥
गूँगे ने गुड़ खाया कैसे जानिये ।
सैन सुकृत से पावै बचन पिछानिये ॥ ४ ॥
काली पीली सुरही§ धौली धेनु रे ।
सेत बरन सब दूध सकल इक बैन रे ॥ ५ ॥
नहीं ऊँच नहिँ नीच निरंजन जाति रे ।
करता के सब माहिँ दिवस औ रात रे ॥ ६ ॥
सोहं साछीभूत न ईसर कोय रे ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब धनी कूँ जोह रे॥ ७ ॥

*कूँच । †ईश्वर ‡निशान । §गाय ।

# बैत

बंदे जान साहब सार वे ।
पिदर मादर† आप कादर, नहीं कुल परिवार वे ॥१॥
जल बूँद से जिन साज साजा, लहम§ दरिया नूर वे ।
है सकल सरबंग साहब, देख निकट न दूर वे ॥ २ ॥
जिन्द अजूनी बेनमूनी, जागता गुरु पीर वे ।
उलट पहन मेरु चढ़ना, लहम दरिया तीर वे ॥ ३ ॥
अजब साहब है सुभानं, खोज दम का कौन वे ।
तिर्कुटी के घाट चढ़ कर, ध्यान धर दुरबीन वे ॥४॥
अजब दरिया है हिरंबर¶, परम हंस पिछान वे ।
आब खाक न बाद आतिस**, ना जमीं असमान वे ॥५॥
अलख आप अलाह साहब, कुर्स कुंज जहूर वे ।
अर्स ऊपर महल मालिक, दर झिलमिला नूर वे ॥६॥
मौला करीम खुदाय खूबी, धुन सोहंसा जाप वे ।
बाँग रोज निमाज कलमा, है सबद गरगाप वे ॥७॥
निर्भय निहंगम†† नाद बाजे, निरख कर टुक देख वे ।
अरसी अजूनी जिंद जोगी, अलख आदि अलेख वे ॥ ८ ॥
मढ़ी महल न तासु के, आसन अचंभी ऐन वे ।
पाजी गुलाम गरीब तेरा, देखता सुख चैन वे ॥ ९ ॥

---

*बाप । †मा । +शक्तिमान । §छिन में । ||ज़िन्दा, जीता जागता ।
¶निर्मल । **पानी, मिट्टी, हवा, आग । ††निःअहंकार, मतवाला ।

( २ )

बंदे खोज पैंड़ा पकर वे ।
लेखा सरे* में लीजियेगा, कर धनी का जिकर वे ॥१॥
जिकर फिकर फरियाद कर ले, अंदरूनो अरस वे ।
हाली मवाली† याद कीजे, ना सरे में तरस वे ॥ २ ॥
रसना रँगीली राम जप ले, अलख कादिर आप वे ।
पीराँ फकीराँ परम ले, पूजो सनेही साध वे ॥ ३ ॥
दरगह मिटै जो डंड तेरा, नेकी निरंतर राख वे ।
नापैद से पैदा किया, तूँ नाम बिन नापाक वे ॥४॥
दिल सफा कर सैलान कीजै, बंक मारग बाट वे ।
इला पिँगला सुषमना, तूँ उतर औघट घाट वे ॥५॥
बंक नाल बिसाल बहना, है अमी रस अरस वे ।
रसना बिहूना‡ राग गावे, बिना चसमौं दरस वे ॥६॥
प्याला अमी रस पीजिये, खुलिहै बजर कपाट वे ।
अरस कुरस अबंध अवगत, कोल्हू चवै बिन लाट§ वे ॥७॥
निरभै निरन्तर नेम रख, अकला‖ अनाहद रात वे ।
मुकता मुलायम याद साहब, दूर कर दिल घात वे ॥८॥
जोगी बिजोगी बिंद रख¶, सुन्न में समाना सिंध वे ।
हाजिर गुलाम गरीब है, सोलह कला रवि चंद वे ॥९॥

( ३ )

बंदे देख ले दरहाल वे ।
सुन्न मंडल सैल करले, अजब गैबी ख्याल वे ॥ १ ॥

*दरबार (शरअ?)। †दर्बारी, प्रेमीजन। ‡बिना। §बिना जाठ के कोल्हू टपकता है। ‖अँधेरी। ¶जो बीर्य्य को पात न होने दे।

जबरूत[+] पर नासूत[*] है, नासूत पर मलकूत[*] वे ।
मलकूत पर लाहूत[*] है, लाहूत पर अनभूत[*] वे ॥ २ ॥
सुन ले सोहंसो जाप कूँ, सुन[^] में सिलहरा बाँध वे ।
सेस के सिर ध्यान धरिये, उलट स्वर कूँ साध वे ॥३॥
तीन मूरत निरख निःचल, पैठ देख पताल वे ।
मूल चक्र गनेस गैबी, रंग रूप बिसाल वे ॥ ४ ॥
दंड-धारी भुजा भारी, मुकट की छबि खूब वे ।
अगमी अनाहद अदल है, फजली फजल महबूब वे ॥५॥
टुक उलट चसमैं सिंध में, झलकै जलाबिंब[+] जोर वें ।
अजब रास बिलास बानी, चंद सूर करोर वे ॥६॥
हलका न भारी है मुरारी, अजब नूरी नैन वे ।
दिल मगज अंदर महल है, तूँ समझ ले यह सैन वे ॥७॥
इक गुमठ[‡] अटल अनाद है, ढुरते सुहंगम चौंर वे ।
सेत छत्तर सीस सोहै, अजब उज्जल भौंर वे ॥८॥
अजब नूर जहूर जोती, झिलमिले झलकंत वे ।
हाजिर गुलाम गरीब है, जहँ देख आदि न अंत वे ॥९॥

( ४ )

बंदे देखले दुरबीन वे ।
अनेक उघार बिकार खोलो, चलै जल बिन मीन वे ॥१॥
बिना जल जहँ मीन चलना, नाम नौका अधर वे ।
बेड़े बिमान [illegible] देखो, को लखै यह कदर वे ॥२॥

[illegible] [+] जल मैं परछाईं । [‡] गुम्बज़ ।

पानी बिना सरवर सरू*, जहँ फूल है गुलजार वे।
अधर बाग अनंत फल, कायम कला करतार वे ॥३॥
कर निगाह अगाह आसन, बरसता बिन बद्दर† वे।
बिन पखावज ताल सुर, बाजे बजैं जहँ मधुर वे ॥४॥
बानी बिनोद असोधपुर, चंदा नहीं जहाँ सूर वे।
पानी पवन नहिं भवन भारी, कला संख सपूर वे ॥५॥
कायम कुफल कुंजी लगी, खोले सोई सत पीर वे।
कहता गरीब तबीब, तन चंगा करत कबीर वे ॥६॥

( ५ )

बंदे देखले निज मूल वे।
कला कोटि असंख धारा, अधर निरगुन फूल वे ॥१॥
है अबंध असंध अवगत, अधर आदि अनाद वे।
कमल मोती जगमगै, जहँ सुरत निरत समाध वे ॥२॥
भवन भारी रवन सोभा, भजो राम रहीम वे।
साहब धनी कूँ याद कर, जप अलह अलख करीम वे ॥३॥
मादर पिदर है संग तेरे, बिछुरता नहिं पलक वे।
कायम कला कुरबान जाँ, खालिक बसे है खलक वे ॥४॥
खालिक धनी है खलक में, तूँ झलक पलक समोय वे।
अरस आसन है बिहंगम, अधर चसमे जोय वे ॥५॥
बैराट में इक घाट है, उस घाट में इक द्वार वे।
उस द्वार में इक देहरा, जहँ खूब है इक यार वे ॥६॥
सूभ‡ है दिलदार साहब, देखना नहिं भूल वे।
गरीबदास निवास नग§ पर, भई सेजाँ सूल वे ॥७॥

---

*सर्व का पेड़। †बादल। ‡प्रकाशमान। §ऊँचा स्थान।

( ६ )

बंदे अधर बेड़ा चलत वे ।
साँच मान सुगंद* साहब, नहीं करिया लगत वे॥१॥
अधर पुहमी अधर गिरवर, अधर सरवर ताल वे।
अधर नदियाँ बहत हैं जहँ, अधर हीरे लाल वे॥२॥
अधर नौका अधर खेवट, अधर पानी पवन वे ।
अधर चंदा अधर सूरज, अधर चौदह भुवन वे॥३॥
अधर बागं अधर बेलं, अधर कूप तलाव वे ।
अधर माली कुहकता है, अधर फूल खिलाव वे ॥४॥
अधर बँगला अधर डेवढ़ी, अधर साहब आप वे।
अधर पुर गढ़ हूंट नगरी, नाभि नासा माथ वे ॥५॥
हूंठ हाथ हजूर हासिल, अधर पर इक अधर वे ।
गरीबदासं अधर ध्यानी, ओढ़ि एकै चदर† वे ॥६॥

( ७ )

बंदे पाक नाम पिछान वे ।
पाक मेला पाक परबी, पाक है असनान वे ॥१॥
पाक सेवा पाक पूजा, पाक सालिग्राम वे ।
पाक चंदन पाक अरचन, पाक है वह धाम वे ॥२॥
पाक संखा पाक झालर‡, पाक है वो तूर§ वे ।
पाक बीना पाक घंटा, पाक यारा नूर वे ॥३॥
पाक सिज्जा‖ पाक आसन, पाक है वह तख्त वे ।
पाके पुजारी पूजता, जो पाक है सब रख्त¶ वे ॥४॥

*क़सम । †चोला, शरीर। ‡झाँझ । §तुरही । ‖पलंग । ¶सामान ।

पाक कुरसी पाक तुरसी[*], पाक माला फेर वे ।
पाक रागी पाक गावै, पाक नादं भेर[†] वे ॥५॥
पाक भौंरा पाक चौंरा, पाक पुसपं गंध वे ।
पाक मोती पाक हंसा, पाक सरवर सिंध वे ॥६॥
पाक लहरा पाक मिहरा, पाक सूरज चंद वे ।
पाक सस्तर पाक बस्तर पाक पुर आनंद वे ॥७॥
पाक बानी पाक प्रानी, पाक बोलनहार वे ।
गरीबदासं पाक होकर, पाक कर दीदार वे ॥८॥

---

## रमैनी

जब लग हंसा हमरी आना ।
तब लग लगै न तुमरा[‡] बाना ॥ १ ॥
दोही दे गुरु भरैं हँकारा[§] ।
तिन हंसों का चढ़ूँ पुकारा ॥ २ ॥
कोटि कटक करहूं पैमाला ।
जम किंकर का तोड़ूँ जाला ॥ ३ ॥
चौदह कोट बाँध जम लाऊँ ।
धरमराय कूँ त्रास दिखाऊँ ॥ ४ ॥
चौदह भुवन दुहाई गाजै ।
जिस कूँ सुन जम किंकर भाजै ॥ ५ ॥
भक्ति बीज जो होवै हंसा ।
कोटिन जीव उधारै बंसा ॥ ६ ॥

---

[*] तुलसी । [†] शहनाई । [‡] धर्मराय से कह रहे । हैं [§] गुरू की दोहाई देकर हाँक मारैं ।

॥ साखी ॥

उधरैं हंस पार हो जाहीं ।
भवसागर मैं बहुर न आहीं ॥ ७ ॥
सब्द हमारा मानि है, जाके हिरदय हेत ।
अमर लोक पहुंचावहूं, रूप धरत है सेत ॥८॥
कहैं कबीर सुनो धर्मराया ।
हम संखौं हंसा पद परसाया ॥ ९ ॥
जिन लीन्हा हमरा परवाना ।
सो हंसा हम किये अमाना* ॥ १० ॥
अमृत पान अमी रस चोखा ।
पीवो हंसा नाहीं धोखा ॥ ११ ॥
या रस की जो लगै खुमारी ।
गगन मँडल मैं सुन्न अधारी ॥ १२ ॥
झरै अमी रस अमृत धारा ।
जानैगा कोइ पीवनहारा ॥ १३ ॥
हंस परेवा† अमृत पीवै ।
संखौं कलप जुगै जुग जीवै ॥ १४ ॥
टूटे बंधन होत खुलासा ।
गरीबदास पद हंस निवासा ॥ १५ ॥

( २ )

सेत सिंघासन सेतहि अंगा ।
सेत छत्र जाको सेतहि रंगा ॥ १ ॥

*निश्चिन्त । †कबूतर ।

सेत खवास सेत ही चौंरा ।
सेतै पुहुप सेत ही भौंरा ॥ २ ॥
सेतै नाद सेत ही तूरा ।
सेत सिंघासन नाचै हूरा ॥ ३ ॥
सेतै नदी सेत ही बिरछा ।
सेतै चंदन मस्तक चरचा ॥ ४ ॥
सेत सरोवर सेतहि हंसा ।
सेतै जाका सब कुल बंसा ॥ ५ ॥
सेतै मंदिर चंदर जोती ।
सेतै मानिक मुक्ता मोती ॥ ६ ॥
सेतै मुकुट सेत ही थाना ।
सेत धुजा औ सेत निसाना ॥ ७ ॥
गरीबदास वह धाम हमारा ।
सुर नर मुनि जन करो बिचारा ॥ ८ ॥

( ३ )

बिनहीं पंथ पंथ है भाई ।
बिन चरनों चालै सो जाई ॥ १ ॥
बिनहीं देह धरै जह ध्याना ।
देह न गेह न पिंड न प्राना ॥ २ ॥
पिंड ब्रह्मंड वाक नहिं बानी ।
मन बुधि सेती अगम निसानी ॥ ३ ॥
अलिफ इलाम गाम नहिं गेहा ।
गगन मंडल में जुरा सनेहा ॥ ४ ॥

×अप्सरा । †लगाया । ‡घर । §अल्ला, में अलिफ और लाम दो हर्फ़ हैं—अलाम के अर्थ सर्वज्ञ के भी है ।

एता ईलम[1] जो दिखलावै ।
सो सतगुरु साँचा कहलावै ॥ ५ ॥
गरीबदास मन धरै न धीरं ।
अधर धार पंथ बाट कबीरं ॥ ६ ॥

( ४ )

रूप न रेख भेष नहिं बाना ।
आसन असल लना[2] अस्थाना ॥ १ ॥
अकल अभूनी[3] गम नहिं मोरी ।
हे सतगुरु कहँ पाऊँ डोरी ॥ २ ॥
ऊँचा धाम गाम नहिं कोई ।
बिना चरन जहँ चलना होई ॥ ३ ॥
अचरज लीला अगम अपारा ।
कैसे पाऊं पंथ तुम्हारा ॥ ४ ॥
सुरत निरत का सार सनेसा[4] ।
उतरै हंसा पार हमेसा ॥ ५ ॥
कहै कबीर पुरुष बरियामं[5] ।
गरीबदास इक नौका नामं ॥ ६ ॥

( ५ )

आदि सनातन पंथ हमारा ।
जानत नाहीं यह संसारा ॥ १ ॥
पंथों सेती पंथ अलहदा ।
भेखौं बीच पड़ा है बहदा[6] ॥२ ॥

[1]विद्या । [2]लामकान । [3]तुच्छ बुद्धि । [4]सँदेसा । [5]श्रेष्ठ । [6]बाद बिबाद ।

षट दरसन सब खटपट होई ।
हमरा पंथ न पावै कोई ॥ ३ ॥
हिन्दू तुरक कदर नहिं जाने ।
रोजा ग्यारस करै धिक ता ने* ॥ ४ ॥
दोनौं दीन यकीन न आसा ।
वे पूरब वे पछिम निवासा ॥ ५ ॥
दुहूं दीन का छोड़ा लेखा ।
उत्तर दक्खिन में हम देखा ॥ ६ ॥
गरीबदास हम निःचै जाना ।
चारो खूँट दसो दिस घ्याना ॥ ७ ॥

( ६ )

कैसे हिंदू तुरक कहाया । सबही एकै द्वारे आया ॥१॥
कैसे ब्राह्मन कैसे सूद्रं । एकै हाड़ चाम तन गूदं ॥२॥
एकै बिंद एक भग द्वारा । एकै सब घट बोलनहारा ॥३॥
कौम छतीस एकही जाती । ब्रह्मबीज सब की उतपाती ।४।
एकै कुल एकै परिवारा । ब्रह्मबीज का सकल पसारा ॥५॥
ऊँच नीच इस बिध है लोई । कर्म कुकर्म कहावै दोई ॥६॥
गरीबदासजिननामपिछाना।ऊँचनीचपदयेपरमाना† ।७।

*मुसलमान रोज़ा रखते हैं और हिन्दू एकादशी का व्रत सो दोनौं को धिक्कार है । †अर्थात सुकर्म और कुकर्म के अनुसार ।

## ॥ आरती ॥

अदली आरत अदल समोई ।

निरभय पद में मिलना होई ॥ टेक ॥

दिल का दीप पवन की बाती ।

चित का चंदन पाँचो पाती ॥ १ ॥

तत का तिलक ध्यान की धोती ।

मन की माला अजपा जोती ॥ २ ॥

नूर के दीप नूर के चौंरा ।

नूर के पुहुप नूर के भौंरा ॥ ३ ॥

नूर की झाँझ नूर की झालर* ।

नूर के सँख नूर की टालरा ॥ ४ ॥

नूर की साँझी नूर की सेवा ।

नूर के सेवक नूर के देवा ॥ ५ ॥

आदि पुरुष अदली अनुरागी ।

सुन संपुट में सेवा लागी ॥ ६ ॥

खोजो कमल सुरति की डोरी ।

अगर दीप में खेलो होरी ॥ ७ ॥

निरभय पद में निरत समानी ।

दासगरीब दरस दरबानी ॥ ८ ॥

( २ )

अदली आरत अदल उजारा ।

सत्त पुरुष दीजो दीदारा ॥ टेक ॥

* [illegible] फूल पत्ती की चित्रकारी जो ठाकुरजी [illegible]

कैसे कर छूटै चौरासी ।
जूनी संकट बहुत तिरासी ॥ १ ॥
जुगन जुगन हम कहते आये ।
भवसागर से जीव छुटाये ॥ २ ॥
कर बिस्वास स्वास कूँ पेखो ।
या तन मैं मन मूरत देखो ॥ ३ ॥
स्वासा पार सु भेद हमारा ।
जो खोजे सो उतरे पारा ॥ ४ ॥
स्वासा पार सु आदि निसानी ।
जो खोजै सो होय दरबानी ॥ ५ ॥
हर दम नाम सुहंगम सोई ।
आवा गमन बहुर ना होई ॥ ६ ॥
अब तो चढ़े नाम के छाजै* ।
गगन मँडल मैं नौबत बाजै ॥ ७ ॥
अगर अलेल सब्द सहदानी ।
दासगरीब बिहंगम बानी ॥ ८ ॥

( ३ )

अदली आरत अदल बखाना ।
कोली बुनै बिहंगम ताना ॥ टेक ॥
ज्ञान का राछ† ध्यान की तुरिया ।
नाम का धागा निःचै जुरिया ॥ १ ॥
प्रेम की पान‡ कमल की खाड़ी§ ।
सुरत का सूत बुनै निज गाढ़ी ॥ २ ॥

*छज्जा । †एक आला कपड़ा बुनने का जो कंघी की सूरत का होता है । ‡माड़ी । §गड्ढा जिस में पैर लटका कर बैठते हैं ।

नूर की नाल* फिरै दिन राती ।
जा कोली कूँ काल न खाती ॥ ३ ॥
कल का खूँटा धरनी† गाड़ा ।
गहिर गभ्भीना‡ ताना गाड़ा ॥ ४ ॥
निरत की नली बुनै जो कोई ।
सो तो कोली अविचल होई ॥ ५ ॥
रेजा§ राजिक का बुन दीजै ।
ऐसे सतगुरु साहब रीझै ॥ ६ ॥
दासगरीब सोई सत कोली ।
ताना बुनिहै अरस अमोली ॥ ७ ॥

( ४ )

अदली आरत अदल अजूनी ।
नाम बिना है काया सूनी ॥ टेक ॥
झूठी काया खाल लुहारा ।
इला पिंगला सुखमन द्वारा ॥ १ ॥
किरतघनी‖ भूले नर लोई ।
जा घट निःचा नाम न होई ॥ २ ॥
सो नर कीट पतंग भुवंगा¶ ।
चौरासी में धरिहैं अंगा ॥ ३ ॥

*ढरकी । †ज़मीन । ‡गम्भिन । §कपड़ा । ‖नाशुकरा । ¶साँप ।

उद्भिज* खानी भुगतै प्रानी ।
समझै नहीं सब्द सहदानी ॥ ४ ॥
हम हैं सब्द सब्द हम माहीं ।
हम से भिन्न और कछु नाहीं ॥ ५ ॥
पाप पुन्न दो बीज बनाया ।
सब्द भेद कोउ बिरले पाया ॥ ६ ॥
सब्दै सर्व लोक मैं गाजै ।
सब्द वजीर सब्द है राजै ॥ ७ ॥
सब्दै स्थावर जंगम जोगी ।
दास गरीब सब्द रस भोगी ॥ ८ ॥

( ५ )

अदली आरत अदल जमाना ।
जम जोरा मेटौं तलबाना ॥ टेक ॥
धरम राय पर हमरी धाई† ।
नौबत नाम चढ़े ले भाई ॥ १ ॥
चित्रगुप्त‡ के कागज चीरौं ।
जुगन जुगन मेटौं तसकीरौं ॥ २ ॥
अदली ज्ञान अदल इक रासा§ ।
सुन कर हंसन‖ पावैं त्रासा ॥ ३ ॥
इजराईल¶ जुसा बरदाना ।
धरमराय का है तलबाना ॥ ४ ॥

*बनस्पति । †धावा । ‡जमपुरी में कर्मों का लेखा रखने वाला देवता । §एक रस । ‖जीव । ¶जान निकालने वाले फ़िरिश्ते का नाम ।

मेटौं तलब करौं तागीरा* ।
भेंटे दासगरीब कबीरा ॥ ५ ॥

( ६

अदली आरत अदल पठाऊँ ।
जुगन जुगन का लेखा पाऊँ ॥टेक॥

जा दिन नहिँ थे पिंड न प्राना ।
पानी पवन जिमीं असमाना ॥ १ ॥

कच्छ मच्छ कूरम नहिँ काया ।
चंद सूर नहिँ दीप बनाया ॥ २ ॥

सेस महेस गनेस न ब्रह्मा ।
नारद सारद ना बिसकर्मा ॥ ३ ॥

सिध चौरासी ना तैंतीसौ ।
नौ औतार नहीं चौबीसौ ॥ ४ ॥

पाँच तत्त नाहीं गुन तीना ।
नाद बिंद नाहीं घट सीना ॥ ५ ॥

चित्रगुप्त† नहिँ किर्तम बाजी ।
धरमराय नहिँ पंडित काजी ॥ ६ ॥

धुंधूकार अनंत जुग बीते ।
जा दिन कागद कोउ के चीते‡ ॥ ७ ॥

जा दिन थे हम तखत खवासा ।
तन के पाजी सेवक दासा ॥ ८ ॥

* तंगी । †कर्मों का लेखा रखने वाले देवता । ‡तब तक कर्मों का हिसाब किसी का नहीं खुला था ।

संख जुगन परलूं परवाना ।
सत्तपुरुष के संग रहाना ॥ ९ ॥
दास गरीब कबीर का चेरा ।
सत्त लोक अमरापुर डेरा ॥ १० ॥

( ७ )

ऐसी आरत अपरम्पारा ।
थाके ब्रह्मा बेद उचारा ॥ टेक ॥
अनंत कोट जाके संभू ध्यानी ।
ब्रह्मा संख बेद पढ़ैं बानी ॥ १ ॥
इंद्र अनंत मेघ रस माला ।
सब्द अतीत बृद्ध नहिं बाला ॥ २ ॥
चंद सूर जाके अनंत चिरागा ।
सब्द अतीत अजब रँग बागा ॥ ३ ॥
सात समुद्र जाके अंजन नैना ।
सब्द अतीत अजब रँग बैना ॥ ४ ॥
अनंत कोट जाके बाजे बाजैं ।
पूरन ब्रह्म अमरपुर छाजैं ॥ ५ ॥
तीस कोट रामा औतारी ।
सीता संग रहंती नारी ॥ ६ ॥
तीन पदम जाके भगवाना ।
सप्त नील* कन्हवा† सँग जाना ॥ ७ ॥
तीस कोट सीता सँग चेरी ।
सप्त नील राधा दैं फेरी ॥ ८ ॥

*नील=एक सौ खरब । †कन्हैया या कृष्ण ।

(जाके) अर्ध रूप पै सकल पसारा ।
ऐसा पूरन ब्रह्म हमारा ॥ ९ ॥
दास गरीब कहै नर लोई ।
यह पद चीन्है बिरला कोई ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

सतबादी सब संत हैं, आप आपने धाम ।
आजिज* की अरदास† है, सकल संत परनाम ॥

---

## राग कल्यान

सेस सहस मुख गावे, साधो सेस सहस मुख गावे॥टेक॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसर थाके, नारद नाद बजावे ।
सनक सनंदन ध्यान धरत हैं, दृष्ट मुष्ट नहिं आवे १
लघु दीरघ कछु कहा न जाई, जो पावे सो पावे ।
जी‡ जूनी कूँ कैसे दरसै, गौरज सीस चढ़ावे ॥ २ ॥
ब्रह्म-रंध्र का घाट जहाँ है, उलट खेचरी§ लावे ।
सहस कमल दल झिलमिल रंगा, चोखा फूल चुवावे॥३
गंगा जमना मद्ध सरसुती, चरन कमल से आवे ।
परबी कोटि परम पद माहीं, सुख के सागर न्हावे॥४
सुरत निरत मन पौन पदारथ, चारो तत्त मिलावे ।
आकासै उड़ चले बिहंगम, गगन मँडल कूँ धावे ॥५॥
मोर मुकुट पीतांबर राजै, कोटि कला छबि छावे ।
अबरन बरन तासु के नाहीं, बिचरत हैं निरदावे ६॥

* आधीन । †अर्ज़दाश्त, प्रार्थना । ‡जीव । §नाम एक मुद्रा का ।

बिनही चरनौं चले चिदानंद, बिन मुख बैन सुनावै।
गरीबदास यह अकथ कहानी, ज्यूँ गूँगा गुड़ खावै॥७॥

( २ )

कबहुं न होवे मैला नाम धन, कबहुं न होवे मैला।
चेतन होकर जड़ कूँ पूजै, मूरख मूढ़र बैला ॥ १ ॥
जिस दगड़े पंडित उठ चाले, पीछे पड़ गया गैला*।
औघट घाटी पंथ बिकट है, जहाँ हमारी सैला॥ २॥
बिनय बंदगी म्हेसा† कीजै, बोक‡ बनै के खैला§।
कूकर सूकर खर कीजैगा, छाँड़ सकल बद फैला‖॥३॥
घरही कोस पचास परत हैं, ज्यूँ तेली के बैला।
पोसत भाँग तमाखू पीवै, मूरख मुख सूँ मैला ॥ ४ ॥
सहस इकीसौ छःसै दम है, निस बासर तूं लैला¶।
गरीब दास सुन पार उतर गये अनहद नाद घुरैला** ५

( ३ )

घट ही में चंद चकोरा, साधो घट ही चंद चकोरा ॥टेक॥
दामिन दमकै घनहर†† गरजै, बोलै दादुर मोरा।
सतगुरु गस्ती गस्त फिरावै, फिरता ज्ञान ढंढोरा ॥१॥
अदली राज अदल बादसाही, पाँच पचीसो चोरा।
चीन्हो सब्द सिंध घर कीजै, होना गारतगोरा ॥२॥
त्रिकुटी महल मैं आसन मारो, जहँ न चले जम जोरा।
दास गरीब भक्ति को कीजो, हुआ जात है भोरा‡‡ ॥ ३

*जिस रास्ते पर पंडित चलते हैं उसी पर सब चलने लगते हैं।
†हमेशा। ‡भारी बकरा। §साँड़। ‖कुकर्म्म। ¶लेता है। **जिसकी अंतर मैं धुन हो रही है। ††बादल। ‡‡सबेरा।

( ४ )

घट से दरस जहूरा, साधो घट से दरस जहूरा॥टेक॥
कायर कीर उलट कर भागे, पहुंचैगा कोइ सूरा ।
गगन मँडल में अनहद बाजे, झनकैं झीने तूरा* ॥१॥
त्रिकुटी महल में ध्यान समोवो, झिलमिल झिल-
मिल नूरा ।
अगर दीप में आसन मारो, मिट गई जम की घूरा† २
संख पदम जहँ परघट देखे, मुरसिद मिलिया पूरा ।
दास गरीब अटल जागीरा, काढ़ै कौन कसूरा ॥ ३ ॥

( ५ )

जो सूते सो जना बिगूते, जागे सोई जगे हैं ॥टेक॥
सूरे तेई नगर पहूंचे, कायर उलट भगे हैं ।
नौवैं द्वारे दरस दरीबा§, दसमें ध्यान लगे हैं ॥ १ ॥
सुन्न सहर में हुई सगाई, हमरे हंस मँगे हैं ।
निरगुन नाम निरालँब चीन्हो, हमरे साध सगे हैं॥२
बिन मुख बानी सतगुरु गावै, नाहीं दस्त‖ पगे¶ हैं।
दास गरीब अमर पुर डेरे, सत्त के दाग दगे हैं ॥ ३ ॥

( ६ )

नाम निरंजन नीका, साधो नाम निरंजन नीका॥टेक॥
तीरथ बरत थोथरे** लागैं, जप तप संजम फीका॥१॥
भजन बंदगी पार उतारै, समरथ जीवन जी का॥२॥
करम कांड ब्योहार करत है, नाम अभय पद टीका ३

*तुरही । †टेढ़ी निगाह । †बिगड़े । §हाट । ‖हाथ । ¶पाँव । **थोथे ।

कहा भयो छत्र की छाँह चलैया, राज पाट दिहली का ४
नाम सहित बेवतन भला है, दर दर माँगै भीखा ५
आदि अनादि भक्ति है नौधा*, सुनो हमारी सीखा ६
गरीबदास सतगुरु की सरनै, गगन मँडल मैं दीखा ॥ ७

## राग बिजोग

सुनियो संत सुजान, दिया मैं हेला रे ॥ टेक ॥
और जनम बहुतेरे हौंगे, मानुष जनम दुहेला† रे ॥ १ ॥
तू जकिहै‡ मैं लसकर जोरौं, चलना तुझे अकेला रे २
अरब खरब लग माया जोरी, संग न चलसी धेला रे ।
या तो मेरी सत की निर्बरिया, सतगुरु पार पहेला रे ४
दास गरीब कहै रे संतो, सब्द गुरू चित चेला रे ॥ ५

( २ )

सुनिये संत सुजान, गरब नहिं करना रे ॥ टेक ।
चार दिनाँ की चिहर§ बनी है, आखिर तोकूँ मरना रे १
तूँ जाने मेरि ऐसी निभेगी, हर दम लेखा भरना रे २
खाय ले पी ले बिलस ले हंसा, जोड़ जोड़ नहिं धरना रे ३
दास गरीब सकल में साहब, नहीं किसी सूँ अड़ना रे ४

## राग परज

राम न जाना रे, मूढ़ नर राम न जाना रे ॥ टेक ॥
जल की बुंद महल रचा, यह सकल जहाना रे ।
जठर अगिन सूँ राखिया, तेरा पिंड अरु प्राना रे ॥ १

*नौ प्रकार की । †कठिन । ‡बिचारता है । §ज़िन्दगी ।

जहँ तो कूँ भोजन दिया, अमृत रस खाना रे।
गरभ बास तैं काढ़ि कै, नर बाहर आना रे॥ २॥
लीला अगम अगाध है, सूरत बिध नाना रे।
मात पिता सुत बंधवा, क्या देख भुलाना रे॥३॥
इनमैं तेरा को नहीं, क्यौं भया दिवाना रे।
जा तन चंदन लेपते, ले धरे मसाना रे॥४॥
सूवे सैंभल सेइया, तर देख लुभाना रे।
चंच* मार व्याकुल भया, बहुतै पछताना रे॥ ५॥
मानसरोवर कमल दल, घर दूर पयाना रे।
गये रसातल राह को, पढ़ पोथी पाना† रे॥६॥
सतगुरु संत सेये नहीं, पूजे पाषाना रे।
मरकब भये कुम्हार के‡, फिर सूकर स्वाना रे॥७॥
पंथ पुरातन§ बूझि है, कोई संत सुजाना रे।
स्वासा पारस नाम है, नाभी अस्थाना रे॥८॥
हिरदय मैं हरि पाइये, त्रिकुटी परवाना रे।
गगन मंडल में गुमट‖ है, जहँ धजा निसाना रे॥९॥
हाजिर नाजिर है धनी, साहब दिल दाना रे।
पलकौं चौंरा¶ कीजिये, तापर कुरबाना रे॥१०॥
मन पवन सुरत से अगम है, कह निरत बयाना रे।
जैसे उलट अकास कूँ धरिहै धुन ध्याना रे॥११॥
आसन बंध अडोल मन, जो पदहि समाना रे।
गरीबदास यूँ पाइये, पिव पुरुष पुराना रे॥१२॥

---

*चोंच। †पन्ना। ‡कुम्हार के चढ़ने का जानवर यानी गधा। §प्राचीन। ‖गुंबज। ¶चँवर।

(२)

लेखा लीजै रे, धनी के लेखा लीजै रे ॥टेक॥
हाट पटन सब लुट गये, कहु अब क्या कीजै रे।
पूँजी माल गँवाइया, फिर कौन पतीजै रे ॥१॥
मैं गाफिल भूला फिरूँ, गढ़ हंस चढ़ीजै रे।
चाकर चोर अनादि का, सिर बोझा दीजै रे॥ २॥
सीस काट हाजिर करै, जब सतगुरु रीझै रे।
अमी महारस नाम है, अमृत पय पीजै रे ॥३॥
गगन मँडल भाठी झरै, कमला दल भींजै रे।
सब्द अनाहद घोर है, चल हंस सुनीजै रे ॥४॥
पूँजी साहूकार की, यह हर दम छीजै रे।
गरीबदास दूने करै, सो साह कहीजै रे ॥५॥

(३)

लेखा देना रे, धनी का लेखा देना रे ॥टेक॥
रागी राग उचारहीं, गावत मुख बैना रे।
हस्ती घोड़े पालकी, छाँड़ी सब सैना रे ॥१॥
रोकड़ धरी ढकी रही, सब जेवर गहना रे।
फूँक दिया मैदान में, कुछ लेन न देना रे ॥२॥
मुगदर मारै सीस मैं जम किंकर दहना रे।
उतर चला तागीर† हो, ज्यूँ मरदक सहना‡ रे ॥३॥
फूला सो कुम्हलात है, चुनिया सो ढहना§ रे ।
चित्रगुप्त लेखा लिया, जब कागद पहना‖ रे ॥४॥

*ईश्वर के यहाँ हिसाब लिया जायगा। †तंग। ‡मसल मशहूर है "उतरा शहना मर्दक नाम"। §जो घर चुना या बनाया जाता है वह कोई दिन गिर जायगा। ‖लंबा चौड़ा।

चलिये अब दीवान मैं, सतगुरु से कहना रे।
मुसकिल से आसान हो, ज्यूँ बहुर मरै ना रे ॥५॥
बोया अपना सब लुनै*, पकरैं हम अहना† रे।
चरन कमल के ध्यान से, छूटै सब फैना‡ रे ॥६॥
परानन्दनी§ संग है, जाके कमधैना|| रे।
गरीबदास फिर आवही, जो अजर जरै ना रे ॥७॥

( ४ )

भजन कर राम दुहाई रे ॥ टेक ॥
जनम अमोला तुझ दिया, नर देही पाई रे।
देही कूँ या ललचहीं, सुर नर मुनि भाई रे ॥ १ ॥
सनकादिक नारद रटैं, चहुं बेदा गाई रे।
भक्ति करै भवजल तरै, सतगुरु सरनाई रे ॥ २ ॥
मिरगा¶ कठिन कठोर है, कहो कहाँ डहकाई** रे।
कस्तूरी है नाभ मैं, बाहर भरमाई रे ॥ ३ ॥
राजा बूड़े मान मैं, पंडित चतुराई रे।
ज्ञान गली मैं वंक†† है, तन धूर मिलाई रे ॥ ४ ॥
उस साहब कूँ याद कर, जिन सौंज‡‡ बनाई रे।
देखत ही हो जात है, परबत से राई रे ॥ ५ ॥
कंचन काया छार§§ होय, तन ठौंक जराई रे।
मूरख भौंदू बावरे, क्या मुकत कराई रे ॥ ६ ॥

* काटै। † लोहा। ‡ फन्दा। § परम आनंद या रस की खान। || कामधेनु। मन। ** धोका खाया। †† टेढ़ाई, पेच। ‡‡ साज। §§ राख।

चमरा* जुलहा† तर गये, और छीपा‡ नाई§ रे।
गनिका चढ़ी बिमान में||, सुर्गापुर जाई रे॥ ७॥
स्योरी भिलनी तर गई, और सदन कसाई रे।
नीच तरे तो सूँ कहूं, नर मूढ़ अन्याई रे॥ ८॥
सब्द हमारा साँच है, और ऊँट की बाई रे¶।
धूएँ के से धौलहर, तिहुं** लोक चलाई रे॥ ९॥
कलविष कसमल सब कटै, तन कंचन काई रे।
गरीबदास निज नाम है, नित परबी न्हाई रे॥१०॥

## राग मंगल

लगन लगी सतलोक, अमरपुर चालिये।
सुन्न मँडल सतलोक, दीप घर बालिये॥टेक॥
जोगिया नाद बजाय, रहा है ओलने†† ।
सत्तलोक के अंक, लिखे हैं चोलने॥ १॥
हम बिभिचारन, चोरि जारि बहुतै किये।
मेहरबान महबूब, तुम्हीं अनगिन दिये‡‡ ॥२॥
होते कीट पतंग, संग किस बिध लिये।
कंपै जोरा काल, सही जुग जुग जिये॥ ३॥
अकल उदासी राग, अमर§§ में बोलता।
सुरत निरत भइ नेस||||; पवन नहिं डोलता॥४॥

*रैदास जी। †कबीर साहब। ‡नामदेव। §सेना भक्त। ||नोट पृष्ठ २४ देखो। ¶सब्द के सिवाय सब पसारा ऊँट की बाव अर्थात मिथ्या है। **तीनों। ††परदे में। ‡‡तुम्हारी अपार छिमा और दया हुई। §§सत्तलोक। ||||नेष्ठा।

मन राते सतलोक, सिंध मैं गैब है ।
उलट मिले अनुराग, तहाँ नहिं ऐब है ॥ ५ ॥
निरगुन झड़* का भेद, अंदर कोइ जानसी ।
दास गरीब समाध, अमरपुर ठानसी ॥ ६ ॥

( २ )

दीन के दयाल, भक्ति बिर्द दीजिये ।
खानाजाद गुलाम, अपन कर लीजिये ॥ टेक ॥
खानाजाद गुलाम, तुम्हारा है सही ।
मेहरबान महबूब, जुगन जुग पत [illegible]† ॥ १ ॥
बाँदी का जाम‡ गुलाम, गुलाम गुलाम है ।
खड़ा रहै दरबार, सु आठो जाम है ॥ २ ॥
सेवक तलबदार, दर तुम्हरे कूकहीं ।
औगुन अनंत अपार, परी मोहिं चूक हीं ॥ ३ ॥
मैं घर का बन्दाजादा, अरज मेरि मानिये ।
कहता दास गरीब, अपन कर जानिये ॥ ४ ॥

( ३ )

धन सतगुरु बरियाम§, अटल बर हम बरो ।
दुलहिन के बड़ भाग, सुहागिन धन घरी ॥ टेक ॥
चलो सखी सतलोक, सेहरा गाइये ।
मोतियन थाल भराय, सु चौक पुराइये ॥ १ ॥
हलदवान‖ हित कीन, बीन जहँ बाजहीं ।
धन सतगुरु उपदेस, दिहाड़ा¶ आजहीं ॥२॥

*झाड़, फुलवारी । †साख । ‡ जन्मा हुआ । § वरीयान-श्रेष्ठ । ‖हल्दीहाथ की रसम । ¶दिन ।

दुलहिन धोये देह, सु मंगल गावहीं ।
सत्त पुरुष के धाम, सु चौंर ढुरावहीं ॥ ३ ॥
ढुरे सुहंगम चौंर, सु चौंरी* गाइये ।
ब्रह्मा कथने बेद, लाड़ी परनाइये† ॥ ४ ॥
संकर साहा सोध‡, समागम कीजिये ।
बिसुन बिसंभर रोप, अटल वर दीजिये ॥ ५ ॥
नारद पूरे नाद, सकल सुर आवहीं ।
सुन्न मँडल सतलोक अगम घर छावहीं ॥ ६ ॥
जहँ सेत धजा फहराहिं, अरस§ तंबू तना ।
अनहद नाद अगाध, लाये नूरी बना ॥ ७ ॥
नाद तूर डफ झाँझ, संख मुरली बजे ।
मिरदंग झालर भेरि, अजब तुरही सजे ॥ ८ ॥
रंग महल में रास, बिलास अपार है ।
चलो सखी उस धाम, सु कंत हमार है ॥ ९ ॥
दस परकार अपार, अजब धुन ध्यान है ।
दूलह‖ बर वरियाम, पिया निःकाम है ॥ १० ॥
विषम दुहेली¶ बाट, पंथ नहिं पाइये ।
सुन्न मँडल सतलोक कौन बिध जाइये ॥ ११ ॥
सुन्न मँडल सतलोक, दुलहिनी दूर है ।
सब्द अतीत** पिछान, नूर भरपूर है ॥ १२ ॥

---

*मंडप की गीत । †दुलहिन को व्याहिये । ‡लगन सोधना ।
§अर्श=सहसदल कमल । ‖दुलहा । ¶कठिन । **निर्मोया ।

नूर रहा भरपूर, दिवाना देस है।
दुलहिन दासगरीब, तखत जिस पेस है ॥ १३ ॥

( ४ )

अवगत अपरंपार, पार नहिँ पावै हो।
नाद बिंद का जीव, भरम डहकावै हो ॥ टेक ॥
मन मनसा नहिँ ठौर, ध्यान कहा धरिये हो।
का सूँ करूँ फरियाद, कहो क्या करिये हो ॥ १ ॥
तज दुरमत का संग, रंग नहिँ लागै हो।
कोट जनम का स्वान*, हाड़ नहिँ छाँड़ै हो ॥२॥
बिषै हलाहल खाय, जगत सब धूता† हो।
ज्यूँ हिरना के संग, सिकारी कूता‡ हो ॥ ३ ॥
कौवा तजै न बीठ§, हंस कस होई हो।
अंध गुरू का चेल, खेल सब खोई हो ॥ ४ ॥
बैठा मंझ मँजार||, मूसटे¶ खाई हो।
बाहर किसा** अचार††, बूड़ी पँडिताई हो ॥ ५ ॥
बक मीनी‡‡ का ध्यान, नहीं नर धरिये हो।
भौसागर में आन, बहुर क्यूँ परिये हो ॥ ६ ॥
पारस पद कूँ परस, सुरत ठहरावो हो।
निरत निरंतर लाय, अगमपुर जावो हो ॥ ७ ॥
जहँ झिलमिल झिलमिल होय, अजब खिलखाना§§ हो।
कहता दास गरीब, सुदेस दिवाना हो ॥ ८ ॥

---

*कुत्ता। †धूर्त्त, कपटी। ‡कुत्ता। §बिष्टा। ||बिल्ली। ¶चूहे। **कैसा। ††आचार, नेम धरम। ‡‡बकुला और मछली। §§ ख़िलवत ख़ाना=एकान्त में मिलने का स्थान।

( ५ )

रतनागर* सुख सागर, हंसा चाल रे ।
जहँ पारस पदम अनंत, अमोते माल रे ॥ १ ॥
रतन सिंध बैराग रे, मुक्ते माल हैं ।
हीरे मोती मुकते, लालों पाल† हैं ॥ २ ॥
कामधेनु कलबृच्छ‡, चिंतामनि चीन्ह रे ।
लोचन खुलहिं अनंत, अरस दुरबीन रे ॥ ३ ॥
खुलिहैं अंध कपाट, लगै जो चाचरी§ ।
सिम्भुद्वार‖ दुरबीन, तहाँ पद बाँच री ॥ ४ ॥
बंका हीरा देखि, सुरत हैरान है ।
सेत धजा फहराहिं, अमरपुर थान है ॥ ५ ॥
मान सरोवर परखो, हर दम लीजिये ।
झिरै गऊमुख गंग, तहाँ सिर दीजिये ॥ ६ ॥
पलकों चौंर ढुराहिं, नयन पट बीच है ।
गरीबदास गुलजारा, परमल¶ सींच है ॥ ७ ॥

---

## ॥ राग बँगला ॥

बँगला खूब बना है जोर, जामें सूरज चंद कड़ोर ॥ टेक ॥
या बंगले के द्वादस दर हैं, मध्य पवन परवाना ।
नाम भजै तो जुग जुग तेरा, नातर होत बिराना ॥ १
पाँच तत्त औ तीन गुनन का, बँगला अधिक बनाया ॥
या बँगले में साहब बैठा, सतगुरु भेद लखाया ॥२।

*सुन्न सरोवर । †बहुत । ‡कल्प बृक्ष । §नाम एक मुद्रा का ‖शिव-नेत्र या तीसरा तिल । ¶निर्मल, सुगंधित ।

रोम रोम तारागन दमकै, कली कली दर चंदा ।
सूरज मुखी सवत्तर* साजै, बाँधा परमानन्दा ॥३
बंगले में बैकुंठ बनाया, सप्त पुरी लैलाना ।
भुवन चतुरदस लोक बिराजैं, कारीगर कुरबाना ॥४
या बंगले में जाप होत है, ररंकार धुन सेसा ।
सुर नर मुनि जन माला फेरैं, ब्रह्मा बिस्नु महेसा ॥५
गन गंधर्व गलतान ध्यान में, तेंतिस कोटि बिराजैं ।
सुर निःतन्ती बीना सुनिये, अनहद नाद बाजैं ॥६॥
इला पिंगला पँग परी हैं, सुखमन झूलझुलन्ती ।
सुरत सनेही सब्द सुनत है, राग होत निःतन्ती ॥७॥
पाँच पचीसों मगन भये हैं, देखा परमानंदा ।
मन चंचल निःचल भया हंसा, मिले परम सुख सिंधा ८
नभ की डोर गगन सूँ बाँधे, तो इहाँ रहने पावे ।
दसो दिसा से पवन झकोरे, काहे दोस लगावै ॥ ९ ॥
आठो वखत अलहैया† बाजै, होता सब्द टंकोरा ।
गरीबदास यूँ ध्यान लगावै, जैसे चंद चकोरा ॥ १०॥

( २ )

बंगला सोई सत्त परवान, तामें पारब्रह्म का ध्यान ॥टेक॥
साढ़े तीन करोड़ बृच्छ‡ हैं, या बंगले के पासा ।
सालेमार सरीर सरोवर, नौ लख बाग खुलासा ॥१॥
या बंगले के आगे कूआ, उरध-मुखी महमंता ।
मनुवा माली वारे ढारे, आठो वखत चलंता ॥ २ ।

*सब जगह । †एक रागिनी का नाम । यहाँ अनहद धुन से मतलब है । ‡रोम (रोआँ) की गिनती शास्त्रों में साढ़े तीन करोड़ लिखी है ।

इला पिंगला मद्ध सुखमना, ता पर एक सुराही ।
अमी महारस छाक परी है, पीवत होय दुराई ॥ ३ ॥
रोसन तकिये रास होत हैं, बाजे बजैं अपारा ।
पाँचों इन्द्री अस्थिर होईं, झूमे मन मतवारा ॥ ४ ॥
सखीं करत दरसन भी माहीं, सैन अन्दर झनकारे[§] ।
कोयल मोर पपीहा बोलैं, दादुर अधिक गुंजारें ॥ ५ ॥
बीना ताल पर पखावज बाजै, गावै गंधर्व रागी ।
सिव को तहाँ समाध लगी है, चीन्ह पड़ी बड़ भागी ॥ ६ ॥
नामा[*] प्रहलाद और नाम कबीरा, नारद सुकदे व्यासा ।
पारस हुस्न भये गलतामा, देखा अजब तमासा ॥ ७ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसर सेसा, ररंकार धुन होई ।
गुप्त[†] बीरज[‡] यह मंत्र जो दीन्हा, राख सब्द कूँ गोई ॥ ८ ॥
मान सरोवर ऊपर बँगला, जहँ हंस परमहंस खेले ।
गरीबदास भवसागर खेली, पूरा सतगुरु चेलै ॥ ९ ॥

( ३ )

बँगला सोई सत्त निज सार, जा मैं पारब्रह्म दीदार ॥ टेक ॥
दिल अंदर दीदार होत है, बाहर भीतर सोई ।
तिरबेनी असनान कीजिये, मल मुत्तर सब धोई ॥ १ ॥
बँगले आगे संख फुहारा, छूटैं सहसर[‖] धारा ।
दिव्य दृष्ट तो देखत है सो, हर दम बारंबारा ॥ २ ॥
गंगा जमुना मद्ध सुरसती, पहन घाट फुहारा ।
कालिन्द्री काया परछाली[¶], धन बड़ भाग हमारा ॥ ३ ॥

---

[*]नामदेव । [†]गुप्त । [‡]बीज मंत्र ओंकार सब्द का नाम है । [§]उबारै ।
[‖]हज़ार । [¶]धोई ।

इंदरदौन महोदध बाजै, रतनागर† लहराई ।
जगन्नाथ जगदीस बिराजै, देखो क्यूँ ना भाई ॥ ४ ॥
हरद्वार हरि पैड़ी न्हाये, बद्रीनाथ बिलासा ।
द्वारावती‡ दरस नित होई, कर बृन्दाबन बासा ॥५॥
लोहागिर पुष्कर पद परसे, गया पिंड परधाना ।
अठसठ तीरथ हैं तन माहीं, मोच्छ मुक्त भये प्राना ॥६॥
कासी औ कांती काया में, मोच्छ दायका माया ।
अकल अजोध्या आदि अनादं, सप्त पुरी दरसाया ७
अवन्तिकापुरी अरथ के माहीं, सुरत निरत से जानी ।
गरीबदास साहब का बँगला, अजर अमर परवानी ८॥

( ४ )

बँगला खूब बना प्राचीन, जा में अरस§ कला दुरबीन टेक
बँगले आगे ड्योढ़ी लागी, पलकौं दी चिक बंधा ।
छानबे कोटी मेघ-माल‖ है, सब्द सिंध गरजंदा ॥ १ ॥
बँगले आगे नग सरवर¶ है, तैंतिस कोट तपंता** ।
सहस अठासी मुनिन्दर बैठे, सोहं जाप जपंता ॥२॥
बँगले आगे बाट†† बिहंगम, दो दर हैं भितरी के ।
ब्रह्म रंध्र‡‡ का घाट जहाँ है, साधू चढ़ै सु देखे ॥३॥
बँगले आगे नटवा§§ नाचै, ताहि लखै नहिं कोई ।
पड़ै गगन से धरती ऊपर, खंड बिहंड न होई ॥ ४ ॥

*तीर्थों के नाम । †समुद्र जिसमें मोती पैदा होता है । ‡द्वारिका । §सहसदलकँवल । ‖बादलों का समूह । ¶रत्न का सागर । **जहाँ तैंतीस कोट देवता तपस्या करते हैं । ††रास्ता । ‡‡शिवनेत्र, तीसरा तिल । §§मन ।

बंगले भीतर रतन अमोलो, सैन पीत नहिं जरदा ।
बिनहीं चरनौं चलै चिदानंद, चसमौं आगे फिरदा ॥५
रिग जजु साम अथर्वन चारो, बंगले माहिं बिराजैं ।
सुछम वेद से तारी लागी, अनहद नौबत बाजैं ॥६॥
आसन पद्म लगाय रहा है, हाथ कमंडल डंडा ।
ब्रह्मा आदि अनादं बैठे, चार वेद धुन खंडा ॥ ७ ॥
सुछम वेद से सुरत लगाई, सो मुरली महं अंगा ।
गरीबदास बाहर क्यूं भरमै, घट ही अंदर गंगा ॥ ८ ॥

( ५ )

बंगला खूब बना है बेस, यामें ररंकार धुन सेस ॥टेक
रोम रोम में नाम चलत है, अजपा तारी लागी ।
सुरत निरत पर अनहद बाजे, सुनते हैं अनुरागी ॥१॥
मूल चक्र का घाट बाँध कर, सुखमन पवन अरोधै ।
परथम आदि गनेस मनावै, नाभि कमल कूं सोधै ॥२
बंक नाल का घाट बिकट है, जहाँ खेचरी लावै ।
अमी महारस अमृत पीवै, अजर अमर हो जावै ॥३॥
दहिने गंगा बायें जमुना, मद्ध सुरसती धारा ।
उलटा मीन चढ़ै सरवर में, ऐसा खेल हमारा॥ ४ ॥
हाथ न पैर पिंड नहिं प्राना, सुन सरवर में खेलै ।
बाँस बल्ली नोका नहिं लागै, (तो) कैसे भौंरा पेलै॥५
दूरबीन ऐनक अनुसरी, पवन पिंड भर गोला ।
सुरत निरत की सुरंग लगावै, दरसै रतन अमोला ॥६

* सूक्ष्म । उत्तरा ।

कोट कोट दामिन दमकाहीं, गरजै सिंध समूचा ।
सीलवंत सैलानी जोगी, मिलै काछ का सूचा* ॥ ७॥
संखों पदम झिलमिलै जोती, अगम पंथ बैराटा ।
गरीबदास सतगुरु के सारै†, उतरै औघट घाटा ॥८॥

( ६ )

बँगला अजब बना है खूब, जामें पार ब्रह्म महबूब ॥टेक॥
आगे नौलख पातुर नाचैं, ब्रह्मानंद रिझावैं ।
तेज पुंज की सुंदर नारी, अनहद मंगल गावैं ॥ १ ॥
पीतंबर फहरात तासु कै, सूहे‡ बस्तर साजैं ।
एक कान्ह औ नौलख गोपी, बँगले माहिं बिराजैं ॥२
चंद सूर दो अधर चिरागा, हुकमी पौन औ पानी ।
सकल संत औ सकल साहबी, बँगले माहिं बिनानी३
पाँचो तत्त खवास खड़े हैं, हाजिर नाजिर जाके ।
तिरलोकी का राज रसातल, क्या कोड़ी धज लाखै§ ४
सब रतनन का रतन नाम है, नाम रतन कूँ जानै ।
इन्द्र का राज काग की बिष्टा, जासे उलटा तानै ॥५
हीरा मोती जवाहिर ताईं, पारस पल्ले न बाँधै ।
सब्द सिंध चिंतामन साहब, सुरत गगन कूँ साधै ॥६॥
चिंतामन पारस परमेसर, हिरदे माहिं बिराजै ।
गरीबदास ताही कूँ सेवै, जाका अबिचल राजै ॥७॥

*लँगोट का पक्का । †सहायता से, सहारे । ‡लाल । §पारब्रह्म की शोभा के आगे तीन लोक का राज जहन्नुम के बराबर और करोड़ों की सम्पत गर्द है । कोड़ीधज=कोटिध्वज (देखो नोट पृष्ट ९३)।

( १ )

बँगला खूब बना है ऐन* ।
जामें कलबिरछा[†] काम धैन ॥ टेक ॥

गंगा कोट त्रिबेनी संगम, कासी गया प्रयागा ॥
या बँगले में साहब बैठा, सब्द करै अनुरागा ॥ १ ॥
संख सरसुती बहैँ अगोचर[‡], गुपती गोप गियाना[§] ॥
बँगले की पारस की पैँड़ी, पाया पद निरबाना ॥२॥
या बँगले में सेत गुमठ[||] है, ता मध अलख गुसाँई ॥
सेत छत्र सिर मुकुट बिराजै, दरसा नैनौं माहीं ॥३॥
निरबानी परबानी पद है, रूप बरन सूँ न्यारा ॥
बँगले में से उड़ै बिहंगम, खेलै अधर अधारा ॥ ४ ॥
अधर अधार अपार पुरुष है, दृष्ट मुष्ट नहिं आवै॥
सूछम रूप सरूप जान के, सेस सहस मुख गावै ॥५॥
उड़े बिहंगम अकल तरंगम, जाके मोह न माया ॥
सतगुरु भेदी भेद कहत हैँ, हम दिब दृष्ट लखाया॥६
जोजन संख पलक में पहुंचै, बिनही चरनौं धावै ॥
अगमी डोर सुरत से खैँचै, फिर बँगले में आवै ॥७॥
सुरत सुहंगम मूल बिहंगम, ज्ञान ध्यान से ऊँचा ॥
घट मठ महतत[¶] सेती न्यारा, कहा घाट बँध कूचा॥८॥
पिंड ब्रह्मंड से न्यारी जोती, बिन ही पँगन झूलै ।
गरीबदास धिरकार जनम कूँ, जो इस पद कूँ भूलै॥९

*सुन्दर । [†]कल्पवृक्ष । [‡]इन्द्रियों की पहुंच के परे । [§]ज्ञान ।
[||]गुम्बज़ । [¶]महातत्व ।

( ८ )

बँगला खूब बना दरहाल, जामेँ रतन अमोले लाल ॥टेक॥
जल की बूंद महल मठ कीन्हा, नख सिख साज बनाया ।
या बँगले मेँ गैबी खेलै, ना मूवा ना जाया ॥ १ ॥
या बँगले के चौसठ खंभा, पाँच पदारथ लागे ।
तीन गुनन की गलियाँ नाहीं, कोइ सूते कोइ जागे ॥२॥
कोट उनंचा* पवन गुंजाईं, नौ नाड़ी से नेहा ।
धाम बहत्तर धारा नगरी, जासे लगा सनेहा ॥ ३ ॥
चौथे पद से महरम नाहीं, तीन गुनन में धोका ।
चौथा पद चिंतामन साहब, सौदा रोकम रोका† ॥४॥
आलस नींद जम्हाई जोरा, कर्म नास होई ।
सील संतोष बिबेक न चीन्हा, जनम अकारथ खोई ॥५॥
आसा त्रिस्ना बनी दुलहिनी, मनसा नारी सोई ।
बँगले के दरवाजे बैठी, देख सहेली दोई ॥ ६ ॥
दूती दोइ दलों बिच खेलै, मोहे सुर नर सारे ।
गन गंधर्प औ ज्ञानी ध्यानी, बँगले माहिं पछारे‡ ७
काम क्रोध औ लोभ मोह की, मदिरा प्याई भारी ।
गरीबदास सतगुरु सौदागर, भौसागर से पारी ॥ ८ ॥

( ९ )

बँगला खूब किया बकसीस, साहब पारब्रह्म जगदीस॥टेक
या बँगले की चीन्ह परी है, बाँधा नौ दस मासा ।
पैसा एक न मेहनत माँगे, धन दासन पति दासा ॥१॥

*उनचास । †नक़द, खरा । ‡गिरा दिया ।

लख चौरासी बँगले छावै, न्यारी न्यारी भाँती ।
साच्छीभूत सकल संग खेलै, कीड़ी कुंजर हाथी ॥२॥
या बँगले का तोल न मोलं, संख पदम झनकाई ।
या बँगले कूँ राख न सक्कूँ, सेस महेसर ताई ॥३॥
हीरे मोती झालर लागे, और लालन की पाँती ।
या बँगले कूँ छाँड़ चलैंगे, ना कोई संग ना साथी ॥४॥
चंद सूर दो कलस बिराजैं, मध्य टक्क अजब फुहारा ॥
झलकै जोती बरषै मोती, जानै जाननहारा ॥ ५ ॥
काम धेनु अरु कलप वृच्छ हैं, ये दो बँगले माहीं ॥
अठ सिध नौ निध परम पदारथ, अवगत अलख गुसाँई
या बँगले में बाघ बसत है, हंसा लेत गिरासी ॥
पकरै बाघ राग कूं चीन्है, ताहि मिलै अबिनासी ॥७
पकरा बाघ कबीर पुरुष ने, जड़िया तौक जंजीरं ॥
जाका बँगला अजर अमर है, धन पीरन सिर पीरं॥८
संख कलप जुग परलै जाहीं, बँगला डिगै न डोलै ॥
गरीबदास सतगुरु का बँगला, ना कुछ तोल न मोलै ॥९॥

( १० )

काया खोज लेरे, तो में रहता पुरुष अलेख ॥
बिभिचारिन का स्वाँग छाँड़ दे, क्या दिखलावै भेख।टेक।
मुक्ताहल की पैंठ लगी है, चौपड़ के बाजार ॥
ब्रह्म सहर बेगम पुर चलिये, अवगत नगर अपार ॥१॥
अष्ट कमल दल भौंजन लागे, बरषत अमृत नीर ।
सोहं हंसा किया पयाना, मानसरोवर तीर ॥ २ ॥

बिन बादल बिन बिजली चमकै, बूठै* सुन्न फुहार ।
संख कला झलकंती जोती, गगन मँडल गुलजार ॥३॥
इस काया में नीझर झरते, औंडे† दरिया कूप ।
सीसी‡ संख§ फिरैं सुर पीवैं, प्याले अजब अनूप ॥४॥
इस काया में रासमँडल है, बाजैं अनहद तूर ।
सोहं हंसा सिंध मिले हैं, झिलमिल नूर जहूर ॥ ५ ॥
ताल मृदंग पखावज बाजैं, तुरही तूर अनंत ।
सब्द अतीत|| परम पद पाया, चीन्हा निरगुन तंत¶ ॥६ ॥
इस काया में घाट पटन है, मल मूतर सब धोई ।
आपा मेट भेट साहब कूँ, बहुर न आवन होई ॥ ७ ॥
सीखे सुने कहो क्या होई, मन पवना नहिं नेस** ।
औघट घाट बाट है बंकी, दुर्लभ देस बिदेस ॥ ८ ॥
ज्ञान ध्यान जिस धाम न पहुंचै, साखी सब्द सरीर ।
सुन्न असुन्न परम सुन चीन्हौं, औंडो†† मँजिल कबीर॥९॥
सप्त सुन्न पर संखा झालर, अछर धाम की डोर ।
मकर तार की बीन चीन्ह कर, होना गारतगोर ॥१०॥
पाँच तत्त तीनौं गुन नाहीं, धर‡‡ अंबर§§ नहिं धौल|||| ।
चन्द्र सूर नहिं पावक पानी, बंको नगरी पौल ॥११॥
मेटो खोज बोझ सब डारो, मिलिहो निरगुन तान ।
दास गरीब परम रँग भीना, चीन्हा पद निरबान ॥१२॥

---

*बरसै । †गहिरे । ‡बोतल । §अनगिनत । ||निर्मोया । ¶तत्व । **नेष्ठा । ††गहिरी, अड़बड़ । ‡‡धर = धरा अर्थात पृथ्वी । §§आकाश । ||||धवल के अर्थ सपेद के हैं—यहाँ धवलागिरि से मतलब हो, या धौल=धूल अर्थात परमाणु रूप माया से । द्वार ।

# ॥ राग रामकली ॥

राम सुमिर राम सुमिर राम सुमिर हंसा ॥
भक्ति जान ज्ञान ध्यान छाँड़ो कुल बंसा ॥ टेक ॥
कोट करम भरम जारि पार तोहि उतारै ॥
मुक्ति लोक पाय मोछ नाम जो उचारै ॥ १ ॥
सुरत सिंध कोट चंद्र झलकै पल माहीं ॥
पद निर्वान है अमान आदि अंत नाहीं ॥ २ ॥
निराकार अघर धार वार पार नाहीं ॥
व्यापक महबूब खूब धूप है न छाहीं ॥ ३ ॥
संख तूर दर जहूर झिल मिल झिल रंगा ।
घुरै नाद संख साध चरन कोट गंगा ॥ ४ ॥
अरस कुरस नूर दरस तेज पुंज देखा ।
कोट भानु साँच मानु रोम रोम पेखा ॥ ५ ॥
अमृत रस अमी पीव खुरदनी खुसाली ।
प्याले मुसताक पाक लालन सिर लाली ॥ ६ ॥
नाद बिन्द घट अकार देह गेह नाहीं ।
निरमल निरदंद अैन, देखतही होत चैन, पलकन के माहीं ॥ ७ ॥
आदि मूल रतन फूल सेत पद सुभाना ।
गरीबदास जहाँ बास दरस मैं दिवाना ॥ ८ ॥

( २ )

राम सुमिर राम सुमिर राम सुमिर लोई ।
सतगुरु उपदेस दीन्ह भक्ति बीज बोई ॥ टेक ॥

काम क्रोध लोभ मोह सत्रु हैं तुम्हारे ।
हरष सोग राग दोष पकर क्यौं न मारे ॥ १ ॥
तीन चौन्ह पाँच मार पकरो मठधारी* ।
पुत्र तो पचीस संग सैन है अपारी ॥ २ ॥
पाँच नार घट मँझार मन की पटरानी ।
द्वादस दल कोट कटक सैन[†] है बिरानी ॥ ३ ॥
साहुकार पकर लीन्ह लूटै गढ़ चोरा ।
आतम तो अनाथ सुनो राम बाप मोरा ॥ ४ ॥
मन के सब राज पाट तीन लोक माहीं ।
आतम तो अनाथ जीव सुनो हो गुसाईं ॥ ५ ॥
फंद काट करो साँट[‡] मौज मेहरबाना ।
अरज तो कबूल होय साहब रहमाना[§] ॥ ६ ॥
साहब दरबार बीच कूकै बंदिजादा[||] ।
महजर[¶] क्यूँ न सुनो राम पूछ हो फिलादा[**] ॥ ७ ॥
समरथ जगदीस ईस, सरन आया तोहीं ।
ठाढ़ा दरबार तोरे सुनो राम दोही[††] ॥ ८ ॥
अर्थ धर्म काम मोच्छ पूरन सब काजा ।
गरीबदास सरन आया बाप राम राजा ॥ ९ ॥

( ३ )

राम सुमिर राम सुमिर राम सुमिर बौरे ।
हर दम तो अजपा जाप साहबै भजो रे ॥ टेक ॥

---

*महंत यानी मन । †फ़ौज । ‡मेला । §दयाल । ||दास । ¶अर्ज़ी ।
**फ़र्याद । ††दुहाई ।

इंद्री घट पाँच भूत, दूत हैं दिवाने ।
पच्चिस परकिर्त* लार जाने तीन जाने ॥ १ ॥
काम सहर क्रोध कहर लोभ लहर ऊठैं ।
मोह के तो परे फंद कैसे कर टूटैं ॥ २ ॥
सेन दल अपार यार एती ठकुराई ।
कैसे कर पड़ा जाय गढ़ सुरंग लाई ॥ ३ ॥
अकड़ी† हठवान‡ बाँका जोधा मन राजा ।
कोट तो निसान घुरैं बजैं अनँत बाजा ॥ ४ ॥
सेन दल अपार सजे संख लहर लहरी ।
खसिया§ मन राज करै मरद है न मेहरी‖ ॥ ५ ॥
सुरग और पताल मिरत तिहूँ लोक लूटे ।
सतगुरु की सरन आये सोई जान छूटे ॥ ६ ॥
काया गढ़ नहीं तेरा दैंह साँच मानी ।
भाड़े¶ की दुकान यार सो तो है बिरानी ॥ ७ ॥
दूने तीने नाहिं कीन्हे हाट बीच टोटा ।
पकरैंगे जम जहूद तोरैंगे लँगोटा ॥८॥
होयगा बेवतन** हंस देह जार दीनी ।
गरीबदास कहाँ बास पंथ खोज मीनी ॥ ९ ॥

( ४ )

राम सुमिर राम सुमिर, राम सुमिर मीता ।
बिन सतगुरु ज्ञान ध्यान, खाली है सलीता†† ॥टेक॥

* प्रकृति । † हेंकड़ । ‡ हठीला । § बधिया, हिजड़ा । ‖ स्त्री ।
¶ किराया । **बिना घर का । ††बोरा ।

हाड़ चाम सकल गाम, गंद है खलीता* ।
पाक तो बिसार दीन, बरहना जरीता† ॥१॥
दम का सुमार कीन, नाम क्यूँ न लीता ।
इला पिंगला बिचार, सुखमना पलीता‡ ॥२॥
सील और सँतोष आन, दया धरम कीता ।
काम क्रोध लोभ मोह, सत्रु क्यौं न जीता ॥३॥
साहब दिल से बिसार, कौन जुलम कीता ।
दुनिया गुफतार§ यार, छाँड़ दे अनीता ॥४॥
नाहीं वह स्याम सेत, लाल है न पीता‖ ।
आवै नहिं पारख¶, पढ़ो कोट ज्ञान गीता ॥५॥
पिंड प्रान अरप दीन, सतगुराँ सरीता** ।
गरीबदास पावै यूँ, ब्रह्म पद अतीता ॥६॥

(५)

राम सुमिर राम सुमिर, राम सुमिर लै रे ।
जम और जहान जीत, तीन लोक जै रे ॥ टेक ॥
इंद्री अदालत चोर, पकड़ो मन अहि†† रे ।
अनहद टंकोर घोर, सुनै क्यूँ न बहिरे ॥१॥
सुरत निरत नाद बिंद, मन पवना गह रे ।
उनमुनी अलेल‡‡ रूप, निराकार लह रे ॥२॥
धनुष§§ ध्यान मार बान‖‖, दुरजन से फहरे¶¶ ।
देखत के सीत कोट, भरम बुर्ज ढह रे ॥३॥

---

*थैली, झोला । †नंगा जलाया जायगा । ‡बत्ती जिस से रंजक में आग लगाते हैं । §निरी बात, कहानी । ‖पीला । ¶परख, जाँच । **शरन ली । ††साँप । ‡‡बेपरवाह । §§कमान । ‖‖ तीर । ¶¶ दूर रहो, बचो ।

साँचे से प्रीत कीन, झूठा मन मह* रे ।
कहत है गरीबदास, कुटिल बचन सह रे ॥४॥

## ॥ राग असावरी ॥

मन तू चल रे सुख के सागर,
जहाँ सब्द सिंध रतनागर ॥ टेक ॥
कोट जनम जुग भरमत होगये,
कछू न हाथ लगा रे ।
कूकर सूकर खर भया बौरे,
कौवा हंस बिगारे ॥ १ ॥
कोट जनम जुग राजा कीन्हा,
मिटी न मन की आसा ।
भिच्छुक होकर दर दर हाँडा†,
मिला न निरगुन रासा ॥ २ ॥
इन्द्र कुबेर ईस की पदवी,
ब्रह्मा बरुन धर्मराया ।
बिस्वनाथ के पुर कूँ पहुंचा,
बहुर अपूठा‡ आया ॥ ३ ॥
संख जनम जुग मरते हो गये,
जीवत कूँ न मरै रे ।

*मथ लो अर्थात छाछ की तरह अलग कर दो । †भरमा । ‡उलटा ।

द्वादस मद्ध महल मठ बौरे,
बहुर न देह धरै रे ॥ ४ ॥
दोजख भिस्त सबै तैं देखे,
राज पाट के रसिया ।
तिरलोकी से तिरपत नाहीं,
यह मन भोगी खसिया* ॥ ५ ॥
सतगुरु मिलै तो इच्छा मेटै,
पद मिल पदहिं समाना ।
चल हंसा उपदेस पठाऊँ,
जहँ आद अमर अस्थाना ॥ ६ ॥
चार मुक्ति जहँ चंपी करिहैं,
माया हो रहि दासी ।
दास गरीब अभय पद परसे,
मिले राम अबिनासी ॥ ७ ॥

( २ )

मन तूँ सुख के सागर बस रे, और न ऐसा जस रे ॥टेक॥

सब सोने की लंका होती, रावन से रन धीरं ।
एक पलक में राज बिराजी, जम के पड़े जँजीरं ॥१॥

*हिजड़ा ।

दुर्योधन से राजा होते, संग इकोतर* भाई ।
ग्यारह छोहनि संग चलै थी, देह गीध ने खाई ॥२॥
साठ हजार सुभट† के होते, कपिल मुनीश्वर खाये‡ ।
एकै पुत्र उत्तानपात के,§ परमातम पद पाये ॥३॥
राम नाम पहलाद पढ़े थे, हिरनाकुस नहिं भाये ।
नरसिंघ रूप धरे नारायन, खंभ फार कर आये‖ ॥४॥
नामदे नाम निरंजन राते, जाकी छान छवाई ।
एक पलक में देवल फेरा, मिर्तक गऊ जिवाई¶ ॥५॥
कासीपुरी कबीरा होते, ताहि लखो रे भाई ।
जहँ केसो बनजारा उतरा, नौलख बालद आई ॥६॥
कनक जनेऊ कन्ध दिखाया, भक्ति करी रैदासा ।
दासगरीब कौन गत पावै, मगहर मुक्ति बिलासा ॥७॥

( ३ )

मन तूँ मान सरोवर न्हा रे, इहाँ न भटका खा रे॥ टेक॥
सूरज मुखी फूल जहँ फूलै, संख पदम उजियारा ।
गंगा जमुना मद्धु सरसुती, तिरबेनी की धारा ॥१॥
जहाँ कमोदनि चन्द्र उगत हैं, कमल कमल मध तूरा** ।
अनहद नाद अजब धुन होहीं, जानै सतगुरु पूरा ॥२॥
औघट घाट बिषम है दरिया, न्हावै संत सुजाना ।
मोच्छ मुक्ति की परबी लै रे, साखी है ससि भाना ॥३॥

---

*एक सौ एक । †जोधा । ‡देखो नोट पृष्ठ १०३ । §देखो ध्रुव की कथा नोट पृष्ठ ३२ । ‖देखो नोट पृष्ठ ८८ । ¶देखो नोट पृष्ठ ८४-८५ । **तुरही ।

जहाँ उहाँ हंस कुतूहल करते, मोती मुक्ता खाहीं ।
ऐसा देस हमेस हमारे, अमृत भोजन भाहीं ॥४॥
संखौं लहर मेहर की उपजै, कहर नहीं जहँ कोई ।
दास गरीब अचल अबिनासी, सुखका सागर सोई ॥५॥

( ४ )

बाबा बिकट पंथ रे जोगी,
तातैं छाँड़ सकल रस भोगी ॥टेक॥

पर्थम सिद्धि गनेस मनावौं, मूल कमल की मुद्रा ।
किलियं जाप जपो हरि हीरा, मिटै करम सब छुद्रा* ॥१॥
कुरम वाय पर सेस वाय† है, तासु होत उदगारं‡ ।
दो कूँ जीत जनम जुग जोगी, अवगत खेल अपारं ॥२॥
नाभि कमल में नाद समोवो, नागिन निद्रा मारो ।
दो फुंकार संखिनी जीतो, उरधै नाम बिचारो ॥३॥
हिरदे कमल सुरत का संजम, निरत कला निरस्वासा ।
सोहं सिंध सैल पद कीजै, ऐसे चढ़ो अकासा ॥४॥
कंठ कमल से हर हर बोलै, षोड़स कला उगानी ।
यह तो मध मारग सतगुरु का, पंथ बूझ ब्रह्मज्ञानी ॥५॥
त्रिकुटी मद्धे मूरत दरसै, दो दल दरपन झाहीं ।
कोट जतन कर देखा भाई, बाहर भीतर नाहीं ॥६॥
वह तो सिंध दोऊ से न्यारा, कहो कहाँ ठहराये ।
सुन्न बेसुन्न मिले नहिं भौंरा, कहाँ रहत घर पाये ॥७॥

---

*नीच । †कुरम और नाग (=सेस) दो वायुओं के नाम हैं ।
‡डकारना ।

अनहद नाद बजावो जोगी, बिना चरन चल नगरी।
काया कासी छाँड़ चलोगे, जाय बसो मन मधरी ॥८॥
धरती धूत अकार न पाऊँ, मेरु दंड पर मेला।
गगन मँडल में आसन करहूं, तो सतगुरु का चेला॥९॥
तिल परमान ब्रह्म दरवाजा, तिस घाटी ले जाऊँ।
चींटी के पग हस्ती बाँधूँ, अधर धार ठहराऊँ ॥१०॥
दखिन देस मैं दीपक जोऊँ, उत्तर धरूँ धियाना।
पछिम देस में देवल हमारा, पूरब पंथ पयाना ॥११॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारा, अगम ज्ञान गोहराऊँ।
दास गरीब अगम गत आपै, सिंधै सिंध मिलाऊँ ॥१२॥

( ५ )

संतो मानो मोर सँदेसा, तातैं बहुर न रहै अँदेसा ॥टेक॥
अधर गंग इक अधर सरोवर, अधर पुहुप गुलजारा।
सूरज मुखी संख सुर सोभा, ऐसा देस हमारा ॥१॥
षटकोन चक्र कूँ चीन्ह पियारे, अकस* अरस अनादं।
तुरही रूप बंकड़ा साहब, लीला अगम अगाधं ॥२॥
हंस मोर के मद्ध चंद्र है, कलँगी कोटि बिराजै।
जाके ऊपर अरस गुमठ है, तीन कलस जहँ साजै ॥३॥
परानंदनी† कामधेनु है, गोमुख गंग कहावै।
कल्प रूप साहब सरबंगी, मन बांछित फल पावै ॥४॥
सुन्न सलहली धजा फरक्कैं, ध्यान धरै कोई बीना।
अललपंख ज्यूँ करै पयाना, खोज न पावै मीना ॥५॥

*छाया। †परम आनंद या रस की खान।

त्रिकुटी कमल पर सेत गुमठ है, जा मध भँवर बिराजै।
दास गरीब कहै रे संतो, सब्द अनाहद बाजै ॥६॥

( ६ )

संतो निज पद अधर बिवाना, जा मूरत पर कुरबाना॥टेक
सेत छत्र सिर मुकुट मनोहर, बना मुकैसी* चीरा ।
संख चक्र गदा पद्म बिराजै, दामन दमकै हीरा ॥१॥
जरीबाफ झिलमिल झिलकंता, पीतंबर परकासा।
हाजिर नाजिर देख अरस में, अवगत चौंर खवासा॥२॥
कच्छ मच्छ औ कुरम धौल से, सेस पार नहिं पाई।
बिना दस्त जहँ चौंर होत है, हम देखा रे भाई ॥३॥
सत्तर खान बहत्तर उबरे, सिव ब्रह्मा से रागी ।
नारद नाम कबीरा गावै, सुरत सब्द में लागी ॥४॥
राग बिहंग भंग नहिं होई, बंधा रहत समीरं ।
दास गरीब बजर पट खोले, सतगुरु मिले कबीरं ॥५॥

( ७ )

बिसमिल कित से आई काजी बिसमिल कित से आई ।
ताते बोलो नाम खुदाई† ॥टेक॥
उहाँ तो लोह लुहार नहीं रे, करद‡ गढ़ी किन्ह भाई ।
अहरन§ नाहिं हथौड़ा नाहीं, बिन आरन॥ कहँ ताई ॥१॥

*कारचोबी । †क़ाज़ी तुमको ख़ुदा की सौगंद बताओ कि ज़िबह करने का दस्तूर कहाँ से लाये । ‡ छुरी । § निहाई । ॥भट्ठी ।

जाम* भेड़ी का दूध पिवत हो, दही घिरत† बहु खाई।
जा कूँ फेर हलाल करत हो, लेकर करद कसाई ॥२॥
गोस्त माटी‡ चाम उधेरा, रूह कहाँ पहुंचाई ।
उस दरगह की खबर नहीं है, कौन हुकम से ढाई§॥३॥
हक हक करके मुल्ला बोलै, मसजिद बाँग सुनाई ।
तीसौं रोजे खून करत है, खोज न पाया राई‖ ॥४॥
सुअर गऊ की एकै माटी, आतम रूह इलाही ।
दास गरीब एक वह साहब, जिन यह उमत¶ उपाई ॥५॥

( ८ )

दिल ही अन्दर हुजरा काजी दिल ही अन्दर हुजरा।
कर ले उस साहब से मुजरा ॥टेक॥
मका मदीना दिल ही अन्दर, काबे कूँ कुरबाना ।
काहे लेट निमाज करत हो, खोजो तन अस्थाना ॥१॥
सत्तर काबे देख नूर के, खोल किवारी झाँकी ।
ता पर एक गुमठ है गैबी, पन्थ डगरिया बाँकी ॥२॥
हक हक करके मुल्ला बोलै, काजी पढ़ै कुराना ।
जिन कूँ वह दीदार कहाँ है, काटैं गला बिराना ॥३॥
अरस कुरस** में अलह तखत है, खालिक बिन नहिं खाली।
वै पैगम्बर पाक पुरुष थे, साहब के अबदाली†† ॥४॥
मुहमद ने नहिं गोस्त खाया, गऊ न बिसमिल कीती ।
एक बेर कहा मनी‡‡ मुहम्मद, ता पर एती बीती ॥५॥

---

*मा। †घी। ‡देह। §मारा। ‖राई के बराबर, रत्ती भर। ¶सृष्टि।
**अर्श और कुर्सी दो स्थान ब्रह्मांडहैं के हैं। ††भक्त, दास। ‡‡मौत, क़तल।

नबी मुहम्मद नमस्कार है, राम रसूल कहाया ।
एक लाख अस्सी कूँ सैागँद, जिन नहिँ करद चलाया॥६॥
वेई मुहम्मद वेई महादेव, वेई बिसुन वेई ब्रह्मा ।
दास गरीब दूसरा को है, देखो अपने घर माँ ॥७॥

( ९ )

कोई बाँका सूरा, लड़त बेहद मैदाना ॥टेक॥
नैनन की बंदूक बनी है स्रवन बरूद समाना ।
काल बली को मार गिरावो, सुरत की गोली ताना ॥१॥
मन को टेर* दया को बखतर, सुरत कटारी ठाना ।
पाँच पचीस मिल टक्कर मारो, अमर लोक अस्थाना ॥२॥
ईथर पाथर कभी न पूज्यो, तीरथ बर्त न माना ।
सत्त सब्द में रह्यो समाई, तब मेरो मन जाना ॥३॥
जूझैगा कोई परम सूरमा, घाव लगै निर्बाना ।
दास गरीब कबीर का चेला, ज्यूँ का त्यूँ ठहराना ॥४॥

( १० )

जो कोई ना मानै ना मानै,
जाकूँ अजाजीलै रानै† ॥टेक॥
करै अचार बिचार असंभी, पूजत जड़ पाषानै ।
पाती तोर चढ़ावत अँधरे, जीवत जी कूँ भानै‡ ॥१॥
पिंड प्रदान करै पितरोँ के, तीरथ जग औ दानै ।
बिना बंदगी मोच्छ नहीँ रे, भूल रहे सुर§ ज्ञानै ॥२॥

*टोपा, ख़ोद । †उसको शैतान गिरावै । ‡ मारै । § देवता ।

सुकदे स्यू का तंत सुना है, भक्ति दई धिग ता ने ।
सतगुरु जनक बिदेही भेंटे, पद मिल पदै समाने*॥३॥
अकथ कथा कुछ कही न जाई, देखत नयन सिराने† ।
प्रबल बली दरियाव बिहंगम, लाय ले चोट निसाने॥४॥
पंडित बेद कहै बहु बानी, काजी पढ़ै कुराने ।
सुअर गऊ को दोय बतावै, दोनों दीन दिवाने ॥५॥
एकहि मट्टी एकहि चमड़ा, एकहि बोलत प्राने ।
जिभ्या स्वादै मारत है नर, समुझत नहीं हैवाने ॥६
मुरगी बकरी कुकड़ी खाई, कूके बंग मुलाने ।
जैसा दरद आपने होवै, वैसा दरद बिराने ॥७॥
मन मक्का की हज्ज न कीन्ही, दिल काबा नहिं जाने ।
कैसी काजी कजा‡ करत हो, खाते हैा हलवाने§ ॥८॥
जा दिन साहब लेखा माँगे, द्यो क्या ज्वाब दिवाने ।
ऐसा कुफर तरस नहिं आवै, काटै सीस खुराने ॥९॥
उस पुर सेती महरम‖ नाहीं, अनहद नाद घुरानै ।
दास गरीब दुनी¶ गइ दोजख, द्यावै गालि गुरानै** १०

( ११ )

अवधू पाया अति आरूढ़ं,
कोट उनंचा††काहे नाचा तन ढूँढ़े में ढूँढ़ं॥टेक॥

---

*शुकदेव जी ने पहिले भक्ति का निरादर किया था और ज्ञान ही को मानते थे, देखो नोट पृष्ठ ६९ और ९३-९४ । †शीतल हुए । ‡पाँचो वक्त की नमाज़ पढ़ना । § बकरी का बच्चा। ‖ भेदी । ¶ दुनिया । ** गाली गलौज । ††उनचास ।

पोथी थोथी काहे ढूँढ़ो, सुन रे पंडित मूढ़ं ।
लंबी जटा अटा क्यूँ बाँधै, काहे मुड़ावै मूड़ं ॥१॥
जल पाषान तरा नहिं कोई, सूवा सेम्हर डूँड़ं* ।
वह नग हीरा परखा नाहीँ, क्यूँ खोजत हो जूड़ं ॥२॥
जल मृग त्रिसना सृष्टि भुलानी, भूल रहा जग भूड़ं ।
नाम अभय पद निःचै निपजै, बीज परे ज्यूँ खूड़ं† ॥३॥
बिन आकार अपार पुरुष है, बाल बृद्ध नहिँ बूढ़ं ।
दास गरीब अचल अबिनासी, अवगत मंतर गूढ़ं ॥४॥

( १२ )

संतो मन की माला फेरो,
यह मन बाहर जात हेरो ॥टेक॥
तीन लोक औ भवन चतुर्दस, एक पलक फिर आवै ।
बिनहीँ पंखोँ उड़ै पखेरू, याका खोज न पावै ॥१॥
तत की तसबी‡ सुरत सुमिरनी, दृढ़ के धागे पोई ।
हर दम नाम निरंजन साहब, यह सुमिरन कर लोई ॥२॥
किलियं ओअं हिरियं सिरियं, सोहं सुरत लगावै ।
पंच नाम गायत्री गैबी, आतम तत्त जगावै ॥३॥
ररंकार उच्चार अनाहद, रोम रोम रस तालं ।
कर की माला कौन काम जब, आतम राम अब्दालं§ ॥४॥
सुरग पताल सृष्टि में डोलै, सर्ब लोक सैलानी ।
यह मन भैरो भूत बितालं, यह मन अलख बिनानी ॥५॥
यह मन ब्रह्मा बिसुन महेसं, इन्दर बरुन कुबेरं ।
मनही धर्मराय है भाई, सकल दूत जम जेरं‖ ॥६॥

*डोंड़ी । †हराई, रिघाई । ‡माला । §भक्त । ‖परास्त करना ।

मनही सनक सनन्दन बाला, गौरज और गनेसा ।
मनही कच्छ मच्छ कूरंभा, धौल धरन अरु सेसा ॥७॥
मनही गोरख दत्त दिगंबर, नारद सुकदे ब्यासा ।
मनही बलि बावन ह्वै आया, मन का अजब तमासा॥८॥
मनही ध्रू प्रहलाद भभीखन, मन का सकल पसारा ।
मनही हरि हीरा हिरनाकुस, मन नरसिंघ औतारा॥९॥
मन सुग्रीव बालि बल अंगद, रावन राम रँगीला ।
मनही नौ औतार धरत है, मन की अवगत लीला१०
मनही लछमन हनूमान है, मनही चेरी सीता ।
मनही चारो बेद बिद्या सब, मन भागवत औ गीता११
मनही परसराम परसोतम, छत्री किये निछत्री* ।
मनही कपिल देव देहूती†, मनही अद्या अत्री ॥१२॥
मनही चंद सूर तारागन, मनही पानी पौना ।
मनही लख चौरासी डोलै, मनही का सब गौना॥१३॥
मन तैंतीसा कोट देवता, मनही सहस अठासी ।
मनही थावर जंगम जोनी, मनही सिध चौरासी ॥१४॥
मनही कीट पतंग भुवंगा, मन जोनी जगदीसं ।
मन के ऊपर निज मन साहब, ताहि नवाऊँ सीसं॥१५॥
निज मन सेती यह मन हूआ, धर आया अनँत सरीरं।
दास गरीब अभय अबिनासी, ता मिल रहे कबीरं१६

( १३ )

पार किनहुं नहिं पाये संतो, पार किनहुं नहिं पाये ।
जुग छत्तीस रीत नहिं जानी, ब्रह्मा कमल भुलाये ॥टेक॥

*नाश । †कपिल देव की माता का नाम ।

चार अंड ब्रह्मंड रचाने, कूरम धौल धराये ।
कच्छ मच्छ सेसा नारायन, सहस मुखी पद गाये॥१॥
चार बेद अस्तुती करत हैं, ज्ञान अगम गोहराये ।
अकथ कथा अच्छर निःअच्छर, पुस्तक लिखा न जाये॥२
सुरत निरत से अगम अगोचर, मन बुध रहे थकाये।
ज्ञान ध्यान से अधिक परेरा, क्या गाऊँ रामराये॥३॥
नारद मुनी गुनी महमंता, नर से नारि बनाये* ।
एक पलक परपूरन साहब, पूत बहत्तर जाये* ॥४॥
नौ लख बोरी कासी आई, दास कबीर बढ़ाये† ।
दास गरीब अगम अनुरागी, पद मिल पदै समाये॥५॥

( १४ )

अबधू लेत न मन का लाहा‡, चीन्हो ज्ञान अगाहा§ ।टेक।
कासी गहन बहन भये|| प्रानी, प्राग न्हात है माहा¶
बिना नाम जोनी नहिं छूटै, भरमै भूल भुलाहा ॥१॥
सहस मुखी गंगा नहिं न्हाते, खोदैं ऊजड़ बाहा** ।
नारद ब्यास पूछ सुकदे कूँ, चारो बेद उगाहा†† ॥२॥
पंथ पुरातम खोज लिया है, चाले अवगत राहा ।
सुकदे ज्ञान सुना संकर का, मिटी न मन की दाहा ॥३॥
दो तपिया गुन तप कूँ लागे, बंदे हूहू हाहा‡‡ ।
लगा सराप परे भौसागर, कीन्हे गज अरु ग्राहा॥४॥

---

*देखो नोट पृष्ठ ७३-७५ । †देखो नोट पृष्ठ ३४-३५ । ‡लाभ । §गूढ़ । ||बहे । ¶महीने भर । **महर । ††संग्रह किया ।

‡‡हूहू और हाहा दो गंधर्वों के नाम हैं जो गान विद्या में बड़े निपुन थे । दोनों में झगड़ा हुआ कि कौन बढ़ कर गाता है इस लिये वे निर्नय कराने को देवल ऋषि के पास गये । देवल ऋषि ने

सिव संकर के तिलक किया है, नारद सोधा साहा* ।
ब्रह्मादिक ने चौरी रचिया, किया गौर का ब्याहा ॥५॥
इक सौ आठ गये तन परलै, बहुर किया निरबाहा ।
सिव के संग गौरजा उधरी, मिट गया काल उसाहा† ॥६॥
ज्यूँ सर्पा की पूँछ पकर कर, अंदर उलटा जाहा ।
नीर कबीर सिंध सुखसागर, पद मिल गया जुलाहा ॥७॥
हमरा ज्ञान ध्यान नहिँ बूझा, समझ न परी अगाहा ।
दासगरीब पार कस उतरै, भैंटा नहीं मलाहा ॥ ८ ॥

## ॥ राग बिलावल ॥

रब‡ राजिक§ तू महरमी‖, करतार बिनानी ।
अवगत अलख अलाह तू, कादिर परवानी ॥ टेक ॥

---

उन दोनों का गाना सुन कर कहा कि हाहा का गाना बढ़ कर है इस पर हूहू हुज्जत करने लगा कि कैसे वह बढ़ कर है । मुनिजी क्रोध करके बोले कि तुम ने तो जुबान ग्राह (याने मगर) की तरह पकड़ ली इस लिये ग्राह होगे । इसी शाप से हूहू ने मगर का जन्म पाया ।

राजा इन्द्रद्युम्न द्रविण देश का राजा अगस्त्य मुनि का शिष्य था । एक दिन जब राजा पूजा पर था गुरूजी उस के यहाँ गये । राजा ईश्वर की पूजा का निरादर समझ कर गुरूजी के लिये आसन से नहीं उठा जिस पर मुनिजी ने शाप दिया कि तुम गज (हाथी) की तरह बैठे रह गये इस से हाथी हो जाव जिस से राजा ने हाथी की योनि पाई ।

कृष्णावतार होने पर इन दोनों का उद्धार हुआ—देखो गज और ग्राह की कथा पृष्ठ २४ में ।

*लगन । †वसवास, शंका । ‡साहब । §अन्नदाता । ‖सर्वज्ञ ।

खालिक मालिक मेहरबाँ, सरबंगी स्वामी ।
नि:चल अचल अगाध तू, निरगुन नि:कामी ॥१॥
राम रहीम करीम तू, कुदरत से न्यारा ।
गंध पुहुप ज्यूँ रम रहा, फूला गुलजारा ॥२॥
पूरन ब्रह्म परम गुरू, अकाल अबिनासी ।
सब्द अतीत बिहंगमा, किस काल उदासी ॥३॥
अनुरागी नि:तत्त कूँ, तन मन सब अरपूँ ।
सीस करूँ तिस वारने, चित चंदन चरचूँ ॥४॥
उस साहब महबूब कूँ, कर हर दम मुजरा ।
चित से नेक न बीसरूँ, दिल अंदर हुजरा* ॥५॥
पत-राखन तू परद-पोस†, साहब दिल दाना ।
मीरा‡ मेरे मेहर कर, पेखूं खिलखाना§ ॥६॥
नूर निहारूँ नजर से, नैनौं भर देखूँ ।
मूरत सूरत सकल कूँ, चसमौं मैं पेखूँ ॥७॥
तेज पूँज की सेज है, सुन मंडल सीरा‖ ।
अदली तखत खवास है, जहँ आप कबीरा ॥८॥
कुंभक ऊपर कुंभ है, गागर पर गगरी ।
संत बिबेकी पहुँचसी, उस अवगत नगरी ॥९॥
अवगत नगर निधान है, बेगमपुर बासा ।
बिरह बियोगी बिंध रहै, जहँ सब्द निवासा ॥१०॥
तन मन मिरतक ह्वै रहै, दिल दुई उठावै ।
सब्द समुंदर सिंध मैं, ले अंग मिलावै ॥११॥

---

* कोठा । † ऐब ढकने वाला । ‡ स्वामी । § ख़िलवत ख़ाना ।
‖ उत्तम भूमि ।

खोजी खोज न पावहीं, गुरु भेद बिचारं।
चार बेद चितवत भये, भूले भरम अचारं ॥१२॥
पुरान अठारह गम नहीं क्या गावै ज्ञानी।
मौनी महल न पावहीं, बिन सतगुरु बानी ॥१३॥
अष्ट योग जाने नहीं, षट कमलकसीसं।
पाँचो मुद्रा वार हैं, पारख जगदीसं ॥ १४ ॥
बावन अच्छर ना चढ़ै, वह बिरहा बंगी।
दास गरीब पिछानिया, सो हर दम संगी ॥ १५ ॥

( २ )

मतवालों के महल की, सूफी क्या पावै।
अरस खुरदनी[*] खोर है, सतगुरु बतलावै ॥ टेक ॥
सुन्न दरीबे हाट है, जहँ अमृत चुवता।
ज्ञानी घाट न पावहीं, खाली सब कबिता ॥ १ ॥
टाँक[†] बिकै नहिं मोल कूँ, जो तुलै न तौला।
कूँची[‡] सब्द लगाय कर, सतगुरु पट खोला ॥ २ ॥
फूल झरै भाठी सरै[§], जहँ फिरैं पियाले।
नूर महल बेगमपुरा, घूमैं मतवाले ॥ ३ ॥
त्रिकुटी सिंध पिछान ले, तिरबेनी धारा।
बेड़े[||] बाट बिहंगमी, उतरै भौ पारा ॥ ४ ॥
अठसठ तीरथ ताल हैं, उस तरवर माहीं।
अमर कंद[¶] फल नूर के, कोइ साधू खाहीं ॥ ५ ॥

[*]खाने के लायक़। [†]चार माशे का बाट। [‡]कुंजी। [§]चुवै। [||]छोटी नाव। [¶]खाने की पुत्ती।

नौ से नदी अचूक* हैं, उस मंझ तलाई ।
मेरुडंड कूँ छेद कर, सतगुरु बतलाई ॥ ६ ॥
मान सरोवर कुंज है, जहँ हंसा खेलै ।
भौसागर की बाट तय, सतगुरु सत बोलै ॥ ७ ॥
हंसा मोती चुगत है, जुग जुग आधारा ।
खात न टूटै परम धन, जो अछै भँडारा ॥ ८ ॥
अमर कच्छ हंसा भये, मिल सब्द समाये ।
औघट लंघे साधवा, वे बहुर न आये ॥ ९ ॥
सुरँग लगावे सुन्न मैं, सो सतगुरु सूचा ।
मुक्ताहल† पद बेलड़ी‡, फल देवै ऊँचा ॥ १० ॥
सतगुरु मिलिया जौहरी, जिन जन्म सुधारा ।
ज्ञान खड़ग की गुर्ज§ से, दूतर‖ सब मारा ॥ ११ ॥
बिरह बिथा का बादला, घट अंदर बूटा¶ ।
दास गरीब दया भई, भल सतगुरु टूठा** ॥ १२ ॥

( ३ )

चिंतामनि कूँ चेत रे, मुक्ताहल पाया ।
सतगुरु मिलिया जौहरी, जिन्ह भेद बताया ॥टेक॥
हीरा मनि पारस परस, लख लाल नरेसा ।
मोती जवाहर जोगिया, वह दुर्लभ देसा ॥ १ ॥
कामधेनु कलबृच्छ हैं, दरबार हमारे ।
अठ सिधि नौ निधि आँगनै, नित कारज सारे ॥ २ ॥

*परिपूर्ण । †मोती । ‡बेल । §गदा । ‖दूत । ¶बरसा ।
**बख़्शिश की ।

राग छतीसो ऋधि सबै, जहँ रास रवानी* ।
ताल तँबूरे तूर हैं, अवगत निरबानी ॥ ३ ॥
सुन में बाजै डुगडुगी, बरवै† पद गावै ।
चल हंसा उस देस कूँ, जो बहुर न आवै ॥ ४ ॥
नूर महल गुलजार है, निज सब्द समाये ।
हंसा बहुर न आवहीं, सत लोक सिधाये ॥ ५ ॥
सतगुरु मंझ दलाल हैं, जिन सौदा कीन्हा ।
दास गरीब दया भई, सत साहब चीन्हा ॥ ६ ॥

( ४ )

नूर नगर बेगमपुरा, पुर पट्टन थानं ।
सतगुरु सैन लखाइया, जो पद निर्बानं ॥ टेक ॥
कोकिल बानी होत है, पारख निःतंती ।
जाका मुजरा होयगा, तन काढ़ै जंती ॥ १ ॥
अनुरागी निःतन्त है, पद पारख लीजै ।
प्रेम पियाला पीय कर, कहिं भेद न दीजै ॥ २ ॥
अनुरागी निःतन्त में, ले सुरत समोई ।
महल महरमी जाहिंगे, तन आपा खोई ॥ ३ ॥
सिंगल‡ बैन§ अवाज है, जहँ सुरत समाहीं ।
निरत निरंतर रम रही, तहँ दूसर नाहीं ॥ ४ ॥
आसन अरसी पेख ले, सुन मंडल मेला ।
सिंगी नादू बाजहीं, जहँ गुरू न चेला ॥ ५ ॥

*रमनीक सुहावना । †एक रागिनी का नाम । ‡नाम संस्कृत की कविता जारी करने वाले का ; राग । §शब्द ।

(सिर) छत्र अनूपम सेत है, जहँ साहब रहता।
चौंर सुहंगम ढुरत हैं, यूँ सतगुरु कहता॥ ६॥
झिलमिल नूर अपार है, जहँ जंत्री जोगी।
सकल बियापी रम रहा, पारस रस भोगी॥ ७॥
दृष्ट मुष्ट आवै नहीं, मौनी महबूबं।
बिरह बिहंगम बेत* है, असली पद खूबं॥ ८॥
उज्जल भँवर अनंत है, जहँ कुंजी बैना।
सब्द अतीत समाधिया, लख उनमुन नैना॥ ९॥
घाट बाट पावै नहीं, बिन सतगुरु सैना।
भेष परे हैं भरम में, सब फोकट फैना†॥ १०॥
सुरत निरत मन पवन का, इक अंग बनाया।
सो हंसा सुन में गये, सत लोक बसाया॥ ११॥
बिन पर भँवर उड़ाइया, बिन पगौं‡ पयाना§।
दास गरीब अगमपुरी, जहँ ज्ञान न ध्याना॥ १२॥

( ५ )

मैं अमली निज नाम का, मद खूब चुवाया।
पिया पियाला प्रेम का, सिर साँटे‖ पाया॥ टेक॥
गन गंधर्प जोधा बड़े, कैसे ठहराया।
सील खेत रन जंग में, सतगुरु सर¶ लाया॥ १॥
पाँच सखी नित संग हैं, कैसे हैं त्यागी।
अमर लोक अनहद रते, सोई अनुरागी॥ २॥

*घर। †झूठा झगड़ा। ‡पाँव। §चलाना। ‖बदले में यानी सिर देकर। ¶बान।

परपंची पाकर* लिया, बिरहे का कंपा†।
जहँ संख पद्म उजियार है, झलकत है चंपा ॥ ३ ॥
कुंभ‡ कलाली भर दिया, महँगा मद नीका।
और अमल नापाक है, सब लागत फीका ॥ ४ ॥
एक रती पावे नहीं, बिन सीस चढ़ाये ।
वह साहब राजी नहीं, नर मुंड मुड़ाये ॥ ५ ॥
नौधा के नर बहुत हैं, बैकुंठ सिधैरा§ ।
सुकिरत नाम सँभालियो, लूटत जम जौरा ॥ ६ ॥
सुकिरत नाम समीप है, सिव गौर सुनाया।
सुवटे से सुकदे हुआ, पारस पद पाया‖। ७ ॥
रंग महल में रोसनी, रमते से मेला ।
परसा दास गरीब है, सतगुरु का चेला ॥ ८ ॥

( ६ )

आज का लाहा लीजिये, कल्ह किस कूँ होई।
यह तन माटी मैं मिलै, जानै सब कोई ॥ टेक ॥
लखी करोड़ी चल गये, बहु जोड़ खजाना ।
जा तन चंदन लेपते, सो धरे मसाना ॥१॥
हस्ती घोड़े पालकी, दल बल बहु साजा ।
सवा लाख संगी गये, रावन से राजा ॥२॥
कुंभकरन से बीर थे, लंका छत्रधारी ।
नाम बिना बंस बूड़ि है, समझावे नारी ॥३॥

*पकड़। †चिड़िया फँसाने की तीलियाँ। ‡घड़ा। §जाने वाले।
‖देखो कथा नोट पृष्ट ९३ ९४।

भभीछन पद भेदिया, निरगुन निरबाना ।
रावन दई बिसार रे, तज गरब गुमाना ॥४॥
बड़ चक्कवै* काल चक्र पड़े, जिन नाम बिसारा ।
कंस केसि चानूर से, धर बाल पछारा ॥५॥
हिरनाकुस समझे नहीं, पैहलाद पढ़ावे ।
उदर बिनासा आन कर, तब कौन छुड़ावे ॥६॥
जरासिंध से मारिया, और सहस्राबाहू ।
ग्राह से गजहि छुड़ाइया, निज नाम है साऊ† ॥७॥
दूसासन पर लै गये, एकोतर‡ भाई ।
दुरजोधन की देह कूँ, तन गीधन खाई ॥८॥
निरगुन निरभय नाम है, भज लीजो सोई ।
अगर दीप सतलोक मैँ, तब बासा होई ॥९॥
सहस अठासी दीप मैँ, उतपति की खानी ।
दास गरीब भक्ती मिलै, जब थिर होय प्रानी ॥१०॥

( ७ )

ज्ञान की अँखियाँ रँग भरी, ले नहिं निज नूरी ।
मिरगा बाहर भरमही, नाभी कस्तूरी ॥टेक॥
पीतंबर मस्तक बना, त्रिकुटी अति सोहै ।
सो घट छाना§ ना रहै, पद‖ परसा लोहै ॥१॥
सील संतोष बिबेक रे, और ज्ञान बिज्ञाना ।
दया दुलीचे बैठ कर, है ब्रह्म समाना ॥२॥
छिमा छत्र जेहि ढुरत है, तामस नहिँ तेजं ।
सो नर परसे जानिये, अवगत की सेजं ॥३॥

*चक्रवर्ती राजा । †सहायक । ‡एक से एक । §खाली । ‖त्रिकुटी पद को "पारस" कहा है ।

कमल हिरंबर खिल रहे, अनुभौ अनुरागी ।
दास गरीब सतलोक के, सोई बैरागी ॥४॥

( ८ )

सजन सुराही हाथ है, अमृत का प्याला ।
हम बिरहिन बिरहै रँगी, कोई पूछै हाला ॥टेक॥
चोखा फूल चुवाइया, बिरहिन के ताईं ।
मतवाला महबूब है, मेरा अलख गुसाईं ॥१॥
प्रेम पियाला पीय कर, मैं भई दिवानी ।
कहा कहूं उस देस की, कुछ अकथ कहानी ॥२॥
बरवै राग सुनाय कर; गल डारी फाँसी ।
गाँठ घुली* खूलै नहीं, साजन अबिनासी ॥३॥
गुझ की बात किस कूँ कहूं, कोइ महरम जानै ।
अगली पिछली मत गई, बेधी इक तानै† ॥४॥
सुन्न मँडल सतलोक से, बिरहा चल आया ।
मुझ बिरहिन के लेन कूँ, मेरे सजन पठाया ॥५॥
रोम रोम मैं राग है, बिरहा रँग रासी ।
लोक बेद झूठे लगे, पिछली बुध नासी ॥६॥
अनहद नादू बाजहीं, अमरापुर माँई ।
सुन्न मँडल सतलोक कूँ. दुलहिन उठ धाई ॥७॥
अरस गुमठ गुलजार है' गैबी गलताना ।
सेत धजा जहँ फरहरैं, पँचरंग निसाना ॥८॥
तन मन छाकै प्रेम से मन मंगल महली ।
दुलहिन दास गरीब है, जहँ सेज सलहली‡ ॥९॥

*मज़बूत हो गई । †एक ही तान में बेध दिया । ‡सुखाली ।

( ९ )

सुन्न सरोवर हंस मन, मोती चुग आया ।
अगर दीप सतलोक में, ले अजर झराया ॥टेक॥
हंस हिरंबर हेत है, हैरान निसानी ।
सुख सागर मुक्ता भये, मिल बारह बानी* ॥१॥
पिंड अंड ब्रह्मंड से, वह न्यारा नादू ।
सुन्न समझिया बेग रे, गये बाद बिबादू ॥२॥
सतगुरु सार जु गाइया, घर कूँची ताला ।
रंग महल में रोसनी, घट भया उजाला ॥३॥
दीपक जोड़ा नूर का, ले अस्थिर बाती ।
बहुर न भौजल आवहीं, निरगुन के नाती ॥४॥
नाम सहर बेगमपुरा, जहँ लागी ताली ।
सब घट मन मौजूद है, नाहीं कोइ खाली ॥५॥
अजब दिवाना देस है, जहँ हिल मिल रहिये ।
कहता दास गरीब है, मुक्ता पद लहिये† ॥६॥

( १० )

ज्ञान तुरंगम‡ पाड़िया§, ताजी दरियाई ।
पासर‖ घाली प्रेम की, चित चाबुक लाई ॥टेक॥
प्रेम धाम से ऊतरे, हुकमी सैलानी ।
सब्द सिंध मेला करैं, हंसौं के दानी ॥१॥
असंख जुग परलै गये, जब के गुन गाऊँ ।
ज्ञान गुरज है दस्त में, ले हंस चिताऊँ ॥२॥

*ख़ालिस सोना । †पाइये । ‡घोड़ा । §इकट्ठा किया । ‖डोरी, फंदा ।

सील हमारा सेल* है. औ छिमा कटारी ।
तत्त तीर तक मार हूं, कहँ जात अनारी ॥३॥
बुधि हमरी बन्दूक है, दिल अंदर दारू† ।
प्रेम पियाला सार का, चित चकमक झारू‡ ॥४॥
तत्त हमारी तेग§ है, जो असल असीलं ।
सूरे सनमुख लेत हैं, कायर मुख पीलं ॥५॥
घायल घूमै अरस मैं, जिस लगी करारी ।
औषध निःचा नाम है, जिन्ह पीड़‖ पुकारी ॥६॥
पाखरिया¶ सतलोक के, रन-जीत पठाये ।
कहता दास गरीब है, गुरुगम से आये ॥७॥

( ११ )

घट ही अंदर गारडू**, धोखे मर गइया ।
सार सब्द चीन्हा नहीं, कुछ भेद न लहिया ॥टेक॥
न्योल जड़ी कूँ सूँघ कर, गृह डंक लगावै ।
सरपिन बाँबिहि सूँ डसी, कहिँ जान न पावै ॥१॥
बाजी अनहद बीन रे, फूँ भई फुँकारा ।
भगल बिद्या बाजीगरी, जानै गुरु म्हारा ॥२॥
सतगुरु मिलिया गारडू, जिन्ह मंतर दीन्हा ।
नागदमन†† तिरगुन जड़ी, बिषयर‡‡ बस कीन्हा ॥३॥
बाजीगर की डुगडुगी, बिषयर भरमाया ।
घाल पिटारे ले चला, घरबार नचाया ॥४॥

---

* भाला । † बारूद । ‡एक लोहे की चीज़ जिसको पथरी पर मार कर आग निकालते हैं । §तलवार । ‖दरद । ¶लोहे की जाली जो लड़ाई में घोड़े की हिफ़ाज़त के लिये उस पर डालते हैं । **साँप का मंत्र जानने वाला । †† साँप की जड़ी । ‡‡साँप ।

ऐसा सतगुरु कीजिये, बाजीगर पूरा ।
दास गरीब अमर करै, दिल दरस जहूरा ॥५॥

( १२ )

दरदमंद दरवेस है, बेदरद कसाई ।
संत समागम कीजिये, तज लोक बड़ाई ॥ टेक ॥
डिंभी* डिंभ न छोड़हीं, मरघट के भूता ।
घर घर द्वारे फिरत हैं, कलजुग के कूता ॥ १ ॥
डिंभ करैं डुंगर† चढ़ैं, तप होम अँगीठी ।
पंच अगिन पाखंड है, यह मुक्ति बसीठी‡ ॥ २ ॥
पाती तोरे क्या हुआ, बहु पान झरो रे ।
तुलसी बकरा खागया, ठाकुर क्या बौरे ॥ ३ ॥
पीतल ही का थाल है, पीतल का लोटा ।
जड़ मूरत कूँ पूजते, आवैगा टोटा ॥ ४ ॥
पीतल चमचा पूजिये, जो खान परोसै ।
जड़ मूरत किस काम की, मत रहो भरोसे ॥ ५ ॥
कासी गया पराग§ रे, हरपैड़ी न्हाये ।
द्वारावति‖ दरसन किये, बहु दाग दगाये ॥ ६ ॥
इन्द्रदौन असनान रे, कर पुस्कर परसे ।
द्वादस तिलक बनाय कर, बहु चंदन चरचे ॥ ७ ॥
अठसठ तीरथ सब किये, बृन्दाबन फेरी ।
नाम बिना खूले नहीं, दिब दृष्ट अँधेरी ॥ ८ ॥
सतगुरु भेद लखाइया, निज नूर निसानी ।
कहता दास गरीब है, छूटे सो प्रानी ॥ ९ ॥

*धोखेबाज़ । †पहाड़ । ‡बकवाद । §प्रयाग । ‖द्वारिका ।

( १३ )

नजर निहाल दयाल हैं, मेरे अंतरजामी ।
सोलह कला सपूरना, लख बारहबानी* ॥ टेक ॥
उलट मेरुडंड चढ़ गये, देखा सो देखा ।
संख कोटि रबि झिलमिलैं, गिनती नहिं लेखा ॥१॥
बरन बरन के तेज हैं, पँचरंग परेवा† ।
मूरत कोट असंख हैं, जा मध इक देवा ॥२॥
(जाके) ब्रह्मा झाड़ू देत हैं, संकर करैं पंखा ।
सेस चरन चंपी लगैं‡, अगमी गढ़ बंका ॥३॥
धर ऐनक दुरबीन कूँ, धुन ध्यान लगावे ।
उलट कमल अरसा§ चढ़ै, तब नजरौं आवे ॥४॥
सूछम मूरत सोहनी, अगमै इक-रासा ।
रहता रमता राम है, घट पिंड न स्वासा ॥५॥
जो देखा सो किस कहूं, अचरज इक ख्याला ।
कहता दास गरीब है, निज रूप बिसाला ॥६॥

( १४ )

सोई साध अगाध है, आपा न सरावै‖ ।
पर निंदा नहिं संचरै, चुगली नहिं खावै ॥टेक॥
काम क्रोध त्रिस्ना नहीं, आसा नहिं राखै ।
साँचे सूँ परचा भया, जब कूड़ न भाखै ॥१॥
एकै नजर निरंजना, सबही घट देखै ।
ऊँच नीच अंतर नहीं, सब एकै पेखै ॥२॥

*ख़ालिस सोना । †कबूतर—यहाँ हंस से मतलब है । ‡मुक्की लगाना, पाँव दाबना । §अर्श । ‖सराहै ।

सोई साध सिरोमनी, जप तप उपकारी ।
भूले कूँ उपदेस दे, दुर्लभ संसारी ॥३॥
अकल* यकीन पठाय दे, भूले कूँ चेतै ।
सो साधू संसार मैं, हम बिरले भैंटे ॥४॥
सूतक† खोवैं सत कहैं, साँचे सूँ लावैं ।
सो साधू संसार मैं हम बिरले पावैं ॥५॥
निरख निरख पग धरत हैं, जिव हिंसा नाहीं ।
चौरासी तारन तरन, आये जग माहीं ॥६॥
इस सौदे कूँ ऊतरे, सौदागर सोई ।
भरे जहाज उतार दे, भौसागर लोई ॥७॥
भेष धरैं भागे फिरैं, बहु साखी सीखैं ।
जानैं नहीं बिबेक कूँ, खर के ज्यूँ रीकैं‡ ॥८॥
खास मुकामा दरस है, जो अरस रहंता ।
उनमुन मैं तारी लगी, जहँ अजप जपंता ॥९॥
सुन्न महल अस्थान है, जहँ अस्थिर डेरा ।
दास गरीब सुभान§ है, सत साहब मेरा ॥१०॥

( १५ )

सत्त कहन कूँ राम है, दूजा नहिं देवा ।
ब्रह्मा बिसुन महेस से, जा की करते सेवा ॥ टेक ॥
जप तप तीरथ थोथरे, जा की क्या आसा ।
कोट जग्ग पन दान से, जम कटै न फाँसा ॥ १ ॥
इहाँ देन उहा लन है, यह मिटै न झगरा ।
बिना पंथ की बाट है, पावै को दगरा‖ ॥ २॥

*बुद्धि †अशुद्धता । ‡गधे की तरह रेंकैं । §पवित्र । ‖रास्ता ।

बिन ही इच्छा देन है, सो दान कहावै ।
फल बंछै* नहिं तासु का, अमरापुर जावै ॥ ३ ॥
सकल दीप नौ खंड के, छत्री जिन जीते ।
सो तो पद मैं ना मिले, बिद्या गुन चीते† ॥ ४ ॥
कोट उनंचा‡ पृथ्वी, जिन दीन्ही दाना ।
परसराम औतार कूँ, कीन्हे कुरबाना ॥ ५ ॥
कंचन मेरु सुमेर रे, आये सब माहीं ।
काम धेनु कल्प बृच्छ रे, सो दान कराहीं ॥ ६ ॥
सुर नर मुनि जन सेवहीं, सनकादिक ध्यावैं ।
सेस महेस मुख रटत हैं, जा का पार न पावैं॥ ७ ॥
ब्रह्मा बिसुन महेस रे, देवा दरबारी ।
संख कलप-जुग हो गये, जा की खुलै न तारी॥ ८॥
परलै संख असंख रे, पल माँह बिहानी§ ।
गरीबदास निज नाम की, महिमा हम जानी ॥ ९ ॥

( १६ )

सुख के सागर राम हैं, जेहि धरिये ध्याना ।
तिरबेनी के घाट रे, कीजे असनाना ॥ टेक ॥
नाभि कमल से उच्चरे, दम लेखे लावो ।
परबी कोट अनंत हैं, सुख सागर न्हावो ॥ १ ॥
अनंत कोट धुन होत हैं, सुख सागर माहीं ।
पैड़ी पंथ न महल के, जहँ हंसा जाहीं ॥ २ ॥

---

*चाहै । †क्योंकि उन के चित्त में विद्या और गुन का घमंड था । ‡शास्त्रों के अनुसार पृथ्वी उनचास कोट जोजन नाप में है । §बीत गये ।

ओं मूल उच्चार है, जपिये मन माला ।
सुछम बेद से धुन लगी, पहुंचे चित्र साला ॥३॥
ऐनक आदि अनाद है, दुरबीन धियाना ।
पलकोँ चौँरा कीजिये, त्रिकुटी अस्थाना ॥ ४ ॥
सहस कमल दल जगमगै, जहँ भँवर गुँजारा ।
घटा गरज बहु दामिनी, अनहद झनकारा ॥५॥
गरजै सिंध अगाध रे, बिन सरवन सुनिया ।
नरकी क्या बुनियाद है, पहुंचत नहिं मुनिया* ॥६॥
मन पौना के गमन† से, आगे लख भाई ।
सुरत निरत के पंख ले, हंसा उड़ जाई ।७॥
अधर बिहंगम उड़ चलै, भौँरी ले भौँरा ।
गरीबदास कहु क्या करै, जा का जम जोरा ॥८॥

( १६ )

कर साहब की बंदगी, बैरागर लै रे ।
समरथ साँईं सीस पर, तो कूँ क्या भै रे ॥ टेक ॥
सील संतोष बिबेक हैँ, अरु ज्ञान बिज्ञाना ।
दया धरम चित चौतरे, बाँधो परवाना ॥१॥
धरम धजा जहँ फरहरै, होहि जग‡ ज्योनारा ।
कथा कीरतन होत है, साहब दरबारा ॥२॥
सुमता§ माता मित्र है, रख अकल यकीनं ।
सत्त धरे तैँ खुलत है, दिल मैँ दुरबीनं ॥३॥

*मुनी । †पहुंच । ‡यज्ञ । §सुमति, अच्छी बुद्धि ।

जा के पिता बिबेक से, अरु भाव से भाई ।
या पटतर* नहिं और है, कुछ बहिन सगाई† ॥४॥
द्रढ़ के डुंगर‡ चढ़ गये, जहँ गुफा अनादं ।
लागी सब्द समाध रे, धन सतगुरु साधं ॥५॥
सहस मुखी जहँ गंग है, तालिब तिरबेनी ।
जहाँ ध्यान असनान कर, परबी सुख चैनी ॥६॥
कोट करम कसमल§ कटै, उस परबी न्हाये ।
वह साहब राजी नहीं, कुछ नाचे गाये ॥७॥
अगर मूल महकंत है, जहँ गंध सुगंधा ।
एक पलक के ध्यान से, कटिहै सब फंदा ॥८॥
दो मुड़ की भाठी चुवै, जहँ सुखमन पोता ।
इला पिंगला एक कर, सुखसागर गोता ॥९॥
अबल बली बरियाम है, निरगुन निरबानी ।
अनंत कोट बाजे बजैं, बाजैं सहदानी‖ ॥१०॥
तन मन निःचल होगया, निज पद से लागे ।
एक पलक के ध्यान से, दुन्दर¶ सब भागे ॥११॥
पुर पट्टन के घाट मैं, इक पिंगल पंथा ।
छुटैं फुहारे नूर के, जहँ धार अनंता ॥१२॥
झिल मिल झिल मिल होत है, उस पुर मैं भाई ।
घाट बाट पावै नहीं, है द्वारा राई** ॥१३॥
तहँ वहँ संख सुरंग है, मध औघट घाटा ।
सतगुरु मिलैं कबीर से, तब खुलै कपाटा ॥१४॥

---

*बराबर । †सगी, अपनी । ‡पहाड़ । §पाप । ‖शहनाई । ¶दुंद, अंधकार । **राई के समान झीना ।

सेत कमल जहँ जगमगै, पीताँबर छाया ।
सूरज संख सुभान* है, अबिनासी राया ॥ १५ ॥
अगर डोर से चढ़ गये, धुन अलल धियाना ।
दास गरीब कबीर का, पाया अस्थाना ॥ १६ ॥

( १७ )

लोक लाज नहिँ कीजिये, निरभय हो रहिये ।
यह मन साधोँ दीजिये, (तौ) गोबिंद पद पइये ॥टेक॥
भौसागर जोनी जनम, हरि दास मिटावैँ ।
बहुर बहुर नहिं आवहीँ, मुक्ता पद पावैँ ॥ १ ॥
ऐसे हरि जन संत हैँ, संगत नित कीजे ।
झूठे जग की लाज मेँ, नाहीँ चित दीजे ॥ २ ॥
यह जग बदरा† धुँध का, मिहर‡ पौना डरिये ।
जो मन चाहे राम कूँ, दासा तन करिये ॥ ३ ॥
हस्ती डर माने नहीँ, जे स्वान भुकाहीँ ।
सतसंगी संगत ना तजैँ, चित राम बसाहीँ ॥ ४ ॥
स्वान रूप संसार है, कुछ करसी नाहीँ ।
सीस महल कूँ देख कर, भौँकत मर जाहीँ ॥ ५ ॥
मतवाले महबूब हैँ, साधू जग माहीँ ।
गरीबदास समझावहीँ, जिग्यासी§ ताईं ॥ ६ ॥

( १८ )

राम कहे मेरे साध कूँ, दुख मत दीजो कोय ।
साध दुखावे मैँ दुखी, मेरा आपा भी दुख होय ॥ टेक ॥

*पवित्र। †बादल। ‡मिहर अर्थात दया के पवन से डरता है। §खोजी।

हिरनाकुस उदर बिदारिया, मैं हीं मारा कंस ।
जो मेरे साध कूं आन दुखावै, जाका खोऊँ बंस ॥ १ ॥
पहुँचूँगा छिन एक में, जन अपने के हेत ।
तेंतिस कोट की बन्ध छुटाई, रावन मारा खेत ॥ २ ॥
कला* बधाऊँ† संत की, परगट करिहै मोय‡ ।
गरीबदास जुलहा कहै, मेरा साध न दहियो§ कोय ॥३॥

( १९ )

करो निबेरा रे नरो, जम माँगै बाकी ।
कर जोड़े धरम राय खड़॥, सतगुरु है साखी ॥टेक॥
माटी का कलबूत¶ है, सतगुरु का साजा ।
उस नगरी डेरा करो, जहँ सब्द अवाजा ॥ १ ॥
नूर मिलेगा नूर में, माटी में माटी ।
कोइक** साधू चढ़ गये, उस औघट घाटी ॥ २ ॥
रोम रोम में राम है, अजपा जप लीजै ।
सुरत सुहंगम डोर गहि, प्याला मधु पीजै ॥ ३ ॥
जम की फरदी†† ना चढ़ै, सोई जन सूरा ।
परसा दासगरीब है, जोगेसर पूरा ॥ ४॥

( २० )

अगम ज्ञान की धुन सुनी, दुलहिन भई बौरी ।
यह भगलीगिर का जंत्र है, कोई लखै न डोरी ॥ टेक ॥
जूठे फल परवान हैं, परतीत जु स्योरी‡‡ ।
यह अनुराग अनादि है, जो अमर भई गौरी§§ ॥१ ॥

---

*महिमा †बढ़ाऊँ । ‡मुझको । §सतावो । ॥खड़ा । ¶साँचा, शरीर । **कोई एक । ††फ़र्द, चिट्ठा । ‡‡जो सेवरी भिल्लनी सरीखी प्रतीत है । §§पारबती ।

बिन तरवर* के बाग है, जहँ लागै मौरी† ।
त्रिकुटी सिंध पिछान ले, मधुकर है भौंरी ॥२॥
अष्ट कमल दल भीतरा, सुमिरन सुमिरो री ।
यह औसर चूको नहीं, कुछ होय सु हो री ॥ ३ ॥
पिंड प्रान तिस वारहू, तन मन अरपो री ।
गरीबदास पद अरस में, सुर्त सिंध मिलो री ॥ ४ ॥

## राग काफी

मन मगन भया जब क्या गावै ॥ टेक ॥
ये गुन इंद्री दमन करेगा, बस्तु अमोली सो पावै॥१॥
तिरलोकी की इच्छा छाँड़ै, जग में बिचरै निर्दावै ॥२॥
उलटी सुलटी निरत निरंतर, बाहर से भीतर लावै ॥३॥
अधर सिंघासन अवचल आसन, जहँ उहँ सुरती ठहरावै
त्रिकुटी महल में सेज बिछी है, द्वादस अंदर छिप जावै५
अजर अमर निज मूरत सूरत, ओअं सोहं दम ध्यावै ॥६
सकल मनोरथ पूरन साहब, बहुर नहीं भौजल आवै॥७॥
गरीबदास सतपुरुष बिदेही, साँचा सतगुरु दरसावै ॥८॥

( २ )

मन मगन भया कैसे जाना ॥ टेक ॥
ब्रह्म खुमारी सुन्न अधारी, आठ बखत रहे गलताना।१।
ओअं सोहं सार बस्तु है, अजपा जाप सही जाना ॥२
यह तन देही बहुर नहीं है, अष्ट कमल दल अस्थाना॥३॥
थावर जंगम मैं जगदीसं, क्या पूजै जल पाषाना॥४॥

*पेड़ । †बौर ।

सुरत सनेही सिंध मिलैंगे दिल कूँ खोजैं दिल-दाना॥५॥
या मन मूरत चंपा सूरत, समझ बूझ ले ब्रह्म ज्ञाना॥६॥
बिनमसि* का इक अंक अरस† में, क्या पढ़िये पोथीपाना‡
संख कँगूरा§ बाजैं तूरा, सेत धजा लख असमाना॥८॥
उजल हिरंबर सब्द घुरंबर‖, जम जोरा नहिं तलबाना९
गंगा जमुना मद्ध सुरसती, मान सरोवर मैं न्हाना॥१०
मोछ मुक्त जहँ पित्र होत हैं, वहाँ करो पिंड परदाना¶११
अर्थ धर्म सब काम मोछना, आद पुरुष पद निरबाना१२
गरीबदास दरपन मुख दरवै**, संख कला रवि ससि भाना

( ३ )

मन मगन भये का सुन रासा ॥ टेक ॥
यह इंद्री परकिरती प्रेरै, डार चलै तिरगुन पासा॥१॥
सफम सफा†† है मिले नूर मैं, काम क्रोध का कर नासा२
यह तन खाक मिलैगा भाई, क्या पहिरे मलमल खासा३
पिंड ब्रह्मंड कुछ थीर नहीं है, गगन मँडल मैंकरबासा॥४
चिंता चेरी दूर परै री, काट चलो जम का फाँसा॥५॥
मान बड़ाई जमपुर जाई, होय रहो दासन दासा॥६॥
गरीबदास पद अरस अनाहद, ओअं सोहं जप स्वासा॥७

( ४ )

मन मगन भया सो ब्रह्मचारी ॥ टेक ॥
यह मन अकल अजीत जीतिया,
दमन‡‡ करी पाँचो नारी ॥१॥

---

*सियाही। †अर्श। ‡पन्ना, बरफ़ §छोटे छोटे बुर्ज। ‖घुर रहा है। ¶प्रदान। **दरसै। ††साफ़ से साफ़। ‡‡ज़ेर।

दुरमत का तो देवल* ढाहा,
पकर लई मनसा दारी† ॥२॥
चित के अंदर चौपड़ खेलै,
जहँ फिरती सोलह सारी‡ ॥३॥
जा की नरद पकी घर आवै,
गर्भ बास मेँ ना जा री ॥४॥
जोनी संकट मोछ होत है,
उतर गये भौजल पारी ॥५॥
दुहूँ दीन षट दरसन त्यागे,
ऐसी ही धारन धारी ॥६॥
झिलमिल नैना अनहद बैना,
लाग रही उनमुन तारी ॥७॥
या जग निन्दा बिन्दा करिहै,
कोइ अस्तुत कोइ दे गारी ॥८॥
गरीबदास दीदार दरस कर,
फगुआ खेलन की बारी ॥९॥

(५)

दम दा नहीं भरोसा साधो,
अब तू कर चलने दा सोच ॥ टेक ॥
मुए पुरुष सँग सती जरत है,
परी मरम की भूल ॥१॥
पीठ मनुका§ दाख लदी है,
करहा‖ खात बँबूल ॥२॥

*मंदिर। †मारी। ‡नरद, गोटी। §मुनक्का। ‖ऊँट।

मँड़ी* मंदिर बाग बगीचे,
रहसी डाल न मूल ॥३॥
जिंदा पुरुष अचल अबिनासी,
बिना पिंड अस्थूल ॥४॥
नैनों आगे झुक झुक आवै,
रतन अमोली फूल ॥५॥
गरीबदास यह अलल† ध्यान है,
सुरत हिंडोले झूल ॥६॥

( ६ )

तारैंगे तहकीक सतगुरु तारैंगे ॥ टेक ॥
घट ही मैं गंगा घट ही में जमुना,
घट ही मैं जगदीस ॥१॥
तुम्हरै ज्ञाना तुम्हरै ध्याना,
तुम्हरै तारन की परतीत ॥२॥
मन कर धीरा‡ बाँध ले बौरे,
छाँड़ देय पिछलौं की रीत ॥३॥
दास गरीब सतगुरु का चेला,
टारैं जम की रसीत§ ॥४॥
जल थल साछी एक है रे,
डुँगर‖ डहर¶ दयाल ॥५॥
दसौं दिसा कूँ दरसनं,
ना कहिं औरा काल ॥६॥

---

*मड़ई, मकान के ऊपर का खंड । †अलल पच्छ, देखो नोट पृष्ट ७९ । ‡थिर §हुक्मनामा । ‖पहाड़ । ¶रास्ता ।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन को दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजैं जिस में वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावैं और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उन को मिलैं उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करैं।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत ख़र्च होता है तौ भी सर्व साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग सबस्क्रैबर अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकैं आगे छपैंगी बिना माँगे भेज दी जायँगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा परंतु डाक महसूल उन के ज़िम्मे होगा और पेशगी दाम न देने की हालत में वी० पी० कमिशन भी उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकैं अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी० पी० कमिशन लिया जायगा।

अब मीरा बाई के भजन और दरिया साहब बिहार के महात्मा का दरियासागर ग्रंथ जो अब तक दूसरी प्रति लेख की न मिलने के कारन रुका हुआ था हाथ में लिये गये हैं।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापख़ाना,

जून, १९१० ई०

इलाहाबाद।

# संतबानी पुस्तक-माला

तुलसी साहब ( हाथरस वाले ) की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... २)

" " " रत्न सागर मय जीवन-चरित्र .. ॥=)

ग़रीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ... ॥=)

कबीर साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ दूसरा एडिशन ॥)

" " शब्दावली भाग २ ... ... ... ।≈)

" " अखरावती ... ... ... ... -)

पलटू साहब की शब्दावली ( कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र,

भाग १ ... .. ... ॥)

" " शब्दावली, भाग २ ... ... ... ।-)॥

चनरदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ . ॥)॥

" " भाग २ ... ... ... ।≡)॥

रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ... ।-)॥

जगजीवन साहब की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ॥-)

दरिया साहब ( मारवाड़ वाले ) की बानी और जीवन-चरित्र,

दूसरा एडिशन ... ... ... ... ... ।)॥

भीखा साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... ।≡)

सहजोबाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ... ।)

दयाबाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ... =)॥

गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी ... ... ... )॥

अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र भी अँग्रेज़ी पद्य में छपा है (यह रमनीय पुस्तक एक मेम ने लिखी है संतबानी पुस्तक-माला की नहीं है) ... ... ... ... ... =)

मूल्य में डाक महसूल व वाल्यू पेअबल कमिशन शामिल नहीं है।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,

इलाहाबाद।